मेरे तो राधा-राम...

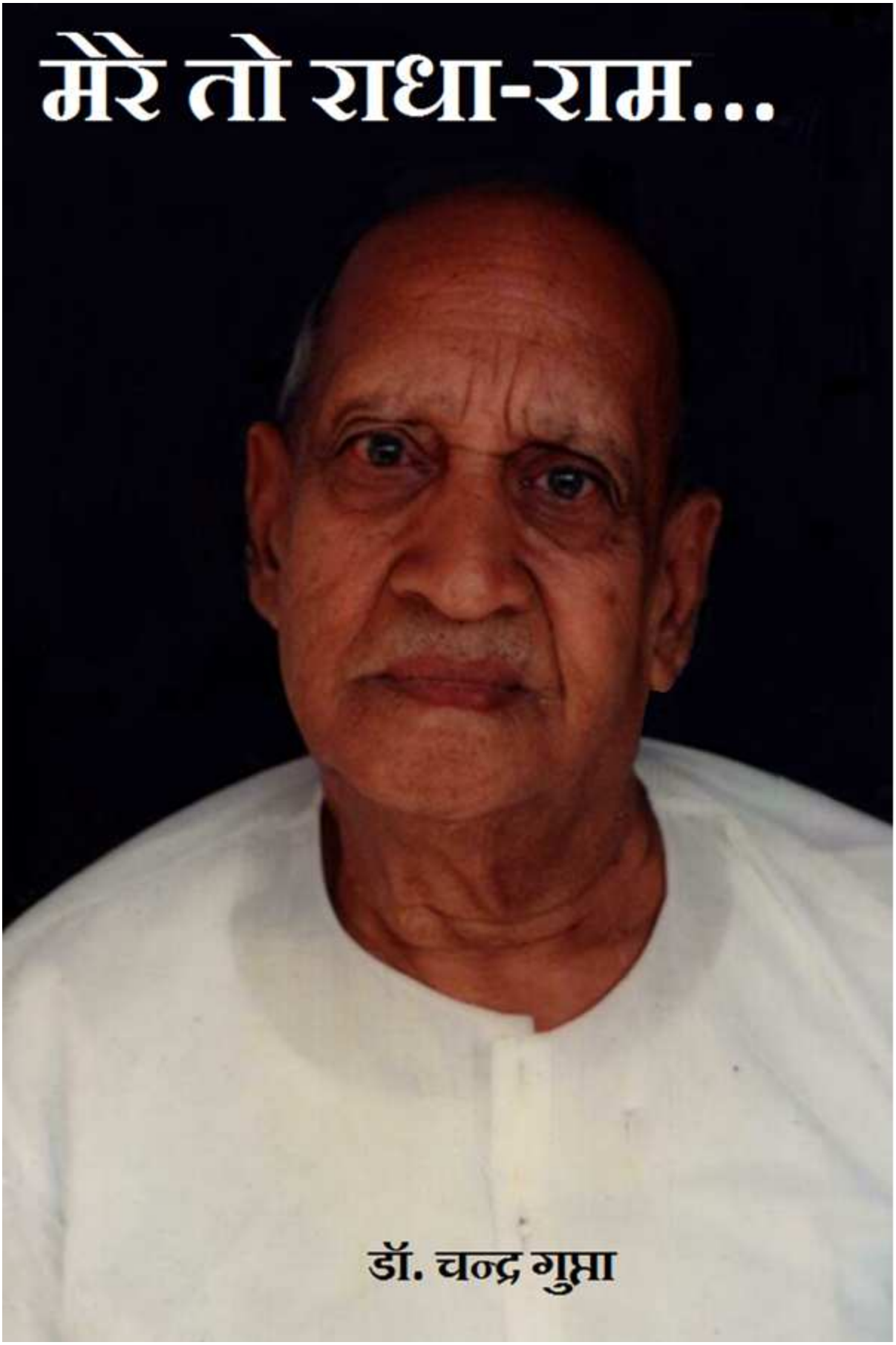

डॉ. चन्द्र गुप्ता

दिया आपने हमें सभी कुछ,
खुद कष्ट सहे, आराम हमें,
दुनिया की दौलत से बढ़कर,
बख्शा गुरु-चरणों में प्रेम हमें ।

शत-शत नमन, हे पिता ! तुम्हें...

संपर्क सूत्र
0141-2547194/9982991899 (पवन कुमार गुप्ता)
9887282588 (सतीश कुमार गुप्ता)
9413302131 (अशोक कुमार गुप्ता)
9214437764 (शैलेश गुप्ता)
0141-2220532/8290706222 (सुषमा मित्तल)
0141-2651146/9982719422 (भारत भूषण शर्मा)
9314871929 (दिनेश महनोत)
9414102603 (शैलेन्द्र झा)
011-22718010/9899666200 (राजेन्द्र कुमार गुप्ता)
rkgupta51@yahoo.com
Web site: www.sufisaints.net

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य: 140/-

प्रथम संस्करण: फरवरी 2016, 300 प्रतियां

संकलनकर्ता
राजेन्द्र कुमार गुप्ता

ISBN: 978-81-904595-7-0

प्रकाशक: महात्मा रामचन्द्र प्रकाशन लीग,
लालाजी निलयम, महात्मा रामचन्द्र मार्ग,
फतेहगढ़ (उ.प्र.)-209601

विषय सूची

निवेदन

सौम्य संत डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की स्मृति में

श्रद्धा-सुमन

महात्मा डॉक्टर चन्द्र गुप्ता

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की धर्मपत्नी

महात्मा श्री कृष्ण कुमार गुप्ता

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की कलम से

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के नाम पत्र

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के अध्यात्मिक अनुभव

सत्संगियों के अध्यात्मिक अनुभव

निवेदन

महात्मा डॉक्टर चन्द्र गुप्ता (डॉक्टर साहब) नक्शबंदी सूफी परम्परा के एक ऐसे संत हुए हैं जो अपने गुरु भगवान के प्रति प्रेम एवं विश्वास के द्वारा अध्यात्म की ऊँचाइयों पर आसीन हुए । उनके लिए उनके गुरु भगवान का आदेश सर्वोपरि था । दुनिया की चिंता अपने गुरु भगवान पर छोड़ वे बेफिक्र हो अपने गुरु भगवान के प्रेम में मस्त हो कर जीने वाले जिन्दादिल इन्सान थे । प्रस्तुत पुस्तक उनके द्वारा अपने अनुभवों के आधार पर लिखी उनकी डायरीयां और उनके परिवारजन एवं सत्संगी भाई-बहनों के संस्मरणों के आधार पर संकलित सामग्री को समावेश कर लिखी गयी है । उन सभी को और विशेषकर श्री भारत भूषणजी, श्री दिनेश महनोत, श्रीमती कृष्णा शुक्ला, श्रीमती केशव गोयल, श्री शैलेन्द्र झा, श्री चन्दालालजी, श्री भगवान सहायजी, श्री राजीवजी, श्री विजय कृष्ण एवं श्रीमती शारदा अग्रवाल को उनके सहयोग और मार्गदर्शन के लिए नमन एवं अनेकानेक धन्यवाद ।

प्रथम-दृष्टया इस पुस्तक का शीर्षक 'मेरे तो राधा-राम...' पाठकों को थोड़ा अटपटा लग सकता है लेकिन डॉ. चन्द्र गुप्ताजी के सन्दर्भ में 'मेरे तो राधा-राम...' शीर्षक की सुरभि और सार्थकता ने इस दासानुदास को पुस्तक का यही शीर्षक चुनने को प्रेरित किया । औरों की सहर्ष सहमती ने इस निर्णय पर स्वीकृति की मोहर भी लगा दी । डॉ. चन्द्र गुप्ताजी महात्मा राधा मोहन लालजी साहब, जिन्हें वे बादशाह फ़क़ीर कहा करते थे, के द्वारा सन 1958 में बैअत (दीक्षित) किये गए थे और उनकी रूहानी परवरिश और तक्मील में परमसंत ठाकुर रामसिंहजी, जिन्हें वे गुरु भगवान कहा करते थे, एवं हज़रत मौलवी अब्दुल रहीम साहब (पीर साहब) की विशेष कृपा व योगदान रहा । तीनों ही महापुरुषों के आप अत्यंत प्रिय भक्तजनों में थे और डॉ. चन्द्र गुप्ताजी के लिए उनके गुरु भगवान से इतर कोई और भगवान नहीं थे । उन्होंने स्वयं अपनी डायरी में लिखा है की 'वे (ठाकुर रामसिंहजी साहब) मेरे फाइनल गुरु भगवान हैं' और 'सब संतों को मेरे गुरु भगवान ठाकुर रामसिंहजी साहब के हमशक्ल मानता हूँ ।' अपने 27.09.88 के पत्र में उन्होंने लिखा है 'देयर इज नो अनादर गॉड फॉर मी एक्सेप्ट माय गुरु भगवान' (There is no another God for me, except my Guru Bhagvan) ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता का जन्म 12 फरवरी 1916 को हुआ था एवं इस वर्ष 12 फरवरी 2016 को उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर यह पुस्तकरुपी पुष्प उनके चरण कमलों में सादर समर्पित है । आशा है यह पुस्तक अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले सत्संगी भाई-बहनों को अध्यात्म के बहुत से गूढ़ रहस्यों और साधना में गुरु-कृपा के महत्व से अवगत कराएगी और प्रेरणा का एक स्रोत्र साबित होगी ।

दासानुदास
राजेन्द्र

सौम्य संत डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की स्मृति में

(महात्मा श्री दिनेश कुमार सक्सेना-पीठाधीश एवं सुपौत्र जनाब लालाजी महाराज)

धर्म का तथात्थ्य अर्थों में उद्धेश्य यह है कि व्यष्टि आत्माओं की धर्मतत्त्वज्ञात्मा से संयुक्तता स्थापित करा दी जाए और उन्हें अनुभूत करा दिया जाए कि इस पुनर्मिलन में बंधन-मुक्तता है, कामना से और आनंद व प्रसन्नता की लालसा से । जिस किसी को भी इसका बोध हो गया वह अज्ञान से, स्वार्थपरता से और दूसरी अपूर्णताओं से मुक्त हो गया । ऐसा मुक्त पुरुष ज्ञान के वास्ते किसी ज्ञानी के पास न जाकर ज्ञान के तत्व को अपने निज के अंतर में ही पा लेता है । ऐसा मुक्त पुरुष ही आदर्श पिता है, साक्षात ईश्वर है और पूजा के योग्य है । संसार की भिन्न-भिन्न पूजा पद्धतियों में पित्र-पूजन का आदेश ऐसे ही पिता के लिए है ।

मैं अपने अंतर्मन में मग्न चित्त से प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ कि ऐसे ही एक आदर्श पिता और गृहस्थ संत डॉक्टर चन्द्र गुप्ताजी की लौकिक और पारलौकिक संताने, उनकी जन्म-शताब्दी का आयोजन करने जा रहे हैं । इस पवित्र अवसर पर मैं अपनी ओर से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि व प्रेम प्रेषित कर रहा हूँ ।

भाई साहब डॉक्टर चन्द्र गुप्ताजी से मेरा यद्दपि कि बहुत सघन सान्निध्य नहीं रहा किन्तु उनसे परिचय बहुत पुराना व सार्थक रहा है । यह लगभग 55 वर्ष पुरानी बात है लेकिन मेरे जहन में जयपुर प्रवास के दौरान डॉ. हरफूलसिंहजी (महात्मा डॉ. चतुर्भुज सहायजी साहब के शिष्य) व डॉ. चन्द्र गुप्ता दोनों से मिलन की स्मृति चिर-स्थायी है । इस मिलन का संयोग मुझे वर्ष 1960 में परमपूज्य लालाजी महाराज के एक प्रिय शिष्य ठाकुर रामसिंहजी द्वारा सुलभ कराया गया था । हम दोनों (मैं स्वयं-दिनेश कुमार व मेरे बड़े भाई स्व. अखिलेश कुमार) गर्मियों की छुट्टियों में अपने चाचाजी डॉक्टर नरेन्द्र मोहन जो उन दिनों वहाँ बनीपार्क में रहते थे, के यहाँ रहने गए थे । उसी प्रवास में एक रविवार की शाम को वहाँ पर रामाश्रम सत्संग, मथुरा के आचार्य न्यायमूर्ति माथुर साहब के घर पर आयोजित सत्संग में भाई साहब ठाकुर संत रामसिंहजी स्वयं अपने साथ लेकर गए थे ।

माथुर साहब के घर पर सत्संग के मध्य कुछ ऐसी प्रेम की गंगा प्रवाहित हुई कि पता ही नहीं चला कि कब शाम से सुबह के चार बज गए । हमारी टोली में एक कार में सवार हम तीन-चार के अतिरिक्त हमारे फूफाजी (डॉक्टर हर नारायण सक्सेना साहब) भी जो उन दिनों वहीँ पावर-हाउस रोड पर रहते थे, अपनी मोटर साइकिल पर सवार थे ।

रास्ते में ही पूज्य भाई साहब "कुंवर रामसिंहजी" (इसी नाम से परमपूज्य लालाजी महाराज उन्हें संबोधित किया करते थे) ने प्रस्ताव दिया कि भोर का समय है, क्यों न ऐसे रास्ते से चला जाय जिस पर डॉ. हरफूलसिंहजी का घर पड़ता हो, उनसे कुछ भजन सुने जायें, वे बहुत भक्ति-भाव और बुलंद आवाज़ में हिंदी और मारवाड़ी भजन गाया करते थे । हम सब लगभग पांच बजे उनके घर पहुँच गए, भजन सुने, कुंवर रामसिंहजी साहब ने उनकी व्याख्या की ।

डॉ. चन्द्र गुप्ता कुंवर रामसिंहजी साहब के पास रोजाना हाज़िर होते थे । उनसे वहीं मुलाकात हुई और फिर मुलाकात का सिलसिला बढ़ता ही चला गया । वे महात्मा राधा मोहन लालजी साहब के द्वारा दीक्षित थे परन्तु ठाकुर रामसिंहजी साहब के वे परम कृपा-पात्र थे । जयपुर से कानपुर वे जब-जब महात्मा राधा मोहन लालजी साहब के पास जाते, जर्नी ब्रेक कर के फतेहगढ़ हमारे पास अवश्य रुकते । हमारे व उनके मिलन का सिलसिला निरंतर अबाधित रूप से चला आ रहा है । उन्हीं की

खुशबु और गुणों से संपन्न उनकी संताने आज हमारे परिवार का अभिन्न अंग हैं, यह उन्हीं के प्रदत्त संस्कारों का सुफल है ।

हमारे उपरोक्त प्रवास की स्मृतियाँ अभी भी ज्यों-की-त्यों तारो-ताजा हैं । मैं अनुभव करता हूँ कि आदरणीय भाई साहब कुंवर रामसिंहजी ने जयपुर में जो बगीचा लगाया था, डॉ. चन्द्र गुप्ताजी उसकी उत्कृष्ट कृति कहे जा सकते हैं ।

विनीत

दिनेश कुमार सक्सेना

श्रद्धा-सुमन

डॉ. चन्द्र गुप्ताजी से मेरी मुलाकात 1975 में हुई । मेरी छोटी पुत्री अनीता का विवाह उनके पुत्र राजेन्द्र से इस मुलाकात का कारण रहा । यूँ तो यह एक सांसारिक रस्म थी और इसमें साधारणतया सम्बन्धियों से सांसारिक औपचारिकताओं और आचरण की ही अपेक्षा की जा सकती है, लेकिन वे इस मामले में एक अलग ही व्यक्ति थे । संसार में रहते हुए भी जैसे इस संसार के नहीं थे । सांसारिक व्यवहार की सारी जिम्मेदारी उन्होंने अपनी धर्मपत्नी पर छोड़ रखी थी और वे स्वयं कहीं और अपने गुरु महाराज के ख्याल में मग्न रहने वाले एक सच्चे ह्रदय के सरल व्यक्ति थे, जो अपनी बात के पक्के थे । मेरे परिवार के बच्चे भी उन से और उनके सत्संग से बहुत प्रभावित रहे । मैंने भी उनके गुरु महाराज महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब के विषय में 'प्रेम प्रवर्तक सूफी' पुस्तक में पढ़ा और मुझे उन्होंने बहुत प्रभावित भी किया ।

मुझे बहुत प्रसन्नता है कि उनकी सौवी जन्म तिथि पर उनकी स्मृति में यह पुस्तक प्रकाशित हो रही है । परमात्मा हमें उनके दिखाए मार्ग पर चलने की तौफिक अता करे ।

- महावीर प्रसाद

किसी भी गृहस्थ सूफी-संत की अध्यात्म की गहराई ज्ञात करना, एक साधारण मनुष्य के लिये बहुत ही दुष्कर कार्य है । फिर ऐसे संत जो गुरु-परम्परा एवं गुरु की कृपा के पूर्ण दास रहें हों, और भी कठिनतम है । इस प्रसंग में मैं चर्चा करना चाहूँगा डॉ. चन्द्र गुप्ता साहब की जो इस सिलसिले के अपने गुरु-भगवान की पूर्ण कृपा एवं आदेश प्राप्त सूफी-संत थे ।

सूफी-संत परम्परा का उद्‌गम कब कहाँ से हुआ, इस सम्बन्ध में विभिन्न मत हो सकतें हैं, मगर यह सर्वविदित-सत्य है कि यह विद्‌या मुसलमानों से दैविक आदेश से हिन्दुओं को प्राप्त हुई और हिन्दुओं में इसके प्रथम पात्र थे, परमसंत श्रीमान लालाजी महाराज (श्री रामचन्द्रजी महाराज), जिन्होनें हजारों शिष्यों में यह ज्ञान बांटा, जो आज भी विश्व के अनेक देशों में इस कार्य में लगे हुए हैं । यह परम्परा परमसंत श्रीमान रामसिंहजी थानेदार साहब को श्रीमान लालाजी महाराज से सीधे प्राप्त हुई । इसी क्रम में यह परम्परा उन्हीं के परिवार से डॉ. चन्द्र गुप्ता को प्राप्त हुई ।

परमसंत श्रीमान रामसिंहजी साहब ने पुलिस विभाग में थानेदार के पद पर रहते हुए भी अपनी सादगी, कर्तव्यनिष्ठा एवं पूर्ण ईमानदारी से अपने कर्तव्य को निभाते हुए अपने सभी कार्य और अपना सर्वस्व अपने गुरु-भगवान को अर्पित कर स्वयं को छिपाए रखा । श्रीमान राधा मोहन लालजी साहब का श्रीमान रामसिंहजी साहब को यह संकेत था कि वे डॉ. चन्द्र गुप्ता की रूहानी परवरिश कर इस रास्ते पर आगे बढाएं । इसीलिए ठाकुर प्रभु डॉ. चन्द्र गुप्ता को गुरु-भाई की इज्ज़त देते थे । इस दास को भी डॉ. चन्द्र गुप्ता ही सिटी पैलेस ठाकुर प्रभु के दरबार में ले गए तथा इस दास को भी ठाकुर प्रभु की कृपा प्राप्त हुई जो आज भी इस दास के परिवार पर पूर्ण रूप से बरस रही है ।

यूँ तो डॉ. चन्द्र गुप्ता महालेखाकार कार्यालय में अधीक्षक पद पर कार्यरत थे परन्तु आपको होमियोपैथी में प्रारंभ से ही विशेष रूचि थी । आप होमियोपैथी के मान्यता प्राप्त चिकित्सक थे तथा विभाग से भी आपको प्रैक्टिस करने की इज़ाज़त प्राप्त थी, परन्तु आपने कभी भी इसे व्यवसाय नहीं समझा । कार्यालय समय के पश्चात सांय आपकी क्लिनिक तीन-चार घंटों के लिए खुलती थी तथा सभी मजहबों के मरीज इसका लाभ प्राप्त करते थे । यहाँ तक की आपको कैंसर, ह्रदय रोग तथा

अस्थमा आदि रोगों के उपचार में विशेष दक्षता प्राप्त थी । गुरु-भगवान का नाम लेकर जिस रोगी को जो भी दवा दे दी, वही उसके लिए रामबाण सिद्ध हुई और वह डॉ. साहब के गुणगान करता चला आता था । आज भी आपके परिवार द्वारा पुराने फार्मूलों का फायदा जनता को दिया जा रहा है ।

लगभग 22 वर्षों तक मैंने डॉ. चन्द्र गुप्ताजी को काफी नजदीक से जानने की चेष्टा की । अपने गुरु-भगवान के आसरे रहते हुए उन्होंने अपनी सभी पारिवारिक जिम्मेदारियों का वहन किया, जिसमे उनकी धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग रहा । बड़ा परिवार, सभी की शिक्षा, विवाह आदि का भार और अन्य सभी सामाजिक जिम्मेदारियां आपने अपने वेतन से ही पूरी कीं । सभी कार्यों का श्रेय वे सदैव अपने गुरु-भगवान को देते थे । कितने ही साधक आपके सम्पर्क में रहे जिन्हें वे ध्यान तथा प्रेम का पाठ सिखाते रहे, कुछ को तो आप ध्यान की कई सीढियाँ चढ़ा गए । आपका सारा जीवन सादगी व प्रेम से भरा रहा, किसी भी लाग-लपेट से कोसों दूर, अपने गुरु-भगवान में पूर्णतया लीन ।

मेरा परिचय 1968 के मध्य इस परिवार से एक विलक्षण घटना-क्रम के द्वारा हुआ । डॉ. साहब की छोटी पुत्री विवाह योग्य हो चुकी थी और उन्हें इसकी कुछ चिंता रहती थी । एक दिन आपने अनायास ही इसका जिक्र परमसंत ठाकुर रामसिंहजी के समक्ष किया तो महाराज ने फ़रमाया "डॉ. साहब योग्य वर आपके घर पर ही आ जायेगा ।" वैश्य परिवार में ऐसा होना साधारणतया काफी कठिन है पर हुआ ऐसा ही और गुरु-भगवान का कथन पूर्णतया सत्य साबित हुआ ।

डॉ. साहब अपने गुरु-भगवान में 24 घंटे लीन रहते थे । इसका एक छोटा सा उदाहरण स्वयं मेरे साथ घटी घटना है । अक्टूबर 1968 में डॉ. साहब की छोटी पुत्री से मेरा विवाह संबंध तय हो गया और कुछ रस्म भी हो गयी थी तथा विवाह की तिथि फरवरी 1969 में निश्चित हुई थी । दिसम्बर 1968 में एक सांय चाँदपोल बाज़ार में मुझे डॉ. साहब मिल गए, मैंने आदरपूर्वक उन्हें नमन किया और कुछ क्षण रुका तो डॉ. साहब ने फ़रमाया-"मैंने आपको पहचाना नहीं ।" मैं स्तब्ध था की वे अपने होने वाले दामाद को नहीं पहचान रहे थे । मैंने अपना परिचय दिया तो वे हैरान और थोडा परेशान लगे और फिर वे बोले "कँवर साहब मेरे से ऐसी भूल कैसे हुई ?" शादी के पश्चात भी यदा-कदा जब इस बात का जिक्र आ जाता तो वे कहा करते कि मेरे तो सारे काम गुरु-भगवान भरोसे ही हुए ।

दुनियां में प्रचलित सभी साधना-पद्धतियों में सूफी-मार्ग ही इतना सीधा-सरल है जिसमें साधक को स्वयं कुछ नहीं करना होता, गुरु-भगवान ही उसे प्रेम व समर्पण के मार्ग पर बढ़ा ले जातें हैं । उसे तो उस मार्ग पर गृहस्थी एवं दुनियादारी निभाते हुए सदैव अपने गुरु-भगवान का स्मरण करना है तथा सभी कार्य उनके द्वारा हो रहें हैं यह भाव मन में रखना है । मेरा अनुभव भी यही कहता है कि डॉ. चन्द्र गुप्ता साहब इस सूफी परम्परा के विलक्षण एवं आलौकिक व्यक्तित्व के धनी रहे हैं ।

- सम्बन्ध भूषण मित्तल

परम पुज्य गुरुदेव डॉ. चन्द्र गुप्ता साहब के सत्संग में शामिल होने का सौभाग्य मुझे मेरे सहकर्मी श्री दुर्गादानजी चारण साहब जो ऐ. जी. ऑफिस में मेरे ही अनुभाग में कार्यरत थे की कृपा से मिला । एक बार 14 जनवरी को वे ऑफिस से सुबह निकल कर शाम को वापस लौटे । घर पर सब कुशल-मंगल है पूछने पर उन्होंने बताया की वे सांगानेर संत-थानेदार ठाकुर रामसिंहजी साहब के उर्स में शामिल होने गए थे और फिर उन्होंने मुझे डॉ. चन्द्र गुप्ता साहब के बारे में बताया । मेरे निवेदन पर उन्होंने अगले रविवार मुझे उनके पास ले जाने का प्रोग्राम बनाया । डॉ. चन्द्र गुप्ता साहब तब बाबा हरिश्चंद्र मार्ग पर रहते थे और मैं भी थोड़ी दूर इंद्रा मार्केट के पास किराये के मकान में रहता था ।

चारण साहब के साथ मैं प्रात: ही डॉक्टर साहब के पास चला गया । उन्होंने मुस्कुराकर मेरा स्वागत किया । साधारण घर, कहीं कोई दिखावा नहीं । मुझसे मेरे परिवार के बारे में और क्या कोई साधन-भजन करता हूँ पूछा और फिर ध्यान के बारे में बताने लगे । कहा की शांत मन से तुम्हें जो सबसे प्रिय हो चाहे कोई देवता हो या मनुष्य उसका दिल में ख्याल कर बैठ जाओ । मैं श्री दुर्गादानजी की देखा-देखी आलथी-पालथी लगाकर ध्यान के लिए बैठ गया । करीब आधा घंटे ध्यान चला, मेरे मन में विचार आते-जाते रहे । ध्यान समाप्त होने पर मैंने उनसे निवेदन किया तो वे बोले कि आते रहना सब ठीक हो जायेगा । उसके बाद मैं अक्सर शाम को उनके पास ध्यान के लिए चला जाता । धीरे-धीरे एकाग्रता बढ़ने लगी और ध्यान में सघनता भी बढ़ने लगी । ध्यान में विचारों का आना-जाना भी कम हो गया । बाद में ऑफिस में भी लंच टाइम में उनके साथ ध्यान में बैठने लगा । साथ में श्री कृष्ण गोपाल खुराना और श्री रामशरण मेड़तवाल भी बैठने लगे । डॉक्टर साहब के रिटायर होने तक ऑफिस के रिकॉर्ड रूम में ध्यान का यह सिलसिला चलता रहा । ऑफिस के लोग आश्चर्य करते कि ये लोग चुपचाप बैठकर क्या करते हैं? बाद में मैं उनके घर के बिलकुल नजदीक पट्टियों के घेरे वाले मकान में रहने लगा । निकटता और बढ़ गई । इसके बाद रविवार सुबह ध्यान प्रारंभ किया गया ।

सत्संग में डॉक्टर साहब किसी एक विषय पर कुछ बतलाते फिर चारण साहब अपनी मधुर आवाज़ में कोई भजन सुनाते और फिर सब लोग ध्यान में बैठ जाते । डॉ. चतुर्भुज सहायजी के शिष्य श्री सागरचन्दजी वकील साहब भी ध्यान में आया करते थे । धीरे-धीरे ध्यान में ऐसी स्थिति हो गयी की डॉक्टर साहब का ख्याल आते ही कपाल में स्पंदन का आभास होने लगता और सिर भारी लगने लगता । मैंने अपनी इस स्थिति के बारे में डॉक्टर साहब को बताया तो वे बोले धीरे-धीरे सब सामान्य हो जायेगा ।

डॉक्टर साहब धीर-गंभीर स्वभाव के व्यक्ति थे और नियमित ध्यान करने पर जोर देते थे । स्वयं अपना उदहारण देकर कहते थे की मैं नियमित रूप से गुरु भगवान ठाकुर रामसिंहजी साहब के पास हाज़िर होता था और यदि कभी ऐसी स्थिति बनी कि मैं हाज़िर नहीं हो पाता तो वे स्वयं कृपा कर घर पर दर्शन देने पधार जाते । ऐसा ही जुड़ाव वे हमसे चाहते थे और कहते थे कि ध्यान में बैठने से गुरु और ईश्वर का सान्निध्य मिलता है और चित्त शुद्ध होता है ।

डॉक्टर साहब से जुड़ाव का एक लाभ यह मिला की वहीँ पास में खेजड़े के रास्ते पर रहने वाले पीर साहब (हज़रत मौलवी अब्दुल रहीम साहब) के पास हाज़िर होने का सौभाग्य भी मुझे मिला । वे डॉक्टर साहब से बहुत स्नेह करते थे और डॉक्टर साहब उनका बहुत सम्मान करते थे । अक्सर डॉक्टर साहब उनके पास ध्यान करने के लिए जाते और मुझे भी साथ जाने का मौका मिल जाता । एक दिन केतली में चाय आई, साथ में केवल दो ही कप थे जबकि वहाँ हम चार लोग थे । पीर साहब ने पहले हम दोनों को चाय दी । मुझे संकोच हुआ पर डॉक्टर साहब के कहने पर मैंने चाय पी ली । चाय पीने के बाद मैं कप धोने के लिए उठाने लगा तो पीर साहब ने रोक लिया और उन्हीं में चाय डालकर डॉक्टर साहब वाले कप में आपने स्वयं चाय पी और मेरे वाले कप में साथ बैठे व्यक्ति को दी । बाद में डॉक्टर साहब ने बताया कि इससे पीर साहब यह इंगित करना चाहते थे की कोई भेद नहीं है । एक बार पीर साहब के गुरु भाई (हजरत सोहराब अली साहब) आये हुए थे । वे मस्जिद के ऊपर वाले कमरे में ठहरे थे । पीर साहब के आदेश पर डॉक्टर साहब उनके साथ ध्यान के लिए बैठने लगे और मुझे भी उनके साथ में बैठने का सौभाग्य मिला ।

अध्यात्मिक क्षेत्र में ही नहीं वरन सांसारिक रूप से भी डॉक्टर साहब अपने निकट जनों का ख्याल रखते थे । करौली निवासी श्री यादव साहब डॉक्टर साहब के पास अक्सर आया करते थे । वे बहुत सरल चित्त व्यक्ति थे । उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी । उनकी पुत्री के विवाह में डॉक्टर साहब करौली गए और इस बात का ध्यान रखा की विवाह में कोई बाधा ना आये । इसी प्रकार मेरी माताजी का अचानक निधन हो गया । डॉक्टर साहब पधारे तो साथ में कुछ पैसे भी लेकर आये और कहने लगे ऐसी स्थिति में जरुरी नहीं है की घर में पैसों की व्यवस्था हो । उनकी यह बात सुनकर मैं अभिभूत हो गया कि उन्हें इतनी छोटी सी बात का भी ख्याल था । ऐसे ही मेरे एक सम्बन्धी की पुत्री का विवाह अमेरिका में एक भारतीय लड़के से हुआ । लड़के का चाल-चलन ठीक ना होने के कारण वह लड़की बहुत परेशान रहती थी और पवन कुमारजी के पास ज्योतिषी सलाह के लिए आने लगी । एक दिन डॉक्टर साहब को उस पर दया आ गई । उन्होंने उसे अपने पास बुलाकर ध्यान में बैठाया और बोले मुझे जो करना था मैंने कर दिया आगे ईश्वर-इच्छा । हालाँकि इसका तत्काल तो कोई प्रभाव नहीं दिखा लेकिन एक वर्ष में ही उसका उस लड़के से तलाक हो कर वहीं एक अमेरिका-निवासी भारतीय डॉक्टर से विवाह हो गया और आज वह सुखी जीवन जी रही है । इसी तरह मुझे एक दिन एक पागल कुत्ते ने काट लिया जो बाद में मर गया । मैं एलोपैथिक डॉक्टर और आयुर्वेदिक कॉलेज के प्रिंसिपल साहब के पास भी गया लेकिन उन्होंने दवा देने से मना कर दिया । उन दिनों कुत्ते के काटने पर 14 इंजेक्शन लगते थे । एस. एम. एस. हॉस्पिटल में इंजेक्शन लगवाने वालों की लम्बी लाइन देखकर मैं बिना इंजेक्शन लगवाये निराश हो लौट आया और सीधे डॉक्टर साहब के पास उनके घर सेठी कॉलोनी चला आया । तब तक वे सेठी कॉलोनी वाले मकान में शिफ्ट कर गए थे । उन्होंने पूछा-'मालिक, क्यों परेशान हो ? मैंने अपनी सारी व्यथा कथा कह सुनाई । उन्होंने मुझे कुछ देर गौर से देखा फिर बोले मुँह खोलो और एक शीशी से कुछ गोलियां मेरे मुँह में डाल कर कहने लगे जाओ निश्चिंत हो जाओ । इसके 1-2 दिन बाद किसी सम्बन्धी की मृत्यु हो जाने के कारण मुझे दिल्ली जाना पड़ा । किसी काम से चांदनी चौंक गया था वहाँ पेट में बहुत जोर से दर्द उठा, बर्दाश्त नहीं हुआ तो मजबूरन वहीँ पटरी पर बैठ गया । कुछ देर बाद दर्द अपने आप ठीक हो गया । तब से मैं स्वस्थ हूँ ।

ऐसे ही एक बार कश्मीर जाते हुए मैं परिवार सहित वैष्णो देवी के दर्शन के लिए गया । डॉक्टर साहब ने कहा कि जाते हुए मिलकर जाना । मैं अपने परिवार को स्टेशन के लिए रवाना कर डॉक्टर साहब की आज्ञानुसार उनसे मिलकर फिर यात्रा पर निकला । ऊपर पहुँच कर मालूम चला कि दर्शन का नंबर तीसरे दिन आएगा । निराश होकर हम एक चाय वाले की दूकान पर बैठे चर्चा कर रहे थे कि एक साहब ने बताया की उनके पास एक पर्ची फालतू थी क्योंकि उनका एक ग्रुप तब तक ऊपर नहीं आ पाया था । उन्होंने वह पर्ची हमें दे दी, जिससे आराम से दर्शन हो गए । मुझे लगा हमें बेसहारा नहीं छोड़ा गया है । श्रीनगर से लौटकर डॉक्टर साहब को सब वृतांत बताया तो वे मुस्कुरा रहे थे और उनकी मुस्कराहट कोई कहानी कह रही थी ।

धीरे-धीरे समय बीत रहा था और ध्यान की प्रक्रिया चल रही थी । इसी दौरान मेरी पोस्टिंग ऑडिट पार्टी में हो गयी, जिसके कारण टूर पर जाना पड़ता था और डॉक्टर साहब से स्थूल सम्पर्क कुछ कम हो गया था । एक दिन जब मैं घर आया हुआ था, चारण साहब ने घर आकर बताया की डॉक्टर साहब एस. एम. एस. हॉस्पिटल में भर्ती हैं । मैं तत्काल उनके साथ हॉस्पिटल पहुँचा । डॉक्टर साहब बेहोशी की हालत में थे । उनकी गंभीर अवस्था देखकर मैं स्तब्ध रह गया । ऐसा लगा कि विदा का

क्षण निकट आ गया था । 17 अगस्त को उन्होंने अपना भौतिक शरीर त्याग दिया लेकिन अपनी अमिट छाप हमेशा के लिए मेरे हृदय-पटल पर छोड़ गए ।

- भारत भूषण शर्मा

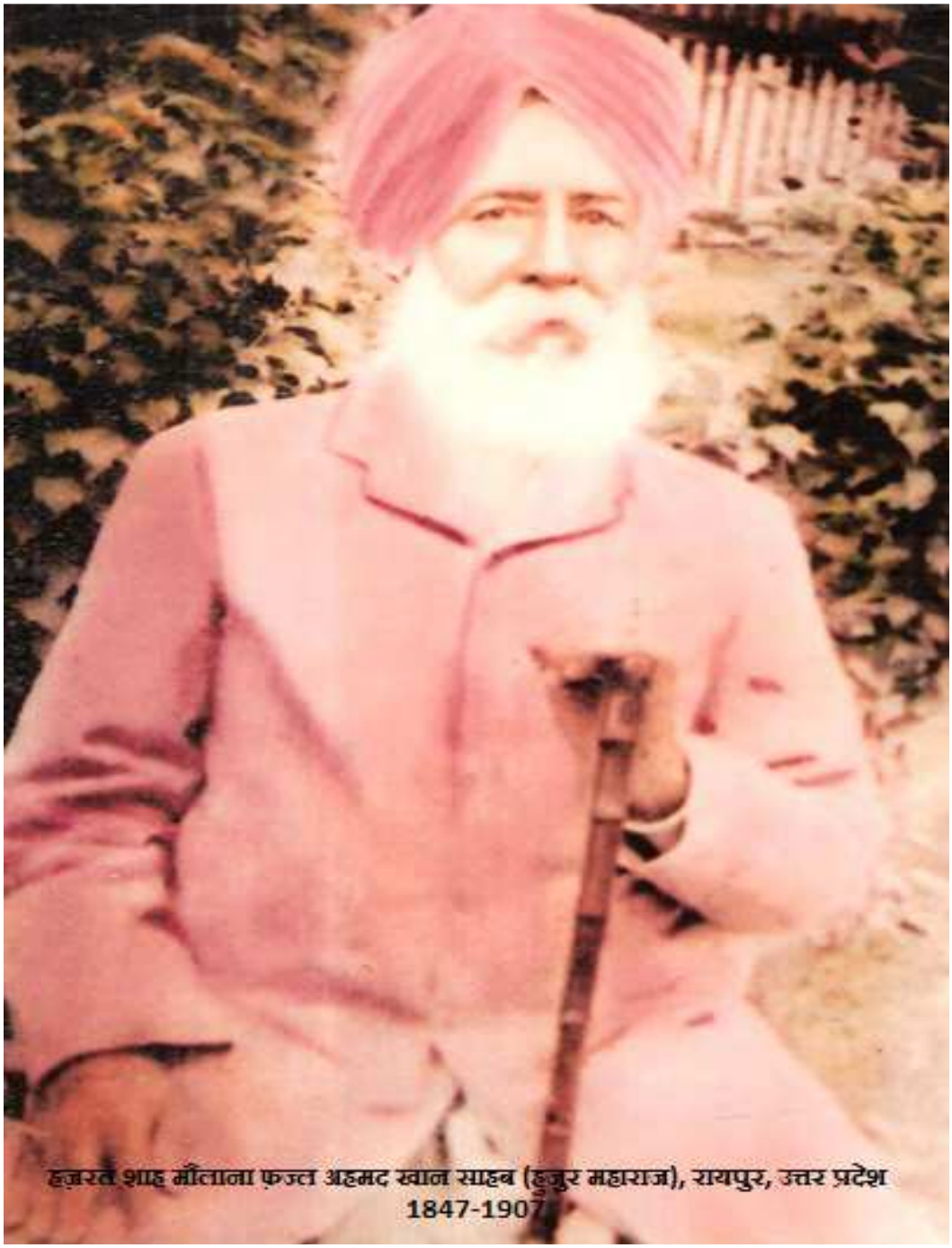

हज़रते शाह मौलाना फ़ज़्ल अहमद खान साहब (हुज़ुर महाराज), रायपुर, उत्तर प्रदेश
1847-1907

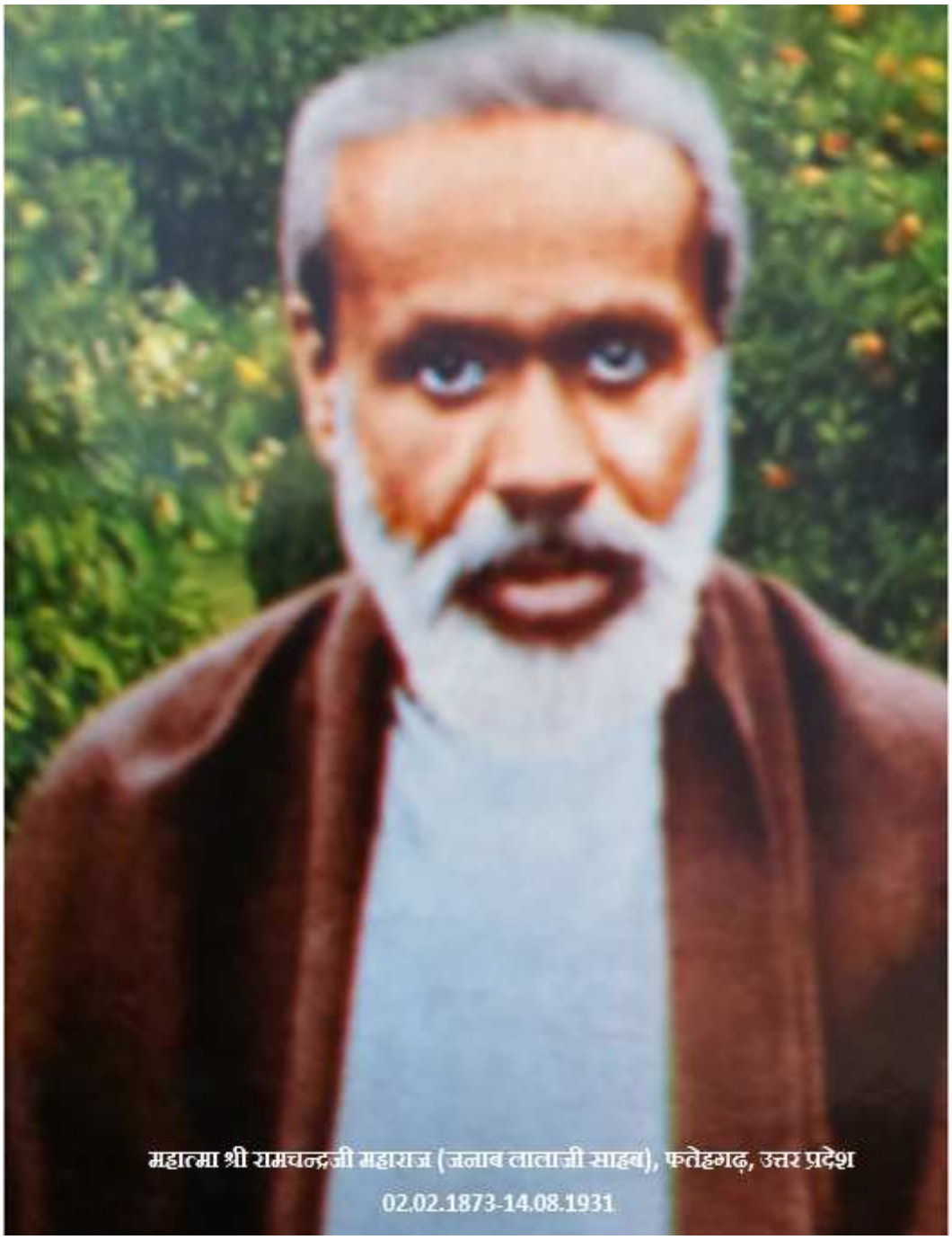

महात्मा श्री रामचन्द्रजी महाराज (जनाब लालाजी साहब), फतेहगढ़, उत्तर प्रदेश
02.02.1873-14.08.1931

महात्मा श्री रघुबर दयालजी महाराज (चच्चाजी महाराज), कानपुर, उत्तर प्रदेश
07.10.1875-07.06.1947

...त्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब (मुंशी भाई साहब), कानपुर, उत्तर प्रदेश
1960-1966

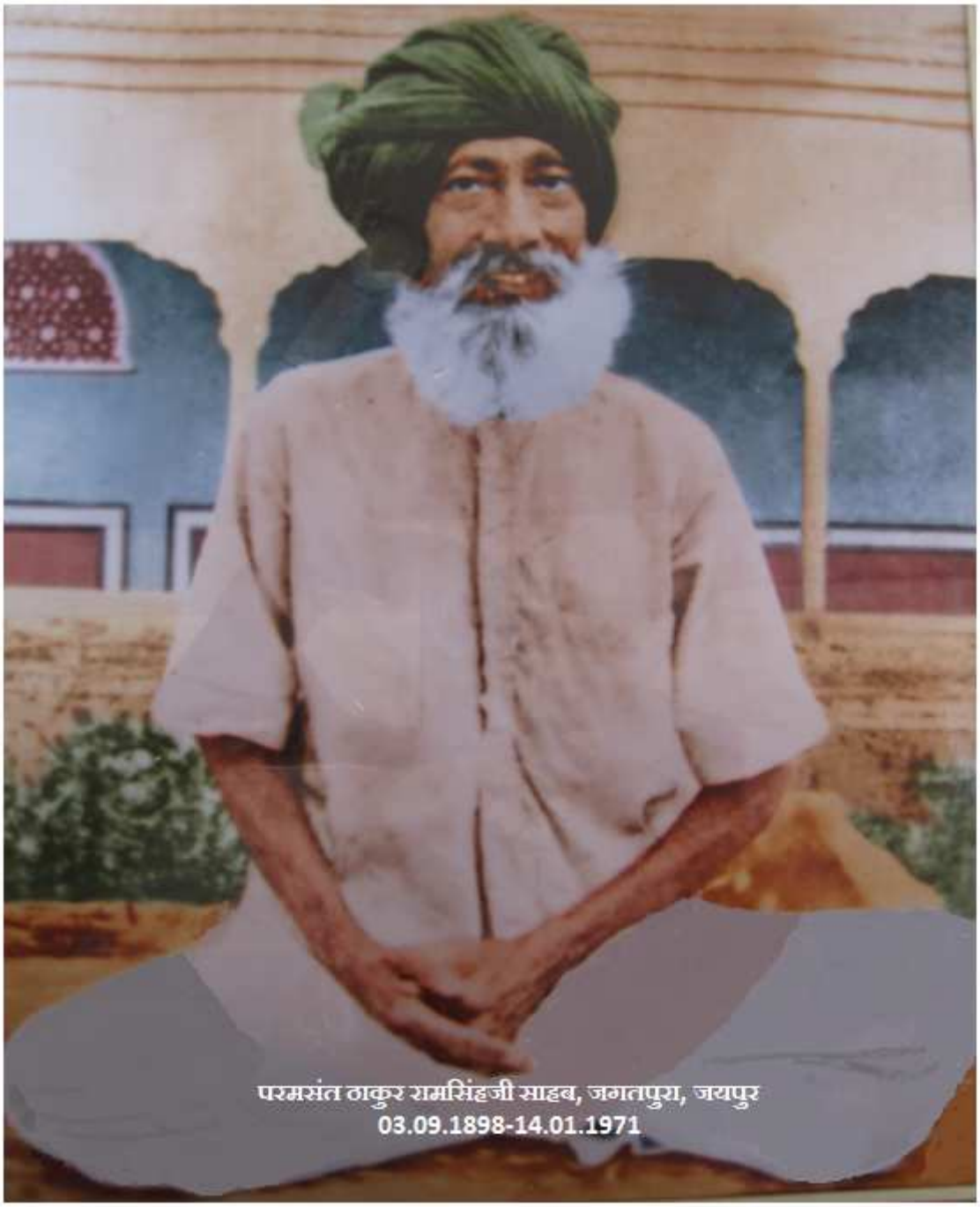
परमसंत ठाकुर रामसिंहजी साहब, जगतपुरा, जयपुर
03.09.1898-14.01.1971

महात्मा डॉक्टर चन्द गुप्ता (डॉक्टर साहब), जयपुर

12.02.1916-17.08.1991

महात्मा डॉक्टर चन्द्र गुप्ता

"वह शमा जिसे वक़्त के पूर्ण कामिल सतगुरु स्वयं अपने हाथों से रोशन करते हैं, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को आलोकित कर देती है"

अपने वक़्त के पूर्ण कामिल सतगुरु महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब (मुंशी भाईसाहब, कानपुर) ने डॉक्टर चन्द्र गुप्ता (डॉक्टर साहब, बाउजी) को सन 1958 में अपनी शरण में लेकर और बैअत कर (दीक्षा देकर) अपना शिष्य स्वीकार किया । यह सिलसिला (गुरु-शिष्य परम्परा) अनवरत रूप से चला आ रहा है । इस सिलसिला-ऐ-आलिया नक्शबंदिया के 33 वें सतगुरु बुज़ुर्ग संत हजरत अहमद अली खान साहब (जनाब खलीफा साहब, कायमगंज) के जानशीन उनके दो शिष्य हजरत मौलाना फ़ज्ल अहमद खान साहब (हुजुर महाराज, रायपुर) एवं हजरत मौलवी अब्दुल गनी खान साहब (मौलवी साहब, भोगांव) हुए । हजरत मौलाना फ़ज्ल अहमद खान साहब ने अपने शिष्य महात्मा श्री रामचन्द्रजी महाराज (जनाब लालाजी साहब, फतेहगढ़) एवं महात्मा श्री रघुबर दयालजी साहब (जनाब चच्चाजी साहब, कानपुर) द्वारा यह विद्या हिन्दुओं में पुनः प्रसारित की । हजरत मौलाना फ़ज्ल अहमद खान साहब का फरमाना था की यह विद्या (तवज्जोह द्वारा रूहानी प्रगति-शक्तिपात-अध्यात्मिक उर्जा का प्रसारण) हिन्दुओं की है जो अब उनमे पुनः प्रसारित की जा रही है ।

महात्मा श्री रामचन्द्रजी महाराज ने अपना प्रेम, भक्ति एवं समस्त सामर्थ्य और फनाफिल मुरीद (गुरु का शिष्य में लय होना) का दर्जा अपने प्रिय शिष्य परमसंत ठाकुर रामसिंहजी साहब (जगतपुरा, जयपुर) को बख्शा और पूर्ण गुरु पदवी अपने छोटे भाई महात्मा श्री रघुबर दयालजी साहब को दी । महात्मा श्री रघुबर दयालजी साहब एवं हजरत मौलवी अब्दुल गनी खान साहब ने पूर्ण गुरु पदवी महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब को बख्शी । जैसा की आगे विदित होगा महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने दीक्षा देने के बाद डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को रूहानी पोषण के लिए परमसंत ठाकुर रामसिंहजी साहब के हवाले कर दिया । इस प्रकार डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को हजरत अहमद अली खान साहब के दोनों जानशीन हजरत मौलाना फ़ज्ल अहमद खान साहब एवं हजरत मौलवी अब्दुल गनी खान साहब की निस्बत परमसंत ठाकुर रामसिंहजी साहब एवं महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब की कृपा एवं माध्यम से प्राप्त हुई ।

बचपन से ही डॉक्टर चन्द्र गुप्ता का रुझान अध्यात्म की ओर था और वे साधू-संतों की ओर आकर्षित रहते थे । सेवा भाव भी उनमे शुरू से ही था एवं रुग्न या घायल पशु-पक्षियों की देखभाल करना या दवा देना उनके स्वभाव में शामिल था ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता का जन्म 12 फरवरी 1916 को महम, जिला रोहतक, में लाला निरंजन लालजी के घर में हुआ । हालाँकि लाला निरंजन लालजी राजा टोडरमल के वंशज थे पर कालांतर में राज-पाट सब जाता रहा । उनके परिवार को रायबहादुर रायचौधरी कानूनगो की उपाधि मिली हुई थी और उनका परिवार 'कानूनगो' परिवार के नाम से जाना जाता था । महम में उनके पास बहुत जमीन-जायदाद थी लेकिन उचित संरक्षण नहीं मिलने के कारण वह सब अन्य लोगों ने अपने कब्ज़े में ले ली । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की पूज्य माताजी श्रीमती पार्वतीदेवी एक पतिव्रता एवं सती स्त्री थीं । वे हनुमानजी की भक्त थीं और रामायण का पाठ किया करती थीं । उन्हीं के दिए संस्कारों से उनके परिवार में अध्यात्म की यह पावन धारा बहने लगी । एक बार लाला निरंजन लाल रात में एक गहरे गड्ढे में गिर गए जिससे बाहर निकलने का कोई उपाय नहीं था । रात भर श्रीमती पार्वतीदेवी

रामायण पढ़ती रहीं और परमात्मा से उनकी कुशलक्षेम के लिए प्रार्थना करती रहीं । सुबह के समय लाला निरंजन लालजी को ऐसा लगा जैसे किसी अज्ञात शक्ति ने उन्हें गड्ढे से बाहर उछाल दिया हो और वे सकुशल अपने घर लौट आये ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता अपने परिवार के सबसे छोटे पुत्र थे । उनके दो बड़े भाई श्री कल्याण चन्दजी एवं श्री पूर्ण चन्दजी और दो बहनें श्रीमती विद्यावती एवं इंछिरावती थीं । श्री कल्याण चन्दजी स्वयं एक महात्मा पुरुष थे और पूर्व जन्मों से योगसाधना करते आ रहे थे । उन्होंने बहुत ही अल्प आयु में अपना शरीर त्याग दिया । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता जब लगभग दो वर्ष के थे, उन्हें श्री कल्याण चन्दजी की गोद में बैठाया गया । श्री कल्याण चन्दजी ने आत्मिक तौर पर उन्हें स्वीकार किया और कहा कि तुम मेरे हो । उनकी बड़ी बहन श्रीमती विद्यावती के बारे में बचपन में ही एक साधू ने यह कहा था कि वे पूर्व जन्म में एक योगिनी थी लेकिन इस जन्म में उस मार्ग को छोड़ वे गृहस्थ होकर रहेंगी और उनके कई बच्चे होंगे । उनके बारे में साधू की यह भविष्यवाणी सही साबित हुई । उनका विवाह श्री रामस्वरूपजी के साथ हुआ जो राधास्वामी पंथ के अनुयायी एवं आचार्य थे और सत्संग करवाया करते थे । श्रीमती विद्यावती के पूर्व जन्म का यह प्रभाव था कि उनके मुहं से निकली बात सही साबित और घटित हो जाया करती थी ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता का बचपन कठिन परिस्थितियों में गुजरा । जब वे छोटे ही थे, उनकी माता श्रीमती पार्वतीदेवी का देहांत हो गया और पिता लाला निरंजन लालजी का भी आय का कोई निश्चित साधन नही था, उनकी नौकरी छूटती और जल्दी-जल्दी बदलती रहती थी । एक वक़्त वे धौलपुर राजघराने में उच्च पद पर थे, लेकिन राजघराने में एक अप्रिय घटना होने से उन्हें रातों-रात सब छोड़-छाड़कर वहाँ से आना पडा । श्री कल्याण चन्दजी का देहांत भी जब डॉक्टर चन्द्र गुप्ता आठ वर्ष के थे हो गया था अत: बचपन के कुछ वर्ष डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने अपने बड़े भाई श्री पूर्ण चन्दजी के परिवार के साथ रहकर गुजारे । उनका कुछ समय लाहौर में भी गुजरा जहाँ उन्होंने कुछ समय फेरी पर कपडे बेचकर भी बिताया । लगभग बीस वर्ष की अवस्था में उनका विवाह श्रीमती दर्शना देवी से हुआ, जिनकी आयु उस समय करीब तेरह वर्ष थी ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के विवाह के पश्चात उनके पिता लाला निरंजन लालजी उन्हीं के साथ रहने लगे । श्रीमती दर्शना देवी ने जीवन पर्यन्त सच्चे हृदय से उनकी सेवा की । वे बताया करती थीं की शुरू में उनके श्वसुरजी के स्वभाव में कुछ उग्रता थी लेकिन धीरे-धीरे उनका स्वभाव काफी बदल गया था और वे उनकी सेवा टहल से बहुत प्रसन्न थे । वे कहा करती थीं की उनका परिवार उन्हीं के आशीर्वाद से फला फूला । लाला निरंजन लालजी ने 1946-47 के आसपास अपना शरीर त्यागा ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की शिक्षा मैट्रिक तक हुई । मैट्रिक के बाद उनकी नौकरी बीकानेर में महकमा हिसाब में लग गयी । कालांतर में इस विभाग के अन्य विभागों में बंट जाने पर उनका तबादला ऐ. जी. आफिस, जयपुर हो गया और वे सन 1949 के आसपास जयपुर चले आये और यहीं के हो रहे ।

सन 1926-27 में रोहतक में प्लेग फ़ैल गया था । तब डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की उम्र 10-11 वर्ष थी, उन्हें भी प्लेग ने अपनी चपेट में ले लिया । डॉक्टर हर घर में जाकर मरीजों को मुफ्त देख रहे थे । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को लगभग 105 डिग्री बुखार था । वे बेहोश पड़े थे, बचने की उम्मीद नहीं थी और उनकी माँ व अन्य लोग रो रहे थे । बेहोशी की हालत में उन्हें आभास हुआ की उन्हें पीठ के बल नंगा कर तलवार की धार पर लटकाया हुआ है और बहुत से आदमी लाठी लिए उन्हें मारने को तैयार खड़े हैं । कोई मदद के लिए नहीं है । इतने में कारण शरीर धारी एक संत पधारे, जिनकी शोभा

अवर्णनीय थी । उन्होंने उन्हें तलवार पर से उतार दिया और वे सब आदमी भाग गए । वे संत भी अंतर्ध्यान हो गए और अपनी याद डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के दिल में हमेशा के लिए छोड़ गए । आँख खुली तो प्लेग से छुटकारा मिल चुका था ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उन महापुरुष को हनुमानजी मानकर ध्यान करना शुरू कर दिया जो 1958-59 तक चला । बाद में उन महापुरुष द्वारा बताए अनुसार जब गुरु भगवान मिल गए तो उन महापुरुष ने निर्देश देना बंद कर दिया क्योंकि अपनी ड्यूटी उन्होंने महात्मा श्री राधा मोहन लालजी एवं ठाकुर रामसिंहजी साहब को सौंप दी थी । इससे पहले वे महापुरुष डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की साये की तरह मदद करते रहे ।

बचपन से ही डॉक्टर चन्द्र गुप्ता हनुमानजी के उपासक रहे और कई साधू-संतों के सान्निध्य का आपने लाभ उठाया । महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब से बैअत होने से पहले अध्यात्म मार्ग में उन्हें सरदार सावनसिंहजी और श्री रामसहायजी से सहायता मिली ।

करीब अट्ठारह वर्ष की आयु में (1933-35) डॉक्टर चन्द्र गुप्ता अपनी बड़ी बहन विद्यावती के साथ व्यास (पंजाब में) राधास्वामी पंथ के महापुरुष महात्मा सरदार सावनसिहजी के पास हाज़िर हुए । उन्होंने डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को पांच नाम वाला मंत्र (ज्योति निरंजन, औंकार, रारंकार, सोऽहं, सतनाम) दिया और फ़रमाया की वे आज्ञा चक्र पर गुरु के रूप का ध्यान करें । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने अर्ज़ किया कि वे अपना जन्म नाम और रूप के ध्यान में बर्बाद नहीं करना चाहते और उनसे कहा की अगर दे सकते हैं तो उन्हें अनहद नाद की बख्शीश दें । इस पर सरदार सावनसिहजी चुप हो गए । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता कभी-कभी इस मंत्र का जाप करते रहे व उन महापुरुष का जो उन्हें स्वप्न में निर्देश देते थे ध्यान करते रहे । वे पांच नाम वाला मंत्र लोगों को भी बतलाते रहे । अनहद नाद की आवाज़ महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब से बैअत होने के बाद सन 1959 में ठाकुर रामसिंहजी साहब ने उन्हें बख्शी । इसका उल्लेख उन्होंने अपनी डायरी में किया है ।

श्री रामसहायजी रामानुज संप्रदाय के मानने वाले थे और उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया । श्री रामसहायजी एक समर्पित भक्त थे और वे डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के पड़ोस में ही रहते थे और अपना अधिकांश समय वे रामायण पढ़ने में व्यतीत किया करते थे । करीब एक वर्ष तक उन्होंने डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को रामायण सुनाई और उनका विश्वास पक्का करवाया । बाद में डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने भी रामायण पाठ को अपने जीवन का एक अनिवार्य अंग बना लिया । उन्होंने अपनी डायरी में लिखा है की कई वर्षो बाद बुढ़ापे में उन्होंने संत तुलसीदास हाथरस वालों की इलाहाबाद से छपी घट रामायण पढ़ी और अनेक वाक्यात उनके गुरु भगवान की कृपा से उनके जीवन में आसानी से गुजरे ।

जयपुर में शुरुआती दिनों में वे बाबा हरिश्चंद्र मार्ग पर रहते थे । वहाँ से बाहर निकलकर चांदपोल की तरफ जाने वाले मार्ग पर हनुमानजी का एक मंदिर है । आते-जाते डॉक्टर चन्द्र गुप्ता नित्य-प्रति हनुमानजी को नमन करते । फलस्वरूप उन्हें एक सिद्धि प्राप्त हुई, उन्हें अगले दिन सट्टे में खुलने वाले नंबर का पता चल जाता था । इसका अहसास होने पर उन्होंने हनुमानजी से प्रार्थना की कि वे उस सिद्धि को उनसे वापस ले लें और उन्हें अपने सच्चे प्रेम से नवाजें । उसी दिन से उनकी यह सिद्धि जाती रही ।

यह लगभग 1953 कि बात है जो डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के दृढ़ विश्वास को दर्शाती है । उनके मझले पुत्र राजेन्द्र को जो तब लगभग दो वर्ष का था, बहुत अधिक जोर से चेचक निकल आई । वह बेहोश

हो गया और तीन दिन तक बेहोश रहा । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने जयपुर के राजवैध को अपने पुत्र को उन्हें दिखाया । देखते ही उन्होंने कहा की इसे दवा देना बेकार है, यह तो बस 3-4 घंटे का मेहमान है । सुनते ही डॉक्टर चन्द्र गुप्ता गुस्सा हो गए और बोले-'आप भी यहीं हैं और मैं भी यहीं हूँ, इसे कोई नहीं ले जा सकता ।' इतना कह उन्होंने वैधजी को विदा किया ओर वे स्वयं हनुमानजी के सामने समाधि लगाकर बैठ गए । करीब 5-6 घंटे बाद उठे, तब तक उनके पुत्र को होश आ गया था और तबियत में सुधार होने लगा था ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता एक दृढ़ चरित्र वाले और उसूलों को मानने वाले लेकिन दयालु और सरल हृदय व्यक्ति थे । कोई चीज़ उधार में खरीदना उन्हें कतई पसंद नहीं था । कोई दुकानदार गलती से कभी उन्हें ज्यादा पैसे लौटा देता तो तुरंत उसे वापस कर देते । जितनी तनख्वाह उन्हें मिलती पूरे परिवार का उसी में गुजारा होता । इस कार्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दर्शना देवी का बहुत सहयोग रहा और वे ही सारी पारिवारिक जिम्मेदारियों को संभालती रहीं । स्त्रियों की उनके दिल में बहुत इज्ज़त थी । उन्होंने अपने पुत्रों से कह रखा था की अगर तुम किसी लड़की की तरफ आकृष्ट हुए तो मैं तुम्हारी शादी उसी से करवा दूंगा, फिर चाहे वो स्वीपर ही क्यों ना हो । इसी तरह से वे अपनी बात के भी बहुत पक्के थे । इस बात का उदाहरण उनके सुपुत्र सतीश के विवाह का है । सन 1973 में डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने सेठी कॉलोनी में रहना शुरू कर दिया था । सामने के मकान में श्री रामस्वरूपज़ी अग्रवाल साहब रहते थे । उन्हें हार्ट का ऑपरेशन करवाने अमेरिका जाना था । परिवार कच्चा था और उन्हें अपनी बड़ी सुपुत्री जो विवाह योग्य हो गयी थी, की शादी की चिंता सता रही थी । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उन्हें निश्चिंत होकर जाने के लिए कहा । दुर्भाग्यवश उनका वहीँ निधन हो गया । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उनकी सुपुत्री का विवाह अपने ही सुपुत्र सतीश से करवाकर अपना वादा निभाया, जबकि तब तक उनके सुपुत्र सतीश की नौकरी भी नहीं लगी थी ।

नक्शबंदी सूफी सिलसिले में ऐसे कई उदहारण मिलते हैं जब उपयुक्त साधकों को एक से अधिक शैखों द्वारा ज्ञान प्राप्त हुआ । गुरु-शिष्य सम्बन्ध की तुलना बहुत हद तक पति-पत्नी के रिश्ते से की जा सकती है । जिस तरह पत्नी के लिए पति उसका सर्वस्व होता है, उसी तरह शिष्य के लिए उसका गुरु उसका सर्वेसर्वा होता है । फिर भी यह सत्य है की जिस तरह पति के रिश्ते के कारण ही अन्य नाते-रिश्तेदार उसकी पत्नी को अपना स्नेह और आशीर्वाद देते हैं, ठीक उसी तरह बुज़ुर्गान-ऐ-सिलसिला व अन्य संतजन अपने गुरु पर पूर्णत: आश्रित शिष्य पर उसके गुरु की निस्बत (आत्मिक सम्बन्ध) के कारण, अपनी कृपा की वर्षा करते हैं । यह सब गुरु कृपा का ही दूसरा रूप है । इस सन्दर्भ में एक सूफी महात्मा का किस्सा यहाँ कहना उचित होगा । एक बार एक सूफी दरवेश एक दूसरे सूफी महात्मा के यहाँ गया । कुछ देर बाद उसे भूख लगी तो उसने खाने के लिए कुछ माँगा । सूफी महात्मा ने उसे अपने शिष्य के साथ खाने के लिए दूसरे कमरे में भेज दिया । खाना खाने के बाद उस दरवेश ने अपने शैख़ की खानकाह की दिशा में मुँह कर उनका नाम लेकर उन्हें खाना देने के लिए धन्यवाद दिया । महात्मा के शिष्यों ने जब यह बात उन्हें बताई और कहा की यह आदमी अजीब है, खाना आपका खाता है और शुक्रिया अपने शैख़ का करता है तो उन महात्मा ने फ़रमाया की मुरीदी (शिष्यत्व) इस दरवेश से सीखना चाहिए । शिष्य के लिए जो कुछ भी और कहीं से भी मिलता है सब उसके गुरु द्वारा ही मिलता है ।

इस बात में कोई संदेह नहीं की शिष्य के लिए गुरु के प्रति एकनिष्ठ होना ही एकमात्र साधन है । शिष्य की गुरु के प्रति एकनिष्ठा उसे अन्य संत-महात्माओं का भी कृपापात्र बना देती है । ऐसा ही

कुछ डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के साथ घटित हुआ । वे महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब से बैअत हुए थे लेकिन उन्हें परमसंत ठाकुर रामसिंहजी की पूर्ण कृपा भी प्राप्त हुई जिसे उनके गुरु महाराज महात्मा श्री राधा मोहन लालजी ने बिरादराना-सुलूक का नाम दिया और ठाकुर रामसिंहजी के माध्यम से हजरत अब्दुल रहीम साहब उर्फ़ मौलवी साहब के भी वे कृपापात्र बने ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता का सौभाग्य अपने चरम पर सन 1958 में पहुँचा जब दिसम्बर माह में महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने उन्हें श्री हर नारायण सक्सेना साहब के घर पर बैअत कर सिलसिला-ऐ-आलिया नक्शबंदिया में दाखिल किया । इस सिलसिले से उनका परिचय जयपुर में महात्मा डॉ. चतुर्भुज सहायजी साहब के एक शिष्य श्री सागरचन्दजी वकील साहब के माध्यम से हुआ । महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब आसानी से किसी को बैअत नहीं करते थे । जब डॉक्टर चन्द्र गुप्ता उनसे मिलने के लिए श्री हर नारायण सक्सेना साहब के घर जा रहे थे, महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने अपने पास बैठे सत्संगी भाइयों से कहा था की आज मेरी चीज मेरे पास आ रही है, देखना मेरी क्या दुर्गति होती है । वहाँ पहुंचकर डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उनसे उन्हें अपना शिष्य बनाने की प्रार्थना की । महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने फ़रमाया की वे किसी को अपना शिष्य नहीं बनाते । उस वक़्त वे नीचे फर्श पर विराजमान थे । वे उठने लगे तो डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उन्हें उठने नहीं दिया और कहा कि जब तक वे उन्हें अपना शिष्य बनाना स्वीकार नहीं करते, वे वहाँ से उठकर नहीं जा सकते । महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने फ़रमाया ठीक है पर शिष्य बनना महंगा सौदा है । शिष्य बनना है तो कल मेरे लिए रेशमी कपडे, मिठाई वगरह लेकर आना तब मैं तुम्हें अपना शिष्य स्वीकार करूँगा । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता अपनी पत्नी से सलाह लेने घर की ओर चल पड़े । वे महीने के आखिरी दिन थे । घर में पैसों की तंगी थी । उनकी धर्मपत्नी ने उस सब सामान की व्यवस्था होने में असमर्थता जताई और बोलीं कि अगर सच्चे संत होंगे तो आपको चार आने की रेवड़ी में ही शिष्य बना लेंगे । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता अगले दिन महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब के पास हाज़िर हुए और निवेदन किया कि वे उन्हें अगली बार शिष्य बनाने की कृपा करे । कारण पूछने पर उन्होंने सच बात बता दी की पैसों का इंतजाम नहीं हो पा रहा । यह सुनकर महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब मुस्कुराए और फ़रमाया 'पहले तुम मुझे अपना बनाने के लिए कहते हो और फिर भूल जाने के लिए कह रहे हो । यह नहीं हो सकता । मुझे कुछ नहीं चाहिए । मैं केवल प्रेम चाहता हूँ । जाओ और चार आने की रेवड़ी प्रसाद के लिए ले आओ । मैं तुम्हारे लिए ही कानपुर से यहाँ आया हूँ ।' डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की खुशी का ठिकाना ना था । वे तुरंत जाकर प्रसाद और फूल माला लेकर वापिस हाज़िर हुए और उसी दिन महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब का शिष्य बनने का सौभाग्य उन्हें मिला ।

शिष्य रूप में स्वीकार होते ही महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब से डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को दो आशीर्वाद मिले । पहला कि दस वर्ष की मुसीबत एक वर्ष में कट जाये और दूसरा यह कि दिमाग का संतुलन कभी ना बिगड़े (हमेशा मन की शांति बनी रहे) । फिर दो-तीन साल बाद फ़रमाया की तुम (डॉक्टर चन्द्र गुप्ता) बुज़ुर्ग हो । सेवा मत करो । सेवा लो । यही बात परमसंत ठाकुर रामसिंहजी ने कायम रखी । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता उन्हें पानी पिलाने के लिए उठने ही वाले थे की आपने वही शब्द दोहराए की डॉक्टर साहब आप बुज़ुर्ग हैं । सेवा मत करो, सेवा लो ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब की सेवा में कुछ ही दफा हाज़िर हो सके क्योंकि महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब का निवास कानपुर में था और डॉक्टर चन्द्र गुप्ता

जयपुर में रहते थे । ऐसे ही एक मौके पर महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने आशीर्वाद दिया की उनकी भक्ति दिन-रात बढे । एक बार वे अपनी पत्नी व सबसे छोटे सुपुत्र अशोक कुमार के साथ भी कानपुर गए और महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने उनके सुपुत्र अशोक कुमार को आशीर्वाद स्वरुप अपनी ही प्लेट से खाने को कुछ दिया ।

सन 1979 में उनकी सुपुत्री कमला (श्रीमती सुषमा मित्तल) को महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने स्वप्न में दर्शन देकर फ़रमाया की 'मेरा नाम राधा मोहन लाल है और मैं तुम्हारे पिता का गुरु हूँ, तुम भी ध्यान करो ।'

जयपुर में डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के घर के पास ही इंग्लिश व फ्रेंच के शिक्षक श्री गोपालजी मास्टर साहब रहते थे जो डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की बड़ी सुपुत्री पुष्पलता एवं बड़े सुपुत्र कृष्ण कुमार को पढाया करते थे । वे एक अच्छे ज्योतिषी भी थे । उन्होंने उन्हें बताया की तुम्हरे पिता डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के हाथ में मारकेश रेखा है और वे अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहेंगे । इसी समय के आसपास महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को कानपुर बुलाया और भंडारे में शामिल होने को लिखा । पैसों की कमी होने के कारण डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने अपनी असमर्थता व्यक्त करते हुए पत्र लिखा । उत्तर में महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को एक कड़ा पत्र भेजा जिसमे लिखा था 'आपने भंडारे में शामिल होने की मज़बूरी जाहिर की है । वजह यह बताई है की कुछ कर्जा है जो मार्च तक अदा हो जायेगा । वाकई हम लोग इस कदर बचत करने वाले हैं कि जब वक़्त और रुपयों की जरुरत होती है तो धार्मिक कार्यों को बंद कर देतें हैं । हम दुनियादार वाकई दुनिया के कामों को सबसे ज्यादा अहमियत देतें हैं और इसी में खुश रहतें हैं । खुदा बचाए हमें ऐसे शैतान के धोखे से और अपनी सही राह पर चलाये । आतंरिक भंडारा एक बहुत बड़ी नियामत है, यदि जिन्दा रूह की मौजूदगी में किया जाय तो ईश्वर की कई गुना मेहरबानियाँ उस पर होतीं हैं । ऐसे मौके पर जो फायदा होता है वो दूसरे वक़्त में नहीं हो सकता । हमने असलियत की खबर आपको दे दी, जैसा मुनासिब हो वैसा करें ।' यह पत्र मिलने पर डॉक्टर चन्द्र गुप्ता पैसों का इंतजाम कर कानपुर भंडारे में शामिल हुए । रास्ते में जिस बस से वे जा रहे थे उसका एक्सीडेंट हो गया लेकिन किसी को चोट नहीं लगी । जब वे कानपुर पहुँचे उनके सिर मे तेज दर्द हो रहा था । वे सीधे महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब के सामने हाजिर हुए । वे उस समय नाश्ता कर रहे थे । अपने नाश्ते की प्लेट से ही उन्होंने कुछ डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को खाने के लिए दिया और नाश्ते के बाद आराम करने की आज्ञा दी । सत्संग में शामिल ना होने के लिए और खाने में उस दिन बनी उड़द की दाल ना खाने को कहा । शाम तक डॉक्टर चन्द्र गुप्ता बिल्कुल स्वस्थ हो गए । वे कानपुर दो-तीन दिन रुके । वापस लौटने पर उनके जीवन पर छाए खतरे का समय बीत चुका था । गुरु कृपा से इसके बाद भी कई वर्षों तक वे सकुशल जीवित रहे । यह गुरु कृपा का एक ऐसा उदहारण है, जो बताता है की पुर्ण गुरु की कृपा से मृत्यु भी उनके शिष्य का कुछ नहीं बिगाड़ सकती एवं गुरु के आदेश के बिना मृत्यु भी उसे अपने साथ नहीं ले जा सकती ।

सन 1959 में वे परमसंत ठाकुर रामसिंहजी की कृपा के पात्र बने । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता का संपर्क श्री सागरचन्दजी वकील साहब जो महात्मा श्री चतुर्भुज सहायजी के शिष्य थे और चाँदपोल बाज़ार में रहा करते थे, से था और वे उनके यहाँ सत्संग में भी जाया करते थे । श्री हरफूलसिंहजी भी सत्संग में आया करते थे । वे भी महात्मा चतुर्भुज सहायजी के शिष्य थे । आपकी आवाज़ काफी बुलंद थी और बड़े अच्छे भजन गाया करते थे, सुनने वालों के हृदय ईश्वर प्रेम से भर जाते । कई बार तो

सत्संग रात में काफी-काफी देर तक चलता रहता । एक बार श्री सागरचन्दजी वकील साहब के यहाँ सत्संग के दौरान कोई सज्जन कव्वाली गा रहे थे-'जिस दिन से देखा तुझको सनम, मेरा दिल ही दीवाना हो गया ।' डॉक्टर चन्द्र गुप्ता उस कव्वाली को सुनते-सुनते बहुत मग्न हो गए । श्री सागरचन्दजी वकील साहब उनके साथ सटकर बैठे थे, वे भी डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की इस मस्ती से अछूते ना रहे । श्री सागरचन्दजी वकील साहब कई दिनों तक रूहानी मस्ती में झूमते रहे । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता उन दिनों होमियोपैथी दवाखाना चलाया करते थे । यूँ तो वे ऐ. जी. ऑफिस में कार्य करते थे पर ऑफिस से इज़ाज़त लेकर वे लोगों को दवा भी दिया करते थे । तब उनका दवाखाना मिश्रराजाजी के रास्ते में था । एक शाम वे श्री सागरचन्दजी वकील साहब के साथ अपने दवाखाने में बैठे हुए थे की तभी अचानक ठाकुर रामसिंहजी साहब वहाँ आ पहुँचे और फ़रमाया 'डॉक्टर साहब, डॉक्टर तो बहुत मिल जाते हैं पर मरीज नहीं मिलता ।' श्री सागरचन्दजी ठाकुर रामसिंहजी साहब का तात्पर्य समझ गए । इन शब्दों का अर्थ था की सच्चे जिज्ञासुओं को संत लोग स्वयं खोजकर उनकी सहायता करते हैं । ठाकुर रामसिंहजी साहब भी स्वयं इसी उद्धेश्य से डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को आमंत्रित करने आये थे । श्री सागरचन्दजी ने डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को बताया कि ठाकुर साहब आपको निमंत्रण देकर गएँ हैं ।

हालाँकि डॉक्टर चन्द्र गुप्ता महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब के दीक्षित शिष्य थे लेकिन ठाकुर रामसिंहजी साहब स्वयं उन्हें बुलाने आये थे । अध्यात्म के उच्च शिखरों पर संतजन अपने-पराये में भेद नहीं करते, वे तो उचित पात्रों को स्वयं खोजकर उन्हें अपनी कृपा रुपी अमृत धार से सींचने के लिए तत्पर रहतें हैं । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने इस बारे में अपनी डायरी में लिखा है कि-'इसके (बैअत होने के) 5-6 माह बाद ठाकुर रामसिंहजी ने मुंशी भाईसाहब की इज़ाज़त से अपनी शरण में ले लिया ।' महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने ठाकुर रामसिंहजी के पास पत्र भेजा जिसमे लिखा था की यही बिरादराना सलूक है और इसे आगे भी निभाइए । उन्होंने यह भी लिखा की डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के लिए दोनों दर खुले रहेंगे । ठाकुर रामसिंहजी साहब ने पत्र को सीने से लगाया और डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को फ़रमाया की 'यू आर माय ब्लड नाउ' ('You are my blood now'-अबसे आप मेरा ही खून हैं) और ध्यान कराना शुरू कर दिया । महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने ठाकुर रामसिंहजी साहब के सम्बन्ध में अपने एक पत्र में लिखा है-'श्री कुंवर रामसिंहजी भक्त हैं । हमारे बड़े महापुरुषों में बैठे हुए हैं । उनकी सेवा का लाभ उठाये हुए हैं । आपका ह्रदय हर वक़्त परमात्मा के प्रकाश से लबालब भरा रहता है । पत्र व्यवहार अधिक नहीं है पर ख्याल बना रहता है । खूब गौर कर लीजिये । प्रेम कभी छिपाए नहीं रहता है ।'

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ठाकुर रामसिंहजी साहब के पास रोजाना हाज़िर होने लगे और उनका यह नियम बन गया की ऑफिस से लौटकर खाना खाकर वे ठाकुर रामसिंहजी साहब के पास सिटी पैलेस पहुँच जाते । घर गृहस्थी की सब जिम्मेदारी उन्होंने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती दर्शना देवी पर छोड़ ही रखी थी । उनके पास एक पुरानी साइकिल थी उसी से वे ऑफिस जाते थे और उसी से सिटी पैलेस भी । पुरानी होने के कारण साइकिल कुछ आवाज़ करती थी और साइकिल की यही आवाज़ उनके पहचान वालों में उनके आने का संकेत बन गयी थी ।

ठाकुर रामसिंहजी साहब का घर जगतपुरा, सांगानेर में था जो जयपुर से करीब 10-12 किलोमीटर दूर है लेकिन वे अक्सर सिटी पैलेस में ही निवास करते थे । वहाँ उनके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री हरिसिंहजी को जयपुर राज्य की तरफ से रहने के लिए स्थान मिला हुआ था, ठाकुर रामसिंहजी साहब उसी में

रहते ताकि डॉक्टर चन्द्र गुप्ता और उनकी तरह अन्य साधक उनके सत्संग का लाभ ले संके । यह संतों का स्वयं कष्ट सहकर भक्तों पर कृपा करने का एक अनुपम उदहारण है । ठाकुर रामसिंहजी साहब सांगानेर से बस में अजमेरी गेट आते और वहाँ से पैदल ही कंधे पर अपना पुलिस वाला झोला लटकाए सिटी पैलेस पधारते । हालाँकि कुछ सत्संगी भाई उनके पास बराबर आते थे लेकिन ठाकुर रामसिंहजी साहब ने स्वयं को बहुत ही गुप्त रखा और अपनी अध्यात्मिक पहुँच को लोगों पर ज़ाहिर नहीं होने दिया । बहुत कम लोग ही उनके अध्यात्मिक सागर की गहराई में गोता लगा पाने का सौभाग्य पा सके । अधिकतर लोग उन्हें एक इमानदार और कर्तव्यनिष्ठ पुलिस ऑफिसर के रूप में तो जानते थे लेकिन वे अध्यात्मिकता का अथाह समुद्र हैं गिने-चुने लोगों को ही मालूम था । वे एक ऐसे निराले संत हुए हैं जिनके बारे में चर्चा करना सत्संग है और जिन्हें स्मरण करना साक्षात् परमात्मा को अनुभूत करने सरीखा है ।

जयपुर में ही मौलवी हिदायत अली खान साहब नक्शबंदी सूफी परम्परा के एक बड़े संत हुए हैं । उनके सुपौत्र मौलवी अब्दुल रहीम साहब (पीर साहब, मौलवी साहब) भी इसी परम्परा के एक महान सूफी संत हुए जो ठाकुर रामसिंहजी साहब के समकालीन थे और देश विदेश में लोग उन्हें बहुत आदर की दृष्टी से देखते थे । ठाकुर रामसिंहजी साहब ने एक दफा डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को उनके दर्शन कर आने को कहा । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता तब बाबा हरिश्चंद्र मार्ग पर रहते थे और मौलवी अब्दुल रहीम साहब नजदीक ही खेजडे वालों के रास्ते में रहते थे । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता उनके पास हाज़िर हुए, दुआ-सलाम हुई और उन्होंने यह कहते हुए की उनके गुरु महाराज ने उनके (मौलवी अब्दुल रहीम साहब) के दर्शन की आज्ञा दी थी तुरंत लौटने की इज़ाज़त चाही । उस दिन उन दोनों के बीच कोई विशेष बात नहीं हुई और डॉक्टर चन्द्र गुप्ता मौलवी साहब के दर्शन कर वापस लौट आए ।

कुछ दिनों बाद डॉक्टर चन्द्र गुप्ता खेजडे वालों के रास्ते से गुजर रहे थे कि सामने से मौलवी साहब आते दिखाई दिए । मौलवी साहब डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को अपने साथ अपने घर लिवा ले गए और पूछा कि आज आपके गुरु महाराज की क्या आज्ञा है? डॉक्टर चन्द्र गुप्ता अपने गुरु महाराज की आज्ञा पालन करने में बहुत सावधान रहते थे और उसका दृढ़ता से पालन करते थे । पहली दफा उनके गुरु महाराज ने उन्हें मौलवी साहब के दर्शन मात्र की आज्ञा दी थी और डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उसका पालन कर दर्शन के तुरंत बाद लौटने की आज्ञा चाही थी । इस बार ऐसी कोई आज्ञा नहीं थी अत: डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने मौलवी साहब से निवेदन किया की आज उनके गुरु महाराज की तरफ से कोई निर्देश नहीं है । मौलवी साहब ने फ़रमाया 'मांगो, क्या मांगते हो?' डॉक्टर चन्द्र गुप्ता कुछ ना बोले, चुप रहे । वे अपने गुरु महाराज के सिवाय किसी अन्य से कुछ नहीं चाहते थे । मौलवी साहब ने फिर दोबारा कहा 'मांगो, क्या मांगते हो?' इस बार भी डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने जवाब नहीं दिया । तब मौलवी साहब ने तीसरी बार वही शब्द दोहराए । संत-मत में किसी संत द्वारा तीन दफा पूछने पर भी उत्तर ना देना बेअदबी समझा जाता है । जब मौलवी साहब ने तीसरी बार भी वही प्रश्न दोहराया तो डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने प्रतिप्रश्न किया, 'क्या आप मुझे जो मांगूंगा देंगे?' मौलवी साहब ने फ़रमाया, 'आज आसमान जमीन पर आ सकता है, मांगो, क्या मांगते हो?' डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उनसे दो मिनट का समय माँगा, अपने गुरु महाराज को याद किया और मौलवी साहब से निवेदन किया, 'यदि आप मुझे देना ही चाहते हैं तो मुझे अपने गुरु का प्रेम बख्शें ।' यह उत्तर सुनकर मौलवी साहब बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को अपने सीने से लगाकर कहा, 'आज से मैं भी तुम्हारा गुरु हूँ ।' मौलवी साहब ने केवल डॉक्टर चन्द्र गुप्ता पर ही नहीं वरन उनके पूरे

परिवार भी अपनी कृपावृष्टि की । अन्य सत्संगियों को भी जिन्हें डॉक्टर चन्द्र गुप्ता मौलवी साहब के पास ले गए, मौलवी साहब ने अपनी कृपा से धन्य किया ।

मौलवी साहब एक बार जब वे सूरत गए हुए थे डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के मंझले पुत्र राजेन्द्र के निवास पर भी पधारे और उससे श्रीमद्भगवतगीता के सरल भाषा में काव्यानुवाद से कुछ आशार (पद) सुनाने के लिए कहा और फिर फ़रमाया हम भी आप से कुछ काम करवाएंगे । यह काम कुछ वर्षों बाद पवित्र क़ुरआन का श्रीमद्भगवतगीता के काव्यानुवाद की तर्ज़ पर काव्यानुवाद करने के रूप में परिणीत हुआ, जो उन्हीं की कृपा से मात्र चालीस दिनों में ही पूरा हो गया ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने अपनी डायरी में लिखा है की ठाकुर रामसिंहजी साहब ने 'उस रोज से (महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब का पत्र मिलने के दिन से) मुझे विशेष तवज्जोह देना शुरू कर दिया । पहले मुझको मुंशी भाईसाहब (कानपुर वालों का घर का नाम) में लय करवाया और कहते थे की तुम मुंशी भाईसाहब बन गए । बाद में कानपुर पत्र लिखकर मुझे इज़ाज़त दिलवाई । फिर बाद में 1970 में हुक्म फ़रमाया जो काम मेरे मरने के बाद करना है सो अब करो ।' डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने अपनी डायरी में यह भी लिखा है की मुझे महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने जो हद-बेहद के दर्जे को पार किये हुए थे और बड़े जलाली थे बाकायदा बैअत करके ठाकुर रामसिंहजी साहब के जेरे साया रखा । ठाकुर रामसिंहजी साहब शांति के अवतार थे । आपने मेरा कल्ब जाकिर किया और बड़ा कष्ट उठाकर इल्लत-जिल्लत-किल्लत के महीन मरहलों से मुझे पार कराया । मैं ज्यादातर जलाल की हालत में रहा, जिस की वजह से मैं बदनाम भी रहा । आपने अपनी जिन्दगी में हजरत अब्दुल रहीम साहब जयपुरी की खिदमत में रखा । आप ने मेरी बड़ी मदद की और गुरु पर विश्वास पक्का कराया और समझाया की गुरु की असल खिदमत यह है की जैसे तुम्हारा कल्ब जाकिर हुआ, उसी तरह औरों का भी कल्ब जाकिर करके तालिब को अपने गुरु के हवाले कर दो और खुद परदे में रहो । सिद्धियों से बचो और खुद तकलीफ उठाकर दूसरों को राहत पहुँचाओ । दिखावे से बचो ।

इससे साफ जाहिर होता है की अध्यात्म के उच्च शिखर पर पहुँचे संतों के लिए अपने-पराये का भेद मायने नहीं रखता, वे तो उचित पात्रों की सहायता को तत्पर रहतें हैं और इसे अपना कर्तव्य मानते हैं । जात-पात, देश, धर्म उनकी निगाहों में कोई मायने नहीं रखता । उनके प्रेम का झरना निर्बाध रूप से बहता रहता है जिसकी एक बूँद भी सच्चे साधक को आनंद के सागर में डुबो देने के लिए पर्याप्त होती है ।

ठाकुर रामसिंहजी साहब के रामगंज, जयपुर के सूफी संत बाबा अल्लाह जिलाय के साथ भी बड़े अच्छे सम्बन्ध थे । हाजी बाबा बगदादी की भी उन दिनों काफी चर्चा थी और हाजी भाई अब्दुल्ला शाह और अहमद शाह ठाकुर रामसिंहजी साहब से उम्र में बड़े होने पर भी, उनका बहुत आदर करते थे और उनका आगे बढ़कर स्वागत करते और अपने साथ अपने आसन पर बिठलाया करते थे । एक बार ठाकुर रामसिंहजी साहब डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को अपने साथ किसी गाँव में सत्संग के लिए ले गए । सत्संग रात भर चलना था । रात 12 बजे करीब डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को नींद आने लगी तो ठाकुर रामसिंहजी साहब ने उन्हें ऊपर छत पर जाकर सो जाने के लिए कहा । लगभग 2 बजे जब उनकी आँख खुली तो उन्होंने देखा ठाकुर रामसिंहजी साहब स्वयं उन्हें चादर ओढाने के लिए ऊपर छत पर आये हुए थे और ठाकुर साहब को ऊपर जाते देख वह संत भी जिनके यहाँ सत्संग हो रहा था उनके पीछे-पीछे चले आये । उन्होंने डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को कहा, 'डॉक्टर साहब आप बहुत भाग्यशाली हैं ।

ठाकुर साहब आपको इतना प्यार करते हैं कि और सबको नीचे छोड़ वे आपको चादर ओढ़ाने स्वयं ऊपर आये हैं ।' इसके बाद उन तीनों का सत्संग ऊपर छत पर ही चलता रहा ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की बड़ी सुपुत्री के विवाह के अवसर पर ठाकुर रामसिंहजी साहब ने फ़रमाया था कि 'डॉक्टर साहब जरुरत हो तो आप मेरे खेत बेच दीजिये' और डॉक्टर चन्द्र गुप्ताजी का जवाब था कि महाराज जब आप मेरे हैं तो मुझे और किसी चीज की जरुरत नहीं है, आप की कृपा ही मेरे लिए सब कुछ है और अल्प साधनों में ही यह विवाह भलीभांति संपन्न हो गया । उम्मीद से कई ज्यादा बाराती आये लेकिन गुरु महाराज की कृपा से कहीं कोई कमी नहीं थी । इसी तरह उनकी छोटी सुपुत्री के विवाह पर डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने ठाकुर रामसिंहजी साहब को विवाह में घर पधारने के लिए आग्रह किया तो ठाकुर रामसिंहजी साहब ने फ़रमाया की 'किसी कोने में खड़े होकर हम भी दुल्हेराजा को देख लेंगे ।' यह शादी भी भलीभांति संपन्न हुई और दुल्हेराजा को उन्होंने देखा ही नहीं बल्कि जैसा कि आगे लिखा है डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के साधिकार अनुरोध पर उन्हें अपना भी बना लिया ।

शुरुआती दिनों में ठाकुर रामसिंहजी साहब ने डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को आगाह किया था कि वे उनके बारे में अन्य लोगों को नहीं बताएँ । लेकिन डॉक्टर चन्द्र गुप्ता उनके पास कई लोगों को ले गए । एक दिन जब डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ठाकुर रामसिंहजी साहब के पास सिटी पैलेस हाज़िर हुए तो ठाकुर रामसिंहजी साहब नीचे फर्श पर विराजमान थे और पास ही एक कुर्सी रखी हुई थी । ठाकुर रामसिंहजी साहब ने उन्हें कुर्सी पर बैठने के लिए इशारा किया । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता एक क्षण के लिए कुर्सी पर बैठे और तुरंत उतरकर नीचे फर्श पर उनके सामने बैठ गए । ठाकुर रामसिंहजी ने पूछा 'डॉक्टर साहब मैंने आपको कुर्सी पर बैठने का हुक्म दिया था, लेकिन आप उतरकर नीचे बैठ गए । बताएँ आपको क्या सजा दी जाये?' डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उत्तर दिया, 'महाराज, मैं पहले कुर्सी पर बैठा, आपके हुक्म की तामिल की, फिर क्योंकि आप नीचे फर्श पर विराजमान थे नीचे उतरकर अदब की तामिल की ।' इस उत्तर को सुनकर ठाकुर साहब ने कहा, 'डॉक्टर साहब मैंने आपको मना किया था की मेरे बारे में आप किसी को नहीं बताएँगे लेकिन आप मेरे पास इन-इन सज्जन को लेकर आये, और उन्होंने उन सब लोगों के नाम गिना दिए जिन्हें डॉक्टर चन्द्र गुप्ता उनके पास लेकर आये थे, और फिर बोले बताइए आपको क्या सजा दी जाये?' लगता था उस दिन ठाकुर साहब डॉक्टर साहब को सजा देने का मन बनाये हुए थे । डॉक्टर साहब ने सब शांति से सुना और फिर बोले महाराज सजा मुझे ही मिलेगी ना, उनको तो नहीं जिन्हें मैं आपके पास लेकर आया ? ठाकुर साहब ने कहा नहीं उन्हें कोई सजा नहीं मिलेगी । तब डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने कहा, 'सजा वो ही जो मिज़ाज़े यार में आये । लेकिन महाराज सजा देने से पहले यह सोच लीजिये जहाँ मैं हूँ वहाँ आप हो, और जहाँ आप हैं वहाँ मैं हूँ ।' यह निडर और विश्वासपूर्ण उत्तर सुनकर ठाकुर रामसिंहजी साहब बहुत खुश हुए । उन्होंने डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को अपने सीने से लगा लिया और फ़रमाया, 'डॉक्टर साहब, आज से आपके सारे गुनाह माफ़ ।'

गुरु आज्ञा का सच्चा पालन क्या है, शिष्य को यह जानना चाहिए । गुरु की आज्ञा का असली तात्पर्य ना जान केवल शाब्दिक पालन काफी नहीं है । इस सन्दर्भ में एक सूफी संत एवं एक युवक की कहानी प्रासंगिक है । एक युवक एक सूफी संत के पास गया और उनसे स्वयं को शिष्य बनाने के लिए जिद करने लगा । सूफी संत ने कहा की वह अभी शिष्य बनने के लिए तैयार नहीं है, लेकिन वह युवक ना माना । सूफी संत ने उसे अपने साथ मक्का की यात्रा पर चलने को कहा । यात्रा सुचारू रूप से चल सके इसके लिए सूफी संत ने कहा कि उनमे से एक नायक बन जाये और दूसरा उसका

अनुसरण करे । युवक ने तुरंत उन्हें नायक बन जाने के लिए कहा और स्वयं उनका अनुसरण करने को तैयार हो गया । रात्रि में वे जहाँ रुके वहाँ वर्षा होने लगी तो सूफी संत युवक पर चादर तान कर खड़े हो गए व उसे भीगने से बचाने लगे । जब युवक ने कहा कि यह तो उसे करना चाहिए तो सूफी संत बोले की वे नायक हैं और उनकी इच्छा है की युवक को भीगने से बचाएं । अगले दिन युवक ने कहा की आज नया दिन है अत: हमें अपना कार्य बदल लेना चाहिए । आज मैं नायक बनूँगा और आप मेरा अनुसरण करें । सूफी संत तुरंत सहमत हो गए । कुछ देर बाद भोजन के लिए आग जलाने हेतु वह युवक लकड़ी बीनने जाने लगा । तुरंत सूफी संत ने उसे रोकते हुए कहा कि वह ऐसा कोई काम ना करे क्योंकि अब वे स्वयं अनुसरण करने वाले थे और उनके रहते वे उस युवक को जो अब नायक था, अपनी सेवा नहीं करने दे सकते थे ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के निडर स्वभाव का पता ऐ. जी. ऑफिस की एक घटना से भी चलता है । वे तब ऐ. जी. ऑफिस में अधीक्षक पद पर थे और उनके एक परिचित श्री श्रीरामजी जो सचिवालय में कार्यरत थे उनकी सर्विस वेरिफिकेशन होनी थी । उन दिनों यह सब ऐ. जी. ऑफिस द्वारा ही होता था । श्री श्रीरामजी के बहुत प्रयास के बाद भी उनकी सर्विस का वेरिफिकेशन नहीं हो पा रहा था क्योंकि रिकॉर्ड नहीं मिल पा रहा था, जो की उन दिनों एक आम बात थी । सम्बंधित सेक्शन के अधीक्षक भी श्री श्रीरामजी को जानते थे और यह भी जानते थे की उनकी सर्विस वेरिफिकेशन हो जानी चाहिए थी क्योंकि यह सही था और उन्हें प्रमोशन भी मिल जाना चाहिए था जो इसी वजह से अटका हुआ था लेकिन वे बिना रिकॉर्ड के हिचकिचा रहे थे । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता यह सब जानते थे । उन्होंने उन साहब को एक दिन की छुट्टी पर जाने को कहा । उन साहब का चार्ज डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को मिला और उसी दिन डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने श्री श्रीरामजी की सर्विस वेरिफिकेशन कर पत्र जारी कर दिया और उसके आधार पर श्री श्रीरामजी को कुछ ही समय में अंडर सेक्रेटरी के पद पर प्रमोशन भी मिल गया ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता जिन लोगों को ठाकुर रामसिंहजी साहब के पास लेकर गए उनमे से एक श्री सम्बन्ध भूषण भी थे, जो डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के दामाद भी हैं । श्री सम्बन्ध भूषण पक्के आर्यसमाजी थे और संत-महात्माओं में उनका कोई विश्वास नहीं था लेकिन डॉक्टर चन्द्र गुप्ता क्योंकि उनके श्वसुर थे इसलिए वे उनके आग्रह पर यह सोचकर की एक बार मिलने में क्या हर्ज़ है ठाकुर रामसिंहजी साहब के दर्शन करने को तैयार हो गए । उनके मन में ढेरों प्रश्न भी थे जिन्हें वे ठाकुर रामसिंहजी साहब से पूछना चाहते थे, और कुछ आशंकाएं भी थीं । लेकिन ठाकुर रामसिंहजी साहब के सम्मुख पहुँचते ही उनका मन शांत हो गया, सभी कुछ भूलकर उन्हें असीम शांति का अहसास होने लगा । उन्होंने आगे बढ़कर ठाकुर रामसिंहजी साहब के पांव छूना चाहे तो ठाकुर रामसिंहजी साहब अपने पांव पीछे हटाने लगे । वे किसी से अपने पांव छुआना पसंद नहीं करते थे । तभी डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने कहा, महाराज इनका तो हक बनता है, ये तो आपके दामाद हैं । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की इस साधिकार बात को सुन ठाकुर रामसिंहजी साहब ने अपने पांव जहाँ थे वहीँ रोक लिए । श्री सम्बन्ध भूषणजी ने पांव छूकर ठाकुर रामसिंहजी साहब से पूछा की वे उन्हें क्या भेट दें? ठाकुर रामसिंहजी साहब ने फ़रमाया-'अजी आप देने की मत सोचो । आप तो जो कुछ ले सकते हो लेलो ।' उनका आशय अध्यात्मिक सम्पदा से था । बस तभी से श्री सम्बन्ध भूषणजी अपने गुरु महाराज ठाकुर रामसिंहजी साहब के हो रहे ।

अपने सच्चे भक्तों की साधिकार विनती को भगवान भी प्रसन्नता से स्वीकार करते हैं । महात्मा कृष्णदासजी जो महाप्रभु वल्लभाचार्य के प्रिय अनुयायी थे और श्रीनाथजी के मंदिर के अधिकारी और उनके यश के गायक व चरण सेवक, ने एक बार एक अप्सरा सी सुन्दर वारांगना को अपना पद-गायन श्रीनाथजी को समर्पित करने को कहा । उसके उद्धार का समय आ गया था । शुद्ध व पवित्र हृदय से जब वह मंदिर में उपस्थित हुई, यशोदा-नंदन के अधरों पर स्मित की मंद-मंद केलि देखकर उसका रोम-रोम सिहर उठा । उसके नयनों में गोपिजनबल्लभ समा गए । महात्मा कृष्णदासजी ने कहा तुमने आज तक संसारी लोगों को रिझाया है, आज हमारे लाला को रिझाकर अपना जीवन धन्य कर लो । वारांगना के कण्ठ से कृष्णदासजी रचित पद फूट पड़ा-

मो मन गिरधर छवि पर अटक्यो,
ललित त्रिभंग चाल पे चली के, चिबुक चारू गहि ठटक्यो,
सजल श्याम घन बरन लीन हैय, फिर चित अनत न भटक्यो,
कृष्णदास किये प्राण निछावरि, यह तन जग सिर पटक्यो।

श्रीनाथजी की कृपा दृष्टी वारांगना पर पड़ गई । कृष्णदास जैसे संत की वाणी थी, फलवती हो गई, श्रीनाथजी ने वारांगना को अपने चरणों में स्थान दे दिया । गीत समाप्त होते ही, प्रभु के अंग से एक ज्योति निकली व उसके प्राण उसमे समा गए । कृष्णदास के लाला ने उनकी भेंट स्वीकार कर ली, उनके अधिकारी भाव का उपयोग श्रीनाथजी ने स्वीकार कर लिया ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की ही तरह उनके सुपुत्र पवन कुमार भी बहुत से लोगों को सदमार्ग पर लाने के श्रेय के अधिकारी हैं । उन्होंने बहुत से लोगों को इस सत्संग से जोड़ा और उन्हें डॉक्टर चन्द्र गुप्ता एवं श्री कृष्ण कुमार गुप्ता के सत्संग में शामिल होने को प्रेरित किया । उन्हें गुरुजनों की तरफ से ज्योतिष का अच्छा ज्ञान और आत्म-प्रेरणा मिली । एक बार डॉक्टर चन्द्र गुप्ता पीर साहब के पास हाज़िर हुए । उनके साथ उनके पुत्र पवन कुमार एवं राजेन्द्र कुमार भी थे । पीर साहब के यहाँ एक बुज़ुर्ग सूफी संत हजरत सोहराब अली साहब पधारे हुए थे । उन्होंने फ़रमाया-'यहाँ सभी चलने वाले हैं (अध्यात्म की और अग्रसर हैं)' और फिर पवन कुमार की तरफ देखकर डॉक्टर चन्द्र गुप्ता से फ़रमाया-'ये किसे पकड लाये ?' उन्होंने विनम्रता से कहा, 'हुजुर, आपका ही है ।' इस पर हजरत सोहराब अली साहब ने फ़रमाया-'मेरा है तो खाली क्यों' और अपनी कृपा से उन्हें निहाल कर दिया और सभी पर अपने फैज़ (आत्मिक धार) की वृष्टि की ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के एक सम्बन्धी जो राधा-स्वामी पंथ के आचार्य थे, चाहते थे कि डॉक्टर चन्द्र गुप्ता उनके अनुयायी बन जाएँ, लेकिन डॉक्टर चन्द्र गुप्ता तो अपना सर्वस्व महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब के श्रीचरणों में अर्पित कर चुके थे । उनके वे सम्बन्धी इस बात से उनसे बहुत नाराज रहते थे और गुस्से में उनका अहित करना चाहते थे । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता उन दिनों कानपुर गए हुए थे । जब उन्होंने यह बात महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब को बताई तो वे जलाली हालत में आ गए और उन सम्बन्धी को सजा देने हेतु उन्होंने अपना हाथ ऊपर उठा लिया । तभी वहाँ उपस्थित श्री हर नारायण सक्सेना साहब ने उनका हाथ रोक लिया और अर्ज किया की ऐसा करने से अनर्थ हो जायेगा, वे डॉक्टर साहब के बहुत नजदीकी सम्बन्धी हैं । महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने फ़रमाया कि तलवारें चलती रहेंगी पर डॉक्टर साहब का कोई अहित नहीं होगा । कुछ समय बाद जब उन सम्बन्धी ने अपनी आत्मिक शक्ति का प्रयोग करना चाहा तो ठाकुर रामसिंहजी साहब

ने उनकी रूहानी निस्बत को सल्ब कर लिया (खींच लिया) और उनकी वह शक्ति जाती रही । जब उनका अंतिम समय नजदीक आया तो वे तीन दिन तक मृत्यु-शैय्या पर पड़े रहे, चेहरा काला पड़ गया । ठाकुर रामसिंहजी साहब जो किसी के घर नहीं जाते थे, उनके घर गए और फ़रमाया, डॉक्टर साहब मेरा खून हैं और इस नाते से आप मेरे भी सम्बन्धी हैं, आपका अंजाम बैखैर हो । यह कहते हुए उन्होंने उनकी वह सल्ब की हुई निस्बत वापस लौटा दी । उन सम्बन्धी के चेहरे पर चमक लौट आई और उन्होंने शांति से अपने प्राण त्यागे ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की एक बहुत बड़ी विशेषता थी उनकी सपष्टवादिता, निडरता और बुजुर्गों का दिल से अदब । एक बार ठाकुर रामसिंहजी साहब को टाईफ़ायड हो गया । जब डॉक्टर चन्द्र गुप्ता सिटी पैलेस पहुँचे तो उनके एक सत्संगी श्री चिरंजीलालजी जिन्होंने उनकी बहुत सेवा की, ठाकुर रामसिंहजी साहब के लिए रोटियां बना रहे थे । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने तुरंत वे सभी रोटियां उठाकर फेंक दी । ठाकुर रामसिंहजी साहब बोले डॉक्टर साहब यह क्या कर रहे हो? डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उत्तर दिया-'इस वक़्त मैं आपका डॉक्टर हूँ । आप रोटी नहीं खा सकते ।' ठाकुर रामसिंहजी साहब चुप हो गए ।

ठाकुर रामसिंहजी साहब के सबसे छोटे सुपुत्र श्री विष्णुसिंहजी जो गृहस्थ थे, उन्होंने विवाह के कुछ वर्षों बाद अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ नाथ संप्रदाय स्वीकार कर लिया । गेरुँआ वस्त्र पहन और कानों में नाथ संप्रदाय के प्रतीक कुंडल पहन वे अपने गुरूजी के साथ जंगल में रहने लगे । उनके परिवार की दुर्दशा देख, डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को उनका यह आचरण अत्यंत अनुचित लगा । एक दिन वे उनके आश्रम जा पहुँचे । उन्होंने विष्णुसिंहजी के गुरु महाराज से उन्हें (विष्णुसिंहजी) को वापस अपने परिवार के पास लौट जाने को कहने के लिए कहा लेकिन उनके गुरूजी इसके लिए नहीं माने । बहुत कहने-सुनने पर भी जब विष्णुसिंहजी वापस लौटने को तैयार नहीं हुए तो डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उनके कानों के कुंडल तोड़ डाले और उन्हें जबरन अपने साथ ले आने लगे । यह सब देख विष्णुसिंहजी के गुरुजी बोले, 'डॉक्टर साहब, क्या आप जानते हैं आपने क्या पाप किया है? कुंडल तोड़ना शिवलिंग को तोड़ने के समान है । आपको मालूम है शिवजी कौन हैं? डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने कहा, 'हाँ, मुझे मालूम है शिवजी कौन हैं, मैं ही शिव हूँ ।' विष्णुसिंहजी के गुरुजी ने पूछा क्या आपको मालूम है ब्रह्माजी कौन हैं? डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने कहा, 'हाँ, मुझे मालूम है ब्रह्माजी कौन हैं, मैं ही ब्रह्मा हूँ ।' यह क्रम इसी तरह चलता रहा । विष्णुसिंहजी के गुरुजी विभिन्न देवी-देवताओं के नाम लेते रहे और डॉक्टर चन्द्र गुप्ता कहते रहे की वे सब देवी-देवता वे ही हैं । अंत में विष्णुसिंहजी के गुरुजी ने हाथ में जल लेकर श्राप दिया, 'डॉक्टर साहब, आप सात दिन में मर जायेंगे ।' सब बातों से बेपरवाह डॉक्टर चन्द्र गुप्ता विष्णुसिंहजी को अपने साथ वापस लिवा लाये और शाम को हमेशा की तरह ठाकुर रामसिंहजी साहब के दरबार में हाज़िर हो सब घटना उन्हें कह सुनाइ । श्राप देने की बात सुनकर ठाकुर रामसिंहजी साहब ने फ़रमाया, 'बस, इतनी सी बात पर श्राप दे दिया । यह भी नहीं देखा की ये तो मस्त हैं ।' सात दिनों में डॉक्टर चन्द्र गुप्ता का तो कुछ नहीं बिगड़ा पर सातवें दिन विष्णुसिंहजी के गुरुजी स्वयं परलोक सिधार गए । कुछ वर्षों बाद विष्णुसिंहजी पुन: नाथ संप्रदाय में लौट गए ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की अंकगणित बहुत अच्छी थी और शतरंज भी वे अच्छी खेला करते थे । उनकी एक और विशेषता थी की वे किसी भी किताब को उलट-पुलटकर देखकर उसमे क्या लिखा है उसका आशय जान लेते थे ।

एक बार ठाकुर रामसिंहजी साहब के पास सिटी पैलेस में एक सत्संगी साहब ने उनके द्वारा लिखी पुस्तक की एक प्रति भेजी । शाम को जब डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ठाकुर रामसिंहजी साहब के पास हाज़िर हुए तो डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उस पुस्तक को उलट-पुलटकर देखा और वापस रख दिया । ठाकुर रामसिंहजी साहब ने पूछा डॉक्टर साहब क्या देखा? डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उत्तर दिया 'लिखने वाला हराम की औलाद है ।' कुछ और लोग भी सत्संग के लिए आये हुए थे । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता का ऐसा कथन सुनकर वे लोग हैरान रह गए । ठाकुर रामसिंहजी साहब तो कुछ ना बोले, लेकिन एक सत्संगी ने पूछ लिया, डॉक्टर साहब, आप ऐसा कैसे कह सकते हैं । डॉक्टर साहब ने कहा, 'लिखने वाले ने किताब में कहीं भी अपने गुरु महाराज का ना नाम लिखा ना उनका जिक्र किया, इसलिए वो हराम की औलाद है । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के गुरु महाराज स्वयं ना कहकर अपनी बात उनके मुहं से कहलवा दिया करते थे । वह किताब इस सिलसिला-ऐ-आलिया में स्वीकृत नहीं हुई ।

टी. बी. हो जाने के कारण ठाकुर रामसिंहजी साहब टी. बी. सनेटोरियम के कोटेज वार्ड में भरती थे । उनके प्रिय सत्संगी श्री गोवर्धनलालजी एवं श्री चिरंजीलालजी उनकी सेवा-टहल किया करते थे। ठाकुर रामसिंहजी साहब उनकी सेवा से बहुत खुश थे। रोज की तरह एक दिन डॉक्टर चन्द्र गुप्ता अपनी साइकिल पर टी. बी. सनेटोरियम पहुँचे। ठाकुर रामसिंहजी साहब कोटेज के चबूतरे पर एक कुर्सी पर बैठे दातुन कर रहे थे, श्री चिरंजीलाल पास ही पानी का लौटा हाथ में लिए खड़े थे। डॉक्टर चन्द्र गुप्ता चबूतरे के नीचे ही रुक गए। ठाकुर रामसिंहजी साहब ने फ़रमाया-'पधारो।' डॉक्टर चन्द्र गुप्ता निश्चल खड़े रहे। उन्होंने फिर फ़रमाया-'पधारो।' डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने अर्ज किया-'महाराज, राजस्थानी में पधारो के दो अर्थ हैं (आने को भी पधारो कहा जाता है और जाने को भी), मैं नहीं समझा आपका क्या हुक्म है? ठाकुर रामसिंहजी साहब एक क्षण चुप रहे फिर बोले-'डॉक्टर साहब, पधारो।' डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने एक शेर पढ़ा-

'जेरे दिवार खड़ा हूँ, तेरा क्या लेता हूँ,
देख लेता हूँ तपिश दिल की बुझा लेता हूँ'

शेर सुनते ही ठाकुर रामसिंहजी साहब ठठाकर हंस पड़े, उनका बांया हाथ श्रीचिरंजिलालजी के सीने पर लगा और वे पास ही के खम्बे से टकरा गये। ठाकुर रामसिंहजी साहब हंसी में लोट-पोट हो गए। फिर खुश होकर फ़रमाया-'डॉक्टर साहब के आने से रोम-रोम खिल जाता है, यह खूबी इन्ही में है।'

एक बार डॉक्टर चन्द्र गुप्ता अपनी धर्मपत्नी श्रीमती दर्शना देवी के साथ सिटी पैलेस पधारे । रास्ते में उन्होंने कुछ केले और दो संतरे ख़रीदे । वे रिक्शा में जा रहे थे । गर्मी के कारण प्यास लगने पर एक संतरा उन्होंने रास्ते में ही खा लिया । बाकी फल सिटी पैलेस पहुंचकर अन्दर कोठरी में रख दिए । थोड़ी देर बाद ठाकुर रामसिंहजी साहब ने श्री चिरंजिलालजी से कहा की वे केले बांट दें । वे उठे और केले व संतरा बाँटने के लिये उठा लिए । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता उन्हें टोकते हुए बोले-'चिरंजिलालजी महाराज ने केवल केले बाँटने के लिए हुक्म फ़रमाया है, संतरा नहीं ।' ठाकुर रामसिंहजी साहब यह सुनकर बोले-'मुझे तो इनका झूठा भी खाना पड़ेगा । मेरा तो सारा खून ही डॉक्टर साहब का है, यदि इन्होनें एक बूँद भी मांग लिया तो मैं कहाँ से दूंगा?'

एक बार ठाकुर रामसिंहजी साहब के एक परिचित कर्नल केसरी सिंह जो एक जाने-माने शिकारी थे और बहुत से शेरों का शिकार कर चुके थे, जिनका वे बहुत आदर करते थे, गंभीर रूप से बीमार हो गए । आपको टी. बी. सनेटोरियम में दिखाया गया । आपको टी. बी. हो गयी थी, मालूम चलने पर आप बेहोश होगये और लकवा मार गया । महारानी गायत्री देवी के कहने पर आपको सवाई मानसिंह

हॉस्पिटल, जयपुर में भरती कराया गया । ऑक्सीजन दी जारही थी, बचने की उम्मीद कम थी । ठाकुर रामसिंहजी डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को साथ लेकर उन्हें देखने हॉस्पिटल गए । वहाँ पहुंचकर ठाकुर रामसिंहजी ने डॉक्टर साहब को बाहर ही रुकने को कहा और स्वयं भीतर चले गए । कुछ देर बाद वे बाहर आये और डॉक्टर चन्द्र गुप्ता से कहा, 'डॉक्टर साहब, मैंने उन्हें देख लिया है । आप उन्हें दवा दे दें । देखना चाहें तो देख लें ।' डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने कहा, 'महाराज, जब आपने उन्हें देख लिया है तो मुझे अब उन्हें देखने की जरुरत नहीं है ।' डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने अपने गुरुदेव की आज्ञानुसार घर आकर उन्हें कुछ दवा दे दी । पहली ही खुराक में उन्हें होश आगया और वे स्वस्थ होने लगे । यह घटना एक तरफ तो ठाकुर रामसिंहजी की विनम्रता और निराभिमानता का उदहारण है जिसमे वे अपनी कृपा को छिपाकर सारा श्रेय डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को दे रहे थे, वहीँ दूसरी ओर यह डॉक्टर चन्द्र गुप्ता का अपने गुरु भगवान के शब्दों पर अटूट विश्वास का भी एक अनुपम उदहारण है । ठाकुर रामसिंहजी के शब्द थे, 'डॉक्टर साहब, मैंने उन्हें देख लिया है । आप उन्हें दवा दे दें । देखना चाहें तो देख लें ।' उनके गुरु महाराज ने मरीज को देख लिया था और डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को उन्हें दवा मात्र देनी थी । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने यही किया, जो दवा समझ में आई दे दी । अपने गुरु महाराज के हुक्म का पालन किया । उनके लिए स्वयं मरीज को देखने का कोई प्रश्न ही नहीं था ।

ठाकुर रामसिंहजी साहब ने डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को फ़रमाया-'डॉक्टर साहब, जयपुर में बसों और बसाओ ।' सन 1973 में डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने सेठी कॉलनी में अपना मकान बनवाया और उसमें रहने लगे, रविवार को सत्संग कराने लगे और धीरे-धीरे उनके परिवार के अन्य सदस्य और सत्संगी भाई-बहन भी जयपुर में स्थायी रूप से बस गए । अपने अंतिम दिनों में ठाकुर रामसिंहजी साहब ने फ़रमाया था, 'डॉक्टर साहब, आप मेरा खून हो । जो कुछ भी आपको बड़े घर से (महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब से) दिलवाना था, दिलवा दिया । जो कुछ भी मुझे देना था, दे दिया । अब सत्संग का काम आप देखें ।'

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता 1958 के अंत में महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब के शिष्य बने थे और कुछ ही वर्षों बाद 21 जुलाई सन 1966 को महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब गुरुलीन हो गए । उनके पार्थिव शरीर का अग्नि-संस्कार नहीं किया गया । आपकी समाधि कानपुर में है । ठाकुर रामसिंहजी साहब भी कुछ वर्षों बाद 14 जनवरी सन 1971 को गुरुलीन हो गए और आपकी समाधि जगतपुरा, जयपुर में है । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने गुरु आज्ञानुसार सत्संग का कार्य करना शुरू कर दिया । सत्संग की इज़ाज़त के विषय में यहाँ यह लिखना अनुचित नहीं होगा की 1970 में डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने ठाकुर रामसिंहजी साहब से साधिकार 6 लोगों के नाम सत्संग कराने की लिखित इज़ाज़त ली थी । इन 6 लोगों में उन्होंने अपना नाम भी शामिल किया था । उनका नाम भी इस सूची में देखकर ठाकुर रामसिंहजी साहब ने स्वयं अपने श्रीमुख से फ़रमाया था-'डॉक्टर साहब आपने अपना नाम भी लिख लिया, आपको क्या जरुरत थी इज़ाज़त की ?' डॉक्टर चन्द्र गुप्ताजी ने कहा की महाराज आपके पर्दा कर जाने के बाद लोग कहने लगेगें की मेरा आपसे कोई सम्बन्ध नहीं था इसलिए यह जरुरी था । इस इज़ाज़तनामे की प्रति यहाँ दी जा रही है ।

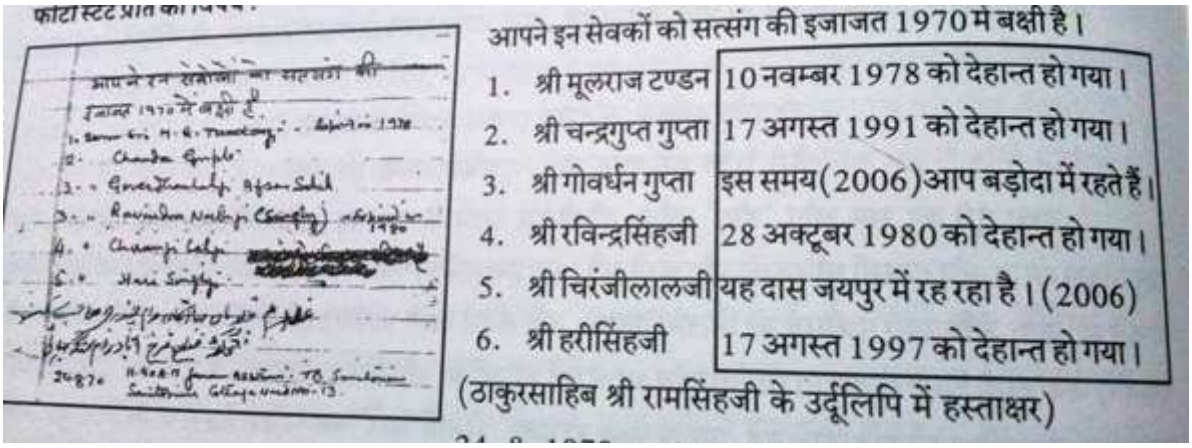

आपने इन सेवकों को सत्संग की इजाजत 1970 में बक्शी है।

1.	श्री मूलराज टण्डन	10 नवम्बर 1978 को देहान्त हो गया।
2.	श्री चन्द्रगुप्त गुप्ता	17 अगस्त 1991 को देहान्त हो गया।
3.	श्री गोवर्धन गुप्ता	इस समय (2006) आप बड़ोदा में रहते हैं।
4.	श्री रविन्द्रसिंहजी	28 अक्टूबर 1980 को देहान्त हो गया।
5.	श्री चिरंजीलालजी	यह दास जयपुर में रह रहा है। (2006)
6.	श्री हरीसिंहजी	17 अगस्त 1997 को देहान्त हो गया।

(ठाकुरसाहिब श्री रामसिंहजी के उर्दूलिपि में हस्ताक्षर)

(साभार-संत थानेदार-ठाकुरसाहिब श्री रामसिंहजी भाटी-विस्तृत जीवन-वृत-लेखक श्री चिरंजीलाल बोहरा)

पूर्ण आचार्य पदवी और इज़ाज़त-ताअम्मा के बारे में उन्होंने अपनी डायरी में लिखा है, 'इस अरसे में बहुत ही आफतों से गुजारा गया, जो बयान से बाहर है । 31.03.80 को मैं भाईसाहब हर नारायणजी के साथ कानपुर गया । 01.04.80 को भाईसाहब सत्येंद्रनाथजी जो महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब के सुपुत्र एवं जानशीन (खलीफा-उत्तराधिकारी) हैं की खिदमत में गया । आपने ध्यान कराया व 02.04.80 को समाधि पर ले जाकर मुंशी भाईसाहब (महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब) के आदेश पर 'गुलाम' (डॉक्टर चन्द्र गुप्ता) को इज़ाज़त-ताअम्मा (सम्पूर्ण आचार्य पदवी) बख्शी और हुक्म फ़रमाया हमारे खानदान की तरफ से पूर्ण आचार्य पदवी दी गई । दूसरी दुनिया में इंशा-अल्लाह हम साथ-साथ एक तख़्त पर बैठेंगे । गुलाम को अपने बराबर दर्जा सिर्फ गुरु ही बख्शता है । मेरी यह इच्छा है गुलामी के पट्टे की लाज आप ही हैं और आप ही दया करेंगे । जो भी मेरे पास आवे आप कुबूल फरमावें और उस का दिल जाकिर करके अपना जैसा बना लेवें और गुलाम के अच्छे व बुरे कर्म आप के अर्पण । सारी लाज आपकी व खानदान के महापुरुषों की है ।'

यहाँ यह लिखना भी अप्रासंगिक नहीं होगा की महात्मा श्री रवीन्द्र नाथजी (महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब के ज्येष्ठतम सुपुत्र) ने अपनी पुस्तक 'अध्यात्म मार्ग' में डॉक्टर चन्द्र गुप्ता का नाम महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब के प्रमुख शिष्यों में लिखा है और यह भी लिखा है कि जो भी लोग लालाजी साहब, चच्चाजी साहब व उनके सुपुत्रों के सत्संग में लम्बे समय तक लगन व निष्ठापूर्वक अपने गुरुजनों से संपर्क बनाये रक्खे, वे अंत में अध्यात्म विद्या में प्राय: पूर्ण होकर ही निकले ।

हालाँकि सन 1980 में महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब की निस्बत से सिलसिला-ऐ-आलिया नक्शबंदिया का ताज श्री सत्येंद्रनाथजी ने स्वयं महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब के आदेश पर उन्हीं की समाधि पर डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को दिया था लेकिन बाद में सन 1981 में वे इस ताज को डॉक्टर चन्द्र गुप्ता से वापस पाना चाहते थे । इसी प्रयास में वे सन 1981 में जयपुर आये । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता बहुत गंभीर रूप से अस्वस्थ हो गए लेकिन गुरु कृपा से वे स्वस्थ हुए और श्री सत्येंद्रनाथजी अपने प्रयास में सफल ना हो सके । अपने पुत्र राजेन्द्र को दिनांक 07.01.82 को लिखे पत्र में डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने लिखा है, 'दिस वाज ए बैटल टू टेक द ताज बैक एंड रुइन अस सो डैट इट मे बी गिवन बैक आटोमैंटीकली । ही कूड नॉट सकसीड' (This was a battle to take the '*Taj*' back and ruin us so that it may be given back automatically. He could not

succeed-यह ताज वापस लेने और हमें बर्बाद करने की जद्दोजहद थी ताकि यह स्वत: ही उनके पास वापस चला जाये लेकिन वह (श्री सत्यैंद्रनाथजी) इसमें सफल नहीं हो सके) । इसके बाद उन्होंने लिखा है की ठाकुर रामसिंहजी साहब के आदेशानुसार यह उनके बाद श्री कृष्ण कुमार गुप्ता (उनके बड़े सुपुत्र) को जायेगा और इस परिवार में लगभग तीन पीढ़ियों तक रहेगा । इस पत्र की प्रति इस पुस्तक में एक परिशिष्ठ के रूप में दी जा रही है ।

उनके जीवन में ठाकुर रामसिंहजी साहब के स्थान के बारे में डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने अपनी डायरी में लिखा है की 'वे (ठाकुर रामसिंहजी साहब) मेरे (डॉक्टर चन्द्र गुप्ता) फाइनल गुरु भगवान हैं' और 'सब संतों को मेरे गुरु भगवान ठाकुर रामसिंहजी साहब के हमशक्ल मानता हूँ ।'

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता अपने गुरुजनों की धरोहर को मुक्त हस्त से योग्य पात्रों में ता-उम्र बांटते रहे । साधारण गृहस्थ का जीवन यापन करते, अपनी होमियोपैथी दवाइयों के रूप में वे अपने गुरु भगवान का प्रसाद ही बांटते थे । उनके पास आने वाले अनेक आर्त, अर्थार्थी एवं जिज्ञासु जिनका जरा भी संस्कार या झुकाव अध्यात्म की तरफ रहा, वे डॉक्टर साहब के हो रहे और डॉक्टर साहब उनके हो रहे । श्री खन्ना साहब, श्री भारत भूषणजी, श्री दुर्गादानजी, श्री यादव साहब, श्री दिनेश महनोत, श्रीमती कृष्णा शुक्ला, श्रीमती केशव गोयल एवं श्री शैलेन्द्र झा, ये कुछ नाम उन लोगों में से हैं जो डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के अत्यंत प्रिय सत्संगी रहे और जो इस सत्संग में अपने आचरण द्वारा अन्य सत्संगी भाई-बहनों को प्रेरित और उनका मार्ग-दर्शन भी करते रहे हैं और कर रहें हैं । यही नहीं अपने गुरु भगवान ठाकुर रामसिंहजी की ही तरह डॉक्टर चन्द्र गुप्ता भी अन्य संत-महात्माओं के सत्संगियों पर भी अपने प्रेम एवं फैज़ की धार उंडेलते रहे इनमें महात्मा श्री यशपालजी (महात्मा श्री बृज मोहन लालजी के शिष्य) एवं महात्मा श्री चतुर्भुज सहायजी (जनाब लालाजी महाराज के शिष्य) के शिष्य परम्परा के लोग भी शामिल हैं । जहाँ कहीं भी किसी में जरा भी रूहानियत की ओर झुकाव देखा तो डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उस संस्कार को प्रस्फुटित और प्रखर करने का भरपूर प्रयास किया ।

श्रीमती केशव गोयल किस तरह डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के सत्संग में आयीं, इस बारे में वे लिखतीं हैं- 'मेरे गुरुदेव श्री बाउजी साहब की शरण में पहुँचने का प्रसंग ईश्वरीय कृपा का ही दृष्टांत है । मेरा ऑफिस तब त्रिपौलिया बाजार में था । गोयल साहब रिज़र्व बैंक जाते समय मुझे सुबह 9.15 बजे छोड़ देते थे, ऑफिस 10 बजे खुलता था । इस खाली समय में मैं ताड़केश्वर मंदिर और राधा दामोदर मंदिर में प्रार्थना करती थी कि मुझे मेरे जीवन के लक्ष्य तक पहुँचाओ । 7 माह बाद मेरा ट्रान्सफर हो गया और इस नए ऑफिस की बिल्डिंग में ही पवन भाईसाहब का ऑफिस भी था । उन्होंने हाथ देखकर कहा आप तो हमारी पिछले जन्म की बहनजी हो और घर आकर बाउजी से मिलने को कहा । मैने समझा कि शायद कोई ज्योतिषी हों, विशेष कुछ बताएं । लेकिन बाउजी ने अपनी बराबर वाली कुर्सी पर बैठने के लिए कहा और सिर पर हाथ रखा । उनकी आँखों में एक अद्भुत तेज नजर आया, जो मुझे प्रभावित कर रहा था । हम दूसरे-तीसरे दिन मिलने चले जाते । रविवार को सत्संग होता है मालूम चलने पर सत्संग में जाने लगे । मैं तो अत्यधिक अभिभूत थी क्योंकि सत्संग के लिए घर से निकलते ही एक नशा सा छा जाता जो पूरे रास्ते रहता । बाउजी के समक्ष पहुँचते ही आँखें जबरन बंद सी होने लगती । बाउजी प्राय: कहते कि मुझे मालूम था की तुम लोग आ रहे हो । अपने पास वाली जगह खाली रखते कि ये तुम्हारे लिए है, बैठो । मैं अपने आप को गौरवान्वित महसूस करती । सोचती की हमारे पहुँचने से पूर्व ही इन्हें कैसे मालूम हो जाता है की हम आ रहे हैं । उत्तर भी स्वत: मिल जाता कि इनके पास ईश्वर की असीम शक्तियां हैं । बाउजी की छत्रछाया में ध्यान करके ऐसी

शांति और आनंद का अनुभव होता की वर्णन नहीं किया जा सकता । एक दिन भाईसाहब कृष्ण कुमार ने बाउजी से पूछा कि क्या आपने इन्हें लाइन में ले लिया है तो वे बोले यह तो पहले से ही चली आ रही है । मेरी प्रसन्नता का पारावार नहीं था । मेरे पति गोयल साहब को अंगूठा पकड़कर शिष्य बनाया और बोले यूँ तो इनका हक नहीं बनता पर तुम्हारे कारण इन्हें स्वीकार कर रहा हूँ । यह हम दोनों पर उनकी असीम कृपा रही ।' वे आगे लिखतीं हैं-'एक दिन घर पर मेरा ध्यान स्वत: ही गहरा लग गया और एक अद्भुत सी ध्वनी मेरे कानों और हृदय में गूंजने लगी, जिस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं था । अगले दिन मैंने बाउजी से पूछा तो बोले कि जब सतगुरु मिल जातें हैं तो नादब्रह्म की ध्वनी सुनाई देती है ।'

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता किस तरह प्यार से सत्संगियों को ढालते थे, इसका उदहारण इस बात से मिलता है की उनके एक अत्यंत प्रिय सत्संगी किमाम का पान खाते थे । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता अक्सर उनके साथ, उनके स्कूटर पर बैठ आदरणीय पीर साहब के यहाँ जाया करते थे । ऐसे ही एक मौके पर उन सत्संगी भाई ने किमाम का पान जो वे हर वक़्त अपने साथ रखते थे निकाल कर खाना चाहा । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता बोले-'यह क्या है? मुझे भी दो ।' उन्होंने कहा, बाउजी यह आपके मतलब का नहीं है । इस पर डॉक्टर चन्द्र गुप्ता बोले-'अगर ये मेरे मतलब का नहीं है, तो तुम्हारे मतलब का कैसे हो सकता है ?' सत्संगी भाई ने तुरंत वे पान के बीड़े फेंक दिए और उस दिन से उनकी वह किमाम का पान खाने की आदत जाती रही । बाद में उन्होंने इन सत्संगी भाई को आदरणीय पीर साहब से उनकी सेवा व प्रेम से प्रसन्न होकर इज़ाज़त भी दिलवाई यह कहकर की मैं इन्हें चाहता हूँ अत: आप इन्हें इज़ाज़त बख्शें ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के लिए उनके गुरु महाराज से इतर और कोई अन्य भगवान नहीं थे, उन्होंने अपने गुरु में ही परमात्मा के दर्शन किये । उन्होंने अपने पत्र दिनांक 27.09.88 में अपने पुत्र राजेन्द्र को लिखा था, 'देयर इज नो अनादर गॉड फॉर मी एक्सेप्ट माय गुरु भगवान' (There is no another God for me except my Guru Bhagvaan) । इस पत्र की प्रति भी इस पुस्तक में एक परिशिष्ठ के रूप में दी जा रही है । वे अपने सतगुरु में 17.08.91 को पूर्णतया लीन हो गए । इस बात का आभास उनकी सुपुत्री श्रीमती सुषमा मित्तल एवं उनके पुत्र राजेन्द्र को भी हो गया था । श्रीमती सुषमा मित्तल के शब्दों में-'अगस्त 1991 के दूसरे सप्ताह की बात है । सुबह के करीब चार बजे थे, मैं गहरी नींद में थी । तभी मैंने एक सपना देखा । सपने में मैंने देखा की एक बहुत बड़ा आँगन था । एक तरफ सफ़ेद चमकदार रंग से पुता बहुत बड़ा सा संगमरमर का कमरा और उसकी छत से नीचे उतरती सीढियाँ । मैं सीढियों से नीचे उतर रही हूँ और नीचे आँगन में एक शव रखा है, सफ़ेद वस्त्र से ढ़का हुआ । वो वस्त्र ऐसा था जिससे सफ़ेद किरणें सी निकल रहीं थी और सीढियों की ओर पीठ व शव की ओर मुहं किये हुए सतगुरु महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब और बहुत से अन्य संत जिनके शरीर प्रकाशवान थे एक लाइन में बैठे थे और उन्हीं के साथ माँ और बाउजी (डॉक्टर चन्द्र गुप्ता) भी बैठे थे । मैंने नीचे आकर बाउजी से पूछा कि ये किसका शव है? बाउजी ने कहा की मैं ही हूँ । मैंने कहा की लेकिन आप तो यहाँ हैं और मेरी नींद खुल गई । मैं दोपहर में बाउजी से मिलने गई, मन बहुत बेचैन था । बाउजी मुझे घर पर ही मिल गये और बोले बेचैनी क्यों? तुमने भी देख लिया । मैं सन्न रह गई बोली नहीं ये सच नहीं हो सकता । बाउजी बोले तुम्हारी माँ ने मुझे सीमा की शादी का काम सौंपा था, मेरा काम पूरा हो गया और मुस्कुरा दिए । दूसरी बातें

करने लगे । इस प्रकार उन्होंने हमें पहले ही आभास करा दिया था लेकिन मुझे फिर भी यकीन नहीं था कि ऐसा होगा । 4-5 दिन के बाद ही बाउजी नहीं रहे ।'

कुछ इसी तरह का आभास उनके पुत्र राजेन्द्र को भी हुआ । अपनी धर्मपत्नी की मृत्यु के बाद डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने भी यह संसार छोड़ने का मन बना लिया था । वे अपनी धर्मपत्नी के लिए कहा करते थे की वे केवल उनकी जीवनसंगिनी ही नहीं थी बल्कि उनके अध्यात्मिक सफ़र में भी उनकी बराबर की साथी थीं । मार्च 1990 में जब उनकी धर्मपत्नी के फूल हरिद्वार ले जाये जा रहे थे तो वे भी हरिद्वार जाना चाहते थे । उनका स्वास्थ्य और अन्य बातों को ध्यान में रखकर उन्हें हरिद्वार जाने से रोका गया । तब उन्होंने इस प्रकार की बात कही जिससे लगा की वे यह संसार तुरंत ही छोड़ देना चाहतें हैं । राजेन्द्र के साथ यह बहस चल रही थी की उसने कहा-'आप जिन गुरु महाराज के शिष्य हैं, मैं भी उन्हीं का शिष्य हूँ । आप अपनी मर्जी से नहीं जा सकते ।' बात आई-गई हो गयी । उसके बाद करीब डेढ़ वर्ष गुजरा । उनके पुत्र राजेन्द्र के शब्दों में-'15 अगस्त को छुट्टी थी । मैं अपने मायापुरी के सरकारी फ्लैट में दीवान पर लेट रहा था । शाम का सा वक़्त था । मेरी आँख लग गयी और स्वपन में मैंने बाउजी की उम्र गिन डाली की उनका 76 वा वर्ष चल रहा है । गुरु महाराज तो 73 वर्ष की आयु में ही चले गए थे, अब उन्हें भी चले जाना चाहिए और मन में जो अवरोध था वो मिट गया । तुरंत उठकर बाउजी से टेलीफोन पर बात की, सब ठीक था, लेकिन उसी रात फोन पर उनके ब्रेन हमरेज़ की सूचना मिली और रात को डेढ़ बजे हम जयपुर के लिए निकल पड़े । दो दिन बाउजी हॉस्पिटल में रहे और 17 अगस्त को आप गुरु भगवान में लीन हो गए । इन दोनों दिन बाउजी का ख्याल आते ही महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब का ख्याल आने लगता ।'

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने स्वयं अपनी डायरी में 09.08.91 को लिखा है-'आज सुबह 5 बजे स्वप्न में गुरु भगवान व श्री हर नारायण सक्सेनाजी एक दरिया में बैठे दिखाई दिए । पानी बहुत कम और साफ था । गुरु भगवान ने आज पूर्ण सत्संग की इज़ाज़त बख्शी । दर्शना भी बैठी थी । किताब पूर्ण का भी हुक्म फरमाया और और भी बख्शिशें बख्शीं । मैंने दोनों के चरण छुऐ, हुक्म फ़रमाया आइन्दा किसी के पाँव ना छूना ।'

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की समाधि उन्हीं के निवास सी-47, सेठी नगर, जयपुर में बनी है । प्रति वर्ष 17 अगस्त को वहाँ भंडारा होता है और प्रत्येक रविवार को सुबह सत्संग होता है ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के लेखों, अनुभवों व उनके गुरु महाराज महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब द्वारा उन्हें लिखे गए पत्रों में, जो आगे दिए जा रहे हैं, अध्यात्मिक विद्या का सार, सहज एवं सरल शब्दों में भरा है । आपने बुजुर्गों द्वारा प्रज्जवलित अध्यात्मिक ज्योति अनेक हृदयों में प्रकाशित की । गुरु भगवान हमें उनके दर्शाए मार्ग पर आगे बढ़ने की सामर्थ्य बख्शें ।

आमीन ! आमीन ! आमीन !

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता एवं श्रीमती दर्शना देवी

महात्मा श्री कृष्ण कुमार गुप्ता (भाई साहब), जयपुर
09.07.1943-16.06.2005

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की धर्मपत्नी

जैसा की ऊपर लिखा जा चुका है, डॉक्टर चन्द्र गुप्ता का विवाह लगभग बीस वर्ष की अवस्था में श्रीमती दर्शना देवी से हुआ, जिनकी आयु उस समय करीब तेरह वर्ष थी । श्रीमती दर्शना देवी जींद, जो रोहतक के पास है, में ही पलीं-बढ़ीं । उनके पिताजी का नाम लाला छज्जूराम था और वे बड़ी ही धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे । किराने की दुकान उनका व्यवसाय था । उनके एक ही पुत्र और एक ही पुत्री थे । कहते हैं की वे अपने जीवन में कभी बीमार नहीं पड़े और कभी कुछ अस्वस्थ हुए तो जींद के जोड़ (एक तालाब) में गोता लगा लिया करते और उनकी बीमारी दूर भाग जाती । वे हर जीव में ईश्वर के दर्शन करते और अपनी चाय में से चींटे-मकोडो को भी फर्श पर चाय की बूँदें डालकर कहते, लो हनुमानजी चाय पी लो, लो कृष्णजी चाय पी लो ।

श्रीमती दर्शना देवी बहुत ही सीधी, सरल इमानदार, और धर्मनिष्ठ स्त्री थीं, उन्होंने डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के परिवार को सहज ही अपना परिवार मानकर अपना लिया और सभी की सेवा में जुट गयीं । विवाह के पश्चात डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के पिता लाला निरंजन लालजी उन्हीं के साथ रहने लगे । श्रीमती दर्शना देवी उनकी जी-जान से सच्चे हृदय से सेवा करतीं । वे कहा करती थीं की उनके श्वसुर उनकी सेवा टहल से बहुत प्रसन्न थे और उनका परिवार उन्हीं के आशीर्वाद से फला-फूला ।

श्रीमती दर्शना देवी बहुत ही क्षमाशील भी थीं और जल्दी ही लोगों पर विश्वास भी कर लेती थीं । यह जयपुर की बात है । एक दिन किसी त्यौहार पर वे जेवर पहन रहीं थीं, तभी उनकी एक पड़ोसन आ गई । सभी जेवर सामने रखे थे । श्रीमती दर्शना देवी ने सभी जेवर डब्बे में बंद कर उसके सामने ही अलमारी में रख दिए । तालों का प्रयोग उन दिनों बहुत कम हुआ करता था । श्रीमती दर्शना देवी ने भी उस अलमारी में कोई ताला नहीं लगाया । करीब एक सप्ताह बाद जब उन्होंने अलमारी में डब्बे को तलाशा तो डब्बा गायब था । बहुत ढूंढ़ने पर भी डब्बा नहीं मिला । सभी बहुत परेशान थे की तभी उनकी बड़ी ननद श्रीमती विद्यादेवी आ गईं । जेवरों की चोरी की बात सुनकर वे बोलीं की जेवर उस पड़ोसन ने ही चुराए हैं और जोर-जोर से उसका नाम लेने लगीं । श्रीमती दर्शना देवी उन्हें चुप कराते हुए कह रहीं थी की जब मैंने उसे जेवर ले जाते देखा नहीं तो उसका नाम कैसे लगा दूं । बिना देखे मैं उसे चोर नहीं ठहरा सकती । इस घटना के करीब एक माह पहले डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उस पड़ोसन के पति को हार्ट अटैक होने पर अपनी कौशिश से उपचार दे कर बचाया था । बहुत देर तक वे उसके हार्ट की मसाज करते रहे तब वो बच पाया था । शायद उसी का असर था की उन सिन्धी पति-पत्नी में रात को उन्हीं की भाषा में जोर-जोर से झगडा होता रहा । सुबह जेवर का डब्बा दहलीज पर रखा मिला, हालाँकि जेवर कुछ कम थे पर श्रीमती दर्शना देवी को कोई गिला नहीं था ।

श्रीमती दर्शना देवी यूँ तो तीसरी कक्षा तक ही पढ़ीं थीं, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने कुछ-कुछ इंग्लिश भी पढ़ना-समझना सीख लिया था और हिंदी तो वे अच्छी तरह पढ़ लिया करती थीं । बहुत अरसे तक वे श्रीमद्भगवतगीता का पाठ करतीं रहीं । एकादशी का व्रत और सत्यनारायण की कथा भी वे बहुत समय तक करवाती रहीं । कार्तिक के महीने में सुबह-सुबह उठकर स्नान आदि से निवृत होकर भगवान के दर्शनों के लिए वे मंदिर भी जाती थीं । कुछ समय जयपुर स्थित गलाताजी में भी वे स्नान के लिए गयीं, लेकिन वहाँ तालाब में ना नहाकर गोमुख से सीधे एक डब्बे से पानी खींचकर उससे नहाती थीं ।

श्रीमती दर्शना देवी घर के सभी काम-काजों में निपुण थीं । त्योहारों पर तरह-तरह के पकवान और मिठाई घर पर ही बनातीं और सबको प्रेम-पूर्वक खिलातीं थी । काफी-कुछ कपडे भी घर पर ही सिल

लिया करती थीं । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की तनख्वाह कुछ ज्यादा तो थी नही और बड़ा परिवार था लेकिन वे उसी में अपनी कार्यकुशलता और भगवान की कृपा से सारे परिवार को ठीक से संभाल लेती । परिवार में कभी किसी की जायज मांग में उन्होंने कोई कटौती नहीं की और सभी बच्चों को ठीक से पढाया-लिखाया और अच्छे परिवारों में उनका शादी-ब्याह किया । भगवान ने उनके हाथों में बरकत दी थी और डॉक्टर चन्द्र गुप्ता का भी उन्हें भरपूर सहयोग मिला । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता हर काम में उनकी मदद करने को हमेशा तैयार रहते थे ।

शुरू में श्रीमती दर्शना देवी मथुरा वाली माताजी के पास सत्संग लाभ के लिए गयीं, लेकिन बाद में उन्होंने श्री गुरु-भगवान परमसंत ठाकुर रामसिंहजी की ही शरण ग्रहण की, जिन्होंने उनके लिए फ़रमाया था-'आपको कुछ करने की आवश्यकता नहीं है, आप तो बस डक्टर साहब की सेवा करते रहिये । जो कुछ भी ये (डॉक्टर चन्द्र गुप्ता) कर रहें हैं, उसका आधा तो आपको ऐसे ही मिल जायेगा ।' उनके बारे में डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने अपनी डायरी में लिखा है-'इस विद्या के मिलने में मेरी धर्मपत्नी का जो खुद एक बड़ी संत व सती थी साथ रहा वरना यह विद्या मिलना नामुमकिन होता ।'

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के बहुत से सत्संगी घर पर बेरोक-टोक आया जाया करते थे । श्रीमती दर्शना देवी ने उन्हें प्रेम सहित अपनाया । उनमे से कुछ को तो उन्होंने अपने सगे बेटा-बेटी की ही तरह अपना लिया । इस बारे में श्रीमती कृष्णा शुक्ला लिखती हैं-'एक समय शुक्लाजी के हाथों में एक्जीमा जैसा कुछ हो गया । काफी इलाज करने पर भी कुछ फायदा नहीं हुआ । मेरा भाई युगल और कृष्ण (डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के बड़े सुपुत्र) साथ-साथ मिशन स्कूल में पढ़ते थे । भाई कृष्ण ने जिक्र किया कि मेरे बाउजी होमियोपैथी के डॉक्टर हैं, उन्हें दिखा लो । बाउजी तब नजदीक ही बाबा हरिश्चंद्र मार्ग पर रहते थे । शुक्लाजी उन्हें दिखाने गए । बाउजी ने कहा खदीरारिष्ट की बोतल लानी पड़ेगी । शुक्लाजी बोतल ले आये और मुझे बोतल को डॉक्टर साहब के पास पहुँचाने के लिए कहा । मैं बोतल देने उनके घर गई और वापस लौटने लगी तो बाउजी बोले बैठो, कहाँ चली? अम्मा (श्रीमती दर्शना देवी) बोली-'बेटा, खाना खा लो ।' उन दोनों की आवाज़ से महसूस किया की मेरे जन्म देने वाले माता-पिता ही बोल रहें हैं । मैंने कहा की भूख नहीं है । माँ बोलीं-'बेटा खा लो, घर से भूखे नहीं जाते ।' उन्होंने श्रीमती कृष्णा शुक्ला को अपनी बेटी की तरह अपना लिया । इसी तरह श्री बी. के. खन्नाजी और श्री दिनेश महनोत को उन्होंने अपने पुत्र की तरह अपना लिया ।

परमसंत ठाकुर रामसिंहजी साहब कभी-कभी कृपाकर स्वयं डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के घर पधार जाते । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता तब बाबा हरिश्चंद्र मार्ग पर तिमंजिले मकान में रहते थे और उनका घर तीसरी मंजिल पर था । ठाकुर रामसिंहजी साहब नीचे से ही आवाज़ लगाते-डॉक्टर साहब, और फिर ऊपर आते । उनकी आवाज़ सुनते ही कोई ना कोई बच्चा दोड़कर नीचे जाता और गुरु महाराज को ऊपर लिवा लाता । गुरु महाराज बाहर सीढियों में ही अपने जूते उतार फिर भीतर आते । किसी को अपने जूते छूने ना देते ।

एक बार वे डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के घर आये और हमेशा की तरह नीचे से आवाज़ लगायी । घर में रेडियो ऊँची आवाज़ में चल रहा था, उनकी आवाज़ किसी ने ना सुनी । ठाकुर साहब ऊपर आ गए । घर में डॉक्टर चन्द्र गुप्ता नहीं थे । वे श्रीमती दर्शना देवी से बोले-'हाँ, अब मैं बूढा हो गया हूँ, किसी को मेरी जरुरत नहीं है ।' श्रीमती दर्शना देवी बताया करती थीं की उन्हें बहुत शर्म लगी की उन्होंने गुरु महाराज की आवाज़ नहीं सुनी । इसके बाद गुरु महाराज बहुत देर रुके और घर-गृहस्थी की बहुत

सी बातें करते रहे । उन्होंने श्रीमती दर्शना देवी और डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के पूरे परिवार को अपनी कृपादृष्टी में ले लिया था ।

इसी तरह जब एक बार ठाकुर रामसिंहजी साहब डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के घर आये तब डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की बड़ी सुपुत्री पुष्प लता वहाँ आई हुई थी । ससुराल में उनका कुछ कठिन समय गुजर रहा था । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के घर में एक कैलेंडर टंगा था जिसमें मगरमच्छ गज को पानी में खींच रहा था और भगवान उसे बचा रहे थे । आपने उसे देखते हुए बहुत ही मधुर स्वर में एक लाइन गायी-'सुने री मैंने निर्बल के बलराम ।' श्रीमती पुष्प लता बताती थीं की उसके बाद उन्हें ऐसा लगने लगा जैसे कोई अज्ञात शक्ति हर वक़्त उनके साथ रहती है और उनके हर काम में उनकी सहायता करती है ।

श्रीमती दर्शना देवी डॉक्टर चन्द्र गुप्ता और अपने सुपुत्र श्री पवन कुमार के साथ एक बार इस सिलसिला-ऐ-आलिया नक्श्बंदिया के बुज़ुर्ग महापुरुषों की समाधियों के दर्शन करने कायमगंज, रायपुर एवं फतेहगढ़ हाज़िर हुईं । वे बताती थीं की रायपुर में समाधि स्थल के परकोटे में दाखिल होते ही उनके समस्त रूहानी चक्र जागृत होगये और उनमें अनहद-नाद का तीव्र झंकार होने लगा । वे बहुत अभिभूत थीं और उनपर बुजुर्गों की असीम कृपा की वर्षा हुई ।

कायमगंज में वे लोग श्री सिंह साहब के घर ठहरे थे । वहाँ श्रीमती दर्शना देवी से एक सज्जन मिलने आये । श्रीमती दर्शना देवी के सुपुत्र श्री पवन कुमार के शब्दों में-'वहाँ पर एक सज्जन मिलने आये और बोले, माँ मेरे हाथों से दो आदमी बंदूक की गोली से झगडा होने के कारण मारे गए हैं । कोर्ट में केस चल रहा है । मुझे सजा-ए-मौत सुनाई जाएगी ऐसा मेरे वकील का कहना है । मैं नहीं चाहता की मुझे कोर्ट सजा दे, इसलिए आप गुरुदेव से मेरे लिए प्रार्थना करें की मुझे कोई सजा ना हो । आप तो पूर्ण संत हैं, सिंह साहब ने कहा है । माँ को उन पर दया आ गई, वे बोलीं मैं आपके लिए प्रार्थना करूंगी । मैं आज तक गंगा नहीं नहाई, तुम मुझे गंगा ले चलो । वो जीप ले आया और उन्हें गंगाजी ले गया । कोर्ट में केस चला पर कोर्ट रूम में आग लगने से सारा रिकॉर्ड जल गया, जिसमें उसकी फाइल भी थी । गवाहों के बयान से केस पलट गया और वो बरी हो गया । बरी होने की ख़ुशी में उसने पार्टी रख दी । कुछ समय बाद जब पार्टी हुई तो उसने बहुत अधिक शराब पी ली जिसके कारण उसकी ह्रदय गति रुक गई और मृत्यु हो गयी । मैंने माँ से पूछा की ऐसा क्यों हुआ तो उन्होंने कहा की दो आदमियों की जान ली थी, कर्मानुसार उसे सजा तो मिलनी ही थी । कोर्ट से तो छूट गया पर शराब ने उसकी जान ले ली ।'

मौलवी अब्दुल रहीम साहब भी कभी-कभी डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के घर पधारते और उनकी कृपा भी पूरे परिवार पर रही । एक बार घर में घी बिलकुल समाप्त हो गया, महीने के आखिरी दिन चल रहे थे । सुबह-सुबह गुरु महाराज ठाकुर रामसिंहजी साहब जगतपुरा-सांगानेर से देसी घी लेकर आ पधारे । एक बार वे रबड़ी और एक बार मक्का की राबड़ी लेकर पधारे । इसी तरह मौलवी अब्दुल रहीम साहब भी गेहूं की दो बोरियां लेकर पधारे ।

गुरु महाराज ठाकुर रामसिंहजी साहब ने कई बार डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के घर सत्संग भी कराया । श्रीमती दर्शना देवी सिटी पैलेस नहीं जा पाती थीं, शायद उनकी वह इच्छा गुरु महाराज उनके घर पधारकर पूरी कर दिया करते थे । श्रीमती दर्शना देवी कई बार जगतपुरा-सांगानेर माताजी साहब के पास भी हाज़िर हुईं । अपनी सभी पुत्रवधुओं को भी वे माताजी का आशीर्वाद दिलवाने उनके पास लेकर गयीं ।

एक बार श्रीमती दर्शना देवी मुंबई अपने मझले पुत्र राजेन्द्र के पास गईं हुई थी । सब लोग लोकल ट्रेन से कालबा देवी के लिए जा रहे थे । श्रीमती दर्शना देवी ट्रेन में चढ़ गई लेकिन बाकी लोग नहीं चढ़ पाए, इतने में ही ट्रेन चल दी । श्रीमती दर्शना देवी घबराकर चलती ट्रेन से प्लेटफार्म पर कूद पड़ीं । वे पीठ के बल जोर से प्लेटफार्म पर गिरीं । कुछ भी अनहोनी हो सकती थी लेकिन गुरु भगवान की कृपा से उन्हें खरोंच तक नहीं आई । वहाँ उपस्तिथ सभी लोगों ने इसे ईश्वर का चमत्कार ही माना ।

श्रीमती दर्शना देवी ने 27.03.1990 को अपनी दैहिक लीला समाप्त की । 26.03.90 को उनके पौत्र विपिन को स्वपन में दिखा की उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया है और घर में सब लोग शोकमग्न हैं । इसी तरह दिल्ली में श्रीमती ममता अग्रवाल ने उनके दर्शन कर आशीर्वाद पाया । गुरु महाराज की प्रेरणा से घर पर ही उनकी समाधि बनाई गई । आधे फूल घर पर समाधि हेतु रख लिए गए और आधे हरिद्वार में विसर्जित किये गए । कुछ दिनों बाद घर में मौलवी अब्दुल रहीम साहब पधारे और आपने ध्यान के बाद फ़रमाया की श्रीमती दर्शना देवी ने बहुत ही आला मुकाम हासिल किया है ।

महात्मा श्री कृष्ण कुमार गुप्ता

(डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के बाद सत्संग)

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता हर रविवार सुबह अपने घर पर सत्संग कराते थे । बहुत से सत्संगी भाई-बहन सत्संग के लिए पधारते । वैसे तो उनका दरवाजा हमेशा खुला ही रहता था और सत्संगी भाई-बहन जब चाहें, जिस वक़्त चाहें, बेरोक-टोक उनके पास आ सकते थे । सत्संग के लिए उन्होंने कभी किसी को किसी भी वक़्त मना नहीं किया और प्रसन्न मन से सबको अपने प्रेम और सेवा से निहाल किया । उनके बाद सत्संग उनके सबसे बड़े सुपुत्र महात्मा श्री कृष्ण कुमार गुप्ता (भाईसाहब) ने उन्हीं की तरह सम्भाला और आगे बढाया । जैसा की पहले लिखा जा चुका है, डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को ठाकुर रामसिंहजी साहब की ओर से यह निर्देश मिल गया था कि उनके बाद उनका ताज श्री कृष्ण कुमार गुप्ता को जायेगा और इस परिवार में लगभग तीन पीढ़ियों तक रहेगा ।

यहाँ यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा की डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के यहाँ श्री कृष्ण कुमार से पहले दो और पुत्र हुए थे, राजकुमार एवं रामकुमार । इन दोनों पुत्रों की मृत्यु दो माह के होने पर हो गयी, डॉक्टर चन्द्र गुप्ता से धर्मराज उन्हें मांगकर ले गए । इसका विस्तृत विवरण आगे दिया जायेगा, लेकिन यहाँ यह कहना काफी होगा की डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को उनके द्वारा यह बता दिया गया था की एक साल बाद उनका भाई डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के यहाँ जन्म लेगा और उनके पास रहेगा, उसके माथे पर तिलक होगा और उसका नाम कृष्ण कुमार होगा । तदानुसार 9 जुलाई 1943 को उनके यहाँ श्री कृष्ण कुमार का जन्म हुआ । जन्म के समय उनके माथे पर तिलक का निशान दिखता था ।

सन 1970 में डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को स्वपन में निर्देश मिला की ठाकुर रामसिंहजी साहब का सत्संग भाईसाहब श्री नारायणसिंहजी और कृष्ण कुमार चलायेंगे । सत्संग दो टुकड़ो में बंट जायेगा । हुआ भी ऐसा ही । गुरु महाराज ठाकुर रामसिंहजी साहब के समाधि-स्थल पर भंडारा भाईसाहब श्री नारायणसिंहजी 14-15 जनवरी को करने लगे और डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के यहाँ 13 जनवरी को भंडारा होने लगा, जो बाद में 15 जनवरी को होने लगा ।

श्री कृष्ण कुमार गुप्ता को ठाकुर रामसिंहजी साहब का सत्संग लाभ उठाने का अच्छा सुअवसर प्राप्त हुआ । वे सिटी पैलेस में उनके पास हाज़िर होते । कभी-कभी तो वे बाबा हरिश्चंद्र मार्ग वाले तिमंजिले मकान के नीचे आकर बैठ जाते । उस मकान में नीचे दो गौखे (बैठने के लिए स्थान) बने हुए थे । वे वहाँ जाकर बैठ जाते और अपने गुरु महाराज ठाकुर रामसिंहजी साहब को याद करते । अक्सर ठाकुर रामसिंहजी साहब आ पधारते और अपनी कृपावृष्टि करते । एक बार श्री कृष्ण कुमार गुप्ता ने ठाकुर रामसिंहजी साहब से विनती की कि वे उन्हें अपने जैसा बना दें । ठाकुर रामसिंहजी साहब ने विनती कुबूल की और फ़रमाया-'गुरु भगवान आपको अपना जैसा बनाएँ ।'

एक बार उन्होंने किसी बात पर गुरु महाराज से कहा कि उनके साथ ऐसा क्यों हो रहा है तो ठाकुर रामसिंहजी साहब ने फ़रमाया-'किशन बाबू, ये तो जन्म-जन्म के संस्कार हैं, चाहे हंसकर इस जन्म में भुगत लो, या जन्म-जन्म भुगतते रहो ।' एक बार श्री कृष्ण कुमार गुप्ता ठाकुर रामसिंहजी साहब के घर जगतपुरा गए हुए थे । शाम होने पर उन्होंने ठाकुर रामसिंहजी साहब से वापस लौटने की इज़ाज़त चाही लेकिन महाराज ने उन्हें रुकने के लिए कहा । एक बार फिर पूछने पर भी आपने उन्हें रुकने के लिए कहा । जब श्री कृष्ण कुमार गुप्ता ने तीसरी बार इज़ाज़त चाही तो ठाकुर रामसिंहजी साहब ने फ़रमाया-'रुक जाते तो अच्छा था ।' श्री कृष्ण कुमार गुप्ता साइकिल पर वापस आ रहे थे की रास्ते में उनके होंठ पर ततैये ने कट लिया और उनका मुँह सूज गया । अगले दिन

सिटी पैलेस में जब वे गुरु महाराज के सामने हाज़िर हुए तो उन्होंने फ़रमाया 'अच्छा हुआ ।' श्री कृष्ण कुमार गुप्ता ने कहा महाराज मुझे ततैये ने कट लिया, मुँह सूज गया और आप अच्छा कह रहें हैं तो ठाकुर रामसिंहजी साहब ने फ़रमाया-'किशन बाबू, ना जाने ट्रक से टक्कर हो जाती, अंग-भंग हो जाता, गुरु भगवान का शुक्र है ।' समर्थ गुरु इसी तरह सूली की सजा शूल (कांटे) में ही भुगतवा देतें हैं ।

श्री कृष्ण कुमार गुप्ता को ठाकुर रामसिंहजी साहब का ही नहीं वरन मौलवी अब्दुल रहीम साहब और महात्मा श्री अब्दुल जलील खान साहब (हजरत मौलवी अब्दुल गनी खान साहब के पोते और महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब के खलीफा) के सान्निध्य का भी अवसर मिला । महात्मा श्री अब्दुल जलील खान साहब स्वयं डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के घर पधारे थे और उन्होंने वहाँ श्री कृष्ण कुमार गुप्ता को बैअत किया । श्री कृष्ण कुमार गुप्ता के यह कहने पर की वे ठाकुर रामसिंहजी साहब के शिष्य हैं, उन्होंने यह फरमाते हुए की 'वे (ठाकुर रामसिंहजी साहब) इस खानदान के आफताब हैं, और मैं तो बस एक चिराग हूँ,' श्री कृष्ण कुमार को बैअत कर अपना जानशीन बनाया । सन 1985 में मौलवी अब्दुल रहीम साहब ने श्री कृष्ण कुमार गुप्ता को ठाकुर रामसिंहजी साहब की तरफ से सम्पूर्ण शक्ति प्रदान की । डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने अपनी डायरी में लिखा है की-'15 साल बाद कृष्ण कुमार पीर साहब (मौलवी अब्दुल रहीम साहब) के हुक्म से और भाईसाहब नारायणसिंहजी माताजी के हुक्म से काम कर रहें हैं ।'

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के सन 1991 में पर्दा कर जाने के बाद से श्री कृष्ण कुमार गुप्ता ने सन 2005 तक अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया । उन्हें महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब (डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की ओर से), ठाकुर रामसिंहजी साहब और महात्मा श्री अब्दुल जलील खान साहब तीनों की खिलाफत प्राप्त हुई । महात्मा श्री अब्दुल जलील खान साहब की खिलाफत उनके बाद उनके छोटे भाई श्री सतीश कुमार गुप्ता को बख्शी गई ।

भाईसाहब को बहरूपिये वाला यह दृष्टांत बहुत प्रिय था । एक राजा के दरबार में एक बहरूपिया था जो तरह-तरह के स्वांग रचकर राजा और दरबारियों का मन बहलाया करता था । राजा जो इनाम दे देता उससे उसका गुजर-बसर होता । एक बार वह एक सन्यासी का रूप धरकर राजा के दरबार में आया और एक सन्यासी की तरह राजा को उसने उपदेश भी दिया । प्रसन्न होकर राजा ने उसे बहुत इनाम दिया लेकिन उसने उसे हाथ तक भी नहीं लगाया और राजा को आशीर्वाद देकर दरबार से चला गया । अगले दिन वह दरबार में हाज़िर हुआ और कोरनिश कर राजा से इनाम मांगने लगा । राजा को बहुत आश्चर्य हुआ और उससे पूछा की कल तो तुम इतना सब इनाम बिना लिए चले गए थे और आज इनाम मांग रहे हो । बहरूपिये ने उत्तर दिया-'महाराज, कल में सन्यासी के रूप में था । सन्यासी के लिए वो सब बेकार था । आज मैं वही बहरूपिया हूँ ।' इसका सार यही है की इन्सान को जो भी चरित्र (Role) वह अदा कर रहा है उसकी मर्यादा का पूर्ण रूप से पालन करना चाहिए । जब वह सत्संग में ईश्वर के सामने हाज़िर हो तो उसे दुनियावी ख्यालों को भुलाकर ईश्वर की याद में मग्न हो जाना चाहिए । जनाब चच्चाजी साहब (महात्मा रघुबर दयालजी) भी फ़रमाया करते थे-'झुठ्ठल खेले सच्चल होवे, सच्चल खेले बिरला होवे ।' अर्थार्थ परमात्मा को सच्चे मन से चाहने वाला तो कोई बिरला ही होता है लेकिन झूठ-मूट में भी उसे याद करने वाले को वह परमात्मा अपनी भक्ति बख्श देता है और उसके नाटक को सच कर दिखाता है ।

श्री कृष्ण कुमार गुप्ता के सम्बन्ध में उनके एक सत्संगी ने लिखा है:

- भाईसाहब के मुख पर हमेशा एक तेज चमकता रहता था;
- वह बड़े प्रेमी स्वभाव के थे;
- किसी की गलती का आभास किसी और को नहीं होने देते थे;
- यदि किसी से गलती हो जाय तो सबके सामने लज्जित नहीं करते थे, परन्तु अकेले में उसे समझा देते थे;
- वे किसी की कमी या मुसीबत को तुरंत दूर कर देते थे;
- भाईसाहब में कभी 'मैं' वाली बात नहीं आई;
- किसी के ऊपर कोई घटना घटी या घटने वाली है उसका आभास उन्हें तुरंत हो जाता;
- अपने परिवार और सत्संगियों के बीच कभी कोई फर्क नहीं किया;
- सत्संगियों से हुई गलती को वे उदाहरण देकर समझाते थे;
- बात को पूरी तरह सुनकर अपना मत व्यक्त करते थे; और
- उनमे त्याग की भावना प्रबल थी ।

एक अन्य सत्संगी भाई ने लिखा है कि भाईसाहब इन बांतों को बार-बार कहा करते थे:

- मानव में मानवता आ जाये;
- खूंटा मजबूत होना चाहिए;
- सब एक ही माला के मनियें हैं;
- चौबीस घंटे ध्यान होना चाहिए, क्या मालूम कब गुरु भगवान तवज्जोह दे रहें हों; और
- यह प्रेम-मार्ग है । प्रेम में सब बांतें समा जातीं हैं । जहाँ प्रेम है, वहाँ नियम टूट जातें हैं ।

भाईसाहब के शरीर छोड़ने का आभास भी गुरु भगवान ने पहले ही करा दिया था। उनके छोटे भाई राजेन्द्र के शब्दों में-'बड़े भाईसाहब का स्वास्थ्य कुछ दिनों से ठीक नहीं चल रहा था। लंग्स में इन्फेक्शन के कारण काफी रुग्न हो गए थे व आपने 16 .06 .05 को शाम 6.30-7 बजे समाधि ले ली । मैं 12 .06 .05 को थाईलैंड, बैंकाक चला गया था। वहीं सूचना मिली। भाईसाहब की सेहत के बारे में विपिन से ई-मेल पर जानकारी मिल रही थी। 13 .06 को वे हॉस्पिटल में एडमिट हुए हैं, अनीता ने बताया था। 14.06 .05 को उनकी तबियत स्टेबल व इम्प्रूव हो रही थी। 14.06 को रात में स्वप्न आया जिसमे बाउजी व भाईसाहब दोनों दिखाई दिए। भाईसाहब बाउजी के साथ जयपुर के सेठी कॉलोनी वाले मकान में थे, लेटी हुई अवस्था में। बाउजी की आँखे बहुत प्रेम, करुणा व दया से परिपूर्ण थीं, जैसी कि उनकी एक फोटो में दिखतीं हैं, उससे भी अधिक तेजस्वी। मैं उनकी आँखों में कुछ देर से ज्यादा नहीं देख पाया। ऐसा आभास हुआ की भाईसाहब अब सत्संग में ज्यादा देर नहीं बैठा करेंगे। इसके बाद बाउजी ने मेरे दांये हाथ की हथेली पर अपनी जीभ छुआई व कहा कि तुम्हें जो चाहिए था मिल गया। थोड़ी देर बाद आँख खुलने पर मैंने अपनी हथेली को उसी जगह से अपनी जीभ से छुआ व बाउजी के आशीर्वाद को पूर्ण रूप से आत्मसात किया।

16.06 की शाम को फोन द्वारा सुचना मिली की भाईसाहब ने समाधि ले ली है ।'

इस बारे में महात्मा श्री दिनेश कुमार सक्सेना साहब (महात्मा रामचन्द्रजी महाराज के सुपौत्र) ने बताया की शरीर छोड़ देने के कुछ दिन बाद श्री कृष्ण कुमार गुप्ता उनके पास फतेहगढ़ में एक रात

सशरीर हाज़िर हुए और बोले की फतेहगढ़ उनके लिए तीर्थ जैसा है और वे उनसे मिले बिना नहीं जा सकते थे। महात्मा श्री दिनेश कुमार सक्सेना साहब ने उन्हें दही और शक्कर खिलाई।

महात्मा श्री कृष्ण कुमार गुप्ता की समाधि भी उनके पिता और माता की समाधि के साथ सी-47, सेठी कॉलोनी में ही बनी है।

वर्तमान में यह सत्संग सी-47, सेठी कॉलोनी और डी-346, मालवीय नगर, दोनों जगह पर चल रहा है।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की कलम से

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता को डायरी लिखने का बहुत शौक था । इनमें वे अपने अध्यात्मिक अनुभव और इस सिलसिला-ऐ-आलिया से सम्बंधित अपने गुरुजनों से प्राप्त ज्ञान की बांते लिखते थे ताकि इन्हें पढ़कर आने वाली पीढियां लाभ उठा सकें । इन लेखों में प्रमुख हैं: इल्म रूहानी; साधना मार्ग (रूहानी सफ़र); नाद और प्रकाश; गुरु एवं शिष्य; सृष्टि, वैतरणी एवं परमपद; राजयोग एवं प्रश्नोत्तर । इनमे से कुछ का प्रकाशन 'जीवन-ज्योति' नाम की पत्रिका में भी हो चुका है । पुस्तक के इस भाग में उन्हें क्रमबद्ध करके डॉक्टर चन्द्र गुप्ता की ही भाषा और शैली में दिया जा रहा है ।

इल्म रूहानी

इल्म रूहानी दरअसल कृष्ण भगवान की देन है । उनका क़ल्ब जाकिर (यानि दिल की आवाज़-अनहद नाद) था और उनमें शक्ति थी । उन्होंने यह आवाज़-अनहद नाद अपने शिष्यों अर्थार्थ गोपियों को बख्शी । इसे ही बांसुरी के नाम से जाना गया । जब यह नाद जागृत हो जाता है और कामयाबी मिल जाती है तो दुई मिटकर प्रेम पैदा हो जाता है । जब प्रेम पैदा हो जाता है तो जो भी उस आचार्य के पास जाता है निहाल हो जाता है । इसकी मिसाल गोपियाँ, मीराबाई और अर्जुन हैं । अर्जुन का आज्ञा चक्र खुला, मीरा प्रेम से भरी गयी । यह जन्म-जन्म तक चलता है और कभी ख़त्म नहीं होता ।

कृष्ण पहले ऐसे अवतार हैं जिन्होंने जिस्म में रहते 16 कलाएँ पार की । 17 से 24 कलाएँ सूक्ष्म शरीर से और शेष 25 से 32 कलाएँ कारण शरीर से ही पार होती हैं । कृष्ण पैदा ही पूर्ण हुए थे और बचपन से ही उन्होंने गुप्त भेद (अध्यात्मिक रहस्य) खोलने शुरू कर दिए थे । मन का तबका सबसे बड़ा दरिया है जिसमें नाग जैसे भयंकर और नाग-कन्या जैसे छोटे-छोटे मन मोहने वाले जानवर रहते हैं । जो इस तबके से निकलना चाहता है उसे नाग खा जाता है अर्थार्थ उसे वहाँ से निकलने नहीं देता । अगर वह गुरु कृपा से हिम्मत कर के निकल गया तो मोहनी-परियां उसका स्वागत करती हैं और उसके हुक्म से काम करती हैं । यह मुकाम सिर्फ नेक-दिल इन्सान ही पार कर सकता है । इसे पार करने से पहले भयंकर लड़ाई होती है । यह योग का चौथा मुकाम है जब साधक अनहद-नाद यानि बाँसुरी की आवाज़ खुद सुनता है और अपनी ताक़त से दूसरों के दिल में भी यह आवाज़ पैदा कर सकता है । लेकिन यह आवाज़ उन्हीं साधकों के दिल में पैदा होगी जो अपना दिल उनके (गुरु या कृष्ण के) दिल से लगायेगा । यह इल्म सीना-ब-सीना (from heart-to-heart) है । जब एक दफा यह आवाज़ पैदा हो गयी और इस तबके को पार कर लिया फिर कभी बंद नहीं होती । कदम आगे ही बढ़ता है ।

यहाँ शैतान का राज है, वह चौकन्ना हो जाता है । जो यहाँ से आगे जाना चाहता है अपनी पूरी फ़ौज लगाकर दुःख पर दुःख देकर शैतान उसे रोकता है और साधक अगर नहीं मानता है तो उसे बर्बाद कर देता है जैसे कंस ने कृष्ण को तंग किया । यहाँ पर सुनहरी, लाल और सफ़ेद रंगों की रौशनी प्रधान है । सुनहरी प्रकाश आखिर तक जाता है । यहाँ इल्लत-किल्लत-जिल्लत (शारीरिक परेशानी, आर्थिक तंगी व अपमान या तिरस्कार) से सफाई होती है । इस सबके बाद जब गोपियों और कृष्ण का खेल शुरू होता है तब सारा भेद-भाव समाप्त हो जाता है । कोई पर्दा नहीं रहता । संत-मत में इसकी उपमा पति-पत्नी के रिश्ते से दी गई है । वहाँ दो दिल एक होते हैं, तड़प होती है, एक-दूसरे से जुदा नहीं होना चाहते, यहाँ प्रेम का रिश्ता जुड़ता है । एक प्रेमी दूसरे के दिल से दिल मिला रखता

है और बाँसुरी की मीठी आवाज़ सुनता रहता है । दुनिया में रहकर भी दुनिया से अलग रहता है । फिर यह आवाज़ कभी बंद नहीं होती, दो दिल एक हो जाते हैं । इससे आगे आत्म-समर्पण यानि अपनी इच्छा त्याग कर प्रेमी के आधीन होना होता है ।

जब शैतान और नेकी की लड़ाई होती है और अपना जोर यानि ताक़त खत्म हो जाती है तब सिवाय परमात्मा के सहारे के अन्य कुछ नहीं सूझता और भक्त भगवान को पुकारता है जैसे द्रौपदी ने कृष्ण को पुकारा था और कृष्ण ने उसकी लाज रखी थी । तब वह अपनी शक्ति देकर उसको शैतान से बचाता है और अपनी आत्मा से पूर्णतया उसका रिश्ता जोड़ता है और उसकी रक्षा का भार अपने ऊपर ले लेता है । इसीलिए वह मालिक या भगवान कहलाता है । सुनहरी रंग के प्रकाश की ताक़त से भव-सागर पार कराकर अपने लोक से सीधा रिश्ता जोड़ देता है । यह सुनहरी रंग की रौशनी साथ रहती है और साधक का सब काम करती है । इसीलिए इसे शक्ति या राधा की उपाधि दी गयी है । बैगेर शक्ति के भगवान नहीं हो सकता, शक्ति अपने-आप काम करती है । लेकिन जहाँ शक्ति कमजोर हो जाती है तो भगवान का सिंहासन हिल जाता है और दोनों मिलकर अपने प्रेमी को शैतान से बचाते हैं । शैतान की मार छठे दर्जे तक होती है लेकिन यहाँ वह कुछ बिगाड़ नहीं सकता । यह आज्ञा चक्र कहलाता है । कृष्ण भगवान ने अर्जुन का आज्ञा चक्र खोला था । यहाँ पर सिवाय काले रंग के चारों रंग खूब नज़र आते हैं । प्रधान रंग नीला-सा (bluish) होता है और बहुत सारे चाँद, सूरज व तारे टूटते नज़र आते हैं । यह भगवान की शक्ति से ही देखा जा सकता है और कोई जरिया नहीं है ।

कृष्ण क्योंकि अर्जुन को आज्ञा चक्र तक ही ले जा सके और यहाँ नीले रंग की प्रधानता है इसलिए कृष्ण नील-वर्ण वाले दिखाये गये । सातवें मुकाम में सिर्फ संत (सतगुरु) ही ले जा सकतें हैं, जिसे मृत्यु के समय या उससे 20-21 दिन पहले ही पार करवाया जाता है क्योंकि जिस्म में रहते माया का कुछ अंश शेष रहना जरुरी है और यही मर्यादा है । बाकी दर्जे मृत्यु के बाद जो 25 से 32 कला वाला हो पार कराता है ।

कुण्डलिनी शक्ति का वास नाभि में माना गया है इसलिए संत-मत में पहले के तीन मुकाम छोड़ दिए गए हैं । यह स्थूल माया के मुकाम है जिन्हें हठयोगी सिद्ध करते हैं । जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है तो यहाँ सुनहरी रंग का बड़ा गोलाकार चक्र जिससे किरणें निकलती रहती हैं दिखता है । इसका प्रभाव दुनियावी रहता है । अगर इसका इस्तेमाल ठीक है तो साधक चौथे दर्जे पर आ सकता है लेकिन पूर्ण आचार्य की मदद जरुरी है वरना हजारों जन्म लेने होंगे । जब पूर्ण कुण्डलिनी शक्ति खुल जाती है तो रोम-रोम में बाँसुरी की आवाज़ (अनहद-नाद) होने लगती है । संत-महात्मा इसे ही 'राम' या 'ॐ' पुकारते हैं । जब तक यह आवाज़ दिल (कल्ब-हृदय चक्र) तक रहती है, एक आवाज़ में 108 नाम पूरे होते हैं । जब यह रोम-रोम में बस जाती है तो एक एक आवाज़ में साढे-तीन करोड़ नाम पूरे होते हैं, ऐसे लोगों को जीवन-मुक्त कहा जाता है और वे दूसरों को दीक्षा देकर उनका उद्धार करते हैं । वे ही पूर्ण संत या महात्मा कहलाते हैं । सातवें दर्जे का नज़ारा बयान से बाहर है । वहां रूहें प्रकाश-रूप होती हैं और आनंद से नाचती रहतीं हैं, वहां आनंद के सिवाय कुछ नहीं है ।

कृष्ण भगवान के बाद यह इल्म हिन्दुओं में करीब-करीब विलुप्त हो गया । मुस्लिम संतों ने इस इल्म की अज सरे नौ (नये सिरे से) तलाश की और हजरत मुहम्मद साहब ने यह सिलसिला (सिलसिला-ऐ-आलिया नक्श्बंदिया) चलाया । इस सिलसिले में हजरत अहमद अली खान साहब (33 वें सतगुरु) कायमगंज में अवतरित हुए । उन्होंने अपनी रूहानी औलाद हजरत मौलाना फ़ज्ल अहमद

खान साहब और मौलवी अब्दुल गनी खान साहब को फ़रमाया की 'मुझे खुदा की तरफ से यह आदेश हुआ है कि यह इल्म हिन्दुओं का है और अब इस इल्म को हिन्दुओं में लौटा दो' और फिर हजरत मौलाना फ़ज्ल अहमद खान साहब से फ़रमाया की तुम्हारे पास दो हिन्दू लड़के आयेंगे, उन्हें यह इल्म देना ।

हजरत मौलाना फ़ज्ल अहमद खान साहब ने यह इल्म महात्मा रामचन्द्रजी महाराज (फतेहगढ़) और महात्मा रघुबर दयालजी महाराज को बख्शा और अपना जानशीन (उत्तराधिकारी) घोषित किया । महात्मा रामचन्द्रजी महाराज के कई शिष्य हुए जिन्हें आचार्य पदवी बख्शी गई । ये अपना काम बखूबी चला रहें हैं । इनमें से एक महात्मा (ठाकुर) रामसिंहजी साहब हुए जिन्हें फ़ना-फिल-मुरीद यानि गुरु का शिष्य में लय होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो संतों में सबसे बड़ा दर्जा है ।

इधर हजरत अब्दुल गनी खान साहब ने भी अपना जानशीन महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब (जो महात्मा रघुबर दयालजी के दूसरे सुपुत्र थे) को पूर्ण आचार्य पदवी देकर बनाया और श्री सत्येंद्रनाथजी को भी पूर्ण आचार्य पदवी बख्शी । इन संतों ने अपने गुरु हजरत अहमद अली खान साहब का हुक्म पालन कर हिन्दू, मुस्लिम, इसाई का मसला हल करके यह साबित कर दिया की यह सिलसिला तास्सुब (भेद-भाव) से ऊपर है । खुदा को पाना जात-पात पर नहीं बल्कि उसकी रहमत पर निर्भर है । ईश्वर की प्राप्ति अपने गुरु द्वारा बैगेर तास्सुब के ही हो सकती है, इसमें मजहब की पाबन्दी नहीं है ।

महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने जब किसी हिन्दू शिष्य को काबिल ना पाया तो अपना जानशीन हजरत अब्दुल जलील खान साहब को जो हजरत अब्दुल गनी खान साहब के पोते थे बनाया । हजरत अब्दुल जलील खान साहब ने रतलाम वाले यादव साहब को खिलाफत बख्शी । लेकिन यह शिष्य बनाते समय शिष्य के दिल पर कलमा नक्श करते थे । यादव साहब को गद्दी देने पर उनके पुत्र तोहा खान साहब ने बहुत नाराजगी व्यक्त की और यादव साहब को मिटा देने का प्रयास किया लेकिन वे गुरु-माताजी की कृपा से बच गए ।

"ऐ राहे हक के मुसाफिर, रुख है तेरा किधर,
चलता चला जा मंजिल पे, विश्वास दिल में रखकर,
बहुत सख्त हैं राहें इसकी, पग-पग पे हैं लुटेरे,
पार कर लेगा तू मंजिल, साया गुरु का सिर रखकर"

मुझको गुरु भगवान महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब ने बाकायदा बैअत करके ठाकुर रामसिंहजी साहब के जेरे साया रखा । आप हद-बेहद के दर्जे को पार किये हुए थे, बड़े जलाली थे । ठाकुर रामसिंहजी साहब शांति के अवतार थे । आपने मेरा कल्ब जाकिर किया और बड़ा कष्ट उठाकर इल्लत-जिल्लत-किल्लत के महीन मरहलों से मुझे पार कराया । मैं ज्यादातर जलाल की हालत में रहा, जिस की वजह से मैं बदनाम भी रहा । आपने अपनी जिन्दगी में हजरत अब्दुल रहीम साहब जयपुरी की खिदमत में रखा । आप ने मेरी बड़ी मदद की और गुरु पर विश्वास पक्का कराया और समझाया की गुरु की असल खिदमत यह है की जैसे तुम्हारा कल्ब जाकिर हुआ, उसी तरह औरों का भी कल्ब जाकिर करके तालिब को अपने गुरु के हवाले करदो और खुद परदे में रहो । सिद्धियों से बचो और खुद तकलीफ उठाकर दूसरों को राहत पहुँचाओ । दिखावे से बचो ।

नूर

क़ल्ब का नूर जर्द (सुनहरा) होता है । क़ल्ब (नक्शबंदी सूफी मान्यता के अनुसार इन्सान के सीने में मौजूद पांच रूहानी मुकामों में से एक है । बाकी अन्य चार का नाम है रूह, सर, खफी एवं खफी-अखफा या अखफी । क़ल्ब का स्थान सीने के बायीं तरफ है, जहाँ दिल की धड़कन सुनाई देती है । इसके अधिष्ठाता हजरत आदम हैं ।

रूह का नूर सुर्ख (लाल) होता है । सीने में इसका स्थान दायीं तरफ क़ल्ब के सामने है । इसके अधिष्ठाता हजरत इब्राहम हैं ।

सर का नूर सफ़ेद होता है । सीने में इसका स्थान बायीं तरफ क़ल्ब से कुछ ऊपर है । इसके अधिष्ठाता हजरत मूसा हैं ।

खफी का नूर काला होता है । सीने में इसका स्थान दायीं तरफ सर के सामने है । इसके अधिष्ठाता हजरत ईसा हैं ।

अखफी का नूर सब्ज़ (हरा) होता है । सीने में इसका स्थान सर और खफी के बीच में लेकिन कुछ ऊपर अर्थार्थ सीने के बीच में है । इसके अधिष्ठाता हजरत मुहम्मद हैं । रूहानी मुकामों में इसका दर्जा सबसे ऊपर है ।

दुआ

नक़्शबन्दिओं की दुआ यह है-ऐ अल्लाह मेरा मक़सूद (गंतव्य-मंजिल) तू और तेरी खुशनूदी (प्रसन्नता) ही है । अपनी मुहब्बत ओर मार्फ़त अता फरमा । इस दुआ को बार बार पढ़ना चाहिए ।

राब्ता-शैख़

राब्ता शैख़ का शाब्दिक अर्थ है गुरु की शक्ल का ध्यान । गुरु शिष्य को अपनी शक्ल को ध्यान में रखने की हिदायत देता है और सेवा पर जोर देता है । अपने दिल को हर वक्त परमात्मा या गुरु से मिलाये रखना चाहिए, इससे तरक्की जल्द होगी । बैगेर राब्ता-शैख़ (गुरु का ध्यान) के कोई भी परमात्मा तक रसाई हासिल नहीं कर सकता । जब यह ध्यान पक्का हो जाता है तो आगे की शिक्षा दी जाती है ।

ख़ामोशी

खामोश रहने से जल्द निजात मिलती है ।

जिक्र-क़ल्ब

अपने दिल की जुबान (ख्याल) से हर वक़्त हर हाल में चलते-फिरते 'अल्लाहो' या 'ॐ' का जाप करता रहे । जब दिल की आवाज़ सुनाइ देने लग जावे (अनहद नाद प्रकट हो जावे) उसे ही 'अल्लाहो' या 'ॐ' ख्याल करे ।

दिल जाहिरी नापाकी से नापाक नहीं होता । जाहिरी नापाकी से जिस्म और जुबान नापाक होते हैं । दिल की नापाकी कुफ्र (परमात्मा को कुबूल ना करना-नास्तिकता), शिर्क (परमात्मा में परमात्मा के सिवाय अन्यों को भी शामिल करना-अनेकेश्वरवादी) और गफलत (परमात्मा को भुलाना) से होती है । जिक्र यहाँ तक जारी रहे की बिना प्रयास दिल को जिन्दा पाए (परमात्मा की याद में मग्न पाए) । इसका प्रमाण यह है:

- दिल की हरकत जिक्र के साथ होना;
- तालिब (अभ्यासी-साधक) के कान में जिक्र-दिल की आवाज़ का सुनाइ देना;
- नूर जर्द लतीफ क़ल्ब (दिल) या और अनवार लतायाफ़ (अन्य रूहानी चक्रों का प्रकाश) का दिल या जाहिरी आँखों से नज़र आना;

- हर वक़्त दिल की निगाह परमात्मा की तरफ होना ।

चारों बातें हैं तो नूरे-आला है वर्ना चौथी साधना बहुत जरुरी है । फ़क़ीर के नजदीक अच्छा सबूत यह है कि जब तालिब सोकर उठे, अपने दिल को बिना प्रयास व बिना ख्याल के परमात्मा के जिक्र में पावे ।

जब पेशानी (ललाट) का जिक्र शुरू हो जाता है तब अनहद की आवाज़ रोम-रोम में आ जाती है । इसको सुल्तान-उल-जिक्र (सर्वश्रेष्ठ जिक्र) कहते हैं । फिर यह कलमा खूब पढ़े-'लाहोल वला कुव्वत इल्ला-बिल्लाह' और ख्याल करे की सारी दुनिया में परमात्मा के सिवाय कोई मौजूद नहीं है ।

फ़ना

फ़ना तीन किस्म की होती है ।

- फ़ना-ऐ-अव्वल: सालिक (साधक) स्वपन में और ध्यान में अपने को और सारे जहाँ को नेस्तनाबूद पाता है । इस फ़ना को औद (वापसी) का डर है ।
- फ़ना-ऐ-सानी: फ़ना-ऐ-सानी में सालिक जागृत अवस्था में अपनी जाहिरी आँखों से अपने को और सारी दुनिया को मादूम (नहीं-नदारद) और सिर्फ एक जात-खुदा का वजूद (अस्तित्व) पाता है । इस फ़ना को औद (वापसी) का डर नहीं है ।
- फ़ना-उल-फ़ना: यह स्थिति तब होती है जब सालिक को शउर-ऐ-फ़ना (फ़ना का ख्याल) भी बाकी ना रहे । जहुर-ऐ-तौहीद (एकता की अनुभूति) बिला क़ैद-ऐ-जिस्म (शरीर के ख्याल के बिना) हो । तौहीद-बिल-जिस्म असली और हकीकी तौहीद है ।

जब दिल का आईना साफ हो जायेगा, तुझ को वो चीजें नज़र आएँगी जो माद्यत (दुनियावी) से बलातर (अच्छी) हैं ।

विलायत किबरा

यहाँ पहुंचकर सालिक ख्याल करता है कि जो अच्छी बातें तुम्हें पहुँचे वह परमात्मा की तरफ से है और जो बुरी पहुँचे वह तुम्हारी तरफ से । ऐसे सालिक की रक्षा खुद रसूले-अल्लाह करते हैं ।

जिन तालिब की ताक़त कमजोर होती है, वो हुजुर की परवरिश और मेहरबानियां स्वप्न में देखते हैं । जिनकी सामान्य होती है, वो रसूल साहब को मराक़बा (ध्यान या समाधि की अवस्था) में देखते हैं और जिनकी विलायत-कवी होती है वो हुजुर को आँखों से देखतें हैं और उनकी इनायत पाते हैं । रसूल की शक्ल का हो जाना सब से आला है । इससे आगे फरिश्तों की विलायत है ।

साधना मार्ग (रूहानी सफ़र)

हमारे महापुरुषों ने परमात्मा की प्राप्ति के अनेक रास्ते खुद अमल करके हमारे सामने रखे हैं । साधक खुद किसी पूर्ण गुरु द्वारा मदद लेकर अनुभव कर सकता है । जो व्यक्ति गुरु द्वारा बताये मार्ग पर चलता है, उसका रास्ता आसान हो जाता है । जैसे ही पक्का इरादा करके रूहानी सफ़र के मार्ग पर कदम रखता है, जन्म-जन्मों के संस्कार शैतान का रूप धारण करके अटकाव पैदा करने लगते हैं । पथ पर बढ़ने नहीं देते-नाना प्रकार से रोकतें हैं-कोई बिरला-बहादुर ही यह सफ़र पार करने की हिम्मत जुटा पता है । इसी सफ़र को कुंडिलिनी योग या सात आसमान या चक्र भी कहा गया है ।

पहला सफ़र; (**मूलाधार चक्र**) इस राह में पहला मुकाम भोग-विलास का है । यहाँ का हर नज़ारा लुभावना है, दौलत, सुन्दर युवतियां, ऐश के सब सामान उपलब्ध हैं । अध्यात्मिक ज्ञान के सिवाय खूब शौहरत है । यही मायाजाल नगरी है । अगर कोई यहाँ सदाचारी हो गया और माया का सही उपयोग किया तो उसको आगे चलने का हक मिल जाता है ।

दूसरा सफर: (**स्वाधिष्ठान चक्र**) अगला पड़ाव और भी टेढ़ा है । हर यात्री अपने धर्म वालों को प्यार करता है, दूसरे धर्म वालों से नफरत और उन पर जुल्म करता है । यही दो मुकाम आवागमन के मुख्य स्रोत्र हैं । सतगुरु की दया से ही यहाँ से छुटकारा मिलता है । मृत्युलोक यही दो नगरियाँ कहलाती हैं । यहाँ से वही आगे बढ़ता है जो दूसरे धर्म वालों से नफरत त्याग देवे व सब धर्मों से प्यार का रास्ता अपनाये । इसी कारण कबीरजी को उनके गुरूजी ने दीक्षा देने से इंकार कर दिया था, जिनका उद्धार कबीरदासजी ने धर्म से ऊपर उठकर किया ।

तीसरा सफर: (**मणिपूरक चक्र**) इसके बाद अगला पड़ाव भक्ति का आता है । साधक अपनी पिछली करनी का पछतावा करके अपनी मुक्ति के साधन की तलाश करता है । जप-तप करता है, जिसको देखा नहीं उसकी पूजा करता है, शांति प्राप्ति की कामना करता है, जो सिर्फ सच्चे गुरु के पास जाकर, तन, मन, धन से सेवा करने से मिलती है । यह साकार पूजा है । जब मन को मन चाही शांति नहीं मिलती और जब कुछ हाथ नहीं आता, उदास हो जाता है । अब वो उसे ज्ञान द्वारा प्राप्त करना चाहता है क्योंकि जिस भगवान से जिस्म द्वारा साक्षात्कार ना होवे, वो पूजा अधूरी ही रह जाती है । रामायण में आया है की अगस्त्य मुनि को भगवान से साक्षात्कार करने के लिए कई युगों तक तपस्या करनी पड़ी, उनके मिलने पर पूजा पूरी हुई । जिस्म से जिस्म का मिलना जरुरी है ।

'खग ही जाने खग की भाषा'-हम मुर्दों की भाषा नहीं समझ सकते, इसलिए भगवान को हमारी तरह शरीर धारण कर गुरु रूप में आना पड़ता है । तभी हमारा उद्धार संभव है । इसलिए भक्ति अधूरी रह जाती है, और आधी मानी जाती है ।

चौथा सफर: (**अनहद चक्र**) जो किताबों से पढ़ा जाता है, असल ज्ञान नहीं कहलाता । इससे सिर्फ किताबी-ज्ञान होता है, जिससे वह नाजानकारों पर रौब गांठता है और धन इकट्ठा करता है । अहंकार का पुतला बनकर भगवान की या स्वामी-1008, परम संत इत्यादि उपाधि पाकर फूला नहीं समाता । जब तक यह खत्म नहीं हो जाता और दिल से घृणा नहीं मिट जाती, सब में एक ही आत्मा नजर नहीं आने लगती, वह संत का दर्जा नहीं पा सकता और मुक्ति की तरफ नहीं बढ़ सकता । जब धीरे-धीरे सतगुरु की दया से अहंकार ख़त्म हो जाता है सब में एक ही आत्मा देखने लगता है, मन का ठहराव हो जाता है और मन शांत हो जाता है । दुई जाती रहती है और मन में प्रेम उमड़ता है । यहाँ से मुक्ति की शुरुआत हो जाती है । अक्सर लोग यहीं पड़ाव डाल देते हैं, आगे की कठिनाई सहन नहीं कर सकते और ना ही आगे चलने का साहस जुटा पाते हैं ।

मुक्ति की दो किस्मे हैं: पहली जिसमे मरने के बाद जन्म नहीं लेते । आगे के सारे मुकाम सूक्ष्म शरीर से तय करने पड़ते हैं । दूसरों का उद्धार करना उसकी ताक़त से बाहर होता है । स्वयं का उद्धार ही मुश्किल से हो पाता है । दूसरी किस्म जीवन-मुक्त लोगों की है, जो इसी जीवन में परम-पद पा लेतें हैं ।

पांचवा सफर: (**विशुद्ध चक्र-शांति नगर**) यह सफ़र अत्यंत कठिन है । इस मुकाम को पार करना केवल पूर्ण गुरु की मदद द्वारा ही हो सकता है । बिरला ही इसे पार कर पाता है, अन्यथा ज्यादातर

साधक यहाँ से ज्ञान मार्ग पर वापस लौट जातें हैं । आगे जाने की हिम्मत खो बैठते हैं । धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग भी बहुत जरुरी है ।

यहाँ तीन मुख्य काम करने पड़ते हैं:

दया-दया और सेवा, बीमारों की मदद करना, गरीबों की जरूरतें पूरी करना;

धर्म-कोलेज खोलना, धर्मशाला बनवाना, गरीबों और विधवाओं की सहायता करना इत्यादि, जो निष्काम भाव से किया गया हो, बैगर नाम की इच्छा के, नेक कमाई से;

सरुर-शांति । शांति नगर के नियम बहुत कठिन हैं और यहाँ से आगे संतों की बैठक में विचार-विमर्श के बाद ही जा सकतें हैं और मुक्ति पा सकतें हैं ।

सती स्त्रियाँ यहाँ निवास करतीं हैं । पति के कारण कभी-कभी उन्हें ज्ञान-लोक में भी रहना पड़ता है और उन्हें अपने साथ रखना पड़ता है । यह सती की महानता है ।

यहाँ पर जन्म-जन्मों के संस्कार शैतान की फ़ौज लेकर हमला बोल देते हैं । महायुद्ध होता है जिसमे वही यात्री टिक सकता है जिसको अपने पूर्ण गुरु में पूर्ण विश्वास और प्रेम हो और असुरों की बहकाई में आकर फिसल ना जाये । गुरु से पुकार ही एकमात्र रास्ता है । हिम्मत ना हारे । कुछ बातों पर अमल करने पर और गुरुकृपा से यह रास्ता पार हो जाता है । इस सफ़र में धर्मपत्नी का सहयोग भी अत्यंत आवश्यक है, उसका भी हमकदम होना जरुरी है । इस राह में पूर्ण समर्पण और निम्न बातों का ध्यान रखना जरुरी है:

- बेचैनी को बुरा नहीं समझा जाता है । सब्र से सहन किया जाता है, बचने का यत्न जरुर किया जाता है ।
- यहाँ का यात्री दिल से अपने गुरु-भगवान को याद करता है और हाथों से काम ।
- यहाँ के मुसाफिर काम व बात के सच्चे होते हैं ।
- यहं के मुसाफिर जाहिरा इल्म हो या अन्दरुनी पूरा-पूरा अमल करते हैं । नेक-कमाई, नेक-कर्म, नेक-ख्याल वाले होतें हैं । अपने स्वार्थ को पास नहीं फटकने देते ।
- दूसरों की भलाई करना उनका उद्धेश्य रहता है और अपनी खुदी को मिटाने में लगे रहतें हैं । दूसरों की मदद नहीं चाहते, सबसे प्रेम का बर्ताव करतें हैं । जब सारे संस्कारों का भुगतान हो चुकता है तो शैतान का बर्ताव भी नरम हो जाता है । गुरु उसे अपने सीने से लगाकर खुश होकर अगले पड़ाव पर जाने की इज़ाज़त बख्शतें हैं और मुक्त पड़ाव में ले जाते हैं । साधक को अनुभव व अमल के जरिये और पक्का विश्वास व मुहब्बत होने पर गुरु-भगवान से अभेद करा देतें हैं और इसके बाद धीरे-धीरे परम-ज्योति स्वरुप भगवान से अभेद हो जाता है ।

छठा एवं सातवाँ सफर: (**आज्ञा चक्र व सहस्त्रदल चक्र**) सबकी मदद करता व खुद साधन करता जब वह पूर्णता की हद पर आ जाता है तो आगे का रास्ता या चढ़ाई खुद की कोशिश से बाहर हो जाती है । तब महाज्योति स्वरुप भगवान खुद आगे बढ़कर उस साधक को अपने हृदय में बसा लेते हैं । साधक का परमात्मा से अभेद हो जाता है । तब परमात्मा खुद उसे याद करता रहता है । ऐसा साधक मुरीद कहलाता है और ऐसे साधक हमेशा के लिए अमरपद प्राप्त करके दुनिया के रक्षक व प्रबंधक बनते हैं । यह सब आला खिदमत पर निर्भर है । गुरु ही साकार ईश्वररूप और ज्योतिस्वरूप है और उसकी आत्मा निराकार परमात्मा है । तन-मन-धन और जान की बाजी लगाकर गुरु की सेवा करने से साधक जीवन मुक्त हो जाता है ।

पूजा

यह स्थूल साधना मार्ग है और मन पर आधारित है । अक्सर लोग विभिन्न देवी-देवता, राम, कृष्ण, हनुमानजी आदि की पूजा करते हैं, जिन्हें उन्होंने कभी नहीं देखा । हम अपने तरीके से अगरबत्ति, फूल आदि से, मंत्र या स्त्रोत पढ़ कर पूजा करते हैं क्योकि यह मन को अच्छा लगता है । मन को थोड़ी शांति मिलती है और हम इसे ही बड़ी उपलब्धि मान बैठते हैं । उनका शुक्रिया भी अदा करते हैं । यही संस्कार पक्का होने पर परमात्मा आगे की राह दिखाता है । बुरे कर्म दूर होने लगते हैं, हर जगह फायदा होने लगता है, इसे भगवान का प्रसाद मानकर, साधना को आगे बढाने का साहस मिलता है ।

उपासना

उपासना का शाब्दिक अर्थ है नजदीक बैठना । स्थूल पूजा, श्रद्धा और विश्वास गहन साधना द्वारा उपासना में परिवर्तित हो जाते हैं । यह भी मूर्त और अमूर्त दो प्रकार की होती है । मूर्त में मूर्ति, चित्र या किसी प्रतीक की पूजा, उसे साक्षात् मानकर की जाती है । पुस्तकें पढ़कर और गुणगान करके इष्ट की उपासना की जाती है । अमूर्त उपासना में उसके विभिन्न गुणों और रूप को ध्यान में रखकर ध्यान लगाने की कौशिश की जाती है । इसका परिणाम यह होता है की परमात्मा अपने गुणों की लाज रखने के लिए अपने खास बन्दे यानि किसी संत की रसाईं करा देतें हैं और साधक को नकल से असल की ओर बढ़ने का मौका देतें हैं । असल उपासना यहीं से आरम्भ होती है ।

कर्मानुसार और साधक की स्थिति के अनुरूप संत उसे दो प्रकार की शिक्षा देतें है- राब्ता शैख़ व प्रकाश और नाद की । राब्ता शैख़ के बारे में ऊपर लिखा जा चुका है. इसका शाब्दिक अर्थ है गुरु की शक्ल का ध्यान ।

नाद और प्रकाश

जब शिष्य का गुरु से मुहब्बत का रिश्ता कायम हो जाता है और गुरु उसके रोम-रोम में समाकर हृदय में प्रवेश कर जाता है, तब वहाँ से प्रकाश और नाद का ध्यान प्रारंभ होता है । शिष्य की मुहब्बत और निष्काम भक्ति के फलस्वरूप गुरु उसके जन्म-जन्म के संस्कार पूरे भुगताकर फ़ना व बका की मंजिले तय कराकर परमात्मा से निकट का रिश्ता कायम करा देता है । वह उसे साकार व निराकार दोनों साधनाओं का रहस्य समझाकर व अमल कराकर वैतरणी नदी पार कराकर भगवत-स्वरुप बना देता है ।

जब साधक को नाद की आवाज़ कानों से सुनाई देने लग जावे और नाद रोम-रोम में समां जावे और प्रकाश यानि ज्योति या नूर दिखाई देने लगे तो वह साधक अवश्य जीवन मुक्त होकर पूर्ण तौर पर नूर में समाकर भगवत प्राप्ति कर लेगा और सतगुरु पद पर पहुँच जायेगा । 'मियारउलसलूक' नामक किताब में हजरत हिदायत अली खान साहब ने भी पृष्ठ 101 पर यही लिखा है और पूरा-पूरा राज खोला है । गुरु के कहे अनुसार अमल करने पर गुरु सारे भेद साधक के हृदय में खोल देता है । गुरु के प्रति प्रेम और उनके रहम से साधक को यह आवाज़ दिल, दिमाग, पेशानी आदि मुकामों पर सुनाई देने लगती है । गुरु कृपा के आलावा इसका अन्य कोई साधन नहीं है ।

पांच रंग के प्रकाश-सुनहरा, लाल, सफ़ेद, काला और हरा, ये पाँचों हृदय के मुकाम के हैं । नाद के बाद ये पाँचों प्रकाश रोशन जमीर कर देतें हैं और साधक आगे तरक्की करने लगता है । बाद में सहस्त्र दल कमल चक्र पर बिजली की तरह प्रकाश की कौंध होती है, जो रोम-रोम में समां जाती है । ऐसे साधक की गुरु स्वयं मदद करने लग जातें हैं शिष्य को मुरीद के दर्जे से उठाकर मुराद के दर्जे

पर ले जातें हैं । पतिव्रता स्त्री इस रुतबे को अपने पति की सेवा कर परम-पद को बहुत आसानी से पा जाती है । वे चारो धाम अपने पति के चरणों में ही मानती हैं ।

परमात्मा

उपासना की इंतिहा ही परमात्मा है जो सभी जीवों के दुखों को स्वयं आत्मसात करे, बिना किसी गरज के खुद ही सेवाकर उन्हें भवसागर के पार उतारता है, वही ईश्वर है । परमात्मा का अर्थ विशुद्ध आत्मा है जो गुरु रूप में हमें प्रकाशित करता है । गुरु की देह परमात्मा का साकार रूप है और विशुद्ध आत्मा परमात्मा का निराकार रूप । दोनों को तन, मन, प्राण से अपनाना ही सच्ची उपासना है ।

गुरु एवं शिष्य

शिष्य असल में वो है जो गुरु के सामने अपने आप को मुर्दे की तरह सौंप दे । गुरु की इच्छा को सर्वोपरि समझकर, अपनी इच्छा मिटा दे । कोई ऐब ना करे ना गुरु से कुछ छिपाये । यदि कोई गलत काम हो भी जाये तो गुरु को बता दे । गुरु की भगवान समान इज्ज़त करे और तन, मन, धन, प्राण से गुरु का होकर गुरु की भलाई चाहे और उनकी जरुरत का ख्याल रखकर उनकी सेवा करे । जो कुछ हो रहा है, उसे गुरु की तरफ से जानकर खुश रहे, अपनी परेशानी उनके सामने अर्ज कर देवे, जवाब ना मांगे । सदाचारी बनकर रहे, नेक कमाई पर जीवनयापन करे और जैसा सलूक दूसरों से अपने लिए चाहता है, वैसा ही दूसरों के साथ करे ।

शिष्य यदि किसी और संत-महात्मा के पास जाये तो उसे उन्हें अपने गुरु का हमशक्ल मानकर चुप बैठना चाहिए, कोई सवाल नहीं करना चाहिए । [यहाँ एक घटना का जिक्र प्रासंगिक है । नवम्बर सन 1970 में एक संत श्री दाताजी महाराज जयपुर आये हुए थे । ठाकुर रामसिंहजी साहब के एक सत्संगी डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के साथ उनके दर्शन करने चले गए । वहाँ देर होते और उन सत्संगी के मन में कुछ इतर विचार आते देख, डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने उन्हें लौट चलने को कहा, लेकिन वे कुछ देर वहीँ रुके रहे । वापस लौटते समय उन सत्संगी को चक्कर आते से लगे और वे अस्वस्थ महसूस करने लगे । शाम को जब वे ठाकुर रामसिंहजी साहब के पास हाज़िर हुए तो ठाकुर रामसिंहजी साहब ने उनसे पूछा की वे कहाँ गए थे, पर वे चुप रहे । थोड़ी देर बाद डॉक्टर चन्द्र गुप्ता भी पहुँच गए और उन्होंने उन सत्संगी साहब से पूछा की आपकी तबियत ठीक नहीं है क्या? वे सत्संगी तब भी चुप ही रहे । तभी ठाकुर रामसिंहजी साहब जलाली हालत में आ गए और फ़रमाया-**'और तो फ़नाफिश शैख़ हैं, मैं तो फ़नाफिल मुरीद हूँ । मुझमे क्या कमी थी?'** फिर उन्होंने अपने गुरु भगवान जनाब लालाजी महाराज से सम्बंधित एक किस्सा सुनाया और अपना दाहिना हाथ तकिये के नीचे डालते हुए कहा, 'तुम्हारी अमानत मेरे पास है' और अपना हाथ उन सत्संगी भाई की तरफ करते हुए फ़रमाया 'यह लो अपनी अमानत ।' तुरंत वे सत्संगी भाई स्वस्थ महसूस करने लगे । बाद में ठाकुर रामसिंहजी साहब ने फ़रमाया की ऐसे मौके पर साधक को अपने गुरु को याद कर लेना चाहिये ।]

यदि किसी संत के पास जाने पर फैज़ मिले तो वह फैज़ अपने गुरु का ही होता है और इसलिए उन संतपुरुष का सम्मान अपने गुरु के समान ही करना चाहिए । गुरु जीवित हो या पर्दा कर गए हों, अपना दिल सदा उनके दिल से लगाना चाहिए, इससे तरक्की शीघ्र होती है । यदि शिष्य की किसी उत्कट कामना की पूर्ति किसी कारण नहीं हो पाये तो उसे दो हज़ार साल की पूजा का फल प्राप्त होता है ।

वह ठंडी सांस जो किसी चीज की इच्छा पूरी ना होने पर निकलती है, वह दो हज़ार साल की इबादत से अच्छी है । इन उसूलों पर साधक को पक्का रहना चाहिए । सब साधक हैं, केवल ज्योति-स्वरुप परमात्मा गुरु हैं जो देह धारण किये हैं और हमें वहाँ तक ले जाते हैं ।

इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा रहती है की वो सांसारिक सुख प्राप्त करे । लेकिन इसके साथ ही उसके अंतर्मन में यह जिज्ञासा भी विद्यमान रहती है की वह स्वयं के बारे में जाने और उसे आत्मज्ञान की प्राप्ति हो । यह आतंरिक जिज्ञासा ज्यादातर लोगों में दबी ही रह जाती है । कुछ भाग्यशाली ही ऐसे होते हैं जिन्हें गुरुकृपा से मार्गदर्शन मिलता है । गुरुकृपा पाने के लिए नेक जीवन और ईमानदारी की कमाई पर जीवन यापन आवश्यक है । आहार की शुद्धता भी जरुरी है । जो आहार वर्जित हो, उसे ग्रहण ना करे और शराब से परहेज करे ।

जिज्ञासुओं की मुख्यत: दो श्रेणीयां होती हैं:

1. जो संसारी विपदा में पड़े हों और सभी ओर से निराश होकर विपत्ति से छुटकारा पाने के लिए किसी संत की शरण में जाते हैं । संत की कृपा से विपत्ति से मुक्ति पाने पर उनका विश्वास जगता है, आस्था पैदा होती है और वे अध्यात्म की ओर उन्मुख होते हैं ।

2. जो पूर्वजन्म के संस्कारों के फलस्वरूप आत्मज्ञान की कठिन राह पर अग्रसर होना चाहते हैं । उनकी प्रबल इच्छा शक्ति के कारण संत उनकी ओर आकर्षित होते हैं और उन्हें अपना लेते हैं । संत इनकी आत्मिक उन्नति में सभी प्रकार की सहायता करते हैं ।

व्यक्ति के संस्कारों का निर्माण उसके कर्मों से होता है । शास्त्रों में कर्म के तीन भेद बताये गएँ हैं:

- संचित कर्म: वे अच्छे या बुरे कर्म जो आत्मा के साथ जन्म-जन्मान्तरों से चले आरहे हैं पर जिनका भुगतान अभी तक नहीं हुआ ।
- प्रारब्ध कर्म: संचित कर्मों का वह भाग जो जन्म धारण करने के बाद इस जन्म में भुगतना है । इनके भुगतान पर हमारा जोर नहीं होता ओर भुगतान से माफ़ी नहीं मिलती पर संतों की दया से आसानी से भुगतान हो जाता है ।
- क्रियमान कर्म: वे कर्म जो हम वर्तमान जीवन में करते हैं, जिनमे से कुछ का भुगतान इसी जन्म में हो जाता है, शेष संचित कर्मों के खाते में चले जातें हैं ।

मनुष्य कर्म करने को स्वतंत्र है पर उसका फल देना परमात्मा ने अपने हाथ में रखा है । इसी नियम से आवागमन का चक्र चलता है । बुरे कर्म करते समय मनुष्य ध्यान नहीं रखता पर उनका भुगतान करते समय वह दु:खों के अतिरेक से रोता है, बुरे कर्मों से तौबा करता है और परमात्मा को सच्चे दिल से पुकारता है । उस दया के सागर परमात्मा को उसपर रहम आजाता है और वो किसी संतपुरुष को उसकी मदद के लिए भेज देता है । संत सांसारिक आपदाओं के साथ-साथ मनोविकारों-काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि से निकलने में मदद करते है और धीरे-धीरे कर्मों का आसानी से भुगतान कराकर ज्योतिस्वरूप परमात्मा से उसका वास्ता करा देते हैं ।

सच्चे संत जिस पर द्रवित होतें हैं, उसे अपने सामने बैठाकर शक्तिपात द्वारा पिंड से ऊपर उठाकर परमात्मा का साक्षात्कार कराते हैं । नाद और प्रकाश की ध्यान की विधि का ज्ञान शिष्य को देतें हैं । उन्होंने फ़ना और बका की हद से पार होकर परमात्मा को जान लिया हो, गृहस्थ जीवन में हों और गृहस्थ जीवन की बेबसी और लाचारी आदि को जानने वाले हों और उनके निराकरण की सामर्थ्य रखते हों । यह सब सदगुण मेरे गुरुदेव में विद्यमान थे ।

समर्थ गुरु की शरण पाने के लिए शिष्य में भी कुछ गुणों का होना जरुरी है । कोई भी व्यक्ति उस समय तक शिष्य नहीं कहला सकता जब तक की वो भगवान से अधिक अपने गुरु का वफादार ना हो । शिष्य को गुरु की मर्जी को दिल से अपनाना चाहिए वर्ना परमात्मा की मर्जी उसे नहीं मिलेगी । शिष्य को गुरु के सामने पाक-साफ होकर जाना चाहिए क्योंकि ध्यान के समय दिल मिलने पर शिष्य की नापाकी गुरु के दिल पर असर करती है । इससे फायदे के बजाय नुकसान हो सकता है । गुरु जब तक ध्यान ना कराये, स्वयं ध्यान नहीं करना चाहिए । जिसका ध्यान करना है जब वो ही सामने विराजमान है तो उनके सामने आँखे बंद कर ध्यान का प्रयास करना बेअदबी है ।

गुरु के पास मन के सारे ख्याल हटाकर जाना चाहिए । यह ख्याल करना चाहिए की उनके दिल से अपने दिल में प्रकाश आ रहा है । इससे शिष्य का परमात्मा से शीघ्र संपर्क होता है । शिष्य जब नाद की आवाज़ सुनने लगता है और प्रकाश की अनुभूति करने लगता है और गुरु के प्रति उसका प्रेम सुदृढ़ हो जाता है तब ही वह सच्चा शिष्य कहलाने योग्य होता है । शिष्य जो भी सेवा दिल से करे वह कुबुल होती है । समय अनुसार उससे सेवा ली भी जाती है । शिष्य को चाहिए गुरु की वास्तविक आवश्यकता जानकर सेवा समर्पित करे । गुरु सेवा तरक्की का सबसे आसान और नजदीकी का रास्ता है । जो कुछ भी किसी ने पाया सेवा से ही पाया ।

शिष्य (परवाना) उसे नहीं कहते जो गुरु (शमा) के पास जाकर अपना वजूद हमेशा के लिए खत्म कर दे । शिष्य वास्तव में वो है, जो शमा से स्वयं तो प्रकाशित हो ही, दूसरों को भी प्रकाशित कर दे । ऐसे गुरु और शिष्य का विनाश नहीं होता । ये विशुद्ध आत्मा अमर रहकर जिज्ञासुओं का मार्ग-दर्शन करती रहती हैं । ऐसा तब ही संभव होता है जब शिष्य नाद और प्रकाश का अधिकारी गुरु प्राप्त कर लेता है और उसके प्रति पूर्ण समर्पण कर देता है और निष्काम भक्ति पर अटल रहकर सभी कर्म गुरु के अर्पण कर देता है । गुरु के प्रति शिष्य में पूर्ण विश्वास और निष्काम प्रेम आवश्यक है ।

तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में शिवजी के मुख से कहलवाया है:

'हरि व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम से प्रगट होई मैं जाना'

वास्तविक प्रेमी पर ही अपना राज खोला जा सकता है । प्रेमी की मर्यादा यह है की वह अपने प्रियतम का राज औरों पर ना जाहिर करे, उसी तरह जिस तरह पत्नी अपने पति का राज जानती है पर औरों पर प्रकट नहीं करती ।

आगे कहा है: 'कलियुग केवल नाम आधारा' । यहाँ नाम के द्वारा नाद की और इशारा किया गया है, जो केवल सच्ची मुहब्बत से ही पैदा होता है और उसी से उसमे स्थायित्व आता है । प्रेम ना होने पर नाद एवं प्रकाश उसी प्रकार तत्काल नष्ट हो जातें है जैसे सूखी घास एक तीली से । इस सम्बन्ध में मानस में तुलसीदासजी ने काकभुशंडजी का उदहारण बड़ी खूबी से पेश किया है, जिन्हें अपने अभिमान और दुर्बुद्धि के कारण भ्रम में पड़ना पड़ा । अहंकार के कारण उनका ज्ञान नष्ट हो गया और उस वक़्त उनका दिल काला था, इसीलिए उन्हें काग कहा गया । अहंकारवश उन्होंने मंदिर में अपने गुरु का सम्मान नहीं किया, जिससे शिवजी ने उन्हें श्राप दे दिया लेकिन गुरु ने कृपाकर उन्हें श्राप से ही मुक्त नहीं कराया वरन जीवन-मुक्त का दर्जा भी दिलवाया । गुरु की कृपा से उनका काला दिल रोशन हो गया । जिस शरीर से भगवान की प्राप्ति होती है, वह अत्यंत प्रिय हो जाता है । इसीलिए उन्होंने अपनी पहचान कायम रखी और काकभुशंडजी कहलाये । यह सब शुद्ध प्रेम से ही संभव है और मनुष्य योनि में ही हो पाता है, पशुयोनि में नहीं । अगर हमारे ऊपर बुरे संस्कारों का प्रभाव है और

हम आवागमन के चक्र में फंसे हैं तो मनुष्य योनि में होते हुए भी पशुयोनि में फंसे रह जाते हैं । नाद और प्रकाश के बारे में संत तुलसी साहब की घट-रामायण (बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित) में काफी-कुछ लिखा गया है ।

जब शिष्य पूरी तरह तैयार हो जाता है तो सतगुरु स्वयं उसकी सहायता के लिए प्रकट हो जाते हैं ।

- जब शिष्य और गुरु दोनों की हृदय की धड़कन (अनहद-नाद) में लयबद्धता की अवस्था पैदा हो जाती है तो वे दोनों एक-दूसरे के अस्तित्व का अटूट हिस्सा बन जाते हैं । यह प्रेम की एक उच्च अवस्था है । प्रेम का अर्थ है एकात्मता । जब यह स्थिति हो जाय, तभी प्रार्थना का होना संभव होता है । तभी शिष्य 'मुराद' (Beloved of God-बिलवेड ऑफ़ गोड) का दर्जा हासिल करता है ।
- सतगुरु स्वयं अपनी हकीक़त अपने शिष्य पर समय आने पर जाहिर कर देते हैं । शिष्य को चाहिए की वो अपने सब कर्मों को उनके श्री-चरणों में अर्पण करता रहे ।
- शिष्य को चाहिये की वह अपने गुरुदेव और अन्य महापुरुषों की सेवा स्वयं अपने हाथों से करे और अपने गुरु को प्रसन्न रखे । इस तरह वह समय आने पर प्रेम की सर्वोच्च अवस्था प्राप्त कर लेगा ।
- शिष्य को उच्चतम नैतिक मूल्यों का पालन करना चाहिए एवं ईमानदारी की कमाई पर जीवनयापन करना चाहिए । अपने गुरु की सलाह को मानना चाहिए ।
- शिष्य को ख्याल करना चाहिए की गुरु के दिल से नूर यानि प्रकाश उस के दिल में आरहा है, इससे तरक्की जल्दी होती है ।
- यदि किसी महात्मा से फैज़ (आत्मिक कृपाधार) पहुँचे या कोई फायदा महसूस हो तो वह फायदा खास पीर का है, उसे दूसरा महात्मा या बुज़ुर्ग ना समझे ।
- शिष्य दो तरह के होते हैं । पहला मुराद-जिन्हें परमात्मा खुद अपनी तरफ खीचंता है और दूसरे मुरीद-जो स्वयं कोशिश कर परमात्मा की तरफ चलते हैं । दिल में याद करना व अनहद नाद सुनना ये मुराद होने की निशानी है ।
- अपने गुरु के संरक्षण में शिष्य पवित्र 'मानसरोवर' में एक हंस की तरह किलोल करेगा ।
- साधक के विपत्ति में पड़कर कातर होने पर, देवलोक स्थित उसका कारण-अंश व्याकुल होता है और उसके व्याकुल होने पर गुरु भगवान उसकी और दृष्टि डालते है-उसकी रक्षा करते हैं ।
- एकाकार ज्योतिस्वरूप दर्शन में सब देवताओं के दर्शन शामिल हैं, कोई भेद नहीं रहता ।
- सब चक्रों के खुल जाने के बाद केवल मात्र ज्योति-शुद्ध ज्योति है । चारों ओर के चक्षु के खुलने पर स्थूल देह मिटटी समान हो जाता है ।
- शिष्य को परमात्मा से अपने गुरु के हक में प्रार्थना करनी चाहिए ।
- आधी रात को यानि 12 से 2 के बीच मराकबा यानि ध्यान व जिक्र यानि अनहद नाद सुनने या गुरु का ख्याल करना चाहिए और अपने गुनाहों पर पछतावा करने को तहज्जुद की नमाज़ कहते हैं ।
- शिष्य को ख्याल करना चाहिए की गुरु भगवान हर वक़्त हाज़िर-नाज़िर हैं और मेरे क़ल्ब की जगह उन्होंने अपना क़ल्ब स्थापित किया है ।

- जो प्राणी संतों की शरण में जाता है और सच्चे दिल से प्यार करता है, संत दया करके उसको मुक्ति दे देतें हैं । मुक्ति संतों के चरणों की दासी है ।
- गुरु को चाहिए की अपने शिष्य के लिए दुआ करे की परमात्मा मेरी पैरवी से तुमको अपना दोस्त बना लेवे । मेरा गुरु जो बख्शे ले लेवे, इंकार ना करे ।
- गुरु ध्यान कराते समय यह ख्याल करे की गुरु भगवान का नूर बुज़ुर्गान-ऐ-सिलसिला के सीनों से होता हुआ 'मेरे दिल' में आ गया है और मेरे दिल से शिष्य के हृदय में जारहा है । 'मेरे दिल' से मुराद वह दिल है जिस को गुरु भगवान ने अपनी जगह कायम किया है और मुझको नाकारा समझ कर अलहदा कर दिया है-इसी को तवज्जोह कहतें हैं । यह अमल तब तक करना चाहिए जब तक दिल की आवाज़ जिसको 'अल्लाह' या 'ॐ' कहते हैं शुरू ना हो जावे । इस में कम-अज-कम इक्कीस दिन लगते हैं, तवज्जोह पूरी होने में ।
- जो गुरु इंद्री दमन करते-करातें हैं, वे भवसागर में ही गोता खाते रहतें हैं । सच्चे संत गृहस्थ आश्रम की मर्यादा का पालन करते-करातें हैं और उसे उचित मानते हैं ।
- अगर किसी व्यक्ति को जज्ब-हक ज्यादा हो जावे तो 'ला-इलाहा-इलाल्लाह' एक बार और 'मुहम्मद रसूल अल्लाह' सात बार पढ़े और सुरः शूरा खूब पढ़े ।
- जिक्र क़ल्बी यानि दिल के जाप में जज्ब-रब्बानी है, यानि भगवान खुद अपनी तरफ खींचता है, उन को मुराद कहते हैं ।
- जिक्र जुबानी में सलूक है यानी मुरीद खुद मेहनत करके भगवान की तरफ चलतें हैं ।
- अगर कोई मुसीबत अचानक आ जाये तो सौ दफा दारुद शरीफ-'सल्ललाहू अलेही वसल्लम' और पांच सौ दफा-'लाहोल वला कुव्वत इल्ला-बिल्लाह' पढ़े । मुसीबत अवश्य दूर होगी ।
- बीमारी में 125000 दफा-'या सलाम हो' पढ़े ।
- सच्चे दिल से तौबा करनी चाहिए, इस से कायापलट हो जाता है और दिल से कहना चाहिए-हे खुदा, आपने मुझे पैदा किया, आप ही मुझे रास्ता दिखाओ ।' जिसने पैदा किया वो ही रास्ता भी दिखायेगा ।
- अपने आप को गुरु भगवान के हवाले कर दो (जिस तरह मुर्दा गुसल वाले को), सारी जिम्मेदारी उन्हीं की हो जाएगी ।
- परमात्मा पर इमान लाओ, यानि कष्टों को सब्र से बर्दाश्त करो, खुशहाली पर उसका शुक्रिया करो, और एतकाद (विश्वास) लाओ की गुरु भगवान के सिवाय तुम्हारा दूसरा कोई आश्रय नहीं, उसके फर्माबरदार (आज्ञाकारी) बनो ।
- ईश्वर से ईश्वर को मांगो । दुनिया में बैठो, सब की सब्र से सुनो पर जवाब मत दो । इससे बड़ी जल्दी तरक्की होगी ।
- किसी किस्म की बुरी दुआ मत मांगो ।
- खुदा के सिवाय तुम्हारा कोई मददगार नहीं है और गुरु के सिवाय तुम्हारा कोई रहबर (पथ-प्रदर्शक) नहीं है ।
- दिल को ईश्वर की शरण में अर्पण करके ध्यान करो, यानि हुज़ूरे क़ल्ब से ध्यान करो । गुरु ही भगवान है ।
- हजरत इमाम जफ़र सादिक का फरमान-सब्र करने वाला दरवेश अफजल-तर (श्रेष्ठ) है; आकबत (परिणाम, शिखर, उच्चतम अवस्था) यह है कि अपने सारे काम नफ्स के बजाय

अल्लाह के सुपुर्द कर दो; जिस गुनाह का आगाज़ डर से हो और अंजाम (समाप्ति) उजर (पछतावा) से हो, उस गुनाह की बदौलत इन्सान खुदा के ज्यादा नजदीक हो जाता है ।

- खुद-पसंद अतात गुजार (स्वयं अर्जित) गुनहगार है और बा-उजर गुनहगार अतात गुजार (परमात्मा की बख्शिश पर निर्भर) ।
- हजरत बयाज़िद बिस्तामी-जब तुम अपने आपको खुदा के पास देखो, वफ़ा है; जब तुम खुदा को अपने पास रखो, फ़ना है; जब खुदा ही खुदा को देखो, अपना-आपा नज़र नहीं आये तो वह बका की स्थिति है ।
- हजरत मिसरी-कोई व्यक्ति उस वक़्त तक मुरीद नहीं कहला सकता, जब तक अल्लाह-ताला से ज्यादा अपने मुर्शद (गुरु) का फर्माबरदार ना हो ।

सृष्टि, वैतरणी एवं परमपद

सृष्टि

भगवान को चरम-शक्ति पुंज माना जाता है । प्रारंभ में वो अकेला ही रहा होगा । जब अकेले रहते शौहरत ना हुई तो दिल बहलाने की इच्छा हुई और सबसे पहले मनुष्य-रूप आत्मा को बनाया, जो परमात्मा कहलाई । आगे सृष्टि संचालन के लिए तीन और शक्तियां बने जो ब्रह्मा, विष्णु और शिव कहलाये । ब्रह्मा ने सृष्टि-सृजन का काम लिया, विष्णु ने पालन-पोषण, तहजीब, तौर-तरीकों का इजाद किया, कर्म-सिद्धांत लागु हो गया ।

जीवों के प्रलय का भार और कर्मों का फल भुगतने के लिए उन्हें ब्रह्मा के पास भेजने का कार्य शिव को सौंपा गया । इन्सान को कर्म-योनि के बंधन में डाला गया क्योंकी परमात्मा के हम-शक्ल होने के अतिरिक्त वह अपनी स्वतंत्र बुद्धि भी रखता है, अच्छे-बुरे का विवेक उसमे है, इसलिए विभिन्न नियमों का पालन करना उसके लिए अनिवार्य हो गया । जैसे कर्मानुसार कोर्ट दंड देता है, वैसे ही आत्मा को कर्मानुसार विभिन्न भोग-योनियों में कर्म-फल भुगतना पड़ता है, इस पर उसका वश नहीं चलता परन्तु उसे यह हक दिया गया है कि वापस इन्सान बनकर कर्म करे ताकि सृष्टि का वजूद कायम रहे ।

सृष्टि का चार युगों में विभाजन किया गया है । वास्तव में यह विभाजन मनुष्य की वृतियों पर आधारित है ।

1. सतयुग-यह पूर्ण संत का प्रतीक है । इसमें एक नाद की आवाज़ में 3,50,00,000 नाम पूरे होते हैं । इसकी आयु योग शक्ति से बढ़ी हुई मानी जाती है । कर्म-बंधन से आजाद रहता है और नीचे वर्णित त्रेतायुग के लोगों की मदद करता है ।

2. त्रेतायुग-यह महात्मा का प्रतीक है, इसमें एक नाद की आवाज़ में 1008 नाम पूरे होते हैं । इसके मालिक गुरु माने जाते हैं । यहाँ देवासुर संग्राम की स्थिति आती है ताकि पूर्ण संत बना जा सके ।

3. द्वापर-उस साधक का प्रतीक है जिसके एक नाद की आवाज़ में 108 नाम पूरे होते हैं । यहाँ देवासुर संग्राम का प्रथम चरण प्रारंभ होता है ।

4. कलियुग-सबसे निम्न कोटि का प्रतीक है । वह काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि का शिकार रहता है और कर्मानुसार विभिन्न पशुओं की योनि प्राप्त करता है । ब्रह्मा की सृष्टि बचाने और कायम रखने में मददगार होता है ।

ये सभी युग साधना के विभिन्न चरणों के प्रतीक हैं । साधक कलियुग, द्वापर और त्रेता को पार करके सतयुग में पहुँचता है, जहाँ से आगे बढ़कर गुरु कृपा से परमात्मा रूप हो जाता है ।

वैतरणी

वैतरणी नदी का सफ़र करने से पहले यह जानना आवश्यक होगा की इस सफ़र पर जाने का अधिकारी कौन है? इस सफ़र को पूरा करने के लिए जीवन में कुछ मुख्य-मुख्य सिद्धांतों पर अमल करना होता है जो नीचे दिए जा रहे हैं:

1. शरह-जिस धर्म में जन्म हुआ, उसके धर्म-ग्रंथों को पढ़ना ।

2. शरियत-धर्म-शास्त्रों को गौर से पढ़ना, समझना और उन पर अमल करना ।

3. हकीक़त-अमल करते-करते विश्वास का पक्का होना, दुई का मिटना ।

4. मुहब्बत-सभी संदेहों का निराकरण होकर पूर्ण समर्पण भाव जागृत होना । ख़ुशी या गम में विचलित ना होना, विश्वास का अडिग रहना ।

5. ब्रह्मचर्य-स्वप्न में भी गैर मर्द या स्त्री का ख्याल ना आये । स्त्री अपने पति के सिवाय किसी और को भगवान ना माने, भगवान को अपने पति में ही जाने और देखे । ऐसे साधक को यति या सती कहतें हैं । साधक को सत्यभाषी और इमानवाला होना चाहिए ।

6. दान- भगवान के आलावा कोई दानी नहीं है । साधक उसके हुक्म से मदद करने वाला अहंकार और अभिमान रहित हो ।

7. पिंडदान-पिंड दो होते हैं-स्थूल और सूक्ष्म । गुदा चक्र से मणिपुरक तक स्थूल हैं । ये पञ्च-तत्व से बने हैं और इनका आकाश हृदय है । हृदय से ऊपर के चक्र सूक्ष्म हैं, इनका आधार हृदय है । इन दोनों का मालिक भगवान है । जरूरतमंद योग्य पात्र को इनका ज्ञान देना और अमल कराना तथा भगवान के अर्पण करना, सच्चा पिंडदान है ।

गणेश का प्रतीक: काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को जीतने के सम्बन्ध में गणेश के प्रतीक को ध्यान में रखना चाहिये । गणेशजी के कान बड़े हैं, जिनमे दूसरों की बुराई प्रवेश करती है और बाहर निकल जाती है, उस पर अमल नहीं होता । इसी प्रकार का व्यवहार किया जाना चाहिए । छोटी आँखों से किसी की बुराई ना दिखे । सूंड या बड़ी नाक अपने मालिक या गुरु के प्रति वफ़ादारी और भरोसे का प्रतीक है । उसी के सहारे रहे और किसी का सहारा ना चाहे । बड़ा पेट-पेट जितना बड़ा होगा, उसी मात्रा में भोजन पचा लेगा । यहाँ यह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि को पचा लेने का प्रतीक है । इन्हें जीतकर साधक शांत प्रकृति का हो गया हो । गणेशजी के वाहन चूहे की प्रकृति दिल से मिलती है, यह भी चंचल, हजारों हसरतों वाला और मौत से डरता है । इस पर सवारी करनेवाला मन रुपी चूहे पर काबू करने वाला हो । यह क्षमता उपरोक्त गुणों से ही प्राप्त होती है ।

यह दिल हजारों इच्छाओं वाला सहस्त्रफन सर्प है । इस पर फतह या तो भगवान श्रीकृष्ण ने पाई या फिर संतों ने । गुरु भगवान की कृपा से ही साधक इस पर काबू कर साधना-पथ पर अग्रसर होता है और आखरी मंजिल के नजदीक वैतरणी नदी में तैरने और उसे पार करने काबिल होता है ।

वैतरणी नदी का अनुभव मुझे अपने गुरु भगवान की कृपा से प्राप्त हुआ । इसमें जो कुछ भी है, उन्हीं की कृपा का फल है, दोष मेरी समझ की कमी का ही है । वैतरणी नदी के वास्तविक रूप का दर्शन करने और उसे पार करने के लिए ब्राह्य आडम्बर, दान, दक्षिणा आदि काम नहीं आते, ये सब दिखावे और सांसारिक संतोष के लिए होता है । गुरु भगवान की कृपा और सहायता मिलने पर ही साधक उसे पार कर पाता है । गुरु अपने शिष्य को हाथ पकड़कर, उबड़-खाबड़ रास्ते पर होते हुए

वैतरणी नदी पर लातें हैं और शिष्य को नाव पर बैठाकर खुद नाव चलाकर सारा नज़ारा दिखा देतें हैं । उसे निर्भय बना देतें हैं । फिर वहीँ लौटकर उसे स्वयं तैरकर पार करने का मौका देते हैं । खुद अदृश्य रहकर साये की तरह उसके साथ रहतें हैं । जहाँ मदद लाजमी हो, देतें हैं जिससे की वो हताश ना हो जाये ।

यात्रा के प्रथम सौपन में सबसे पहले साधक को पाखाने का बहुत बड़ा समुद्र नज़र आता है और स्वयं को उसमे गिरते हुए देखता है । यह देखकर वह डर जाता है और दिल दहल जाता है । ऐसे समय में गुरु कृपा से समुद्र में से प्रकाश नजर आता है; सब कुछ साफ़ पानी में बदल जाता है और साधक की आत्मा, पक्षी रूप धारण कर निर्मल जल में किलोल करने लगती है ।

दूसरे सौपन में लाल रंग का समुद्र नज़र आता है, जिसमे खतरनाक लहरें उठती रहतीं हैं, जिन्हें देखकर साधक डर जाता है । गुरु कृपा होते ही वे उस पर सुनहरी प्रकाश डालते हैं जिससे वह निर्भय हो जाता है । उसका विश्वास दृढ़ हो जाता है । साधक निर्भय होकर उस पानी पर लेटकर आराम करता है । वहाँ अनेक आत्माएं पक्षी रूप में जल में किलोल करती दिखलाई देतीं हैं ।

तीसरे सौपन में आत्मारूपी घोड़े को समुद्र की उलटी लहरों पर तैरता दिखलातें हैं, जो बड़ा आनंददायी लगता है ।

चौथे सौपन में साफ़ पानी का एक समुद्र आता है जिसमे साधक तैरता दिखलाई देता है । उसके जन्म-जन्म के संस्कार मगरमच्छों के रूप में उसका पीछा करते हैं । साधक भय से घबरा जाता है तब गुरु भगवान दर्शन देकर उसे पाक कर देतें हैं । संस्कार नष्ट हो जाते हैं, राग-द्वेष समाप्त होकर उसके दिल में प्रेम का सागर लहराने लगता है ।

यात्रा की पांचवी मंजिल में साधक को पूर्ण शांति प्राप्त हो जाती है और वह धैर्य से आगे बढ़ता जाता है । उसकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहता । जब वैतरणी का अंतिम किनारा दिखलाई देने लगता है, सफ़ेद प्रकाश दिखलाई देने लगता है और उसमे पूरी हिम्मत आ जाती है । यहीं वह अपने गुरु भगवान का शुक्रिया अदा करता है ।

परमपद

आखिरी मंजिल से वह किनारे पहुँच जाता है । अनेक महान आत्माओं को पानी में खड़ा हुआ या सीढियों पर चढ़ते हुए देखता है । खुद भी किनारे पर उतर सीढियों को पार कर वहाँ की आखिरी दीवार पर जा बैठता है । इसके आगे का नज़ारा किसी-किसी को ही देखने को मिलता है । यहाँ पर ना सूर्य है ना चाँद; ना जमीं, ना आसमान; ना जड़, ना चेतन; ना गुरु ना भगवान । हल्का सा नीली आभा लिए श्वेत प्रकाश रहता है और केवल आनंद ही आनंद और साये के रूप में साधक का स्वरुप । यह सब वर्णनातीत है । केवल गुरु भगवान ही इसका ज्ञान रखतें हैं । इसी को परमपद या कैवल्य या आखिरी मुकाम कहतें हैं ।

राजयोग

राजयोग में मूलाधार, स्वाधिष्ठान व मणिपूरक चक्रों को जो प्राणायाम, तंत्र, मंत्र पर निर्भर हैं, नज़र-अंदाज़ कर दिया जाता है । राजयोग चौथे मुकाम यानि 'क़ल्ब' (हृदय चक्र) से शुरू कराया जाता है । इस योग में दो किस्म के लोग आते हैं । पहले वो जो किसी मुसीबत में फंसे हो और उससे निकलने के सभी प्रयास विफल हो गए हों, तो वे संत-महात्माओं की शरण में आते हैं । किस्मत से अगर कोई पूर्ण संत मिल गया और मुसीबत से छुटकारा मिल गया तब उसकी शरण में रहना शुरू कर देतें हैं ताकि आगे और मुसीबतें ना आयें ।

दूसरे वो लोग हैं जो पिछले जन्मों में मुसीबत काट कर इस राह पर चल रहें हैं और आगे चलने का शौक रखते हैं ।

पूर्ण गुरु ही साधक के दिल पर तवज्जोह देकर (शक्तिपात-आत्मिक उर्जा का प्रसारण कर) ईश्वर के हुक्म से या दयावश अनहद नाद को बख्श सकता है । या यदि कोई साधक 14 करोड़ दफा नाम जो किसी संत द्वारा दिया हो जाप करे और वह भी शुद्धताई से हो तो अनहद नाद शुरू हो सकता है । इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है । 14 करोड़ दफा नाम जप के लिए हर रोज 6-7 घंटे जप करे तब करीबन सात साल में जप पूर्ण होने की सम्भावना है ।

राजयोग में पूर्ण गुरु मिलने पर बहुत जल्द, यानि कुछ ही दिनों में यह कामयाबी हासिल हो जाती है । अनहद नाद के आलावा तरह-तरह के प्रकाश भी दिखलाई दे सकते हैं, जिसमे सभी देवताओं के दर्शन शामिल माने जाते हैं । पूर्ण गुरु वह है जिसने फ़ना-ईश्वर को अपने साथ देखना, वफ़ा-अपने को ईश्वर के साथ देखना और बका-ईश्वर ही ईश्वर को देखना, तीनों दर्जे पार कर चुका हो; जिसके मुह से सत्य के आलावा और कुछ ना निकले; जिसकी कमाई सख्त मेहनत की हो और जो शिष्यों की कमाई पर तनिक भी निर्भर ना हो और लंगोट का सच्चा हो; मधुर वचन बोलने वाला, रहमदिल और गरीबपरवर हो । ऐसे गुरु के रोम-रोम से प्रकाश की किरणें निकलती रहती हैं ।

अगर कोई व्यक्ति किस्मत से उनके पास पहुँच जाये तो उनके सम्मुख बैठते ही दुनिया की फ़िक्र कम होना शुरू हो जाएगी । एक तरह का हल्का-हल्का सुरूर महसूस होने लगेगा और उन के दिल से अपना दिल लगाने से 'नाद' की आवाज़ कानों में सुनने लगेगी । तब ऐसे गुरु साधक की दुनिया व दीन की जो जायज कमियां हैं उन्हें दूर करने लगतें हैं और भक्ति व ज्ञान का छुपा हुआ राज उस के दिल में रोशन करतें हैं । वे लोग खुश-किस्मत हैं जिन्हें ऐसे गुरु की शरण मिल जाये ।

राजयोग में सबसे पहले अनहद नाद को 'अल्लाह' या 'ॐ' ही तस्सवुर करा कर दिल का जाप करवाया जाता है और बाद में भक्ति व ज्ञान के दर्जे पार कराकर प्रेम-मार्ग में लाया जाता है ।

ज्ञान व भक्ति को समझाने के लिए दो हिस्सों में लिखा जा रहा है ताकि साधक अपनी स्थिति का बोध कर लेवे;

भक्ति: मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, चर्च जाना, ईश्वर के दर्शन करना, सिर झुकाना, आरती इत्यादि करना और भक्ति-ग्रंथों का पाठ करना, सतगुरु की जिस्मानी सेवा करना व उनकी जायज जरूरतों को पूरा करना, यानि तन, मन, धन से उनकी सेवा करना भक्ति है जो साधक को आगे बढाती है ।

ज्ञान: जब भक्ति करते-करते थक जाता है, खास फायदा नहीं होता तो ज्ञान के जरिये ईश्वर प्राप्ति का साधन जुटाने का प्रयास करता है । धार्मिक पुस्तकें जैसे गीता, उपनिषद इत्यादि पढ़ता है और किताबी ज्ञान के अभिमान का बोझ सिर पर लिए फिरता है । जब अभिमान खत्म होता है, यानि हर चीज में अपनी ही आत्मा के दर्शन करता है तो आगे का रास्ता नसीब होता है । इस राह में जो पुस्तकें गुरु बतावे पढ़नी चाहिए ।

जब शिष्य के हृदय में जिक्र (अनहद नाद) सुनाइ देने लगे और तरह-तरह के प्रकाश देखने लगे तब गुरु की दया से यह ख्याल पैदा होता है की मैं वास्तव में उनका एक अंशमात्र हूँ और कुछ भी नहीं । तब अभिमान दूर हो सारे संसार की आत्माओं को अपनी आत्मा ख्याल करेगा, सबसे प्रेम करेगा व सच्चा सेवा भाव उत्पन्न होगा । फिर गुरुजनों की दया व सिफारिश पर प्रेम-मार्ग का साधक बन जायेगा और यह उनकी मर्जी बिना नहीं हो सकता । यह मार्ग सब मार्गों में सबसे कठिन है, बिरले ही यहाँ की सख्ती को बर्दाश्त कर पातें हैं । बहुत से ज्ञान मार्ग में वापस लौट जातें हैं । यहाँ

पर देवासुर संग्राम पुन: होता है । गुरु में पूर्ण विश्वास एवं आत्म-समर्पण ही यह रास्ता तय करा सकता है । यहाँ हर काम स्वयं पर ही निर्भर है, यहाँ के लोग सब प्राणियों की बेगरज सेवा करतें हैं । वे सेवा नहीं लेते चाहे कितनी ही कठिन परिस्थिति हो । दया और धर्म यहाँ का शगल (काम) है और वे सरुर-नगर में रहतें है । दुई का नामों-निशान भी नहीं रहता ।

इस मुकाम से आगे जाने की हिम्मत नहीं होती । यहाँ से केवल चुनिन्दा लोग ही आगे बढ़तें है और मुक्ति-नगर के नागरिक बनते हैं । यहाँ योग की सात सीढियाँ फिर पार करनी पड़ती हैं जैसे योगी, साधु, मुनि, ऋषि, महर्षि, महात्मा और पंडित । अपनी शक्तिअनुसार वे औरों की मदद भी करते हैं । पंडित आखिरी दर्जा माना गया है । यहाँ पंडित का अर्थ किसी विशेष जाती या वर्ग से नहीं है बल्कि यह योग की एक अवस्था (डिग्री) है, जिन के जिम्मे सारे संसार का निज़ाम होता है; इन्ही के हुक्म से ऋषि और महात्मा आदि साधकों की दुनियावी व रूहानी मदद करतें हैं । पंडित सरुर-नगर के नागरिक होते हैं, जहाँ आनंद, जिस की कोई परिभाषा नहीं, के सिवाय और कुछ नहीं है ।

इस सारी प्रेरणा के आधार मेरे सतगुरु, जो विसाल कर चुकें हैं ठाकुर रामसिंहजी भाटी साहब (जयपुर) और सतगुरु महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब हैं ।

अगर किसी भाई को फायदा हुआ तो अपनी खुशकिस्मती समझूंगा । यह गुरु की ही ताक़त है जो शिष्य को अपने समान ही नहीं, अपने गुरु को सुपुर्द कर उनके समान बनवा देता है और स्वयं साये की तरह हर वक़्त मदद करता है । मैं ऐसे गुरु की चरण रज को सिर पर लगाने के भी काबिल नहीं हूँ । यह उनकी महानता है, जो हम जैसे नाकाबिलों पर रहम फरमाकर, खुद दु:ख उठाकर अपने जैसा बनातें हैं । ऐसे गुरु भगवान को शत-शत प्रणाम है ।

ऊपर लिखी निशानियों से साधक को अपनी तरक्की का अंदाजा हो सकता है और वो वहम में नही पड़ेगा, यही इसका मकसद है ।

प्रश्नोत्तर

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ने कुछ अध्यात्मिक रहस्य प्रश्नोत्तर के माध्यम से बयान किये हैं, जो यहाँ दिए जा रहें हैं:

प्र. पिंड कितने प्रकार के होते हैं? साधना में इनका क्या महत्व है?

उ. पिंड या लोक दो माने गएँ हैं-

स्थूल लोक-यह मृत्यु लोक कहलाता है । यह पांच तत्वों से बना है, जिसका विस्तार मणिपूरक चक्र तक होता है । इसका आकाश ह्रदय चक्र है । यहाँ तक आवागमन बना रहता है ।

सूक्ष्म लोक-इसकी पृथ्वी ह्रदय है और सहस्त्र दल चक्र तक इसका फैलाव है । स्थिति के अनुसार सुनहरा, लाल, सफ़ेद, काला या हरा प्रकाश इसमें दिखलाई देता है । इन्ही को सूफी शब्दावली में क़ल्ब, रूह, सर, खफी और अखफी कहा गया है ।

इन दोनों लोकों का स्वामी विशुद्ध ज्योति-स्वरुप परमात्मा है । गुरु अपनी शक्ति से शिष्य को सूक्ष्म लोक में ले जाकर उसका ध्यान केन्द्रित करता है । यहाँ से चढ़ाई आरम्भ होती है । इसका अंत कहाँ है, परमात्मा ही जानता है ।

प्र. सूफी साधना पद्धति में ह्रदय पर ध्यान कराया जाता है । साधना की दृष्टी से ह्रदय की कौन सी अवस्थाये हैं?

उ. ह्रदय की पांच अवस्थाएं बताई गई हैं:

मुर्दा-जो अपने भगवान या गुरु में पूरा विश्वास ना रखे ।

बीमार-जो गुनाह करता हो ।

गाफिल-जो बहुत अधिक खाता हो ।

पर्दा पड़ा-जो मूर्ति पूजा में अन्धविश्वास रखता हो ।

होशियार-परमात्मा की इबादत और ध्यान करने वाला हो ।

प्र. साधक किसको कहते हैं?

उ. वह व्यक्ति, जो परमात्मा द्वारा बनाये नियमों का पालन करता हुआ, गुरु की निगरानी में उसके निर्देशानुसार साधना करता हुआ जीवन मुक्ति की ओर अग्रसर होता है, साधक कहलाता है । साधक सादा जीवन व्यतीत करता है, किसी से इर्ष्या नहीं करता । तन, मन, धन से गुरु सेवा में तत्पर रहता है और उसके उपदेशों को जीवन में उतारता है ।

प्र. प्रेम की कौन सी तीन अवस्थाएं बताई गयी हैं?

उ. फ़ना, वफ़ा और बका प्रेम की तीन अवस्थाएं बताई गयी हैं ।

फ़ना-शिष्य गुरु को अपने साथ देखता है । यह अवस्था हमेशा नहीं रहती ।

वफ़ा-शिष्य स्वयं को गुरु के साथ देखता है । गुरु सर्वदा रहता है और शिष्य का उसके प्रति पूर्ण प्रेम रहने से बदलाव का डर नहीं रहता । ध्यान के समय महापुरुषों के दर्शन होते हैं और उनसे मार्ग-दर्शन मिलता है ।

बका-शिष्य सारे संसार को गुरुमय या परमात्मामय देखता है, इसके सिवाय उसे कुछ दिखाई नही देता । सूफी मत में इसे फ़ना-उल-फ़ना कहतें हैं । ऐसे साधक के सारे कार्य महापुरुष पूरा कराते हैं और साधक उनका अनुग्रह प्राप्त करता रहता है । ऐसा साधक खुली आँखों से उनके दर्शन करता है ।

प्र. संत मत में कुण्डलिनी योग का क्या स्थान है?

उ. संत मत में कुण्डलिनी जागरण के लिए आसनादि का परिश्रम करना आवश्यक नहीं है । गुरु कृपा से चक्र स्वत: ही जाग्रत हो जातें हैं । यह प्रेम मार्ग है, इसमें प्राणायाम आदि नहीं वरन प्रेम ही सर्वोपरि है । गुरु के प्रति शिष्य का प्रेम जितना प्रगाढ़ होगा, उतना ही वह उन्नति करेगा । प्रेम के सिवाय दूसरा रास्ता नहीं है, सब कुछ प्रेम पर ही निर्भर है । तथापि साधारण रूप से चक्रों का वर्णन निम्न प्रकार है:

- मूलाधार, स्वाधिष्ठान और मणिपूरक, ये नीचे के तीन चक्र हैं जो सभी प्राणियों में विद्यमान हैं, चाहे पशु-पक्षी हो या इंसान । इनका उपयोग मुख्यत: हठयोग और तंत्र में है । इनका सम्बन्ध सांसारिक इच्छाओं से है ।
- अनहद चक्र-यह हृदय स्थान पर है और सूफी मतानुसार इसके पांच अंग हैं: क़ल्ब, रूह, सर, खफी और अखफी । इनके प्रकाश का रंग क्रमश: सुनहरा, लाल, सफ़ेद, काला और हरा होता है ।
- विशुद्ध चक्र-यह कंठ पर स्थित है ।
- आज्ञा चक्र-यह दोनों भोहों के बीच स्थित है ।
- सहस्त्र दल-यह मस्तिष्क में स्थित है । अनाधिकारी व्यक्ति गुरु बनने पर, पढ़कर या सुनकर इनका वर्णन अपने शिष्यों से कर देतें है । ना तो उन्होंने स्वयं ने ये मंजिलें पार की, ना शिष्य को करा सकतें हैं । सच्चे संत अपनी सामर्थ्य से शिष्य को आगे बढातें हैं ।

संतमत हृदय से शुरू होता है । शिष्य के प्रेम और उससे उत्पन्न गुरु की इच्छा शक्ति से यह चक्र खुलता है । शिष्य स्वयं इसका अनुभव करने लगता है-जब तक ना देखो अपने नैना, ना मानो गुरु के बैना । संतमत में यह माना जाता है की यदि साधक के रोम-रोम में कम्पन होता है और सरुर आता है तो उसकी कुण्डलिनी ठीक कार्य कर रही है और साधक प्रगति कर रहा है । इस योग में शिष्य के लिए प्रेम और सतगुरु का सत्संग निहायत जरुरी है । प्रेम और सोहबत के बिना नाद और प्रकाश कदापि पैदा नहीं हो सकता ।

संत शिष्य की स्थिति तथा पात्रता के अनुसार उसकी कुण्डलिनी खोल देतें हैं और उसकी गति उर्ध्वमुखी हो जाती है । शिष्य को इसका आभास भी नहीं होता, जिससे उसमे अहंकार उत्पन्न नहीं होता और वह माया से बचा रहता है । संत नाद और प्रकाश को ध्यान में रखकर शिष्य को मंत्र प्रदान करतें हैं । हृदय चक्र में शिष्य नाद सुनता है और अनेक रंग के प्रकाश देखता है । उसे अनुभव होता है की वह भी इस प्रकाश का एक अंग है और यही उसका लक्ष्य है । इसी को ध्यान में रखकर मंत्र दिया जाता है और आगे की चढाई आरम्भ होती है ।

प्र. गुरु द्वारा शक्तिपात किस प्रकार किया जाता है?

उ. गुरु द्वारा शक्तिपात उसकी इच्छा से या स्वत: भी हो सकता है । गुरु द्वारा शक्तिपात निम्न तरीकों से किया जाता है:

- इच्छा शक्ति से मानसिक प्रभाव द्वारा;
- दृष्टी से;
- स्पर्श से

शक्तिपात द्वारा शक्ति प्रदान करने की क्षमतानुसार (अध्यात्मिक स्थिति अनुसार) गुरु के निम्न दर्जे होते हैं:

- जो अपने से नीचे स्थिति वालों को एक दर्जा ऊपर चढ़ा दे और नाद पैदा कर दे;
- जहाँ से चाहे ऊपर चढ़ा दे;
- किसी विशेष स्थिति में ही शक्तिपात कर सके, हमेशा नहीं;
- इच्छानुसार शक्तिपात कर सके, किसी विशेष स्थिति की आवश्यकता नहीं;
- जब दृढ़ निश्चय करे तब ही प्रभाव पड़े, अन्यथा नहीं;
- निश्चय करे या नहीं, प्रभाव पड़े, लेकिन जब चाहे रोक ले;
- प्रभाव पड़ने ना पड़ने से कोई वास्ता नहीं हो, अपनी मस्ती में रहे;
- प्रभाव से केवल आंतरिक भावनाओं को गति मिलती हो परन्तु शिष्य के आचरण और स्वभाव पर कोई प्रभाव ना पड़े;
- प्रभाव से आंतरिक उन्नति होकर शिष्य सदाचारी बने;
- दर्शन मात्र से आंतरिक उन्नति होकर शिष्य अध्यात्म मार्ग पर चल पड़े'

प्र. शांति और बेफिक्री कैसे मिले?

उ. अपने को किसी संत के शरणागत कर दो, फिर परमात्मा खुद फ़िक्र करेगा ।

प्र. इबादत किसे कहतें हैं?

उ. वह प्रार्थना जो बिना स्वार्थ के सच्चे दिल से की गयी हो ।

प्र. प्रकृति (माया) और पुरुष क्या है?

उ. प्रकृति (माया)-यह सब कुछ जो दृष्टी में आता है, जो उत्पन्न और नष्ट होता है और जिसमे परिवर्तन होता रहता है ।

पुरुष-परमात्मा या उसका कोई रूप जो माया से आत्मा को ऊपर उठाकर परम ज्योतिस्वरुप से मिलाने का सामर्थ्य रखता हो । इसमें कभी परिवर्तन नहीं होता और वह शरीरधारी किसी संत द्वारा अपना काम करता है ।

प्र. परमात्मा क्या है?

उ. परमपुरुष विशुद्ध प्रकाश का महासमुद्र जो इस जगत का कर्ता है, जिसके हुक्म के बिना कुछ नहीं होता और जिस के दर्शन मात्र से आत्मा जीवन मुक्त हो जाती है ।

प्र. परमात्मा के दर्शन किस प्रकार हो सकतें हैं?

उ. अपनी सेवा और प्रगाढ़ प्रेम द्वारा गुरु-भगवान को प्रसन्न कर उनमे फ़ना हो जाओ (फनाफिश-शैख़ बनो) । गुरु के प्रसन्न होने से परमात्मा भी प्रसन्न होगा और अपने निज-स्वरुप (ज्योति-स्वरुप) का दर्शन करा देगा ।

प्र. साधक को कैसे विश्वास हो की उसकी रूहानी चढ़ाई हो रही है और वो धोखा नहीं खा रहा?

उ. निम्न बातें रूहानी चढ़ाई की और इंगित करतीं हैं:

- नाद की आवाज़ अपने कानो से सुनता हो;
- नफरत (घृणा) व रगबत (मोह) जिसे ना सतातें हों व प्रत्येक से नम्र व्यवहार करता हो;
- यह समझ आ गयी हो की जो भलाई हो रही है वह गुरु भगवान की कृपा से और बुराई विगत कर्मों का फल है;
- जप, ध्यान आदि साधन नीचे दर्जे के हैं और गुरु की याद इनसे ऊपर है, यह ख्याल रहता हो और सभी कर्म गुरु को अर्पण करने की इच्छा रहती हो;
- दृढ़ विश्वास होने लगे की गुरु के अतिरिक्त कोई भगवान नहीं है;
- यह विश्वास हो जाये की गुरु कृपा से दुनिया की कोई शक्ति उसका भला य बुरा नहीं कर सकती;
- महापुरुषों के दर्शन होने लगें और उनसे निर्देश मिलने लगें;
- उसके रहन-सहन का दूसरों पर भी प्रभाव पड़ने लगे;
- दिल में अच्छे विचार स्थायी रूप से रहने लगें; और
- हृदय अत्यंत कोमल हो जाये और सदा दूसरों के लिए दुआ करने लगे ।

प्र. भंडारा किसका हो सकता है और कौन करा सकता है?

उ. जो संत जीवन-मुक्त हो, इसी देह में परमपद पा चुका हो, उसका ही भंडारा करना चाहिए । ऐसा ही शिष्य अपने गुरु का भंडारा करने में समर्थ है और वही भंडारा स्वीकार होता है ।

प्र. निदाए-आसमानी (नाद) क्या है, इसे किस प्रकार अनुभव किया जा सकता है?

उ. गुरु कृपा से साधना काल में नाद सुनाई देता है । यह ध्वनी घड़ी की टिक-टिक या दिल की धडकन की तरह होती है जिसे कानों से भी सुना जा सकता है । गुरु द्वारा दिल, दिमाग या पेशानी

पर तवज्जोह देने पर इसका अनुभव किया जा सकता है । इसी आवाज़ के सहारे रूहानी चढ़ाई आरम्भ होती है ।

प्र. ध्यान क्या है?

उ. नाद की आवाज़ सुनना और प्रकाश देखना ही वास्तविक ध्यान है ।

प्र. महामंत्र क्या है?

उ. यह ख्याल करना की मेरे गुरु ही एक मात्र भगवान हैं, उन्होंने मेरी जगह ले ली है, वे ही ध्यान कर रहें हैं, वे ही ध्यान करा रहें हैं और उन्हीं का ध्यान हो रहा है, यही महामंत्र है ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के नाम पत्र

ये पत्र 1959 से 1964 के दौरान महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब द्वारा डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के नाम लिखे गए हैं, जिनमे रूहानी विद्या का सार भरा हुआ है । आशा है पाठक इन्हें पढ़कर लाभान्वित होंगे ।

पत्र-1 (दिसम्बर 1959)

मैं लगातार सफर में रहा और अभी भी हूँ, इसी कारण उत्तर देने में देरी हो गयी ।

आपको ख़त के इन्तज़ार की रहमत हो रही होगी । माफ़ कीजियेगा । परमात्मा की एक पल की भी याद, दुनिया की हर बड़ी चीज़ से बहुत अच्छी है । गुरु अपने शिष्यों को सूक्ष्म शरीर से तवज्जोह देतें हैं ।

इसी दिन प्रात: 4 बजे स्वप्न आया, जिसका अर्थ 10 बजे पत्र मिलने पर स्पष्ट हुआ ।

पत्र-2 (अप्रैल 1960)

आपके स्वयं के व आपके घरवालों के हालात प्रसंशा योग्य हैं । परमात्मा मुझे, आपको और सच्ची राह पर चलने वालों को सच्ची मुहब्बत देवे और अपनी भक्ति की राह पर चलावे । खुश रहो ।

मेरे प्यारे बच्चे! आपने मेरी फोटो मांगी है, ताकि ध्यान में आसानी हो । इस भक्ति की राह में पहली शिक्षा यही है की जो भी कार्य वास्तविक धर्म की राह में चलने में रूकावट पैदा करे, उससे बचा जावे । परमात्मा की याद दिल में होती है, उस स्थिति में कोई शामिल नहीं होता । लेकिन सतगुरु से सच्चा प्रेम, उन पर पूर्ण विश्वास और पक्का भरोसा रखा जाता है ।

पूर्ण शांति या दिल की शांति प्राप्त करने के तीन तरीकें हैं-

- जिक्र-क़ल्ब (हृदय के स्पंदन से अजपा-जाप)
- गुरु में पूर्ण विश्वास और प्रेम, तथा
- गुरु की सोहबत (सत्संग)

यह मसले जब आवेंगे तो समझाने का प्रयत्न करूंगा । बहरहाल, उसकी दया चाहिए । हफ्ते में एक बार श्री हर नारायण के पास सत्संग के ख्याल से चले जाया करो । धीरे-धीरे लाभ होगा । उनको इसी काम के लिए अधिकृत किया गया है ।

मैं सूक्ष्म शरीर से तुम्हारी तरफ ध्यान करूंगा । भंडारा उसी का होता है जो इसी जीवन में परमपद प्राप्त कर ले तथा ऐसा व्यक्ति (जीवन-मुक्त) भंडारा कराने का अधिकारी है ।

पत्र-3 (मार्च, 1961)

नाद की आवाज़ एक बहुत बड़ी नियामत है । पूर्ण गुरु की सोहबत से यह पैदा होती है और प्रेम व सेवा से बनी रहती है । पूर्ण गुरु कर्म, प्रवचन और सच्चे प्रेम से शिष्यों की मुर्दादिली को हटाकर मुहब्बत की गर्मी को भर देतें हैं ।

ना तू दैर व् हरम की तरफ को जा, ना तू सदमे दूर व दराज उठा,
जिसे दिल के वतन में है प्यार मिला, उसे हाज़त रंज-ऐ-सफर ही नहीं ।

(ना तू मंदिर आदि के दर्शन को जा, ना तू दूर-दूर की यात्रा का कष्ट उठा, जिसके दिल में परमात्मा के लिए प्यार भरा हुआ है, उसे तीर्थ आदि की यात्रा की जरुरत ही नहीं)

अपनी भलाई के लिए लगातार गुरु की सोहबत में रहना और उनके कहे अनुसार चलना चाहिए । दुनिया और उसकी नियामतें, अंतिम समय साथ नहीं देंगी । ये अंतिम समय में अलग हो जाएँगी । हृदय की शांति और गुरु सेवा में गुजरा समय ही उस समय साथ देगा ।

ना देगा कोई साथ हरगिज तुम्हारा,
पर खिदमत में वक़्त जो तुमने गुजारा।

पत्र-4 (अप्रैल, 1961)

आपके हालात सब्र के लायक हैं । पमात्मा तरक्की बख्शे । परमात्मा की राह में शिष्य का प्रेम और विश्वास उसे सर्वोच्च स्थिति तक पहुँचा देता है । इसके लिए गुरु सेवा में लगे रहना होता है । भगवान हम सभी को अपना प्रकाश बख्शे और दुनिया का प्यार खत्म हो । आपकी लिखी प्रार्थना बहुत पसंद हुई । दिल की सेवा पैदा होना इस रास्ते में तरक्की का लक्षण है । अभ्यासी को चाहिए की अधिक से अधिक समय सत्कर्मों, शुद्ध विचार और इबादत में गुजारे । रामायण पढ़ना भी अच्छा फायदा देता है ।

पत्र-5 (मई, 1961)

आपके विचार कद्र लायक हैं । दिल में प्यार का सागर लहरें मार रहा है । नम्रता, दुआ व प्रार्थना मनुष्य के जेवर हैं । हर प्रकार से अहंकार मिटाना चाहिए । परमात्मा की दया, मेहरबानी उसी को शोभा देती है । हम गुनहगारों (बन्दों) को हर हालत में नम्रता आवश्यक है । अपना प्रेम और विश्वास दिन-रात बढ़ाते रहो जिससे अहंकार लेश मात्र भी ना रहे । मेरे हक में भी प्रार्थना करतें रहें ।

पत्र-6 (अगस्त, 1961)

जीवन में गुरु की शिक्षाओं पर अमल करना चाहिए । गुरु-भक्ति परमात्मा तक पहुँचने का बहुत अच्छा साधन है । आप बराबर मालिक (गुरु) की याद में रहने की कौशिश करते रहें । नाम, रूप बदल-बदल कर अभ्यास करते रहना चाहिए । तात्पर्य यह है कि तन, मन, धन की बाजी लगाकर परमात्मा की प्रार्थना की जानी चाहिए । हर साधक को चाहिए की अपने परमात्मा को जानकार उसकी राह पर चले ।

पत्र-7 (सितम्बर, 1961)

बड़ी लड़की मंगली थी । शादी की फ़िक्र बहुत थी, परेशान थे । पत्र का जवाब मिला, शादी जल्दी हो गई । परमात्मा इंतजाम करने वाला है । सब इंतजाम हो जायेगा । क्योंकि हम दुनियादार गुप्त रहस्यों और वाक्यातों को नहीं जानते, इसी कारण परमात्मा पर भरोसा रखना चाहिये, यही बंदगी, पूजा या निवेदन है । रामायण बहुत अच्छी पुस्तक है । बार-बार पढ़ना चाहिए । धीरे-धीरे असली भेद खुलने लगेंगे । खाते व सोते समय परमात्मा का ध्यान करना बहुत बड़ी प्रार्थना है ।

प्रार्थना करते-करते उसकी याद गहरी हो जाती है ।

पत्र-8 (नवम्बर, 1961)

बड़े-बड़े महापुरुषों ने फ़रमाया है की सेवा से बहुत जल्दी परमात्मा तक पहुँच हो जाती है ।

सेवा के बहुत से रूप एवं मार्ग हैं । भगवान हमें ऐसी दया बख्शे कि हम बार-बार सेवा करतें रहें । भूगांव में मेरे गुरु भगवान का भंडारा 25 व 26 दिसम्बर को है । हम लोग वहाँ जावेंगे । आपकी सेवा जरुरी है । जो मुनासिब समझो, जयपुर से भेज दो । रसीद मेरे पते पर आवे ।

पत्र-9 (मई, 1962)

इस नाशवान दुनिया में हर आदमी सांसारिक दुखों और परेशानियों में फंसा हुआ दिखलाई देता है । परमात्मा के भक्तों पर अधिक मुसीबतें आतीं है । बन्दों के लिए जरुरी है कि उसकी याद हरगिज ना भूलें, उसके प्रेमी बन्दों से हरदम संसर्ग कायम रखें । उससे परमात्मा की दया होती है और बन्दे के लिए जो अच्छा होता है, धीरे-धीरे सामने आ जाता है । विश्वास बहुत जरुरी है । यह नाचीज जैसा भी है इस स्थूल शरीर से (गुप्त रूप में) तुम्हारा ख्याल रखता है । बहरहाल, परमात्मा की दया व कृपा चाहिए ।

पत्र-10 (नवम्बर, 1962)

श्री कुंवर रामसिंहजी भक्त हैं । हमारे बड़े महापुरुषों में बैठे हुए हैं । उनकी सेवा का लाभ उठाये हुए हैं । आपका हृदय हर वक़्त परमात्मा के प्रकाश से लबालब भरा रहता है । पत्र व्यवहार अधिक नहीं है पर ख्याल बना रहता है ।

खूब गौर कर लीजिये । प्रेम कभी छिपाए नहीं रहता है ।

पत्र-11 (जनवरी, 1963)

आपने भंडारे में शामिल होने की मज़बूरी जाहिर की है । वजह यह बताई है की कुछ कर्जा है जो मार्च तक अदा हो जायेगा । वाकई हम लोग इस कदर बचत करने वाले हैं, जब वक़्त और रूपये की जरुरत होती है तो धार्मिक कामों को बंद कर देतें हैं । हम दुनियादार वाकई दुनिया के कामों को सबसे ज्यादा अहमियत देते हैं और इसी में खुश रहतें हैं । खुदा बचाए हम सबको ऐसे शैतान के धोखे से और अपनी राह पर चलाये । आंतरिक भंडारा एक बहुत बड़ी नियामत है । अगर जिन्दा रूह की मौजूदगी में किया जाये तो कई गुना ईश्वर की मेहरबानियाँ उस पर होतीं हैं । ऐसे मौकों पर जो फायदा होता है वो दूसरे वक़्त पर नहीं हो सकता । हमने असलियत की खबर आपको दे दी, जैसा मुनासिब हो वैसा करें ।

पत्र-12 (नवम्बर, 1963)

आपने लिखा है की आपको शांति रहती है । मगर दुनिया की चिंताएं भी जिन्दगी के साथ हैं । शांति दिली संतोष के साथ एक बड़ी नियामत है । सांसारिक परेशानियाँ भी इन्सान के लिए बहुत जरुरी हैं । अगर संसार या सांसारिक वस्तुएं शांति पर हावी नहीं होतीं बल्कि दिल की शांति बनी रहती है तो परमात्मा का बहुत शुक्रिया है । हमारे सिलसिले में दाखिल होने के बाद विश्वास वालों को यह नियामत बैगेर मांगे बख्श दी जाती है ।

प्रेम कायम रखना व जिन्दगी-बख्श बना लेना शिष्य के कर्मों और अमल पर आधारित है ।

प्रेम, भक्ति, सेवा और अमल इस राह में जरुरी हैं ।

पत्र-13 (फरवरी, 1964)

भंडारे के समय आप लोगों का ख्याल रहा । सिर्फ अजीज जयमूर्ती इस मौके पर आये । मुझे बहुत मस्ती व जोश था । हर वक़्त परमात्मा की भक्ति व प्रेम का समुद्र भगवान की तरफ से उमड़ता रहा । यहाँ जो मुहब्बत के बन्दे आये थे वे सब हर प्रकार से लाभान्वित रहे । हमारे सिलसिले में अधिकतर लाभ गुरु की सोहबत से होता है ।

'निगाहें मर्द मोमिन से बदल जातीं हैं तकदीरें'

इस नाशवान संसार में हर व्यक्ति संसार और उसके आकर्षणों की तरफ आँखे बंद किये दौड़ा चला जा रहा है । ऐसे लोग बहुत कम हैं जो परमात्मा और उसके बन्दों की तरफ झुकाव रखतें हैं । त्याग

करने को कोई भी तैयार नहीं है । परमात्मा हम सब को ताक़त दे कि हम उस परमात्मा की ओर सन्मुख हों और उसके प्रिय बन्दों को अपना प्यार, इज्ज़त और अदब दें ।

डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के अध्यात्मिक अनुभव

पूर्व जन्मों के संस्कारों के फलस्वरूप मुझे बचपन से ही संत-महात्माओं की कृपा का अनुभव होता रहा है । संभवत: अंजान होने के कारण मुझे इन घटनाओं का तात्पर्य स्पष्ट नहीं हुआ था पर आज मैं अनुभव करता हूँ कि मेरे गुरुदेव ही विभिन्न रूपों और विभिन्न शक्लों में मेरा मार्गदर्शन कर रहे थे जिससे मैं उनके चरणों में स्थान पा सका, उनकी मुझ पर कृपा हुई । अपने जीवन में मुझे इस मार्ग में जो अनुभव हुए उनमे से कुछ मैं यहाँ दे रहा हूँ जिससे इस मार्ग के साधकों को कुछ सहायता मिल सके-डॉक्टर चन्द्र गुप्ता ।

अनुभव-1

बचपन में मुझे रोहतक (हरियाणा) में प्लेग निकली थी । बचने की कोई सम्भावना नहीं थी । बेहोशी की दशा में मुझे आभास हुआ की पीठ के बल नंगा करके मुझे तलवार की धार पर लटकाया हुआ है और बहुत से आदमी लाठी लिए मुझे मारने के इरादे से चारों तरफ तैयार खड़े हैं । मेरी रक्षा करने के लिए कोई नज़र नहीं आ रहा था । अपनी करनी अपनी भरनी का नज़ारा सामने था । इतने में कारण शरीर धारी एक संत जिनकी शोभा अवर्णनीय थी पधारे और मुझे तलवार पर से उतार दिया और वे सब आदमी भाग गए । वे संत भी अंतर्ध्यान हो गए और अपनी याद मेरे दिल में हमेशा के लिए छोड़ गए । उनकी वह शोभा आज भी मेरे दिल में बसी हुई है । आँख खुली तो प्लेग से छुटकारा मिल चुका था । जिन्दगी में दो बार आपने दर्शन दिए ।

अनुभव-2 (बीकानेर, 1942)

मेरे दो लड़के हुए थे, जिनका नाम राजकुमार व रामकुमार रखा गया था । दोनों की पेशानी पर रौओं का चक्र बना हुआ था । वे दोनों दो मास के होकर चल बसे । एक रोज रात्री के समय उन्हीं कारण शरीरधारी महात्मा ने दर्शन देकर दोनों बच्चों की मांग की । मेरे मना करने पर कहा-इन बच्चों के बदले तुम चलो । मैंने फिर इंकार किया कि मेरे बिना इनकी देखभाल और पालन पोषण कौन करेगा? इस पर उन्होंने फ़रमाया-जो बच्चा चलती नाव में पैदा हुआ और उसी वक़्त उसकी माँ मर गयी, उसकी रक्षा किसने की? वही इन बच्चों का भी रखवाला है । तुम इनकी रक्षा करने वाले कौन हो? मैं निरुत्तर हो गया । इस स्वप्न के 10-15 दिन बाद, एक सप्ताह के अंतर से दोनों बच्चे उन महापुरुष के पास पहुँच गए । छोटे बच्चे की मृत्यु के समय उसकी रूह को सुनहरी रंग की ज्योति के रूप में नाक द्वारा एक-दो फुट तक आसमान की तरफ जाते हुए देखा । जब उस आखिरी बच्चे को श्मशान में दफना कर आया तो रंज की वजह से चारपाई पर लेटते ही नींद आ गई । दिन का समय था, एक जंगल नजर आया, उसके बीचों-बीच एक बहुत लम्बी सड़क नजर आई । सड़क के दोनों ओर वृक्ष लगे हुए थे और उन पर चाँद-सितारे चमक रहे थे । मन बहुत प्रसन्न हो रहा था, शांति का साम्राज्य था । जब मैं सड़क पर चलते आगे बढा तो एक महात्मा की कुटिया नजर आई । महात्मा के सूक्ष्म शरीर को गर्म तेल की कढाई में डालकर और फिर बाहर निकाल कर पत्थर पर पीटा जा रहा था लेकिन महात्माजी को कोई रंज या गम नहीं था । उन्होंने फ़रमाया-'जन्म-जन्मों के संस्कारों का भुगतान देना पड़ता है । आज मेरे सारे संस्कारों का भुगतान हो गया । अब मेरा फिर जन्म नहीं होगा । मृत्युलोक में आवागमन का चक्र खत्म हुआ ।' आपने अपना नाम भाईसाहब कल्याण चन्द बताया । इसके बाद एक नदी नजर आई, जिसका पानी दूध जैसा सफ़ेद था । वहाँ पानी की लहर पर आसन बिछाये वे महात्मा मेरे दोनों बच्चों के साथ दिखाई दिए । उन्होंने मुझे आदेश दिया-'आज से पूरे एक साल बाद हमारा भाई आएगा । उसके माथे पर तिलक होगा । वह तुम्हारे पास रहेगा । उसका नाम

कृष्ण कुमार है ।' जब वह पैदा हुआ माथे पर तिलक का निशान था जो अब नहीं दिखता । कृष्ण कुमार को वह दोनों बच्चे अब भी भाईसाहब कल्याण चन्दजी के साथ नज़र आते हैं । यह वाक्या पुनर्जन्म और वहाँ के इंतजाम को सही-सही साबित करता है और बिलकुल सच्चा वाक्या है ।

अनुभव-3 (जयपुर, 1951-52)

मैं चाँदपोल बाज़ार से अपने घर जा रहा था । दूसरी ओर से आता हुआ एक आदमी मेरे पास से गुजरा । उसे बहुत जोर से खांसी आई, उसकी सांस सीधे मेरे मुँह में गई । उसी समय मुझे वहम हो गया । धीरे-धीरे बीमारी ने घेर लिया । डॉक्टरों ने राय कर टी. बी. बताई । दुनिया में मेरा कोई भी रिश्तेदार मदद करता नजर नहीं आया । मैं बहुत दुखी था । मन की बात भी किसी से नहीं कह सकता था । एक दिन इसी गम में जूते पहने ही खाट पर लेट गया । दिल में रो-रोकर प्रार्थना कर रहा था-भगवान आपकी इच्छा पूर्ण हो । बच्चों का रखवाला भी तू ही है । दुनिया में कोई हमारा नहीं है । इसी ख्याल में नींद आ गई । स्वप्न में एक महापुरुष डॉक्टर के वेष में आये और मेरी दाहिनी छाती का ऑपरेशन करके तीन हड्डियाँ निकाल कर दूसरी लगा दीं । उनके जाने के बाद आँख खुली । रात के 2-3 बजे थे । मैं अब स्वस्थ हो चुका था । पत्नी को जगाकर सारी बात बताई । उसी वक़्त गर्म पानी कराकर स्नान किया । आज तक यह शिकायत नहीं हुई । मेरे विचार से इस घटना द्वारा मुझे विश्वास कराया कि गुरु भगवान अपने बन्दों की सूक्ष्म शरीर से साए की तरह किस प्रकार मदद करतें हैं ।

अनुभव-4 (जयपुर, 1952-53)

(सूक्ष्म शरीर देश)

यह देश धर्मराज के आधीन है । भौतिक शरीर व सूक्ष्म शरीर तक इसका राज्य है । कर्मानुसार यहाँ इन्साफ होता है । किसी का यहाँ दखल नहीं है । इस राज्य का कोई जीव दूसरे की रक्षा नहीं कर सकता है । अपनी करनी, अपनी भरनी का नियम है । बिरला ही इस नगरी से छुटकारा पाता है, वह भी वो, जिसकी रक्षा करने का सतगुरु जिम्मा लेतें हैं । तब भुगतान आसानी से हो जाता है ।

मैंने एक बार देखा की मैं एक अँधेरी रात में एक गली में जा रहा था । आगे जाकर गली बंद हो गई । एक मकान जो हॉस्पिटल था, की सीढियां चढ़कर मैं दूसरी तरफ पहुँचा लेकिन वह दूसरी दुनिया निकली । वहाँ धीमी रोशनी थी और पूर्ण शांति का राज्य था । वहाँ हर एक काम बिना बोले इच्छा शक्ति से होता था । मैंने एक बारात और दुल्हे को घोड़े पर सवार बाजे-गाजे के साथ, बिना आवाज़ के सड़क पर जाते देखा । मैं भी उस बारात में शामिल हो गया । आगे बढ़ने पर मेरी निगाह अपने भाईसाहब श्री पी. सी. गुप्ता पर पड़ी । वे भाभीजी से दूर खड़े थे । भाभीजी लकड़ियों की आग पर रोटी सेंक रही थीं, धुंआ बहुत अधिक था और बन्दर छत पर उत्पात कर रहे थे । जुदाई जैसा नज़ारा था । वह वाकया 1971 में साफ तरह से समझ में आया । फिर मैं आगे बढा । वहाँ पर मेरी बहन, जो योगन रही थी, दिखाई दी । उसकी गोद में दो बच्चे थे । उसका दुःख देखा नहीं जाता था । रो रही थी, और खाने के लिए रोटी मांग रही थी, पर अफ़सोस एक भी दाना उसके नसीब में नहीं था । ..... बहन की मृत्यु होने पर, 25-26 वर्ष बाद स्वप्न की बातें समझ में आई । इसके आगे बढ़ा तो उस देश के चार दरवाजों में से एक पर पहुँचा । उस दरवाजे का ऑफिसर एक दरजी का काम करता था । मुझे उसके सामने पेश किया गया । उन्होंने फ़रमाया मेरा उस देश का भुगतान पूरा हो चुका है । अगले लोक में जाने की अनुमति प्रदान की और फ़रमाया-इनकी उम्र अभी तीस साल बढाई जाती है, ताकि इस उम्र में अपना योग पूरा करके आवें । और जरुरत होने पर उम्र और बढा दी

जाएगी । मेरे जन्म-जन्म के भुगतानों के मालिक वे ही ऑफिसर हैं, जो मुझ पर बहुत कृपा रखतें हैं । यह सब गुरु भगवान की कृपा व रहमत है।

अनुभव-5 (1953-54)

स्व. रामसहायजी आजीवन ब्रह्मचारी रहे। नेक पुरुष और रामानुज सम्प्रदाय के भक्त थे। आपने मुझे तुलसीकृत रामायण बड़े प्रेम से सुनाई थी जो 8-9 माह में दीवाली से 4-5 रोज पहले समाप्त हुई । चार-पांच रोज पहले रामायण सुनते समय दिन में स्वप्न आया कि मैं 4 दिन में मर जाऊँगा। उसी समय एक महापुरुष ने कारण शरीर में दर्शन दिए। एक हाथ में चक्र था और दूसरे हाथ से प्रकाश निकल कर मुझ पर पड़ रहा था। मुझे आभास हुआ की मेरी जान बख्श दी गयी है।

दीवाली से एक दिन पहले पाँव फिसलने से कालर-बोन का कंपाउंड फ्रैक्चर हो गया। गलत जोड़ जुड़ने पर भी 15-20 दिन में ठीक हो गया। इसी तरह मेरे लड़के राजेन्द्र को बड़ी माता निकली, हर छाले में पानी भरा था। डॉक्टरों ने आशा छोड़ दी थी। सात दिन तक आखें पथराई रहीं। इसका आभास बीमारी से पहले ही मिल गया था। एक महापुरुष ने पक्षी के वेष में मौत को अपने मुहं में निगल लिया। लड़का धीरे-धीरे ठीक हो गया। यह दृश्य दिन में 10 बजे पूजा के समय दिखलाई दिया । श्री रामेश्वरजी खंडेलवाल को रात के समय भगवान श्रीराम ने हमारे कमरे के पास दर्शन दिए-यह खुद उन्होंने बतलाया।

अनुभव-6 (1959)

मेरा पहला पत्र गुरु भगवान को कानपुर के पते पर मिला, लेकिन वे सफर में थे। उत्तर की प्रतीक्षा थी। उत्तर आने से पहली रात स्वप्न आया कि गुरु भगवान कारण शरीर में गोलाकार प्रकाश के मध्य सिंहासन पर विराजमान हैं। उस प्रकाश में 5-6 आदमी गोला बनाये बैठें हैं। मैंने अपने को भी वहीं पाया। उनका लिखा पत्र मिला-'इंतज़ार की रहमत मिल गयी होगी'-का मतलब 20-25 वर्ष बाद अच्छी तरह समझ में आया।

संत-महात्मा सूक्ष्म व कारण शरीर द्वारा नज़ारा दिखा देते हैं । रहस्य बाद में ज्ञात होता है ।

अनुभव-7

मैं एक तालाब के किनारे खड़ा था । चारों ओर जंगल व पहाड़िया थीं । इतने में गुरु भगवान ठाकुर रामसिंहजी साहब पधारे, मेरा हाथ पकड़ा और उबड़-खाबड़ मार्ग से होते हुए समुद्र के किनारे ले गए । रास्ता सुनसान और खतरनाक था । समुद्र में एक नाव खड़ी थी । मुझे नाव में बिठाया और खुद पानी में खड़े होकर नाव चलाने लगे ताकि मुझे डर ना लगे । जब नाव गहरे समुद्र में चली गई, किनारा दूर हो गया, तब वे स्वयं भी अदृश्य हो गए । नाव आगे बढ़ती रही और दूसरा किनारा आ गया । मैं नाव से उतरा तो पता चला दूसरा समुद्र और है । दोनों समुद्र एक नाले से जुड़े हैं और पानी तेजी से एक समुद्र से दूसरे में जा रहा है । मैं घबरा गया की नाला कैसे पार होगा । तभी नाले का पानी ठहर गया । मैंने नाले को पार किया । आगे बड़ा सुहाना नज़ारा था । लाल प्रकाश का एक बड़ा घेरा था । कुछ संत दायरे में खड़े थे । ऐसा आभास हुआ की दुनिया के मालिक ये ही महापुरुष हैं । बड़ी शांति मिली ।

अनुभव-8

मैं दूसरे लड़कों के साथ खेलते हुए एक सुरंग से गुजर रहा था की एकदम शेरों के दहाड़ने की आवाज़ सुनाई दी । हम सब डर गए और मुझे गुरु भगवान की याद हो आई, डर कुछ कम हुआ,

हिम्मत आई । सुरंग के पार आकर देखा सब शेर सो रहें हैं । मैं उनके ऊपर से होता हुआ एक मैदान में पहुँचा । आगे बढ़ने पर एक दरवाज़ा पार कर लड़कियों के स्कूल में पहुँच गया । उसी समय बहुत सी सुन्दर लड़कियां दौड़ कर आयीं और मुझे घेर कर खड़ी हो गयीं । इतने में एक लड़की वहाँ आई और बोली-'ये मेरे जीवनसाथी हैं, इन्हें तंग ना करो ।' वहाँ से निकल कर हम दोनों जंगल की ओर चल पड़े । जंगल का रास्ता सुनसान और उबड़-खाबड़ था । चलते-चलते एक चबूतरा आया, उसके आगे रास्ता बंद था और काँटों के तार लगे थे, आगे जाना कठिन था । अचानक वहाँ पर एक दूसरी लड़की खड़ी दिखाई दी जो बोली-'आगे नहीं जा सकते, जाना चाहते हो तो पहले मुझसे शादी करो, तब जाने दूँगी ।' मैं बार-बार इनकार कर रहा था कि मैं यह शादी नहीं कर सकता, पर वह अपनी जिद पर अड़ी थी । लाचार हो कर मैं हाँ कहने ही वाला था कि अपने जीवनसाथी की प्रेरणा से बोला-'बहन, हम शादी कर चुकें हैं, तुमको बहन बना कर यह शादी कैसे कर सकतें हैं, तुम ही इन्साफ करो ।' इस उत्तर से वह लड़की बहुत प्रसन्न हुई और बोली-'भाई, तुम हिम्मत कर आगे बढ़ो, मैं इज़ाज़त देतीं हूँ ।' आगे एक बहुत बड़ा आलिशान महल नज़र आया, हर तरफ लाखों दीपक रोशन थे । प्रकाश का अद्भुत नज़ारा था । इस लड़की की प्रेरणा से मैं हवा में परिंदे की तरह उड़ा और महल का चक्कर लगाया पर महल के अन्दर ना जा सका । दृश्य यहीं समाप्त हो गया ।

अनुभव-9

इंद्री द्वार झरोखा नाना, तहं तहं सुर बैठे कर थाना,
आवत देखें विषय बयारी, ते दृढी देहीं कपाट उघारि,
जब सो प्रभंजन उर गृह जाई, तबहि दीप विज्ञान बुझाई,
ग्रंथि ना छूटी, मिटा सो प्रकासा, बुद्धि विकल भई, विषय बतासा,
इन्द्रिह सुरन्ह न ज्ञान सोहाई, विषय भोग पर प्रीत सदाई,
विषय समीर बुद्धि कृत भोरी, तेहि बिधि दीप को बार बहोरी ।

मैं रामायण पढ़ा करता था । उत्तरकाण्ड में जब यह चौपाई आती तो मेरा दिल उदास हो जाता था, रामायण पढ़ने की इच्छा नहीं रहती थी ।

एक रोज दिल का भय गुरु भगवान से अर्ज किया । चौपाई सामने नहीं थी । महाराज ने पूछा तो कहा-'याद नहीं ।' कब तक उस दोहे तक पहुंचूंगा पूछने पर कह दिया-'पता नहीं ।' इस पर आपने फ़रमाया-'भगवान तुम्हें इसका अर्थ समझावें' और चुप हो गए । 3-4 दिन बाद मेरी डिस्पेंसरी पर जो गोविंदरावजी के रास्ते पर थी, सुबह के समय एक औरत दवा लेने आई । उसके आने के 1/2 मिनट पहले कामदेव का मुझ पर हमला हुआ और साथ-साथ ही मेरे रोम-रोम में नाद की आवाज़ का ऐसा ढोल पिटा की वर्णन नहीं किया जा सकता । मेरा अंत:करण काँप उठा और मैं होशों-हवाश खो बैठा । फ़ौरन दवा देकर दवाखाना बंद किया और घर पहुंचकर सारा माजरा पत्नी से कहा । उस घटना से दिल उदास रहा । इस तरह तीन दिन वह औरत बराबर आती रही । मेरा वही हाल था । अंत में चौथे दिन पत्नी ने कहा-आपका कोई कसूर नहीं, मैं भी आपके साथ डिस्पेंसरी चलूंगी' और वह तैयार हो गई । इतने में गुरु महाराज घर पहुँच गए और आते ही मेरा हाल पूछा । सारी बातें लफ्ज-ब-लफ्ज बयान कर दीं । आपने हम दोनों को ध्यान कराया । मुझे लगा की कोई लड़का आया और मेरे दिल में से एक गोल काले रूल की किस्म की कोई चीज़ निकालकर दौड़ पड़ा । मैंने उसका पीछा किया पर कामयाब नहीं हुआ । महाराज ने पूछा-उस टुकड़े को वापस नहीं पकड़ सके', मैंने अर्ज किया-'जी, हाँ ।'

इस प्रकार गुरु भगवान ने तीन दिन का नरक भुगतवा कर मेरा दामन साफ़ किया और शक्ति प्रदान की कि आगे भी दामन पर दाग ना लगने पावे । रामायण का अर्थ समझा दिया और रामायण पूरी करा दी ।

यह सतगुरु का कमाल है ।

अनुभव-10

एक दिन मैं और श्री कृष्ण गोपाल, जो पशुपालन विभाग में कार्यरत हैं, गुरु भगवान के पास चन्द्रमहल गए । गुरु भगवान ने फ़रमाया-'किसी भी संत के पास जावें तो आँखे बंद नहीं करनी चाहिए । जब हम अपने गुरु भगवान के पास जाते थे तो सर्दियों में भी पसीना आ जाता था ।' मेरे अन्दर अहंकार ने जोर मारा और भाव आया की मेरे साथ तो कभी ऐसा नहीं हुआ । गुरु भगवान को गर्वहारी कहा गया है । उसी समय मेरे अहंकार को समाप्त करने पर तुल गए । मेरी हज़ार कोशिशों के बावजूद मेरी आँखें बंद हो गयीं और गहरी नींद आ गई । जो पसीना छूटा, बयान से बाहर है । हजारों सांप सिर से कमर की ओर दौड़ रहे थे, सिर के टुकड़े-टुकड़े हो रहे थे, आँख नहीं खुल रही थीं । ना मालुम कब तक यह हाल रहा । आँख खुली तो कमीज के पल्ले से गुरु भगवान को हवा करनी चाही तो उन्होंने फ़रमाया-'पहले अपना ख्याल करो ।'

अनुभव-11

हम तीन जने थे-मैं, पत्नी व बच्चा । एक सुनसान डरावने जंगल में पहुँच गए । वहाँ जाकर मालूम हुआ की हम बदमाशों के घेरे में फंस गए हैं । खतरे का आभास होते ही पहल हमने की । मुश्किल से छुटकारा पाकर भाग निकले । वे हमारे पीछे-पीछे दौड़े, आवाजें भी लगाईं पर पकड़ ना सके । अंत में बोले-'तुम गलत रास्ते जा रहे हो' पर हमने परवाह नहीं की । आखिर आवाज़ देकर कहा-'तुम हमारी हद से निकल गए हो, वर्ना देखते ।' हम भागते गए, पीछे मुड़कर भी नहीं देखा । तब हम एक दूसरे जंगले में प्रविष्ट हुए जो हरे-भरे वृक्षों से घिरा हुआ था, दृश्य बहुत लुभावना था, दिल खुश हो गया । अचानक गुरु भगवान ने सुनहरी प्रकाश मुझ पर और सफ़ेद प्रकाश पास में बैठे व्यक्ति पर डालकर हमें पुरनूर कर दिया । प्रकाश की शोभा अवर्णनीय थी ।

अनुभव-12

गुरु भगवान महात्मा श्री राधा मोहन लालजी कानपुर में रहते थे । मैंने आपके दर्शन 3-4 बार ही किये । बादशाह संत थे । अपनी तंग हालत की वजह से मैं बहुत बार आपकी खिदमत में हाज़िर नहीं हो पाया, यह मेरा दुर्भाग्य था । आप क़ुतुब-ऐ-आलम थे ।

आपने 21 जुलाई 1966 को संध्या के समय शरीर त्याग किया । उस समय मैं जयपुर में छत पर ध्यान-मग्न था । देखा की चारों ओर लाल ही लाल प्रकाश था और एक आदमकद चांदी की मूर्ती और बहुत सारे चांदी के सफ़ेद ताज आकाश में अधर झूल रहें हैं । अजीब दृश्य था । मुझे कुछ समझ में नहीं आया । 3-4 दिन बाद सूचना मिली की आपने शरीर छोड़ दिया है तब समझ में आया ।

आपको दाग (अग्नि) नहीं दिया गया था, समाधि बनाई गई जो हमीर रोड पर 11 वे किलोमीटर के निशान के सामने सड़क के दायीं ओर स्थित है ।

अनुभव-13 (1967)

रात के वक़्त गुरु भगवान ने दर्शन देकर मेरे चेहरे पर रोली लगाईं और टोपी में सिर पर चावल रखे । मैंने भी आपके चेहरे पर रोली लगाईं । दिल बहुत खुश हुआ । बाद में ऐसा आभास हुआ कि एक जंगल में बहुत सारे जानवर टहल रहें हैं और सुनहरी रंग का एक घोडा दौड़ रहा है, जो काबू से

बाहर था । मैं उछलकर उसकी पीठ पर सवार हो गया । उसने अपना मुहं घुमाकर मेरी तरफ देखा और दौड़ बंद कर दी । बाद में संत आये और मेरा अंगूठा पकड़कर खूब जोर से गोलाकार दायरे में चक्कर कटवाए । फिर मेरा अंगूठा छोड़कर चक्कर से बाहर फेंक दिया । दिल को शांति मिली । गुरु भगवान इसी तरह से मार्ग पार कराते हैं । हम उनकी महिमा को नहीं जान सकते । वक़्त आने पर ही यह समझ में आता है ।

अनुभव-14 (1968)

एक समय ध्यान में लगा की मेरे कई जन्म हाथी के रूप में हो चुकें हैं और मैं जंगल में दौड़ रहा हूँ । बार-बार पैदा होने और मरने का रंज या ख़ुशी कुछ भी अनुभव नहीं हो रही था । जब हाथी के रूप में मैं अन्य हाथियों के साथ भाग रहा था तो जंगल में एक काले रंग का पहाड़ नज़र आया । उस पर सफ़ेद रंग का एक जानवर, जो बड़े जंगली कुत्ते के आकर का था, दिखलाई दिया । जंगल बड़ा सुन्दर था । वहाँ हल्की-हल्की रोशनी थी जो सूरज की नहीं थी । दिल बहुत खुश हुआ । इसी तरह अन्य योनियों का भुगतान हुआ ।

बाद में एक महापुरुष बैठे हुए नजर आये, जिनकी दाढ़ी और सिर के बाल हिना के इत्र के से थे, और चेहरे से नूर टपक रहा था । आपने ध्यान कराया । फिर कोई और साहब आये, आपने उनकी ओर रुख कर लिया । शक्ल से आप पठान लग रहे थे । फिर कानपुर वाले गुरु भगवान के दर्शन हुए । आपका बधना मैंने साफ किया ।

अनुभव-15 (10.3.1970)

एक बार बहुत बड़ा रेगिस्तान देखा, जिसका कण-कण चंद्रमा की रोशनी में चमक रहा था, जैसे समुद की लहरें हिलोरें ले रहीं हों । जहाँ देखो यही दृश्य था । चांदनी रात और मेरा सूक्ष्म शरीर, बाकी शांति का साम्राज्य था । पीने के लिए एक बूँद भी पानी नहीं था । डर लग रहा था, पर लाचार था । धोखा ही धोखा लग रहा था-भटकाव ही भटकाव था । बाद में बहुत सारी आत्माएं, जो सुनहरी रंग और आकार में बहुत छोटीं थी, मिलकर नाच करती दिखलाई दीं । मेरा सूक्ष्म शरीर भी उनके साथ नृत्य करने लगा । आनंद ही आनंद था । सत्संग भी हद दर्जे कमाल पर था । कुछ होश नहीं था । उसी वक़्त एक फ़रिश्ता आया और बोला-'आपका काम खत्म हुआ, अब शरीर त्याग दो ।'

मैंने एक दिन की मोहलत मांगी तब हुक्म फ़रमाया-इस मिशन को भाईसाहब नारायणसिंहजी व कृष्ण कुमार चलाएंगे । मिशन दो टुकडो में बंट जायेगा । भाईसाहब भंडारा 14-15 जनवरी को हर वर्ष मना रहें हैं । इधर घर पर हर वर्ष 13 जनवरी को हो रहा है । 15 मार्च 1985 को हजरत मुहम्मद अब्दुल रहीम साहब ने कृष्ण कुमार को ठाकुर साहब की तरफ से सम्पूर्ण शक्ति प्रदान कर दी है । 15 साल बाद कृष्ण कुमार पीर साहब के हुक्म से और तीन साल बाद से भाईसाहब नारायणसिंहजी माताजी के हुक्म से काम कर रहें हैं ।

अनुभव-16

एक दफा चन्द्र-महल में महाराज के पास गया । सुबह का समय था । आप शौच के लिए जाने को तैयार थे । मैं जाकर आपके सामने बैठ गया । बैठते ही आँखें बंद हो गयीं । अचनक भिन्न-भिन्न रोशनी वाले तारे, जिनकी चमक सूरज और चाँद से भी ज्यादा थी, आसमान से टूटते नजर आये । मेरा दिल काँप गया । ख्याल आया की मैं मर चुका हूँ, होश आया तब शांति मिली । इसके बाद देखा की एक विशाल सागर है, कहीं भी दूर-दूर तक किनारा नजर नहीं आता । गहरे लाल रंग का पानी और दिल को दहला देने वाली ऊंची-ऊंची लहरें दिखलाई दीं । मेरा डर मिटाने के लिए गुरु भगवान ने

एक परिंदा दिखलाया जो पानी में किलोल कर रहा था । मेरा भय कम हो गया । फिर मैंने अपने को पानी की लहरों पर लेटा पाया । लहरें बहुत शांत थीं । मैंने देखा की दूर से सुनहरी रोशनी मुझ पर पड़ रही है, जिसने चारों ओर से मुझे घेरे में ले रखा है । मेरी स्वयं की शक्ति समाप्त हो गई है और उस प्रकाश के निर्देशों से ही मेरी क्रिया परिचालित हो रही है । दिल में ख्याल आया कि यही मेरे गुरु भगवान हैं ।

अनुभव-17 (1971)

गुरु भगवान टी. बी. सेनेटोरियम के काटेज वार्ड न. 19 में इलाज के लिए भरती थे । वहीं पर हर रोज सत्संग के लिए भक्तजन उनके पास आते-जाते रहते थे । सत्संग हर समय होता रहता था ।

महाराज की बीमारी के दौरान गुरु-भाई श्री गोवर्धनलालजी-जिन्हें महाराज अफसर साहब कहा करते थे, स्वर्गीय रवीन्द्र सिंहजी चौहान व चिरंजीलालजी बोहरा ने तन, मन, धन और जी-जान की बाजी लगाकर रात-दिन सेवा की जो बेमिसाल है । पुत्र भी शायद ऐसी सेवा ना कर पाए । आज भी ये लोग निष्ठा से सत्संग निभा रहें हैं । मुझे दिनांक 10.01.1971 को हुक्म फ़रमाया कि मैं अब उनकी आँखों के सामने रहूँ । इसके पूर्व मैं गाजियाबाद गया हुआ था । दि. 14.01.1971 को शाम का समय था । महाराज को बहुत जोर से खांसी आई । मैंने निवेदन किया-'महाराज, आपकी खांसी मुझसे देखी नहीं जाती । या तो इसे बंद करें, या शरीर छोड़ दें ।' आपने फ़रमाया-'कर्मों के भोग तो भुगतने ही पड़ते हैं ।' इसके बाद आपको खांसी नहीं आई । उसी समय मेरी आँखें बंद हो गईं, देखा की एक हंस का जोड़ा, जिसके गर्दन पर काली धारी थी, मोती चुग रहें हैं, और फिर उड़ गए । तभी श्वेत प्रकाश-युक्त एक तारा आकाश से टूटकर महाराज की छाती में समा गया । दिल को झटका लगा, विश्वास हो गया कि महाराज शरीर छोड़ रहें हैं । उस रात 02.55 तक महाराज मुझे, श्री गोवर्धनलालजी, श्री चिरंजीलालजी और श्री नाहरसिंहजी को ध्यान कराते रहे, आँखें खुली हुईं थी, अचानक हल्के से हिचकी आई और उन्होंने देह-त्याग कर दिया ।

पवन कुमार द्वारा देखे गए नजारे के अनुसार आपको लेने खानदान के चार महापुरुष आये थे, जिनका जलाल कमाल का था । आपका दाह-संस्कार 15.01.71 को आपके गाँव मनोहरपुरा में किया गया । हर वर्ष आपका भंडारा 14-15 जनवरी को समाधि-स्थल पर होता है, जिसे आपके सुपुत्र श्री नारायणसिंहजी संभाल रहें हैं ।

अनुभव-18 (दिसम्बर, 1972)

एक दफा शाम के समय, मैं और दुर्गादानजी अपने गुरु भाई श्री मूलराज टंडन के घर गए । आप बहुत बड़े क्रांतिकारी रहें हैं । आपका हर्निया का ऑपरेशन हो चुका था और एक किडनी भी निकाल दी गई थी, उच्च रक्तचाप भी रहता था । हम सब ध्यान में बैठे । मैंने व दुर्गादानजी ने उनका मणिपूरक चक्र खुलता देखा, जो गोलाकार और सुनहरी प्रकाश लिए था । उसकी किरणें टंडन साहब के जख्मों पर पड़कर मानो उनका उपचार कर रहीं थीं । दुर्गादानजी चक्र की गर्मी नहीं सह सके, पसीने से भीग गए, बाहर ठंडी हवा में उन्हें चैन आया । टंडन साहब को कठिन रोग था । इसके बाद भी वे कई वर्ष जीवित रहे । उन्होंने सन 1978 में शरीर छोड़ा ।

अनुभव-19 (26.06.1973)

मैं एक सज्जन के साथ ऑफिस के रिकॉर्ड रूम में बातें कर रहा था । बातों-बातों में किसी ने पूछा-'किसी ने भगवान देखा है?' मेरे मुँह से 'हाँ' निकल गया । घर पर रात को जब सोया तो लगा कि किसी अदृश्य शक्ति ने मेरे शरीर के तलवार से टुकड़े कर दिए हैं । अचम्भा यह था कि एक भी

टुकड़ा जमीन पर नहीं गिरा था और अधिक तकलीफ भी नहीं हो रही थी । इतने में गुरु भगवान सूक्ष्म शरीर से आये और मेरे शरीर पर हाथ फेरते हुए फ़रमाया-'शुक्र है, सब अंग सलामत हैं और कटे का निशान भी नहीं है ।' इतने में तलवार प्रकाश रुपी तलवार बन गयी और हवा में अधर होकर मेरी गर्दन काटने के लिए आगे बढ़ी । मैं भी बचने के लिए दौड़ा । तलवार मेरा पीछा कर रही थी, पर मुझे छू नहीं सकी ।

मुझे अपने अहंकार का अहसास हो गया था । अगले दिन दफ्तर में जब वह व्यक्ति मिला तो मैंने अपनी गलती के लिए माफ़ी मांगी । वह बहुत प्रभावित हुआ । इस तरह मेरे अहंकार का भुगतान कराया गया । हजरत मंसूर साहब का भुगतान शरीर द्वारा बादशाह ने करवाया था और मेरा गुरु भगवान ने सूक्ष्म शरीर से कराया । जिससे मेरा भौतिक शरीर कायम रहा क्योंकि आपको मेरे शरीर से काम लेना था ।

अनुभव-20 (28.10.1979)

मैंने देखा की एक बहुत विशाल करीब एक मील लम्बी व काफी चौड़ी हरे रंग की सुन्दर मस्जिद है । उसके बाहर बहुत लम्बा-चौड़ा हरी दूब का मैदान है, जहाँ 50-60 हज़ार लोग एक साथ नमाज़ अदा कर रहे थे । वे सब तीन कतारों में बैठे हुए थे । पहली कतार में बड़े महापुरुष बैठे हुए थे । पीर साहब आये और उन्होंने मेरा हाथ पकडकर पहली कतार की ओर बढ़ना चाहा । मैंने अदब के लिहाज से संकोचवश दूसरी कतार की ओर कदम बढ़ाये । पीर साहब भी मेरे साथ दूसरी कतार तक गए । मेरे बैठने के बाद जलेबियों की प्लेटें पहली कतार से बंटनी शुरू हुई । मुझे भी मिली । सब ने खाई । बाद में सात दीपों वाली ज्योति के दर्शन हुए, जिसकी आकृति निम्न प्रकार थी । यह वाकया मैंने पीर साहब से अर्ज किया, सुनकर बहुत खुश हुए ।

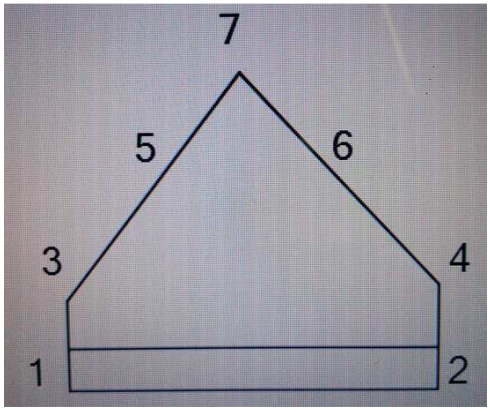

अनुभव 21

श्री सरदारसिंहजी मोडक में पत्थरों की खान के ठेकेदार थे । आय अच्छी थी पर फिर भी दुनिया से प्यार नहीं था । हर समय गुरु नानकदेवजी और गुरु गोविन्दसिंहजी के ध्यान में रहते थे और वे आपके साथ दिखाई देते थे । आप दस वर्ष तक सन्यासी रह चुके थे पर मजबूरन गृहस्थी स्वीकार करनी पड़ी थी । इससे वे उदास रहते थे । आप कभी-कभी श्री सुरेन्द्रसिंहजी के साथ मेरे घर पधारा करते थे । गुरु नानकदेवजी की इच्छा पर गुरु महाराज ने आपको सत्संग की इज़ाज़त मेरे घर ही प्रदान की थी । जब आपका अंतिम समय निकट आया तो गुरु महाराज ठाकुर साहब ने आपको सात दिन तक दर्शन देकर अपने साथ चलने का संकेत दिया । इसी दौरान आप मिलने के लिए मेरे पास

जयपुर आये थे, पर मैं बम्बई गया हुआ था, मुलाकात नहीं हो सकी । आठवें दिन आपने यह नश्वर देह छोड़ दी और परमात्मा की ज्योति में लय हो गए । जयपुर लौटने पर श्री सुरेन्द्रसिंहजी ने यह सब हाल मुझे बतलाया ।

अनुभव-22 (5.11.1982)

मैंने देखा की एक रेलगाड़ी ने मुझे एक स्टेशन पर उतार दिया है । जब स्टेशन से बाहर आया तो देखा कि वहाँ का शहर स्टेशन से ही आरम्भ हो गया है । संध्या का समय था, हर दूकान में चिराग रोशन थे । मैं अपने दांये हाथ की सड़क की पटरी पर चला जा रहा था । सब तरफ सुनसान था और शांति का साम्राज्य था । चलते-चलते एक दुकान पर नजर पड़ी, उसका मालिक एक दर्जी था । उसके पास एक भूरे रंग का पालतू कुत्ता था, जिसके लम्बे बाल थे और वह मध्यम कद का था । वह बहुत शांति से बैठा था । जैसे ही मैं उसकी दुकान के सामने से निकला, कुत्ते की नजर मुझ पर पड़ी । उसने लपककर मेरा दांया हाथ अपने मुँह में ले लिया, खून निकल आया । उसके मालिक की जब मुझ पर निगाह पड़ी, उसने फ़ौरन अपने दोनों हाथों से उसका मुहं खोल दिया । मेरा हाथ सुन्न हो चुका था । मैं अपना हाथ उसके मुहं से नहीं निकाल सका, यह काम दूसरे महापुरुष ने प्रकट होकर किया । तब उस कुत्ते ने मनुष्य की बोली में कहा-'यह पिछले जन्म में बहुत अच्छे सूफी संत थे, इनसे मेरा कोई झगडा नहीं था, पर इन्होने मेरा क़त्ल किया था ।' यह ज्ञान होने पर मैंने उस कुत्ते के पैर पकड़ कर माफ़ी मांगी, उसने मुझे क्षमा कर दिया ।

उस दर्जी व कुत्ते की कृपा से मैंने अपना वह जन्म देखा । अपना वेष व अपनी पत्नी, जो अब भी मेरे साथ है को भी देखा । महापुरुष ने फ़रमाया-'आपके पिछले जन्म का यह संस्कार बाकी था, जो अब नष्ट हो गया । कोई और संस्कार भुगतान के लिए बाकी नहीं रहा ।'

अनुभव-23 (5.6.1983)

हम किसी संत के पास आरम्भ में अपना कोई स्वार्थ पूरा करने के लिए जातें हैं । स्वार्थ पूरा होने पर प्रेम घट जाता है, और मदद मिलना भी घट जाता है । सौभग्य से यदि हमारा सच्चा प्रेम और पूर्ण विश्वास हो जाये तो वे हमें निज-धाम का निवासी बना लेंगे । वे हमारा सदा ध्यान रखतें हैं, इसके लिए केवल प्रेम ही चाहिए ।

मैंने देखा कि एक छोटी सी मस्जिद थी, कुछ लोग वहाँ नमाज़ पढ़कर जा रहे थे । इनमे एक जयपुर के महाराजा साहब मानसिंहजी भी थे । मस्जिद के मौलवी ने महाराजा साहब से प्रार्थना की कि इस मस्जिद का भी उपयुक्त प्रबंध करावें । महाराजा साहब ने अपने वस्त्र उतार दिए और संतों के वेष में वापस मस्जिद में गए । वापस लौटने पर फ़रमाया-'यह सब लोग नाकाबिल हैं ।' इसी दौरान मैंने भी मौलवी साहब से प्रार्थना की कि वह मेरी सिफारिश इन संत से कर दें । मौलवी साहब ने मेरी सिफारिश कर दी ।

संत ने अपना तीसरा नेत्र खोलकर मुझपे निगाह डाली जो उसी वक़्त बंद भी हो गई और फ़रमाया-'यह तो हर वक़्त मेरे दिल में रहतें हैं ।' मौलवी साहब को यह सुनकर बड़ा सदमा हुआ और कलाबाज़ी खाते हुए प्राण त्याग दिए ।

मैं आपकी मधुर वाणी सुनकर बहुत रोया और प्रार्थना की कि मैं इस काबिल नहीं हूँ, आपने मुझे अपना ब्लड स्वीकार किया था (ठाकुर साहब के शब्द थे-यू आर माय ब्लड नाउ) जिस समय मुझे शरण दी थी । यह हजरत राधा मोहन लालजी के पत्र पर किया गया था और इसीलिए वे मेरे रहनुमा बने थे ।

यह सब उनका ही कमाल है ।

अनुभव-24 (21.7.1983)

दि. 21 जुलाई को गुरु महाराज कुतबे आलम हजरत राधा मोहन लालजी का निर्वाण दिवस था । भंडारा अपने ही घर पर था । 21.7.1983 की रात को गुरु महाराज ठाकुर साहब ने मुझे अपनी गोद में बैठाकर सीने से चिपकाकर सिजदा किया । नाद की आवाज़ से प्रसन्न हुए ।

मेरी पत्नी भी वहीँ बैठी नजर आयीं । वे बोली-'महाराज! अब नहीं रहेंगे क्योंकि आपको अब गोद में बैठा लिया है ।' महाराज ने खुश होकर दरवाजे की चौखट का एक टुकड़ा लेकर मेरी धर्म-पत्नी को बख्शा ।

अनुभव-25 (22.4.1985)

सुबह 7.30 बजे मैं और दुर्गादानजी अपने घर पर ध्यान कर रहे थे । मुझे ऐसा लगा कि हनुमानजी व उनकी स्थापना कराने वाले पंडितजी पाताल में घुस गए, सिर्फ गर्दन जमीन से बाहर रही । मेरी आँखें जब खुली तो मैंने पाया कि मेरी सेहत खराब है । पानी मांगा, छाछ का गिलास मिला, पीकर अपने डॉक्टर लड़के को कहा मुझे पाखाने तक ले चलो । कमरे से बाहर होते ही मेरी आँखों की रोशनी खत्म हो गयी, कहतें हैं हार्ट फेल हो गया था । आखिरी पाखाना ढेर सारा हो चुका था, आँखों की प्युपिल्स भी गायब थी । जीवन के कोई चिन्ह नहीं थे, पर मैं एक आनंद लोक में था । वहाँ सिवाय आनंद के कुछ नहीं था । दिल बहुत खुश था । इतने में किसी अज्ञात शक्ति ने कहा कि इनको एंजीटोन दो । यह दवा पवन ने फ़ौरन लाकर मेरे मुहं में डाली । मैं बच गया, लेकिन कमजोरी बहुत ज्यादा बाकी रह गई । मेरी आत्मा हनुमानजी व पंडितजी के रूप धारण करके आई थी, यह बाद में अहसास हुआ ।

अनुभव 26 (28.3.1990)

(पत्नी की मृत्यु का दृश्य)

श्रीमती दर्शना देवी का निधन 27.3.90 को दोपहर के वक़्त हुआ और 28.3.90 को अंतिम संस्कार संपन्न हुआ। श्मशान में सुबह का वक़्त था, मैं ध्यान-मग्न हो गया। श्मशान में वंश के महापुरुष सफ़ेद वस्त्रों में, सिर पर सफ़ेद साफा बांधे हुए गोल दायरे में खड़े हुए दिखाई दिए। दोनों हाथ आगे करके मानो वे महशर के पुल पर दर्शना देवी को लेने आये हों। बड़ा सुन्दर नज़ारा था। एक तरफ धर्मराज का दूत जिसकी उम्र 30-35 साल होगी, रंग कुछ काला सा, छोटी-छोटी दाढ़ी काले रंग की, सिर झुकाए, आँखें नीची किये खड़ा था और गमगीन हो रहा था, जैसे यह काम मजबूरी में किया गया हो, दिखाई दिया।

आपके आधे फूल, 29.3.90 को पवन, राजेन्द्र, सतीश, अशोक व शैलेश द्वारा हरिद्वार ले जाए गए व आधे फूल घर पर ही एक कोने में राजेन्द्र द्वारा गुरु भगवान की प्रेरणा होने पर समाधि के लिए रख लिए गए। बाद में पीर साहब आये और फ़रमाया कि दर्शना देवी बहुत आला मुकाम पर गयीं हैं, खुदा सलामत रखे। मुझ से फ़रमाया कि तुम्हारी समाधि बनाने की इच्छा पूरी होगी। सत्संग के बारे में भी हुक्म दिया, ग्यारहवें दिन सत्संग व भंडारा हुआ, कमाल की शांति व बरक़त हुई। करीब 500 भाइयों ने प्रसाद पाया।

22.4.90 को शाम को मैं, कमलेश व सरोज समाधि पर ध्यान कर रहे थे । मुझे होश नहीं रहा । काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार सब गायब हो गए थे । यह दर्शना देवी की महानता व गुरु कृपा का असर था क्योंकि गुरु भगवान तक का जरिया आप ही हैं, वर्ना मुझ पापी को कोई सहारा ही नहीं

मिलता । तभी गुरु भगवान में निष्ठा जमाने की नियत से दर्शना देवी एक दम सातों लोकों का मोहिनी रूप धारण कर प्रकट हुई । ऐसी सूरत जन्मों-जन्मों में भी नहीं देखी या सुनी थी । दोनों हाथों, सिर, गर्दन, छाती, अनहद चक्र, सहस्त्र दल, आज्ञा चक्र और विशुद्ध चक्रों में सैंकड़ों चंद्रमा विराजमान थे । नाक में, कान में व गला रत्नों जड़े आभुषनों से सज्जित थे । अति सुन्दर वस्त्र धारण किये हुए थे । तन, मन, आत्मा स्वत: सम्पूर्ण समर्पण की अवस्था में आ गए । गुरु भगवान कृपा कर के हम दोनों को अपने हृदय में छुपाकर रखें ताकि आप की माया फिर तंग ना कर सके । 23.4.90 को सारी दुनिया गोल चक्र के रूप में नजर आई । नाना प्रकार के प्रकाश घूमते नजर आये । गुरु भगवान आपको अपनी ही आन है, हमें अपने हृदय में रखना, अपनी माया से दूर व अलग ।

अनुभव-27 (9.8.1991)

आज सुबह 5 बजे स्वप्न में गुरु भगवान व श्री हर नारायणजी एक दरिया में बैठे दिखाई दिए । पानी बहुत कम व साफ था । गुरु भगवान ने आज पूर्ण सत्संग की इज़ाज़त बख्शी । दर्शना भी बैठी थी । किताब पूर्ण का भी हुक्म फ़रमाया । और भी बख्शिशे बख्शी । मैंने दोनों के चरण छूए । हुक्म फ़रमाया-'आइन्दा किसी के पाँव ना छूना । ....., ..., ..., और ..... के अलावा जिनको शिष्य बनाया, सब को कुबूल फ़रमाया । सब के लिए मैंने दुआ मांगी, और अर्ज किया हम तो इंसान हैं, हम आप को भूल सकतें हैं, आप कभी भी हमें ना छोड़ना । दुआ कुबूल फरमाई ।

सत्संगियों के अध्यात्मिक अनुभव

पुस्तक के इस भाग में सत्संगी भाई-बहनों के कुछ अध्यात्मिक अनुभव दिए जा रहे हैं । इन अनुभवों के प्रकाशन का उद्देश्य करिश्माई शक्तियों का महिमा-मंडन करना नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य सतगुरु पर पूर्ण विश्वास और उनके प्रति प्रगाढ़ प्रेम से होने वाले आत्मिक और सांसारिक परिवर्तन को सामने लाना है, ताकि पाठकों को इससे एक नई प्रेरणा मिल सके । करिश्मा करना या होना रूहानी तरक्की का कोई पैमाना नहीं है । परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण स्वत: ही प्रकृति की समस्त शक्तियों को साधक की सहायता करने को प्रेरित कर देता है ।

सबसे पहले एक सत्संगी भाई के साधना काल के प्रारम्भिक दिनों के अनुभव दिए जा रहें हैं, इस आशा के साथ की जिज्ञासु भाई-बहन साधना सम्बन्धी अपने बहुत से प्रश्न जैसे की ध्यान क्या है, अदब क्या है, गुरु-शिष्य सम्बन्ध की मर्यादा क्या है आदि के उत्तर इस में पा सकेंगे ।

सत्संगी भाई-बहनों के नाम उजागर नहीं किये जा रहें हैं ताकि उन्हें किसी तरह का कोई संकोच अथवा अनचाही स्थिति से परेशानी ना हो ।

.....

बाउजी से मिलने का सौभाग्य मुझे मेरी मौसीजी के बेटे के कारण मिला । वो पवन भाईसाहब के पास ज्योतिषी जिज्ञासा के लिए जाता था और कहता था कि उनके पिताजी बुज़ुर्ग हैं और ध्यान व पूजा करते हैं । तब मेरा विवाह हुए सात वर्ष हो चुके थे परन्तु कोई संतान नहीं थी । मैं बहुत मंदिर-मस्जिदों में जा चुका था, बहुत से साधू-संतों के पास भी हो आया था और स्वयं भी तंत्र-मंत्र सिद्ध करने का प्रयत्न कर चुका था पर कोई लाभ नहीं हुआ । भाई के विशेष आग्रह पर मैं बाउजी के पास हाज़िर हुआ । यह 1990 की बात है । बाउजी मेरी तरफ मुखातिब हुए तो ऐसा लगा जैसे भीतर तक झाँक रहें हों और बोले 'बहुत देर लगाई ।' मैंने समझा ये मुझे मेरा भाई समझ रहें हैं । मैं करीब आधा घंटे वहाँ रुका, सोचा फिर तो आना है नहीं । अगले दिन सुबह करीब 7.30 बजे मेरे पिताजी ने कहा की पैसे देने हैं जो दे आ । मैंने पैसे लिए और स्कूटर से चल पड़ा ये सोच कर की ऑफिस जाने से पहले दे आऊँ पर अचानक ध्यान गया की मैं सेठी कॉलोनी के पास आ गया जो विपरीत दिशा में है । फिर सोचा अब यहाँ तक आ गया हूं तो पवन भाई साहब के घर हो आता हूं । इतनी सुबह करीब आठ या साढ़े आठ बजे बड़े भाई साहब जिन्हें मैंने पहले नहीं देखा था हॉल में बैठे दाढ़ी बना रहे थे, उन्होंने पूछा बोलिये किससे मिलना है? मैंने कहा किसी से नहीं, मैं कल शाम को आया था किसी और काम से निकला था और इधर की ओर आ गया । इतने मैं ही अंदर से बाउजी की आवाज़ आई अंदर भेज दो । मैं अंदर गया, मुझे कहा बैठो । मै सामने बैठ गया । उनकी ओर देखा और आँख बंद हो गयी, 1 या 2 मिनिट बाद उन्होंने कहा जाओ । मैं वापस घर आगया और ऑफिस चला गया पर दिन भर हल्कापन तथा शरीर में थोड़ी थोड़ी देर में झुरझुरी सी लगती रही । शाम को घर आया और घर पर कहा सुनील (मौसी के बेटे) के घर जा कर आता हूँ । मालूम हुआ की वह टूर पर गया है तो सोचा की अकेले ही हो आता हूँ और सेठी कॉलोनी चला गया । जब पहुँचा तो बाउजी बोले बैठो । मैं लागातार उनकी शक्ल को देखने का मन में सोच उनके सामने बैठ गया पर बैठे बैठे ही आँख बंद हो गयीं । इसके बाद सिलसिला शुरू हो गया । मैं हर दिन शाम को ऑफिस से घर जाने के स्थान पर सेठी कॉलोनी जाने लगा । अन्य लोग बैठते थे वे ध्यान पूजा करते थे पर मुझे ध्यान क्या और कब हो जाता है मालूम नहीं था । पर ऑफिस से सीधे बाउजी के पास ही आजाता था । फिर जब भी मौका मिलता ऑफिस से जल्दी निकलता तो भी बाउजी के पास आ जाता, कभी लंच टाइम में भी

आजाता । कभी भी आने पर बाउजी हमेशा खुश ही रहते थे, आओ बैठो ही कहते थे । सामने बैठने पर मेरी आँख बंद हो जाती थी जो मुझे अच्छा नहीं लगता था । मुझे लगता था की बाउजी क्या सोचते होंगे, आता है और सो जाता है पर वे कभी कुछ नहीं कहते थे । मेरे सॉरी बाउजी, नींद आ गयी, बोलने पर वे कहते कोई बात नहीं । इसी दौरान अन्य आने वालो से पता लगा की यह ध्यान होता है । इसी बीच यह भी पता चला की बाउजी आपको आने को कहते है तो चूकना नहीं ये तो बहुत बड़े संत हैं, तो मैंने सोचा की अब आगे से मैं ऑफिस से आ कर पहले बाउजी से मिलूंगा फिर घर जा कर खाना खाऊँगा । ऐसा कुछ दिन चला पर एक दिन बाउजी ने कहा ये तो हट है, तुम पहले घर जाया करो फिर यहाँ आया करो । थोड़ी देर भी हो जाये तो कोई बात नहीं । मुझे ये सोच कर हैरानी हुई की मैंने तो ये मन में सोचा है बाउजी को पता कैसे चला?

एक दिन शाम को पवन भाई साहब ने बाउजी से कहा की कल भंडारा है तो इन्हें भी बुला लें? इस पर बाउजी बहुत जोर से बोले ये कोई जीमण है, मेरी इजाजत के बिना कोई नहीं आएगा और आएगा तो खाली ही जायेगा । भंडारा क्या है मालूम नहीं था पर ये मालूम हो गया की कोई खास बात है 27 मार्च को । अगले दिन यूनिवर्सिटी मै सेमिनार था । हमारे पी. एच. डी. के गाइड और को-गाइड ने ही रसायन शास्त्र का सेमिनार आयोजित किया था । मैं और मेरी पत्नी ने उन्हीं के साथ पी. एच. डी. की थी । जल्दी के बाबजूद भी सेमिनार शुरू हो गया था सो हम दोनों ने तय किया की लंच के पहले सेशन में चुपचाप आकर बैठ जायेंगे तब तक सेठी कॉलोनी चलते हैं, कोई बात नहीं बाउजी तो बड़े बुजुर्ग हैं डांट दिया तो क्या फर्क पड़ता है, कोई गलती होगयी होगी, चलो माफ़ी मांग लेंगे । ये सोच कर सेठी कॉलोनी आ गए तो देखा की बाउजी जाली के दरवाजे पर खड़े थे, बोले अच्छा किया आ गए । मुझे तथा मेरी पत्नी को आसन पर बैठा के स्वयं थाली लगवा कर भोजन कराया और फिर ड्राइंग रूम में बैठ गए । हम दोनो भी सामने बैठ गए और बाउजी ध्यान, पूजा और अपने गुरु भगवान आदि के बारे में बात करने लगे । मेरी पत्नी लगातार सोती रहीं, मैं बीच-बीच में पत्नी को जगाने की कोशिश करता तो बाउजी कहते कोई बात नहीं ऐसा हो जाता है । उस दिन उन्होंने मुझे मेरे सही नाम से पुकारा, मेरे विभाग, मेरी पत्नी का नाम, वे रसायन शाश्त्र में लेक्चरर है उन्हें सब याद था कोई गलत नाम नहीं बोला, जबकि इससे पहले वे मुझे कभी शर्माजी, कभी गुप्ताजी, किसी भी नाम से बुलाया करते थे । उस शाम हम चाय पी कर सीधे ही घर आ गए सेमिनार में नहीं गए । इसके अगले शनिवार को उन्होंने कहा कल दोनों आ जाना । पवन भाई साहब ने कहा की मिठाई और माला ले कर आना । मैं और मेरी पत्नी रविवार को ध्यान के बाद रुके रहे तब हम दोनों को बाउजी ने विधि पूर्वक बैअत किया और वे अब हमारे लिए गुरु हो गये और धीरे धीरे समय के साथ गुरु भगवान हो गए ।

मुझे अभी तक पता नहीं था कि ध्यान कैसे करते है? बाउजी के सामने यह बात आई तो बोले तुम जिसकी पूजा करते हो या जो तुम्हारा इष्ट है उसे अपने हृदय में है ख्याल करना और अपने हृदय की धड़कन को सुनने की कोशिश करना, यही ध्यान है और बोले 'बैठो ।' लेकिन इस प्रकार ध्यान करने से तो सब गड़बड़ हो गया । एकदम विचारों का अनवरत सिलसिला शुरू हो गया । ऐसी-ऐसी बातें दिमाग में आने लगीं जिन्हें मैं भूल गया था । उनमे अधिकांश वे थी जो सामाजिक दृष्टि से सही नहीं थी, जो ऐबों की श्रेणी में आती हैं । घबरा कर आँख खोल दी । बाउजी ने पूछा क्या महसूस किया? मैंने कहा ऐसे तो आज ध्यान नहीं हुआ और उठ कर चला आया ।

अगले दिन भी ऐसा ही हुआ और उसके अगले दिन भी । इससे मन में ग्लानि होने लगी, ख़्याल आया की ये तो ठीक नहीं है । चार बिन बाद डरते-डरते मैंने कहा की इस तरीके से तो ध्यान नहीं होता है बल्कि ग्लानि की अनुभूति होती है तो बाउजी ने कहा बडी अच्छी बात है । यह सुनकर तो दिमाग ख़राब ही हो गया । सोचा था की कुछ अच्छा सीखूंगा, पर ये तो उल्टा हो रहा है । पहले ध्यान हो रहा था अब तो मैं सिर्फ अपने किये गए कर्मों की फ़िल्म सी देखता हूं, वो भी जिन्हें मैं भूलना चाहता हूँ जो ठीक काम नहीं माने जाते और छुप कर ही किये थे । पर बाउजी कहते हैं अच्छी बात है, ये क्या बात हुई? ये बातें किसी को पता लग जाये तो अपमान ही मिलेगा और बाउजी कहते हैं अच्छा है । फिर भी सोचा सही बात कह देना ठीक है कम से कम ध्यान तो होगा या फिर पहले की तरह ही करूँगा की ध्यान करने वाले भी आप है, ध्यान भी आपका है और ध्यान करवाने वाले भी आप है । तब तक रविवार को सुबह आने की इज़ाज़त मिल गयी थी और यह बात कई बार दोहराई जाती थी सो यही ठीक लगा पर आँख बंद करते ही वही विचारों का सिलसिला चलता रहता ।

कुछ दिन बाउजी से बात करने का मौका देखने लगा । ध्यान करते समय कोई न कोई बैठा होता, बात नहीं हो पाती और ध्यान में वही सब चलता रहा । एक दिन थक कर सोचा कोई कुछ भी कहे आज तो मैं सबके सामने ही कह दूंगा की मैंने ये काम किये है और उनमे से कुछ तो अब भी करता हूँ जो होगा देखा जायेगा । यह तय कर मैं उसी रविवार को दोपहर में ही सेठी कॉलोनी चला गया । वहाँ शिवपाल सिंहजी बैठे थे पर मैं तो सोच कर आया था और सीधे ही बात करना शुरू कर दिया कि मुझे आपसे कोई बात करनी है पर उन्होंने कहा बैठो और ध्यान करने को कहा । आँख बंद हो गयी । बिना किसी विचारों के ध्यान हुआ । आँख खुलने पर पूछा कैसा लगा? मैंने बताया की कोई भी विचार नहीं आया और लगा की जैसे सिर के पिछले हिस्से में सुनहरी पिघली हुई कोई चीज रीढ़ की हड्डी में भर दी हो । उन्होंने कहा अच्छा ऐसा है? फिर बोले घर जा कर हलवा खाना और कबीरदासजी से मिलने आने वाले एक पंडित जी की कचरा फेंकने की कहानी सुनाई की गंदगी तो अंदर भरी है और बोले की भुगतान तो पाई पाई का करना होता है । गुरु चाहे तो स्वप्न में भी निकाल दे या चाहे तो विचारो को गंदगी के रूप में ध्यान में निकाल दे । मैं इसका अर्थ उस समय नहीं समझ सका । मेरे अंदर जो चल रहा था उसे उन्होंने जान लिया और उसे दूर किया ।

मेरे डायरेक्टर शर्माजी निवाई में अपने गुरु महाराज परमहंस बाबा के पास जाया करते थे । एक दिन शर्मा जी बोले की बाबा से संतान के लिए कहो । मैंने बाउजी से कहा की शर्मा जी ने हमें निवाई जाने को कहा है । उन्होंने कहा की जाओ । हम इतवार को निवाई गए वहाँ पर परमहंस बाबा बैठे थे और बहुत से लोग थे, प्रसाद लगाने की बात कर रहे थे । मैं और पत्नी जैसे ही पहुँचे बाबा उठ खड़े हुए, बोले आ गए? हम दोनों ने सोचा की ये हमारा इंतज़ार कर रहे हैं । बोले आओ बात तो बाद में होंगी पहले आप दोनों भोजन करो । स्वयं हमारे हाथ धुलाये, बोले भोग लगाओ । गांव के लोग बैठे थे, वे एक थाली जिसमे दाल, बाटी, चूरमा, सब्जी आदि थी ले आये । बाबा गुस्से से बोले, अरे जोड़े से जीमाणा नहीं आता, और लाओ । दो पत्तल आगई । बोले थाल लगा कर लाओ । तुरंत ही आश्रम के भंडार से दो बड़ी थाली निकाल कर हमें भोजन कराया । स्वयं अपने हाथों से खिलाया । बोले और लो, अरे मेरी, गरीब की, हंसी मत कराना । इतना खिलाया की हम को लगा प्राण ही निकल जायेंगे । तब स्वयं ने हमारे हाथ धुलाये, अपने कुर्ते से हाथ पोंछने को आगे कर दिया । फिर बोले कालीन निकालो, दोनों विश्राम करो । गांव के लोग जाली की खिड़की से झांक रहे थे । वे बोले बाबा भोग लगाओ तो मंदिर में प्रसाद शुरू करावें । बाबा बोले लगा तो दिया, शुरू करो । गांव के लोग समझ

नहीं पा रहे थे । बाबा भंडार से एक कालीन निकाल मंदिर में लगवा कर उस पर हमें विश्राम करने का कह कर बाहर चले गए । हम दोनों की तबियत ख़राब होने जैसी हालात होगयी थी पर हुई नहीं । सोचा की अब तो दो दिन तक व्रत रखना होगा तब कुछ ठीक होगा । न तो लेटा जा रहा था न ही बैठा जारहा था । थोड़ी देर बाद एक आदमी आया बोला डॉक्टर साहब, बाबा कह रहे हैं भोजन करके जाना । मैंने तुरंत थैला उठाया, पत्नी को बोला चलो, मैं बाबा को जा कर बोल कर आता हूँ । बाबा ने फिर कहा भोजन करके जाना । मैंने कहा भोजन तो बहुत कर लिया अब जाना है । बोले अच्छा जाओ, बस खड़ी है । हम भाग कर बस में बैठ कर जयपुर आगए । शाम को 8 बजे फिर कुछ खाने की इच्छा होने लगी । भूख लग आयी । हम दोनों आश्चर्य करने लगे की इतना खाने के बाद भूख कैसे लग गयी । एक गिलास गर्म दूध पिया । कारण बाउजी ने बाद में बताया की जिसको भोग लगाना था उसने पा लिया तुमको बाद में पता लगेगा । वो इज़्ज़त आपकी नहीं हो रही थी । भेजने वाला कौन है इस पर निर्भर करता है ।

इसी बीच नवरात्री की पूजा के दिन आ गए । परमहंस बाबा अजमेर रोड पर किसी के घर रुके हुए थे । शर्मा जी ने कहा कि आओ चलें । मैंने कहा आज रविवार है, मैं पहले सेठी कॉलोनी जाऊंगा । मैं सेठी कॉलोनी गया, दुर्गादानजी ने भजन गाया और बाउजी ने ध्यान के लिए कहा पर दिमाग में तो लगातार विचार चल रहे थे की क्या करना चाहिए? ध्यान के बाद आँखे खोलने पर प्रसाद लिया और फिर बाउजी को बताया की शर्मा जी परमहंस बाबा के पास जाने के लिए कह रहे हैं । उन्होंने कहा की जाओ, जो कहते हैं बताना । परमहंस बाबा ने मुझे देखकर शर्माजी से कहा इस छोटे डॉक्टर को क्यों लाया है, ये कहाँ जाता है और मेरी और देख कर पूछा तू वहाँ क्या करता है? मैंने तुरंत कहा ध्यान करता हूँ तो बाबा ने कहा मैं सात साल तक छह फुट अंदर बैठा तब भी ध्यान नहीं पता चला और ये ध्यान करता है? क्या होता है ध्यान बता? मैं कुछ जवाब नहीं दे पाया पर सोचा आँख बंद करना ही ध्यान नहीं होता पर आँख खुलने पर सोने में और जगे रहने में जो फर्क होता है वही ध्यान होता है पर समझ नहीं पाया । साथ बैठे बाबा के अन्य अनुयायी मुस्करा रहे थे । मेरा मन विचलित था, चार महीने हो गए थे और मुझे ध्यान क्या है नहीं पता । सोचा आज ही बाउजी से सब बात कह कर पूछूँगा ध्यान क्या होता है? उन्होंने प्रसाद दिया जो खाने का मन नहीं हुआ । लौटते ही अपने स्कूटर से लगभग 1.30 बजे सीधे ही बाउजी के पास गया और उनके खाना खाते समय ही पूछा ध्यान क्या होता है, इसकी क्या परिभाषा है, आज मैं जवाब ही नहीं दे पाया, कोई और पूछे तो क्या कहूँगा? उन्होंने थाली में बची आधी रोटी मेरी ओर बढ़ा दी । मैंने नहीं खाई, मन में तो बेइज्जती सी लग रही थी । फिर उन्होंने पूछा क्या कहा, मैंने सब बात और अपने मन के भाव भी विस्तार से बता दिए । बाउजी कुछ नहीं बोले थोड़े गंभीर हो कर बोले अच्छा । फिर बोले कच्चा घड़ा तो कभी भी फूट सकता है, पर उन्होंने ऐसा क्यों पूछा? मैंने बताया शर्माजी ने कहा ये किसी जगह जाता है वहाँ ध्यान होता है तो ये बात हुई । बाउजी कुछ नहीं बोले पर लगा कुछ गंभीर हैं और ऐसा लगा कुछ सोच रहे हैं । फिर बोले जाओ फिर बुलायें तो चले जाना, वे तुम्हें चाहते हैं । मैंने कहा पर मैं तो शर्माजी के कहने पर ही उनसे मिलता हूँ । बाउजी ने कहा दुबारा बुलाये तो चले जाना । इसी नवरात्र के दो दिन बाद तीसरे दिन शर्माजी ने कहा चलो नवरात्री के दिन हैं, बाबा के पास चलते हैं । मैंने बाबा को प्रणाम किया तो वे दूसरी और मुँह कर बैठ गए । दुबारा प्रणाम किया तो भी कुछ नहीं बोले । फिर शर्माजी को कहा लाला अंदर चल । वे हॉल में तख्त पर बैठ गए, मैं भी वहीं बैठ गया । मेरी ओर देख कर बोले आज कहाँ है तेरा गुरु? मैंने तुरंत कहा सेठी कॉलोनी में तो उन्होंने कहा अच्छा तो अब तू

चौराहे पर खड़ा हो जा और जो वहाँ से निकले उनसे कहना मेरे सिर पर जूता मारो । उनके सामने उनके 20-25 अनुयायी भी बैठे थे सब लोग मेरी और देखने लगे । एक महिला तो बोल पड़ी बाबा अनजान बालक है क्षमा कर दें । शर्माजी ने भी कहा बालक है बाबा, क्षमा कर दें । इस पर बाबा बोले दुर्गा कवच पढ़ । मुझे एक किताब दी गयी जिसे मैं पढ़ने लगा पर बहुत बेइज्जती महसूस हो रही थी । 8-10 लाइन्स पढ़ी की बोले बस अब जा, बाद मैं आना, ध्यान करता है, पता कुछ नहीं । मैं वहाँ से सीधे सेठी कॉलोनी गया । मैं जैसे ही सेठी कॉलोनी में ड्राइंग रूम में जहाँ बाउजी बैठे थे दाखिल हुआ, बाउजी ने जोर से कहा कुछ पता नहीं तो जवाब क्यों दिया, तमीज़ नहीं है । क्या गुरु सेठी कॉलोनी में ही होते हैं? ये क्यों नहीं मालूम कि गुरु सब जगह है । रोज़ बात होती है पर अपना दिमाग क्यों लगाते हो? यदि इतना भी नहीं जानते तो क्यों आते हो यहाँ? क्या सीखा इतने दिनों में? ध्यान नहीं पता कोई बात नहीं पर ये तो रोज़ बताते हैं कि गुरु भगवान तो सब जगह हैं । ऐसा ही होना चाहिए, जूते तो पड़ने ही चाहिए । मैं तो दरवाजे पर ही खड़ा रह गया । हक्का बक्का रह गया । आया था शिकायत करने पर यहाँ तो मेरी बात सुनने से पहले ही डांट पड रही है, दिमाग सुन्न हो गया । एक तो परमहंस बाबा ने इतने लोगों के सामने बेइज्जत किया और ये तो मेरे गुरु हैं, मेरी मदद करने के स्थान पर डांट रहे हैं । अंतिम वाक्य सुनाई दिया क्यों आते हो यहॉ? में दरवाज़े से ही वापस लौट लिया । वापस ऑफिस नहीं गया, घर चला क्रोध और बेबसी पर रोना आ गया । फिर एकदम दिमाग में आया की बाउजी को ये पता कैसे चला की ये बात हुई है । सभी संभावनाओ पर सोचने पर भी कोई कारण नहीं मिला । मैं सेठी कॉलोनी पहुँचा, पवन भाई साहब को बोला मुझे लगता है बाउजी नाराज़ हैं आज ऐसी बात हो गयी । उन्होंने कहा आपने बात ही ऐसी की है । मैं इस मामले में कुछ नहीं कर सकता हूँ, न ही मैं बाउजी को कुछ कह सकता हूँ, आप खुद ही बात करो । तभी बाउजी की आवाज़ आई, अंदर आ जाओ । डर लगा की अब तो आज बाहर ही निकाला जाउगा । अंदर गया तो वे बोले बाबा से डरने की जरुरत नहीं, वे तुम्हें चाहते हैं और बोले कि अब ऐसी बात हो तो कहना मेरे गुरु सब जगह ही हैं, और बात हो तो कहना मुझमें ही हैं मेरे गुरु और आप में भी हैं मेरे गुरु । कोई बात नहीं, हीरे को देख कर कौन नहीं उठाएगा । यह सुनते ही सब क्रोध बेबसी लाचारी का भाव एकदम खत्म हो गया । मन मस्तिश्क शांत हो गया ।

दो तीन दिन से मन में बडा गर्व महसूस कर रहा था की मैं तो हीरा हूँ । शाम को बाउजी से मिलता, और लोग भी आते रहते थे । बातें सुनता रहता था ध्यान रोज़ ही करवाते थे । प्रेमजी से कुछ बात होती थी । बाउजी प्रेमजी को कई बार कहते थे कि मेरा भी हाथ देखो पर प्रेमजी हाथ जोड़ देते थे कि आपका हाथ मैं नहीं देख सकता । मन मैं विचार करता की पवन भाई साहब तो मेरा ही हाथ नहीं देखते हैं वे तो कहते है की आपकी फाइल तो आपके गुरु के पास है हाथ, जन्मपत्री का अब कोई महत्व नहीं तो बाउजी क्यों हाथ दिखाते हैं? और ये भी विचार आता था कि ये तो स्वयं गुरु है पर मुझे अपने गुरु के हवाले क्यों किया? अप्रैल में मुझे पूछा की शर्माजी से मिलते हो? मैंने कहा हाँ, आज तो परमहंस बाबा उनके घर पर ही हैं । बाउजी ने पूछा मिले नहीं? मैंने कहा नहीं । वे उनके पैर दबाने को कहते हैं या सेवा करो कुछ मिलेगा सो मैं नहीं गया, दिमाग में भ्रम होता है, मेरा उनसे कोई लगाव नहीं है, एक साधू की हैसियत से जो बन पड़ता है, सेवा कर देता हूँ । पैसे आदि नहीं मांगते हैं, पर गांव वाले उनके भगत लोग कहते हैं की बाबा आपको पूछते रहते हैं । बाउजी ने कहा चले जाना । अगले दिन शर्माजी के घर गया तो पता चला की बाबा तो निवाई चले गए । मैंने शाम को बताया तो बाउजी ने कहा कल छुट्टी है ध्यान के बाद चले जाना, केले ले जाना

और मेरी ओर से कहना जैसे उस दिन आये थे वैसे ही गुडफ्राइडे को भंडारे में आइये । तब मेरे मन में दुइ थी इसलिए पूज्य ठाकुर साहब की फ़ोटो जो मुझे बाउजी ने दी थी अपनी कमीज़ की ऊपर वाली जेब में रख ली ताकि यदि मन में कोई अन्य विचार आये तो फोटो पर ध्यान दे लूंगा । केले ले कर बस से निवाइ लगभग ड़ेढ़ घंटे में पहुँच गया । वहाँ भैरों पंडित मामा किराणे वाले और अन्य लोग बैठे थे । मुझे देखते ही भैरों पंडित बोले बाबा ने एक घंटे पहले ही कह दिया था छोटा डॉक्टर साहब आरहा है, उसके लिए प्रसाद रख देना । मैं आराम से थैली हिलाते हुए उनके पास गया और कहा कि आपके लिए केले लाया हूँ । वे बोले सबको बांट दे । मैंने गलती सुधारी, कहा बाउजी ने कहा तो लाया हूँ । वे बोले अच्छा खिला । मैंने केला छील कर दिया, आधा खा लिया बाकी मेरे को दे दिया बोले और क्या कहा है? मेरे मन में भाव था की मुझे बाबा के बारे मैं पता है । ये कारण शरीर से वहाँ आये थे और मैं राजदार हो गया हूँ । गांव वालों को पता नहीं है इसलिए दोनों हाथ कमर पर रख बहुत आत्मविश्वास के साथ कहा एक बात कहनी है और उनके कान के पास बोला जैसे आप उस दिन आये थे वैसे ही भंडारे में आना । वे बोले क्या बोलता है, मूर्ख बनाता है सबको । होश कर, मंदिर में जा महादेव से माफ़ी मांग । मैंने सोचा माफ़ी की क्या बात हो गयी और माफ़ी का कारण भी नहीं मालूम फिर भी उनके द्वारा बनाए गए विशाल मंदिर में गया । वहाँ बारह शिवलिंग स्थापित थे । जाकर बोला बाबा ने कहा है सो आगया और बाउजी से बोला की मैं तो आपके कहने से जो कहा है उसके लिए माफी सो आप जानें और बाबा जानें इसमें महादेव जी का क्या लेना देना । ऐसा बोल कर बाहर आ गया । भैरों पंडितजी बोले बाबा ने प्रसाद रखवाया है आपके लिए, ले कर जाना । मैंने रबड़ी खाई और चलने के लिए पूछा । वे बोले बस खड़ी है तेरे लिए जा, और मुहं दूसरी ओर कर लिया । भैरों पंडित बोले सुबह से आपके आने के लिये कह रहे थे और अब बात नहीं कर रहे । आप जब सामने से आरहे थे तो खुश हो रहे थे ऐसा ही है बाबा के मन की मौज़ है । आपको बस तैयार मिलेगी आप जयपुर जाओ बाबा ने इजाजत दे दी है । पर मेरे दिमाग में तो दूसरी बात चल रही थी कि जो बाउजी ने कहा सो ही तो कहा है इसमें माफ़ी मांगने की क्या बात हो गयी? गांव वालो के सामने बेइज्जती हो गयी । ये तो गलत बात है । बाउजी से कहूँगा मैंने तो आपने कहा वह ही कहा पर ये तो ठीक नहीं है । लगभग दो बजे अपने घर गांधी नगर पहुँचते ही स्कूटर ले कर सेठी कॉलोनी पहुँच गया । बाउजी सामने बैठे हुए थे और प्रेमजी व कीर्तिजी बैठे हुए थे । मैंने दरवाजा खोला और अंदर पैर रखते ही बाउजी का गुस्से से भरा चेहरा देख रुक गया । इतने में बाउजी बोले बदतहज़ीब हो तुम, तमीज़ तो है ही नहीं । खुद अपनी तरफ देखते नहीं और अपनी इज्ज़त की चिंता है । अपने साथ गुरु की बेईज्ज़ती भी करवाई है । इतने बड़े समझते हो कमर पर हाथ रख कर बड़ों से बात करते हैं क्या? क्या इस बात की तमीज़ भी अब सीखोगे? तुम्हारा कुछ नहीं ही सकता, ऐसी गलती कैसे हो गयी? मैं सोच रहा था की यहाँ तो उल्टा हो गया । ये बाउजी मेरी ओर हैं की बाबा की ओर? कहते हैं गुरु हमेशा अपने शिष्य का ध्यान रखते हैं पर यहाँ तो गुरुजी बाबा की ही तरफदारी करते हैं । अच्छी मुसीबत है । यहाँ आओ तो बाउजी नाराज़, वहाँ जाओ तो बाबा नाराज़, हम अच्छे फंसे । पता नहीं इतना भय लग रहा था पैर कांप रहे थे फिर भी हिम्मत कर बाउजी से कुछ कहा । वे बोले, जाओ अब मत आना, जाकर माफ़ी मांगो । मैं सोच रहा था अब किस बात की माफ़ी मांगे? मालूम नहीं, चलो अब यहाँ काम ख़त्म, बाबा छोड़ते नहीं बाउजी मानते नहीं । पर अब इस बात का अंत तो करें । कल तो छुट्टी ले कर ही जायेंगे, बाबा से ही पूछ लेंगे क्या माफ़ी मांगनी है? पर ऑफिस का काम आ गया निवाई नहीं जा सका ।

अष्टमी का दिन था शर्माजी ने बताया की बाबा सिविल लाइन में हैं चल हो आते हैं । मैंने कहा माफ़ी मांगनी है ही चलते हैं । उन्हीं के साथ चल पड़ा । वहाँ पहुँचा तो बाबा से बात नहीं हुई । बाहर इंतज़ार करता रहा । थोड़ी देर बाद बाबा बरामदे में आकर मूढ़े पर बैठे और बोले ऐसा कुर्ता कितने का आता है? मैंने कहा की 30 रू मीटर कपडा होगा, 50 रू मैं सिल जायेगा । अच्छा, उन्होंने कहा । अब कहाँ है तेरा गुरु? ध्यान क्या होता है? गधे पर बैठ जा और गली में घूम के देख कोई कपडा बेचता हो? मुझे पुराने कपड़ो के बदले बर्तन बेचने वाली की आवाज़ आ रही थी । मैं बाहर देखने लगा पर कोई नहीं दिखा । वे उठ कर चले गए । मैं वापस आ गया । बाउजी को बताया वे कुछ नहीं बोले । अगले दिन मैंने बाउजी से पूछा कि अब निवाई जाऊं क्या, उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया । शाम को ध्यान के लिए जाता रहा । फिर समय का बंधन भी बाउजी ने ख़त्म कर दिया, बोले जब मन करे आ जाया करो ।

मैं तो वैसे भी जब मन में आता सेठी कॉलोनी चला जाता था, पर उस दिन से लगने लगा की वहीँ बैठा रहूँ । ऑफिस से लंच में भी तेज स्कूटर चला कर बाउजी के पास आ जाता । कभी आने के समय के बारे में किसी ने कुछ भी नहीं कहा । शिशुपाल सिंहजी अक्सर दोपहर में मिल जाते थे । हम आपस में कभी-कभी एक दूसरे से बात करते थे कि आपको क्या लगता है? जब बाउजी ध्यान के लिये कहते तो आँख अपने आप ही बंद हो जाती । कभी बिना कुछ बोले चुपचाप बैठते थे । प्रेमजी को भी कभी-कभी रास्ते में से लेता हुआ आजाता, तभी अलग तरह की बात होती थी । वे दोंनो ज्योतिष, मंत्र, हनुमानजी आदि की बात करते थे । बाउजी अक्सर कहते थे कि कच्चा घडा कभी भी फूट सकता है । इस राह में चलने वालों को बहुत मुसीबतों का सामना करना होता है । शैतान लगातार परीक्षा लेता है । शैतान को हावी मत होने दो । ये बात समझ नहीं आती थी । सोच रहती की गुरु तो स्वयं भगवान ही हैं, वे तो सब कर सकते हैं फिर शैतान बीच में कैसे आ सकता है और परीक्षा तो कैसे ले सकता है? मैंने शाम को पूछा बाउजी आप ये बात प्रेमजी का बता रहे थे, ऐसा कैसे हो सकता है? बाउजी ने जवाब दिया कि शैतान तो बहुत अच्छा काम करता है । वो तो इस राह में आपकी बहुत मदद करता है । अब तो मामला उलट गया । कल तो कह रहे थे शैतान से बचो, उसे हावी मत होने दो और आज उसे अच्छा बता रहे हैं, ये क्या बात हुई? रात में सोचता रहा । अगले दिन पूछ ही लिया तो बहुत सादा तरीके से बताया की आपको शैतान तरह-तरह से इस राह में आगे बढ़ने से रोकता है, बार-बार आप की परीक्षा लेता है, आपकी कमियों को भी दूर करता है, उसके प्रलोभन से बचने के लिए आप अपने गुरु से लगातार जुड़े रहते हो । शैतान आपको पक्का करता है । पकाता है । इस पकार वह गुरु का दूसरा रूप है, जैसे एक सिक्के के दो पहलू । शैतान आपको रोकने का काम करता है । यहाँ तक की कभी-कभी तो आपके गुरु के रूप में भी आजाता है, आपकी परीक्षा लेने । यदि आप अपने गुरु से जुड़े है तो ऐसी कठिन परीक्षा से भी आप पार हो जाओगे । गुरु के रूप में वह आपको ऐसा आदेश भी दे सकता है जो आपको गुरु से विमुख भी कर सकता है । पर आप अपने गुरु से आत्मिक रूप से जुड़े हैं तो आप ऐसी बाधाओं को पार कर अपने गुरु के सन्मुख आ जाते हो । इस प्रकार बाउजी ने मन में बनी एक ग्रंथि को खोल दिया, पर साथ ही कहा तुम्हारे मन में अविश्वास भरा है, तुम गुरु पर विश्वास नहीं करते हो । इस मामले में तम्हारा दिल कौऐ जैसा काला है । जब तक ये कालापन दूर नहीं होगा तब तक कुछ होने वाला नहीं है । इस कालिख को साफ करने के लिये गुरु भगवान से प्रार्थना करो ।

मैं सोच रहा था आज तो बिना डांट खाऐ प्यार से बात होगयी पर अंत मे दिल काला होने की बात कहां से आ गई? मैंने तो ऐसा कुछ नहीं किया । फिर सोचा की बाउजी ने तो मुझे अपने गुरु के हवाले किया है इसका मतलब मेरे गुरु तो ठाकुर साहब है । अब जो भी मन में आएगा उन्हीं से ही कहूँगा, इनसे क्यों कहूँ? अगले दिन पवन भाई साहब से पूछा ठाकुर साहब से कैसे मिल सकते हैं तो वे हंसने लगे । बोले वे तो सब जगह हैं कहाँ नहीं हैं? तुम क्या सोच रहे हो, क्या बात है मन में? मैंने कहा की बाउजी तो बात-बात में नाराज़ हो जाते है । कल तो इतना कह दिया कि मैं अंदर से कौए सा काला हूँ । मैं ऐसा कोई काम नहीं करता हूँ । उन्होंने कहा कोई तो बात है, मैं आपकी बात से सहमत नहीं हूँ, ज़रूर कोई तो बात है पर बात आप ही करो मैं इस मामले में कुछ नहीं कह सकता ।

अगले दिन पहुँचते ही बोले जब तक दुई ख़त्म नहीं होगी तब तक ये नाटक बेकार है । अब तक दिनेश भाई साहब से बात करने पर बताया था की यदि आपके मन में गुरु के ऊपर विश्वास नहीं है या आप गुरु के अलावा किसी और को बड़ा मानते हो या उनका ध्यान या याद करते हो तो यह दुइ ही होती है । मैंने ये बात प्रेमजी से पूछी और कहा कि आप तो कई विद्या जानते हो बताओ की क्या बात है? वे भी विशेष कुछ नहीं बता सके, बोले बाउजी के सामने मेरी विद्या कुछ नहीं है, कोई ज्ञान काम नहीं करता है दिमाग काम ही नहीं करता । प्रेमजी और मैं दोनों बाउजी के सामने बैठ गए पर पूछने की हिम्मत नहीं हुई । चेहरे या आंखों की और देखने कि तो बात ही क्या है, दोनों सिर नीचे कर बैठे रहे, बाउजी भी कुछ नहीं बोले । थोड़ी देर बाद दोनों उठ कर चल दिये । मैंने सोचा प्रेमजी को घर छोड़ने जाऊंगा और विस्तार से बात करूँगा । वहीं हॉटेल पर खाना खाया, सोचा प्रेमजी की विद्या वहाँ काम नहीं कर रही थी अब बात करेंगे । देर रात तक बाउजी से हुई बात के बारे में चर्चा करते रहे पर मेरी ग्रंथि नहीं सुलझी । प्रेमजी तो बाउजी की तारीफ ही करते रहे । बहुत बड़े संत है । आप क्या स्वयं भगवन भी उनके मन की बात नहीं जान सकते जब तक बाउजी स्वयं नहीं चाहें । बात बनी नहीं । देर रात घर आ गया । माताजी नाराज होने लगीं, बोली न जाने कहाँ जाता है, इतनी देर से आता है, व्यक्ति पूजा करता है, हमारे यहाँ ऐसी पूजा नहीं होती है । तेरे नानाजी को तू जानता है वे तो ऐसा नहीं करते थे । मैंने कहा कि जब मै बाउजी के पास गया था मेरे पीछे जो व्यक्ति थे, वह् हुलिया तो स्वर्गीय नानाजी का ही है । माताजी आश्वस्त नहीं हुई, पर कहा तू जाने पर ये ठीक नहीं है । अगले दिन टूर पर जाना पड़ा । शाम को वापस आया । मन में विचार आया की ये टूर में तो समय लग जाता है कम हो तो ठीक रहे । अगले दिन बाउजी ने पूछा कल नहीं आये । मैंने टूर के बारे में बताया । उन्होने कहा अच्छा । फिर टूर कम हो गए ।

मंगलवार को गर्मी बहुत थी, सोचा शाम को जाऊंगा पर एक बजते-बजते बादल हो गये । अचानक बारिश होने लगी । मैंने तुरन्त अपना स्कूटर लिया और सेठी कॉलोनी के लिए निकल लिया । रास्ते में प्रेमजी को लिया ओर सेठी कॉलोनी आगया । बाउजी बाहर छोटे कमरे में लेटे हुए थे । हम दोनों बैठ गए, बोले गर्मी कम हो गयी पर अपने फायदे के लिए किसानों की फसल खराब होती है । हम लोग सभी अपना स्वार्थ ही देखते हैं । मैंने हाँ में सिर हिलाया, प्रेमजी बोले आपको कह रहे हैं । मैंने फिर सिर हिलाया तो बोले ख्याल मात्र से ही प्रकृति काम करने लगती है, हम भी उन्हीं में हैं, समझे? मैं बैठा रहा । वे कभी-कभी आँख खोल कर हमारी और देख लेते । कुछ देर बाद मैंने सोचा सो रहे हैं, धीरे से उठ प्रेमजी को जाने का इशारा कर निकलने के लिए मुड़ा । तुरंत ही बाउजी ने आंख खोली और बोले 'ध्यान आत्मा से होता है, शक्ल देख कर नहीं । सदैव नज़र गुरु की ओर होनी

चाहिए, ख्याल ज़रा भी भटकना नहीं चाहिए, न जाने कब गुरु भगवान तवज्जोह दे रहे हों और तुम उससे महरूम रह जाओ । बैठो, बरसात फिर आ सकती है ।' आसमान तब तक लगभग साफ हो गया था पर चार बजे फिर बरसात हो गयी । वहीं चाय पी और फिर बैठ गए । मैं और प्रेमजी बैठे एक-दूसरे को देख रहे थे । गर्मी और बेचैनी हो रही थी । मुझे बार बार ऐसा लग रहा था की बाउजी कभी हैं और कभी नहीं हैं । मैंने प्रेमजी से पूछा की मुझे ऐसा लग रहा है, शायद मेरा भ्रम है पर प्रेमजी बोले मुझे भी ऐसा ही लग रहा है । फिर कुछ देर में सब सामान्य लगने लगा । बाउजी उठ कर बैठ गए, बोले कुछ मीठा है क्या? कमलेश भाभी जी ने कहा बर्फी है । उनसे बर्फी लेकर बाउजी ने आधा मुझे और आधा टुकडा प्रेमजी को दिया, एक बहुत छोटा टुकड़ा बाउजी ने लिया । फिर कहा सीधे घर जाओ, मैंने ऑफिस के लिए कहा तो बाउजी ने कहा सीधे घर जाओ ।

मैं घर आ गया । जल्दी घर आ गया था सो माताजी ने समझा की मैंने उनकी आज्ञा मान ली है । अगले दिन सुबह माताजी बीकानेर चली गयीं । मैं वापस सेठी कॉलोनी नहीं गया । काले कौए वाली बात लगातार मन में चल रही थी । चुपचाप बैठ गया था । दिन भर सोचता रहा, बाउजी ने कैसे कह दिया वो भी सब लोगों के सामने । आज कल तो रोज़ ही कुछ ऐसी बात होती है जो बार-बार मन में अस्थिरता पैदा करती है । इधर घर में भी अशांति हो रही थी । हम पति-पत्नी में भी बात बात पर कहा सुनी होती थी, जो दिनों-दिन बढ़ती जा रही थी ।

एक दिन किसी बात पर सिद्धि की बात चल पड़ी । मैंने बताया की मेरे नानाजी को सब लोग बड़ा संत कहते थे । वे कहते थे की सिद्धियां प्राप्त होना तो कोई बड़ी बात नहीं है । मेरे नानाजी किसी संत के बारे में बताते थे कि वे नहाते नहीं थे पर उनके शरीर से बदबू नहीं आती थी । उन्होंने अपना हाथ उनकी नाक के पास किया तो खुशबु आरही थी । बाउजी ने कहा इसमें क्या बड़ी बात है, लो देखो, ऐसा कहकर मेरी हथेली पर अपना हाथ रख दिया । मेरे हाथ से खुशबु आरही थी । किसकी खुशबु थी समझ में नहीं आरही थी, पर पूरे शरीर में खुशबु आ रही थी । घर गया तो पत्नी ने भी कहा आज तो बड़ी खुशबु से महक रहे हो । मैंने कहा की पहले मेरे पांव सूंघ कर बताओ कि क्या खुशबु आरही है? उन्होंने सूंघ कर बताया कि आरही है । मैं नहा कर आया फिर सूंघने के लिए पत्नी को कहा तो वो बोलीं कि खुशबु अब भी आरही है । कारण पूछने पर मैंने बात बताई तो कहा कि ऐसा तो नहीं हो सकता, पहले से ही हाथ पर कोई इत्र लगा होगा । मैं खाना खा कर देर से केसरगढ़ गया । प्रेमजी से पूछा की खुशबु आरही है कि नहीं तो उन्होंने कहा ये खुशबु तो बड़ी खास है, कहाँ मिली? मैंने पूरी बात बताई । वे बोले मेरे भी हाथ लगाओ । मैंने हाथ लगाया फिर घर आ गया । खुशबु लगातार आरही थी । ऑफिस गया तो फ़ोटो सेक्शन में चौबे जी जो पूजा पाठ करते थे रोक कर बोले आप खुशबु बहुत अच्छी लगाते हो । और भी कई लोगों ने भी कहा खुशबु तो बड़ी अच्छी है । मेरे पूरे शरीर में से खूब खुशबु आ रही थी । किस फूल की है पता नहीं लग रहा था । इसी बीच प्रेमजी से फिर पूछा खुशबु आरही है क्या? उन्होंने बोला हाँ आरही है । बाउजी ने पूछा क्या बात है? मैंने खुशबु के बारे में बताया तो बोले अच्छा ऐसा है । बस खुशबु एकदम ख़त्म हो गयी ।

मई माह में गर्मी बहुत थी । शाम को कैरी की छाछ बनी थी । बाउजी ने कमलेश भाभीजी से मंगवा कर एक गिलास पीने को दी, बोले गर्मी बहुत है ले लो । फिर बोले खुद भी निश्चित समय पर बैठा करो । मैंने कहा मेरी नौकरी ही ऐसी है समय निश्चित नहीं कर पाउँगा, वैसे तो सारे समय सेठी कॉलोनी और आप जो बात कहते हैं वह ही दिमाग में घूमती रहती है, ध्यान तो कुछ होता नहीं है । वे बोले अच्छा ऐसा होता है? ये तो बहुत अच्छी बात है । ये जानकर की बाउजी शांत और प्रसन्न हैं,

सोचा की घर में अशांति के बारे में और आत्मा के काले दाग़ की बात पूछ लेता हूँ । ये सोच कर कहा बाउजी आप कह रहे थे की दिल में काला है, मैं तो ऐसा कुछ नहीं करता हूँ । बस इतना कहते ही बाउजी का शांत व्यवहार गुस्से में बदल गया । बोले तुम ज्यादा समझते हो? बातों से बेवकूफ नहीं बना सकते हो, जो सच्चाई है वो बातो से नहीं बदलती है, वो तो किसी संत ने भेजा है, लाज रखनी है, नहीं तो तुम जैसे काले कौए की यहाँ कोई जगह नहीं है । मैंने जो कहा है, वो बिलकुल सही है । तुम इस लायक नहीं हो । खन्ना को जानते हो, उससे सीखो । उसमे सारे ऐब थे पर तुम्हारी तरह नाटक नहीं किया कभी । तुम रोज़ घर पर झगड़ते हो और यहाँ नाटक करते हो, कल से यहाँ मत आना । अंदर मन में नहीं तुम्हारी तो आत्मा में काले निशान हैं, उन्हें साफ करो तो कई जन्म लगेंगे । यहाँ टाइम किसी के पास नहीं है, जो करना है 15 अगस्त तक कर लो, सुधार लो । फिर बैठे रहना कई जन्म तक । सच को मानोगे नहीं तो कभी मुक्ति नहीं होगी । जो सच है वो तो बता दिया, बार-बार क्यों पूछते हो? गुरु तुम्हरा नौकर नहीं है । तुम गुलाम हो गुलाम ही रहो । गुरु के गुरु मत बनो, अपनी औकात में रहो । घर जाओ झगड़ा बंद करो । पत्नी की शिकायत मत करो । खुद अपने कर्म देखो । संतान नहीं है तो उसकी क्या गलती है? कल दिन में ले आना । अब जाओ । मैं सोचने लगा कि इन्हें कैसे पता लगा, जरूर पत्नी ने फोन किया होगा । घर जा कर बहुत झगड़ा किया । सब जगह बेइज्जती कराती हो, फोन करके सब को बताती हो, एक तरफ़ा बात करती हो । पत्नी ने कहा मैंने कोई फोन नहीं किया । मैंने कहा तो जो बात मेरे और तुम्हारे बीच हुई है वो बाउजी को कैसे पता लगी, वे शब्द ही कैसे बोले बाउजी ने जो मैंने तुम्हें बोले । कल चलना है बुलाया है ।

अगले दिन 10 बजे मैं और पत्नी दोनों बाउजी के पास गए । बाउजी ने मुझसे कोई बात नहीं की । पत्नी से कहा गांठे हैं, ये दवा ले लो, गांठे ख़त्म हो जायेंगी और अभी कुछ नहीं कहना है । मैंने बात करने की कोशिश की तो कुर्सी पर दूसरी और मुँह कर लिया, बोले जाओ इसे कॉलेज जाना है । मुझसे कोई बात नहीं की । दोपहर को ऑफिस से लंच में सेठी कॉलोनी आ गया । कल की डांट का असर गया नहीं था । सोचा बाउजी खाना खा कर आराम करते है शिवपालजी, प्रेमजी भी होंगे तब बात करूँगा कि आप तो सबके सामने कुछ भी कह देते हैं, बहुत बेइज़्ज़ती लगती है । पर बाउजी को देखते ही अपनी बात भूल गया, उनकी बात सुनने लगा । प्रेमजी से अम्मा के बारे में पूछ रहे थे कि कब मिलूंगा उनसे? मन में विचार आया ये तो खुद अपने लिए पूछ रहे हैं मुझे कहते हैं गुरु को सब मालूम रहता है । हिम्मत और बढ़ी की अपने बारे में प्रेमजी से पूछ रहे है तो मेरे बारे में कैसे पता? इसका मतलब घर से पत्नी ने फोन किया होगा, कुछ तो गड़बड़ है, और क्रोध आया पत्नी पर । इस बीच बाउजी ध्यान कराने लगे, आँख बंद हो गयी, बहुत देर तक बैठे रहे । इसके तुरंत बाद सीधे ही बोले एक बार, दो बार, ज्यादा से ज्यादा तीन बार समझाना चाहिए । नहीं माने तो कुएं में डाल कर बड़े बड़े पत्थर और डाल देने चाहिए ऊपर से । गुरु भगवान को सब मालूम रहता है बेवकूफ नहीं बना सकते हो । अपने आप को ज़्यादा होशियार मत समझो । गुरु भक्ति का ढोंग मत करो । गुरु गधा बन कर बोझ उसी का उठाता है जो कुत्ता बन कर उसे चाटता है । इस राह मे चलना आसान नहीं है, ये दुधारी तलवार है, शहद लगा है, चाटो पर ज़ुबान नहीं कटनी चाहिए । सिर पर कफ़न बांध कर जो आता है वही पाता है । तुम्हारी तरह नहीं, घर में कुछ और यहाँ कुछ और । नाटक भी करो तो ऐसा हो की बिल्कुल सच ही लगे । नाटक करते-करते ही सच बन जाता है । तुम्हें तो वो भी नहीं आता । मुझे कारण ही समझने में नहीं आया कि मुझ पर क्यों नाराज़ हो रहे हैं और लगातार बोलते जारहे हैं । पर ये बात पता कैसे हो गयी कि घर पर पत्नी और मेरे बीच झगडा हुआ है? घर पर तो

मेरे और पत्नी के बीच झगडा बहुत बढ़ गया था । झगडे के कारण ऑफिस नहीं गया । दिन भर झगड़ा होता रहा । शाम को बाउजी के पास गया, उन्होंने बैठा लिया और मेरी आँख बन्द हो गयी, बहुत देर हो गयी थी पर मुझे जाने की इज़ाज़त नहीं दी । घर गया पत्नी घर पर नहीं थी । मैंने सोचा की पास ही दो गली छोड़ कर शायद बड़े भाई साहब के घर गई होगी, ऐसा अक्सर हो जाता था । मैं सो गया । सुबह अचानक मम्मी और मेरे पिताजी आ गए । मैं आश्चर्य से देखने लगा । मैंने कहा ..... (पत्नी) शाम को नहीं आई, मैं अभी ले आता हूँ, पर उन्होंने बताया की वो नहीं आएगी वो घर छोड़ कर चली गयी है, टेलीग्राम दिया था, इसलिए वे तुरंत आ गए । मुझे तब समझ आया की क्या बात है । मैं तुरंत पत्नी के भाई के घर गया तो उन्होंने मिलने से मना कर दिया, दरवाजे से ही वापस कर दिया ।

तुरंत सेठी कॉलोनी गया, बाउजी को बताया, उन्होने कुछ नहीं कहा । ऐसा लगा जैसे वे गहरी सोच में पड गए हैं । मैं ऑफिस ना जाकर घर गया । दोपहर को फिर सेठी कॉलोनी गया । बाउजी खाना खा चुके थे, मैं चुपचाप बैठ गया तो बाउजी ने कहा समाधी चलते हैं । मुझे मालूम नहीं था तो उन्होंने कहा जगतपुरा में हैं । बहुत गर्मी थी पर बोले चलो मैं बताता हूँ । दिल्ली दुर्गा मिठाई वाले से लड्डू ले कर चलेंगे । कुर्ता पजामा पहन कर बेंत लिया और स्कूटर पर पीछे बैठ गए । लड्डू ले कर ठाकुर साहब की समाधि पर पहुँचे । वहाँ बैठ कर समाधि पर मुझ से माला चढाने के लिये कहा । बैठ कर ध्यान किया, बहुत शांति मिली । आँख खुली तो समाधि पर एक फूल रखा हुआ था मुझे उठाने के लिए कहा । फूल वहाँ किसने रखा मुझे नहीं पता चला । मैंने सोचा आँखे बन्द थी कोई आया होगा और फूल ले कर रख लिया । बाउजी बोले सब ठीक हो जायेगा, पर समय लगेगा । जब मन नहीं लगे तो यहाँ आजाया करो । हम वापस आ गए । पहली बार ठाकुर साहब की समाधि पर गया था । अब एक बात दिमाग में आयी की बाउजी ने मुझे शिष्य बनाते समय अपने गुरु के हवाले किया था और आज भी मुझे वहाँ ले गए और प्रार्थना करने के लिए कहा । इसका मतलब ठाकुर साहब ही मेरे गुरु है । अब से गुरु का ध्यान करने को कहेंगे तो ठाकुर साहब को याद करूँगा । देखा तो नहीं है पर फ़ोटो लगी है वो ही ध्यान में रखूंगा । एक फोटो होती तो पर्स में रख लेता । वापस सेठी कॉलोनी आगये । बाउजी ने आते ही भाई साहब को कहा ठाकुर साहब की फोटो का नेगेटिव लाओ और बोले तुम्हारे ऑफिस में फ़ोटो बनती है इस की 12 फोटो बना लाओ । मैंने नेगेटिव लिया । अग़ले दिन ऑफिस गया, मन नहीं लग रहा था, लगातार पत्नी के बारे में सोचता रहा । बहुत मानसिक तनाव था । शाम को ब्लैक एन्ड व्हाइट फोटो की 20 कॉपी ले कर ऑफिस से सीधे ही सेठी कॉलोनी गया । जाते ही बाउजी ने पूछा फोटो लाये? मैंने सभी प्रिंट दे दिए । बाउजी ने पूछा तुमने नहीं रखी । मैंने कहा आप देंगे तभी तो रखूंगा । बोले अच्छा किया, अपने आप रख लेते तो फेल हो जाते । मैंने पूछा क्यों तो बाउजी ने कहा खुद ने बनाई हैं ये मान कर एक तो रख लेता हूँ और रख लेते तो फेल हो जाते । फिर एक फ़ोटो अपने हाथ से दे दी । मैंने समझा की मेरे मन की बात बाउजी जान गए और एक फोटो इसलिए दी है । तब से मैं ठाकुर साहब की फोटो सदैव अपने साथ रखने लगा । घर पर पत्नी को लेने उनके भाई साहब के घर गया तो नौकर ने कहलवा दिया कि वो बांसवाड़ा गयी है । मैं समझ गया की कॉलेज की छुटियाँ हो गयी हैं अब तो बाद में ही आएगी, तब बात करेंगे । सोचा कि तलाक की एप्लीकेशन लगाई तो साइन कर दूंगा । तब तक मैं पूरा मन ध्यान पूजा में पूरी तरह लगाउँगा । जो होता है अच्छा ही होता है । और अब मन में सिर्फ एक ही धुन लगी कि ये ध्यान क्या है इसकी बारीकी सीखनी है चाहे जो हो । माताजी पिताजी को कहा की आप यदि मेरी चिंता

करने को रुके हैं तो वापस चले जाओ । जीवन नए तरीके से चलने लगा । पत्नी को पत्र लिखता रहा, पर मालूम था की छुट्टियां ख़त्म होने तक तो आनी नहीं है ।

अब पूरा ध्यान सिर्फ गुरु की और ही लगाने की स्वतंत्रता थी, घर पर कोई नहीं था । खाना बनाने वाली (ज्योति) को चाबी दे रखी थी, वह सुबह दोनों टाइम के लिए खाना बना जाती इसलिए सिर्फ सोने के लिए घर जाता था बाकी समय ऑफिस और सेठी कॉलोनी में बीतता । समय की कोई चिंता नहीं थी, टूर भी कम हो गए थे । बाउजी को एक दिन बताया की परमहंस बाबा ने बुलाया है । बाउजी ने कहा चले जाओ, आम ले जाना, कहना मेरे गुरु ने भिजवाए हैं । सिर्फ दो आम ले जाना और एक माला । मैं रविवार को ध्यान के बाद दो अच्छे आम ले कर निवाई गया । बाबा इंतज़ार कर रहे थे मानसिह और भैरों पंडित और अन्य लोग बैठे थे, पुलिस के कुछ अधिकारी भी बैठे थे । कुछ मुझे जानते थे । मेरे आते ही बाबा बोले क्या लाया है, ला? मैंने आम के अलावा एक किलो केले भी लिये थे । वी. पी. सिह आई. जी. भी उनके भगत थे, वे बोले हम सुबह से बाबा को कुछ खाने को कह रहे थे, कुछ नहीं खाया है और न जाने चुपचाप क्यों हैं, बहुत गहरे ध्यान में है । बाबा ने माला पहनने के लिए सिर आगे कर दिया । मेरे जेब में ठाकुर साहब की फोटो थी कोई भटकाव नहीं आये इसलिए थोड़ी-थोड़ी देर में फोटो देख लेता था । भैरों पण्डित को बाबा ने बोला आम का रस बना और केले जो लोग बैठे हैं उन्हें बाँट दे । अब तो मेरे अंदर गर्व आ गया कि मैं जो लाया बाबा ने वही खाया । ये कमाल हो गया । बाबा ने पूछा बोल क्या चाहता है? मैंने कुछ नहीं कहा । बाबा ने फिर पूछा बोल क्या चाहता है? मेरे मन में पत्नी के घर छोड़ कर जाने की बात आई पर मन में सोचा की नहीं । फिर बोला अब जो मांगना है वो तो अपने गुरु से ही मागूंगा, आप से क्या मांगू? सब लोगो ने सुना । शर्माजी ने पास आकर कहा बाबा ये तो बालक है, घरवाली नाराज़ हो कर चली गई है कॉलेज की छुट्टीयां ख़त्म होने तक घर आ जावे तो अच्छा है । बाबा बोले उसी को बोल । शर्माजी बोले संतान भी नहीं है तो बाबा ने कहा उसी को बोल और आम रस एक बार पी कर छोड़ दिया, बाकी नहीं पिया, उठ कर चल दिए । वहाँ बैठे कुछ लोग वही थे जो पहले भी जूते मारने की बात जानते थे । वे बोले कौन है ये, जब भी आता है बाबा का व्यवहार बदल जाता है । हम इतनी दूर कोलकत्ता से आते हैं और हम अपनी बात भी नहीं कह पाते । भैरों पंडित ने उन्हें बताया की बाबा इन्हें छोटा डॉक्टर कहते हैं, वैसे तो पहले से बता देते हैं कि वो आएगा पर आते ही पता नहीं क्यों नाराज़ हो जाते हैं? पहले तो नाराज़ नहीं होते थे बल्कि खुश होते थे, खूब बात करते थे, पहले से ही बता देते थे आज आएगा प्रसाद रखवा देते, बिना कुछ खिलाये जाने नहीं देते थे । हो सकता है डॉक्टर साहब से कोई गलती हो गयी हो, अब ये तो ये दोनों ही जाने । मैंने भैरों पंडितजी से कहा कि ये बात नहीं है । मैं सेठी कॉलोनी में अपने गुरु भगवान के पास जाता हूँ और देखो ये ठाकुर साहब की फोटो है, ये सबसे बड़े हैं, शायद ये बात होगी ।

यह बात शायद बाबा ने सुन ली । वे बोले अरे क्या बोलता है? फिर बोले कौआ है, काय काय करता है । जा बस खड़ी है । शाम को सेठी कॉलोनी पहुँचा । सामने छोटे कमरे में बाउजी लेटे हुए थे, एकदम उठ बैठे । बोले कौआ है पूरा को पूरा काला । अरे तुम्हारी आत्मा पर तो काले निशान हैं ही पर बोलने की तहज़ीब भी नहीं है । मैं तो अभी कुछ बोला ही नहीं था, शिव अग्रवाल वहीँ बैठे थे । वो भी डर गए । बोले आज तो आपके डांट क्यों पड़ी? मैं बाहर आ कर बोला यार शिव मेरी तो किस्मत ही गड़बड़ है । अभी डेढ़ घंटे पहले जहाँ भेजा था वहाँ लताड़ खाई अब यहाँ, समझ नहीं आता । प्रेमजी भी आ गए । मैंने कहा आप तो कुछ तंत्र मंत्र जानते हो, देख कर बताओ की घर

बाहर सब जगह दुर्गति ही क्यों हो रही है । प्रेमजी बोले शिवमंदिर में आपसे कोई भूल हुई है । बाउजी के बारे में मेरी बुद्धि काम ही नहीं करती । मैं समझ गया कि बाबा का आश्रम बारह महादेव मंदिर ही कहलाता है, वहाँ कुछ बात हुई है, पर क्या मालूम नहीं । फिर डरते-डरते बाउजी के पास गया तो कुछ शांत लगे । थोड़ी हिम्मत आई तो पूछा की गलती हो गयी क्या? बाउजी बोले की अपने गुरु को सबसे बड़ा या सब कुछ मानना कोई गलत बात नहीं है पर किसी का निरादर करना तो ऐसी भूल है जिसका माफीनामा नहीं है । फिर निराश भाव से बोले मैंने कितनी बार कहा है गर्व इस राह में पतन का कारण है । इतने पढ़े लिखे हो तो भी क्या पढ़ा, क्या खाक पढ़ा? खुद अपनी और अपने गुरु दोनों की बेइज़्ज़ती कराते हो । प्रेमजी चुपचाप बैठे थे । उनके सामने ये सब बात हो रही थी, मुझे ख़राब लग रहा था । मैंने बाउजी से धीरे से बोला अपन अंदर चल कर बात करें । बस इतना सुनते ही बाउजी ने आँख उठा कर मेरी और देखा । मेरे शरीर में तो मलेरिया बुखार जैसी झुरझुरी लगने लगी, लगा अभी बाथरूम जाना पड़ेगा । सारे संसार में अपने गुरु की बेइज़्ज़ती कराते हो तब शर्म महसूस नहीं होती? मेरा गुरु बड़ा है तो क्या करें, नाचें? अपनी इज़्ज़त की बड़ी चिंता है । गुलाम की कोई इज़्ज़त नहीं होती लेकिन वो जो काम करता है उससे उसके मालिक की शान या बेज़्ज़ती होती है । गुलाम हो गुलाम ही रहोगे, मालिक बनने की कोशिश मत करो, खन्ना से सीखो । मुझे लगा यह तो बाउजी का ब्लड प्रेशर बढ़ा देगा, चेहरा लाल हो गया है । तब तक पवन भाई साहब ऑफिस से आगये तो बाउजी से बात करने लगे थोड़ी राहत हुई । प्रेमजी को ईशारा किया और दोनों बाहर सिगरेट पीने चले गए । फिर वापस आये । घर पर तो कोई था नहीं इसलिए हम दोनों को ही कोई और काम नहीं था । तब तक बाउजी अन्दरवाले कमरे में आ गए थे, खाना खा रहे थे, हमे बैठने का इशारा किया, फिर पास बुला कर एक रोटी में से आधी मुझे और आधी प्रेमजी को दे दी । प्रेमजी बिना सब्जी के ही खाने लगे । मैंने भी खा ली । बोले कैसी है? मैं कुछ बोलता इससे पहले ही प्रेमजी बोले आपने दिया तो प्रसाद ही है, अच्छा बुरा क्या? मैं तो बच गया, मन में तो सब्जी दिख रही थी । अभी डांट पड़ी है, अब चुप रहना ही बेहतर है । मैंने भी प्रेमजी की हाँ में हाँ मिलाई । तब तक ये भी मालूम होने लगा की बड़े भाई साहब भी ध्यान कराते हैं क्योंकि एक बार शाम को सभी लोग ध्यान कर रहे थे, मैं भी पास बैठ गया, बहुत गर्म लग रहा था और ध्यान के बीच थोड़ी घबराहट भी हो रही थी । मैं उस बैठक से बाहर हो गया । बाद में उस दिन के ध्यान के बारे मैं चर्चा हुई बाउजी ने पूछा क्या लगा? बड़े भाई साहब ने कहा चार लोग थे । पवन भाई साहब ने कहा दो प्रकाश पुंज थे, दिनेश भाई साहब ने भी कहा दो प्रकाश पुंज थे । इस बात पर काफी चर्चा हुई । तब बाउजी ने बड़े भाई साहब से कहा की तू बीच में मत बोल । जब तेरी बारी आये तो बोलना और कहा कि मेंरे बाद तू ही तो करायेगा, तब बोलना । मैं सोचने लगा की इसका मतलब बडे भाई साहब में कोई बात है तब ही तो बाउजी ऐसा कह रहे हैं, पर भाई साहब तो बैठने ही नहीं देते हैं । बाउजी ध्यान कराने को कहते है तो 5-10 मिनट में ही उठा देते है । फिर मेरी और देख कर बोले डरने की कोई बात नहीं । जब ध्यान तेज होता है तो पसीना आजाता है पर डरने की कोई बात नहीं । शेर की औलाद तो शेर ही होती है गीदड नहीं, आइन्दा याद रखो, अब जाओ । फिर बोले किशन इन्हें ध्यान कराया करो ।

घर आने पर दिन में हुई बातें लगातार याद आ रही थीं । सोने पर लगा सोया नहीं हूँ । सुबह तक लगता रहा की नींद नहीं आई पर थकान बिलकुल नहीं थी । ऑफिस जाने का मन नहीं हुआ । दूध पी कर सीधे ही सेठी कॉलोनी चला गया । प्रेमजी पहले से ही बैठे हुए थे । मैं भी नीचे बाउजी के

सामने बैठ गया । बाउजी बोले आँख खोल कर ध्यान किया करो । ध्यान ही मालूम नहीं था फिर भी आँख खोल क़र करेंगे ।

अगले दिन सुबह से सेठी कॉलोनी जाने का मन हो रहा था । ऑफिस जाऊँ या नहीं ये सोचते-सोचते 10 बज गए, 11 बजे घर से सीधा सेठी कॉलोनी चला गया । प्रेमजी बैठे हुए थे हम दोनों बात करने लगे कि सबसे अच्छी बात तो ये है की जो गुरु कहे वो ही करते चलो, बेकार दिमाग लगाने से कोई फायदा नहीं है । मैंने कहा मैं जितना सोचता हूँ उतना ही भ्रमित होता हूँ । कुछ तो बात है जो सामान्य साइंस के सिद्धान्तों से अलग है । कोई कहता है सात मंज़िल हैं, कोई सात आसमान । हमें तो एक आसमान दीखता है, उसका अंत कहां है ये भी पता नहीं सात किसको पता? इसमें तो उलझ जाएंगे, इससे अच्छा है अपन तो सरेंडर कर दें । जो कहा जाये वो ही करते जाएँ सो ही ठीक है । प्रेमजी बोले आप हनुमानजी से पूछो । मैं तो और पागल हो गया । ये तो एक कदम और आगे हैं, हनुमानजी से पूछो ये क्या बात हुई? मैं कैसे पूछूं हनुमानजी से? इतना दम होता तो घर की समस्या हल कर लेता । ये बात हो रही थी तभी बाउजी नहा कर आ गए । आते ही बोले हनुमानजी ने तो तुलसीदासजी को रामजी के दर्शन करा दिए थे । मैंने भी बचपन में हनुमानजी को गुरु माना है । समर्पण करना तो बड़ी बात है ही पर समर्पण का भाव रखना भी बड़ी बात है । ये भावना ही इस राह में आगे बढ़ने का ज़रिया है । आप कुछ भी नहीं करो सिर्फ समर्पण का भाव रखो तो ही आगे बढ़ते जाओगे । गुरु भगवान को तो सिर्फ प्रेम ही चाहिए और कुछ नहीं । हम गुरु को दे ही क्या सकते हैं प्रेम के अलावा? समर्पण तो गुरु अपने आप करा लेते हैं । फिर ठाकुर साहब का अपने गुरु से मिलने का किस्सा बताने लगे । अपने 2 पैसे की रेवड़ी में गुरु मिलने की बात बताई । ठाकुर साहब ने कैसे बुलाया ये बात भी बताई । वे ऊपर सोफे पर बैठे थे सामने एक छोटी मेज़ रखी थी । बाउजी के लिए खाना लगा दिया । उसमे मालपुआ भी था । मैं और प्रेमजी नीचे बैठे थे, बाउजी ने एक मालपुआ उठा कर आधा मालपुआ प्रेमजी की ओर तथा आधा मेरी ओर कर दिया । हम दोनों ने झट से लपक लिया और खाने लगे । बाउजी ने कहा और लो, मैंने मना कर दिया । फिर भी आधी रोटी मुझे और आधी प्रेमजी को दी । हमने वो भी खा ली । फिर बोले और लो । हमने कहा आपने तो सब हमे दे दिया आपने तो खाया नहीं । वे बोले मेरा पेट तो भर गया । फिर वही बात हुई कि मेरे और प्रेमजी की बात कैसे पता चल गयी ।

शाम तक मैं और प्रेमजी वहीं बैठे रहे । शिवशंकर खंडेलवाल भी आ गये थे, वह शैलेशजी के दोस्त थे, हम काफी देर तक बातें करते रहे । शिवपालजी भी दोपहर में आ गए, वे भी ध्यान के बारे में बात करते रहे । प्रेमजी बताते रहे । मैं भी सुनता रहा । पूरे दिन ध्यान होता रहा । शाम तक मानसिक रूप से बहुत थक गया । घर आ कर लेट गया । शाम को सेठी कॉलोनी नहीं गया ।

अगले दिन ऑफिस में आधे दिन की छुट्टी थी, मैं घर गया । इसी बीच अक्सर जयपुरियाजी से भी बात होती रहती थी, उनका बेटा ऋषभ किसी कारण से बीमार हो गया था । सेठी कॉलोनी आता तो ठीक रहता अन्यथा बीमार हो जाता था । जयपुरियाजी अक्सर कहते थे और घर आने के लिए कहते रहते थे । उस दिन राजा पार्क से निकलते समय अचानक उनके फ्लैट में गया, देखा तो बाउजी वहीं बैठे थे । मुझे देखते ही बोले चलो, मुझे सेठी कॉलोनी ले चलो । तुम वहीँ जा रहे हो, चलो, और वे मेरे साथ स्कूटर पर बैठ कर सेठी कॉलोनी आ गए ।

घर पर चाय लाने के लिए बोला । पीछे-पीछे जयपुरियाजी भी आ गए । ऋषभ की तबियत फिर ख़राब हो गयी है उन्होंने बताया । बाउजी ने कहा उसे ले आओ । वे 15-20 मिनिट में ऋषभ को ले

आये, बुखार बहुत तेज़ था, बाउजी ने हाथ लगाया, आँख बन्द की और कुछ मिनिट में ही ऋषभ का बुखार उतर गया । बाउजी ने कहा किसी संत की ज़मीन पर मकान बना लिया है, इसलिए ये सब हो रहा है । भूत-प्रेत की बात तो मैं मानता ही नहीं था और जो था वह तो सामने ही था । मैं तो घर आ गया ।

अगले दिन सुबह ही सेठी कॉलोनी आ गया । बाउजी वैठे हुए थे सामने चाय और एक कटोरी में बिस्कुट रखे थे । बाउजी ने अपनी चाय में से थोड़ी चाय मेरे कप में डाल दी और बोले लो बिस्कुट खाओ । मैंने चाय पी और बिस्कुट भी खा लिए । तब बाउजी बोले अरे आज तो तुम्हारा मंगलवार का व्रत था, टूट गया । मैंने कहा नहीं टूटा, मैंने तो प्रसाद मान कर खा लिया । बाउजी बोले मना करते तो फेल हो जाते । तुम पास हो गए । अब ऑफिस जाओ । मैं घर आ क़र ऑफिस चला गया ।

भंडारे का दिन था । बहुत लोग दिनभर लगातार आ जा रहे थे । ऋतुराजजी भी सपरिवार आ गए थे । कीर्तिजी भी थे । ये सभी बाउजी की बड़ी भगति करते थे । प्रेमजी इनके गुरु थे इसलिए प्रेमजी के शिष्य बाउजी की बड़ी भगति करते थे । प्रेमजी तो स्वयं बाउजी की भगति करते थे । इनके समक्ष तो मैं कुछ नहीं था, मैं तो बहस और प्रश्नो में ही उलझ रहता था । दिन भर रुक-रुक कर बाउजी के सामने बैठ कर बाहर से आने वाले लोग ध्यान कर रहे थे । बाउजी तो खुश दिखाई दे रहे थे । चेहरे से तो ख़ुशी ही दिख रही थी । दिन भर प्रसाद मिलता रहा । शाम होने पर भी काफी लोग आगये । बाउजी बोले ठाकुर साहब की समाधि पर चलेंगे । ऋतूराजजी और कई लोग कार ले कर आये थे । सब लोग बाहर निकले । मैंने सोचा मुझे तो कहा ही नहीं, चुपचाप खड़ा था । इतने में बाउजी बोले तुम मेरे साथ आ जाओ । सब लोग अपनी कार या स्कूटर से चलने को तैयार थे । बाउजी कार में आगे बैठ गए । मैं बैठने के लिए आगे बढ़ा तो ऋतुराजजी ने बाउजी की तरफ का दरवाज़ा बन्द किया । बाउजी की तीन उँगलियाँ दरवाज़े में आ गयीं । मैं देखता ही रह गया । बाउजी बोले कोई बात नहीं, चलो देर हो रही है, तुम भी बैठो । मैं सोच रहा था कि कार के दरवाज़े में उंगली आने पर कितनी तकलीफ होती है । पर कुछ देर में भूल गया । उँगलियाँ लाल हो गयीं थी और कुछ समय बाद नीली होने लगी थी । कुछ देर तो मैं शुन्य हो गया । ललाट में अंदर की ओर प्रकाश ही प्रकाश दिख रहा था । समाधि पर भी काफी लोग थे जो बाउजी को प्रणाम कर रहे थे । कुछ देर ध्यान कराया । मुझे तो प्रकाश के अलावा कुछ नहीं दिख रहा था । प्रसाद लिया फिर सेठी कॉलोनी आ गये । अधिकतर लोग चले गए । बाउजी सामने गद्दे पर बैठ गए और मुझे कहा बैठो । मैं बैठ गया । अचानक याद आया की बाउजी की उँगलियों में लग गयी थी । याद आते ही मैं उँगलियाँ देखने की कोशिश करने लगा कि बाउजी बोले लो देखो सब ठीक है । गुरु भगवान चाहें तो क्या नहीं हो सकता? यह कहकर अपना हाथ मेरे हाथ में दिया और बोले लो देखो । मैंने देखा कोई नील या निशान नहीं था । उँगलियाँ ठीक थीं । फिर भी हल्का सा दबाया तो बाउजी बोलो गुरु भगवान चाहे तो क्या नहीं हो सकता? मुर्दा भी ज़िंदा हो सकता है, ये तो चोट है । मैंने कहा दर्द बहुत होता है, उँगलियाँ नीली हो जाती हैं । बाउजी बोले देखो-देखो सब ठीक हैं । दूसरों का दर्द महसूस करना अच्छी बात है पर शंका करना ठीक नहीं है । हाथ दबा कर गुरु को आजमा रहे थे । यही तो कालिख है जो तुम्हारे अंदर है । जो काले दाग हैं वे साफ नहीं हो सकते हैं । अपनी साइंस मत लगाओ, ये अलग साइंस है । लो मिठाई खाओ । अब जाओ, कल साइंस की बात करेंगे । ये साइंस अलग है । ये कैसे हुआ पता नहीं, पर हुआ ऐसे ही ।

छोटी बहिन को वापस जाना था । जून में गर्मी बहुत थी । ऑफिस में मन नहीं लगता था । सेठी कॉलोनी में बाउजी से डर भी लगने लगा था । उनके चेहरे की ओर देखा नहीं जाता था । जाये बिना और भी मन नहीं लगता था । निवाई भेजते थे वहाँ भी कुछ गड़बड़ ही होता था । पहले तो निवाई में बाबा कुछ बात भी करते थे अब तो बात भी नहीं करते । ऑफिस में एक दोपहर को आई. जी. आये थे इंस्पेक्शन के लिए । मुझे सेठी कॉलोनी से आने में देर हो गयी । रास्ते में टेलीफोन करने के लिए रुकना था पर ऑफिस आ गया । देखा मीटिंग चल रही है तो तुरंत ही किसी का स्कूटर ले कर पी. सी. ओ. चला गया फ़ोन करने । इतने में आई. जी. ने बुलवा लिया । मैं था नहीं, बोले स्स्पेंड कर दो, अभी आर्डर निकालो । शर्माजी डायरेक्टर थे उन्होंने बचा लिया । मुझे पता लगा, मैंने सोचा जीना बेकार है । लैब में एक बीकर में ज़हर लिया, पानी में घोला, इतने में ही बाथरूम जाने की बहुत तीव्र इच्छा हुई । बाथरूम गया और सीधा स्कूटर ले क़र सेठी कॉलोनी चला गया, ज़हर पीना भूल गया । जैसे ही अंदर घुसा बाउजी ने जोर से बोला ब्रह्मराक्षस बनोगे, कभी मुक्ति नहीं होगी । आँखे लाल और गोल हो रही थी । मेरे पैरों में जैसे ताकत ही नहीं रही, वहीँ बैठ गया । सिर नीचा कर लिया । ब्रह्मराक्षस का मतलब मालूम ही नहीं था । बोले क्यों किया, गुरु की इच्छा के बिना कुछ नहीं होगा । हट करने से कुछ नहीं होगा । गुरु भगवान को मालूम है तुम्हारे लिए क्या बेहतर है । जिसमें तकलीफ के समय गुरु को याद करने की कुव्वत नहीं है वो न तो कभी कुछ कर सकता है न ही आगे बढ़ सकता है । तुम गुरु को बेवकूफ नहीं बना सकते, न ही गुरु तुम्हारे झांसे में आने वाला । तुम गुरु को नहीं अपने आपको बेवकूफ बना रहे हो । जो दुनियावी तकलीफ नहीं सह सकता वो इस राह में आने वाली तकलीफ क्या सहेगा? तुम इस लायक नहीं हो । कभी गुरु को आजमाने की जुर्रत मत करो । गुरु भगवान तुम्हारे नौकर नहीं हैं । मरना है तो मरो, गुरु को बदनाम मत करो । यहाँ किसलिए आये हो? अब जाओ ऑफिस, वापस इधर नहीं आना । काला कौआ तो काला ही रहेगा, गुरु का यही काम है कि तुम्हारा बोझ ढोता रहे?

मैं वापस ऑफिस चला गया । समझ में नहीं आरहा था क्या करूं? यहाँ से तो कोई मदद नहीं मिल रही है, किसी भी समस्या का हल नहीं हो रहा है बल्कि समस्या बढ़ती ही जा रही है । ऑफिस पहुँच कर थोडा काम किया । ऑफिस से सीधे ही घर आ गया, रोना आ रहा था । थोड़ी देर रुक कर फिर सेठी कॉलोनी चला गया । चुपचाप बैठा रहा । कुछ देर बाद बाउजी ने कहा बैठो । मैं सामने बैठ गया, आँख बंद हो गयी । आँख खुली तो काफी देर हो चुकी थी, सब सोने की तयारी कर रहे थे । मुझे जाने के लिए कहा । घर आ कर सो गया पर नींद नहीं आई । बस लाल आँखे और गुस्से वाला चेहरा ही दिखता रहा । ब्रह्मराक्षस की बात समझ नहीं आई । पर सुबह तरो ताज़ा था । ऐसा नहीं लग रहा था की रात में सोया नहीं हूँ । सुबह ऑफिस से छुट्टी ली और ये सोच कर की निवाई जा कर बाबा से बात करूँगा यहाँ तो कुछ नहीं हो रहा है शर्माजी को कहा तो उन्होंने कहा कि तुम जा कर अपनी बात कह देना सब ठीक हो जायेगा । मैं निवाई बाउजी को बिना बताए चला गया । वहाँ पर सहस्त्रघट की तयारी चल रही थी । बाबा ने कहा बैठ जा । ग्यारह और पंडित बैठे थे । मुझे कहा ये करेगा । जिन लोगों ने सारा इंतज़ाम किया था वे भी बैठे थे पर उन्होंने कहा ये ही करेगा । वे लोग पीछे बैठ गए । इस बीच भैरों पण्डित पर नज़र पड़ी, पूछा ये कैसे होगा? भैरोंजी ने बताया की आपको एक हज़ार मटके जल शिवजी पर चढ़ाना है । पहले दूध, फिर शककर, घी और फिर जल । मैंने पूछा अकेले ही, तो बोले कि बाबा ने यही कहा है । इतने में कुएं की मोटर शुरू हो गयी । बाबा ने कहा शुरू करो । एक मंत्र शुरू किया फिर पंडितो ने मन्त्र शुरू कर दिए । सब लोग छाया में बैठे

थे, शिवलिंग बाहर धूप में स्थापित था । जैसा-जैसा भैरों पण्डित बता रहे थे, मैं करता जा रहा था । जल के घट शुरू हो गए । घूप में ये चल रहा था, पण्डित मन्त्र पढ़ रहे थे । सौ के करीब घट हुए तो लगा की हज़ार कैसे होंगे? सोचा बाउजी से बच कर यहाँ आया पर यहाँ तो और मुसीबत । इससे तो यही ठीक था की बाउजी के पास जा कर बैठ जाता । यह सोचा ही था कि अचानक बादल आ गये । लगभग 200 घड़े जल हुआ होगा की तेज बारिश होने लगी । पण्डित बरामदे में चले गए । मैं अकेला खुले में जल चढाता रहा । मौसम ठीक हो गया, गर्मी कम होगयी । सहस्त्रघट चलता रहा । मैं मशीन की तरह लगातार जल चढ़ाता रहा । मैं बीच में सारे इंतज़ाम करने वाले पति-पत्नी की और देखता तो बाबा बोलते चढ़ा, जल चढ़ा । कुछ देर बाद अचानक बोले आ गया, आ गया, और उठ गए । मैं जल चढ़ाता रहा । समाप्ति के बाद मुझसे कहा की जा एक एक रुपया पण्डितों को दे । मैंने ऐसा ही किया, पंडितों ने एक रुपया ख़ुशी से लिया । फिर पूजा करवाने वाले दम्पति से काफी बड़ी दक्षिणा दिलवाई । फिर भंडार प्रसाद शुरू हुआ बहुत लोग आये । मुझे बोला जा कह दे तेरा काम हो गया । मैंने शर्माजी से कहा तो बोले जहां से आया है वहीँ पर कहना, अब जा । मैं जयपुर आया और सीधे सेठी कॉलोनी गया । बाउजी को पूरी बात बताई उन्होंने कुछ नहीं कहा । शांत बैठे रहे । ऐसा लग रहा था की कुछ सोच रहे हैं । थोड़ी देर बाद चाय मंगवा कर दी फिर कहा जाओ आराम करो, चलो ठीक हो गया और बोले काम किसी का नाम किसी का । इस तरह मेरी समस्या का समाधान दूसरे के माध्यम से करा दिया, जो मुझे बाद में मालूम हुआ । खास बात तो ये थी की यह पूजा करवाने वाले लोग तो कोई और थे पर बिना कोई पैसे खर्च किये इतनी बड़ी पूजा हो गयी और बाउजी ने यहाँ बता दिया काम किसी का नाम किसी का ।

रात भर नींद नहीं आई, पूरा दृश्य चलता रहा पर सुबह ऐसा नहीं लग रहा था की सोया नहीं हूँ, कोई थकान नहीं थी । सुबह ऑफिस जाने से पहले सेठी कॉलोनी गया, बाउजी को प्रणाम किया । आधा कप चाय रखी हुई थी वो बाउजी ने मेरे आगे कर दी, मैंने पी ली और ऑफिस चला गया । खाना भी नहीं खाया न ही कोई भूख थी, दिन भर ऑफिस में रहा । शाम को सीधे ही सेठी कॉलोनी आ गया । बाउजी ने भाभीजी को आवाज़ लगा खाना मंगवाया । भाभीजी धीरे से बोली आज इतनी जल्दी । खाना आगया, मुझे दे दिया बोले खा लो । मैंने खाना खा लिया । फिर बोले ऐसा हो जाता है, एक अवस्था ऐसी भी आ जाती है कि खाने की ज़रूरत ही नहीं रह जाती है । ब्रम्हांड से सीधे ही ताकत मिलती रहती है । हजारों साल तक बिना खाना खाये रह सकते हैं, पर इस लाइन में सिद्धियों से दूर ही रहना ठीक रहता है, नहीं तो इसी में अटक जाते हैं । कुछ देर में एक व्यक्ति आये । बाउजी बोले मेरा हाथ देख कर बताओ तुम्हारी माँ से कब मिलूँगा? वे व्यक्ति हाथ देख कर बोले समय आगया है, जल्दी ही मिलोगे । कुछ देर बाद वे व्यक्ति चले गए । हाथ दिखाने की बात, वो भी बाउजी का हाथ अजीब लग रहा था । पहले भी हाथ की रेखाएं दिखाने की बात हो रही थी । फिर कभी पूछूँगा ये सोच कर मैंने कोई बात नहीं की । बाउजी ने कहा बैठो और दोनों आँखों के बीच माथे पर अंगुली रख कर कहा अब तुम यहाँ पर ध्यान करो । मुझे तो ध्यान ही समझ नहीं आरहा था यहाँ पर ध्यान कैसे करूं । पहले तो मैंने हाँ कर दिया, फिर बोल दिया कि मैं तो ध्यान कैसे करूं, अपने आप तो कुछ पता नहीं लगता, जब आप ध्यान करने के लिये बैठते है तब आँख बंद हो जाती है । हिम्मत कर के बोल दिया कि मुझे तो कुछ पता नहीं लगता कि ध्यान कैसे होता है? मैं तो ध्यान में सिर्फ यही सोच पाता हूँ की आपने क्या कहा था, क्या करने को कहा था, कल आपने क्या कहा था या फिर कोई न कोई विचार लगातार चलते रहते हैं, ध्यान तो पता ही नहीं है, करूं कैसे? तब बाउजी

ने कहा कुछ भी पता नहीं चलता तुम्हें? मैंने कहा कि आप नाराज़ न हो तो बताऊँ? उन्होंने कहा ठीक है बताओ । मैंने बता दिया की जब मैं खुद आँख बंद करता हूँ तो विचार ही चलते रहते है । आप ध्यान करवाते है तो कुछ पता नहीं चलता । आप कभी-कभी भाई साहब के पास बैठाते हैं तब तो दिमाग खाली और गर्मी लगती है । आप ही बताइये ध्यान कैसे करुं । वे बाले ये तो बड़ी अच्छी बात है कुछ भी नहीं आता दिमाग में । ये ही तो ध्यान है और बड़ी अच्छी बात है । फिर उलझ गए खाली दिमाग को ध्यान बता रहे हैं, ये तो अजीब बात है । सोचा चलो जो कह रहे हैं मान लेते हैं । सब कहते है खाली दिमाग शैतान का घर और यहाँ तो अच्छा कह रहे हैं । जैसा कहते हैं मान लो तो अच्छा है ।

फिर चुपचाप बैठे रहे । मेरी आँख बन्द हो गयी । माथे पर अंदर की और सफेद चमक जैसा एहसास हो रहा था । धीरे-धीरे चमक बढ़ने लगी और पूरे सिर में हो गयी, फिर चेहरे पर, फिर गले तक, फिर सीने तक और ऐसे लगा की सीने से ऊपर का हिस्सा गायब हो गया, सिर्फ चमक ही लग रही थी । यह चमक पूरे कमरे में हो गयी और मैं इसका हिस्सा बन गया । मैं तो हवा जैसा हो गया । फिर ऐसे लगा की शरीर का बाकी हिस्सा भी गायब हो गया सिर्फ सफेद प्रकाश ही प्रकाश रह गया । मैं डर गया और आँख खोल दी । देखा बाउजी के चेहरे पर हल्की मुस्कान थी । फिर अपने माथे पर ऊँगली रख कर बोले समझे यहाँ का ध्यान कैसे होता है? पर डरना नहीं चाहिए । गुरु को सब ध्यान रहता है कि कितना व कैसे ध्यान कराना है । इतने से घबरा गए । लो ये बर्फी खाओ । दो काजू की बर्फी दी फिर कहा पांच मिनिट बाद जाना । टाइम देखा तो दस बजे थे, समय का पता ही नहीं लगा । मैं घर चला आया । अभी तक तो बाउजी, पवन भाईसाहब, दिनेश भाईसाहब की बातें सुनता था जैसे चक्र, आज्ञा चक्र, ज्ञान चक्र, ह्रदय चक्र, सहस्त्र दल चक्र आदि । सोचा आज जो ध्यान कराया वह हो सकता है बाउजी ने ये बताने के लिए ही ऐसा किया हो ।

अगले दिन ऑफिस से लंच में सेठी कॉलोनी आ गया । शिशुपालजी बैठे थे, कुछ बात चल रही थी । बाउजी ने पूछा अभी कैसे, साथ ही बोले प्रेमजी को केसरगढ़ से ले आओ । मैं केसरगढ़ पहुचां, प्रेमजी इंतज़ार कर रहे थे । मुझे देख कर बोले आज इस समय कैसे, सेठी कॉलोनी जाओगे क्या? मैंने बताया बाउजी ने आपको लेने भेजा है । वे बाले मेरी बड़ी इच्छा हो रही थी । मैंने कहा आइये चलें । दोनों स्कूटर से चल पड़े । रास्ते में ख्याल आया कि बाउजी को ये कैसे पता चल गया की प्रेमजी आना चाहते हैं? किसी के आने का इंतज़ार कर रहे थे, उनके पास कोई वाहन नहीं था ।

मैं प्रेमजी के साथ सेठी कॉलोनी आ गया । बाउजी प्रेमजी से बातें करने लगे, फिर बोले मेरा हाथ देखकर बताओ की तुम्हारी माँ से कब मिलूंगा? प्रेमजी ने कहा कहना ठीक तो नहीं लग रहा है पर समय लगभग आने वाला है । बाउजी बोले ठीक है । फिर मेरी और इशारा क़र बोले ये इस लाइन में चलेंगे की नहीं? प्रेमजी बोले जिसे आपने बुलाया हो वो तो हर हाल में आगे ही जायेगा कोई संशय नहीं है । मैं सुन रहा था, ज्यादा कुछ समझ में नहीं आ रहा था, पर लगा दोनों कोई विशेष बात क़र रहे हैं । शाम होने को थी बाउजी बोले एक चक्कर गली का लगाएंगे । अपना बेंत हाथ पर टांग लिया और गली में एक चक्कर लगाया । फिर आ कर बड़े कमरे में बैठ गए । बेंत को हाथ में लटका रखा था काम में नहीं लिया । कैरी का पना बना था, मंगवाया, मैंने पिया । फिर बोले बैठो, हाथ दिखाने की क्या बात कर रहे थे? मैंने कहा कि ऐसे तो पहले आप ने कहा था कि कुछ टाइम में असर होगा, आज नहीं तो अगले जन्म में इस राह में चलेगा । ऐसा होता है क्या? बोले अपना अंगूठा इधर करो । मैंने अंगूठा आगे किया तो बाउजी ने कहा लो देखो और अपना अंगूठा मेरे अंगूठे से छुआ दिया । मेरे

शरीर में बहुत तेज़ झटका सा लगा, आखों के आगे सफेद बहुत तेज़ प्रकाश हो गया, जैसे कैमरे की फ़्लैश होती है । ऐसा लगने लगा जेसे मेरा शरीर बहुत् हल्का हो गया है, सब कुछ दिख रहा है पर आखों में प्रकाश ही प्रकाश है, हवा में उड़ रहा हूँ पर सब काम कर रहा हूँ और चारो और प्रकाश ही प्रकाश है । पता नहीं कब तक बैठा रहा, कब स्कूटर चला कर घर आ गया । रात भर बैठा रहा, जगता रहा, न कुछ अच्छा लग रहा था न खराब, न ही भूख लग रही थी । सुबह जल्दी ऑफिस चला गया । काम करता रहा, क्या किया मालूम नहीं था । दोपहर तक घबराहट हो रही थी, और तेज़ होगयी । सब तरफ प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता था, न खाने का पता था न ही पानी पिया । यह हालत बढ़ती ही जा रही थी । दोपहर तक कुछ समझ नहीं आरहा था । कभी लगता था पहाड़ जितना बड़ा हो गया हूँ, कभी चींटी जितना छोटा हो गया हूँ । कभी ऐसा लगता था सिर्फ देख रहा हूँ शरीर तो है नहीं । दिमाग में एक बात आई की कहीं पागल तो नहीं हो गया हूँ । सोचा पवन भाईसाहब के पास जाऊँ । स्कूटर से उनके ऑफिस पहुचा, बोला ऐसा लग रहा है । वे बोले बधाई हो, खूब हलवा खाओ, मिठाई खाओ । घर गया खुद बहुत सारा हलवा बनाया, सारा खा लिया, थोडा ठीक लगा । ऑफिस पहुँचते तक फिर वैसा ही हो गया । फिर पता नहीं क्या हुआ मुझे इतना याद् है की सब ओर प्रकाश ही प्रकाश है सब काम हो रहा था सिर्फ मिठाई खाना ही अच्छा लग रहा था और कुछ पता नहीं था । नींद भी नहीं आरही थी, पर किसी तरह की थकान भी नहीं थी । बस पता नहीं क्या हो रहा था । फिर बीच में क्या हुआ कितना समय हो गया पता नहीं । दोपहर को बाउजी के पास गया । उन्होंने जाते ही बरफ़ी दी खाने के लिए । मैंने बताया सब और प्रकाश ही प्रकाश दिख रहा है । कल आपने अंगूठे से अंगूठा छुआ था तब से ऐसा हो रहा है । बोले कल की बात नहीं है । फिर बोले अच्छा ऐसा है, ये कह कर मेंरे दाये कंधे पर दो अंगुली से धीरे से थपकी लगाई और अचानक सब ठीक हो गया । बाउजी लगातार मुझे देख रहे थे । मैं उठ कर अंदर वाले ड्राइंग रूम में आया । थोड़ी देर बाद कैलेंडर पर नज़र पड़ी तो आश्चर्य हुआ । आज तो गुरुवार है, मैं तो सोमवार की शाम समझ रहा हूँ । फिर देखा टीवी में भी गुरुवार दिख रहा है, शाम हो रही है, पर शर्म के कारण कुछ नहीं बोला । सोचा पूछूँगा तो कोई क्या सोचेगा? बिना कुछ बोले घर आगया, फिर से कैलेंडर देखा । बीकानेर से फोन आया, बोले तीन दिन से फोन खराब था क्या? बात नहीं की, फोन भी नहीं उठाया? रसोई में देखा खाने में फफूंदी लगी थी । अचानक बाई भी आगयी । बोली तीन दिन से ज्योति आरही थी । खाने के लिए मना कर दिया । मैं तो ऐसे ही पूछने आ गयी । मैंने कहा खाना बनाओ, बहूत भूंख लगी है । उसने रसोई साफ की । कुछ-कछ बोलती जारही थी, पर मैं तो तीन दिनों में क्या हुआ ही सोच रहा था । खाना खा कर सो गया । आज भी याद नहीं कि वे तीन दिन कैसे निकले ।

मन में थोड़ी शांति थी । मैं सेठी कॉलोनी आ गया । पवन भाईसाहब आ गए थे, दिनेश भाईसाहब भी आ गए । ताश का खेल शुरू हो गया । मैं सनझ गया की ताश के साथ ही ध्यान होगा क्योंकि बाउजी ने पहले बताया था की बैठा करो ध्यान तो होता ही है । काफी देर तक स्वीप का खेल चलता रहा । समाप्त होने पर बाउजी ऊपर छत पर आ गए । दिनेश भाईसाहब को भी कहा आ जाओ । मैंने बाउजी की ओर देखा मुझे भी आने के लिए कहा । बाउजी खाट पर लेट गए बोले की दिनेश आज गर्मी से सिर में दर्द होने लगा है । मैंने पूछा मैं दबा दूँ और हल्के-हल्के सिर दबाने लगा । घर जाने की कोई जल्दी नहीं थी । दिनेश भाई साहब बाउजी से पूछकर चले गए । बाउजी ने कहा बस अब दर्द ठीक है । मैं फिर भी धीरे-धीरे सिर दबाता रहा । इसी बीच बाउजी ने पूछा कि शराब पीते हो? मैंने कहा हाँ जी । उन्होंने पूछा क्यों? मैंने कई फायदे गिना दिए । बोले छोडना चाहते हो? मैंने कहा हाँ ।

फिर पूछा सिगरेट पीते हो? मैंने कहा हाँ । बोले छोड़ना चाहते हो? मैंने हाँ बोला । उन्होंने कहा अच्छा, फिर बोले मांस भी खाते हो और जिसका मांस खाते हो उसका ठीक से मोक्ष् कराना जानते हो? मैंने कहा नहीं तो बोले छोड़ना चाहते हो? मैंने कहा हाँ । बोले अच्छा । फिर बोले अब जाओ । उस दिन मैं घर जाते समय सिगरेट की दुकान के सामने से निकल गया और सिगरेट पीने की बात ही भूल गया । घर चला गया, घर जा कर खाना खा लिया, शराब सामने रखी थी, देखता जा रहा था पर पीने की इच्छा नहीं हुई । फिर कभी शराब, सिगरेट या मांस खाने की इच्छा ही नहीं हुई, बिना प्रयास के ही छूट गये ।

दो दिन बाद मुझे इतवार को निवाई जाने के लिए बोला । गर्मी काफी थी, बारिश से पहले की उमस थी । मैं आम ले कर दोपहर में बाउजी के कहे अनुसार निवाई गया । मन में लगातार यह विचार चल रहा था की बाउजी वहाँ क्यों भेज रहे हैं, फिर वही होगा । निवाई पहुचां, बाबा बैठे थे । मैंने नमस्कार किया और आम उनके आगे रख दिए । बाबा ने कहा कोन लाया? मैंने कहा मैं लाया । बोले वापस ले जा । किसने भेजे हैं? मैंने कहा किसी ने नहीं, मैं ही लाया हूँ । बोले ले जा तू ही खाले । अंदर आम रस रखा है ले ले और जा । मैंने आम रस नहीं लिया और आश्रम से वापस चल पड़ा । हल्की सी बूंदाबांदी होने लगी । मैंने सोचा अच्छी मुसीबत है, यहाँ आता हूँ तो ये बेइज्जती करते हैं, बाउजी को बताऊंगा तो वे भी इनकी ही तरफदारी करेंगे । मैं तो धोबी का कुत्ता हो गया हूँ, न घर का न घाट का । इतने ही में ही न जाने कहाँ से तीन बहुत हट्टे-कट्टे कुत्ते आ गए और मेरे ऊपर चढ़ने लगे, खेलने लगे । उनके मुहं की भाप मेरी नाक तक आरही थी । वे मुझे आगे नहीं जाने दे रहे थे, जैसे ही आगे बढ़ता तो गुर्राने लगते । बड़े-बड़े दांत मेरे मुहं तक आ रहे थे । मुझे डर लगने लगा, काट लिया तो इंजेक्शन लगेंगे । डर के कारण कुछ नहीं सूझ रहा था तो जोर से वहीँ खेत में चिल्ला कर बोला बाउजी बचाओ । इतना बोलते ही तीनो कुत्ते वहाँ से भाग गए । मैं जल्दी-जल्दी बस पकड़ कर जयपुर आ गया फिर सेठी कॉलोनी पहुचां । बाउजी के सामने बैठ गया । निवाई के बारे में कुछ नहीं बताया । बाउजी बोले जल्दी आ गए, बाबा से नहीं मिले । मैंने मन में सोचा पता तो लग गया, बता दिया कि वहीं से ही आरहा हूँ पर कुत्ते वाली बात नहीं बताई । वे फिर बोले और कुछ हुआ । मैं बोला कुछ नहीं । फिर पूछा क्या हुआ? मैंने फिर बोला कुछ नहीं । फिर बोले रास्ते में भी कुछ नहीं हुआ? अब तो झूठ पकड़ा गया । कुत्ते वाली बात बताई । सुनकर बोले की अब ध्यान रहे । जैसा सोचोगे वैसे ही हो जाओगे । ध्यान रक्खो आगे से । जाओ और नहाओ । अब कल आना ।

बाउजी के हाथ दिखाने की बात से कई बार लगता था की पवन भाईसाहब तो कहते हैं की गुरु की शरण आने के बाद हस्तरेखा या जन्मपत्री की कोई ज़रूरत नहीं रहती है, फिर बाउजी हाथ देखने के लिए प्रेमजी को क्यों कहते है? एक दिन शाम को देखा की बाउजी किसी व्यक्ति को हाथ दिखा रहे हैं । उनके जाने के बाद मैंने पूछा की आप हाथ क्यों दिखाते हैं तो उन्होंने कहा की इससे ऊर्जा दूसरे को मिलती है, उसके संस्कार बनते हैं, अभी नहीं तो किसी और जन्म में ये व्यक्ति इस पथ की ओर चलेगा । मैंने पूछा तो उन्होंने कहा की इसमें क्या है, अपना हाथ इधर करो । मैंने हाथ आगे किया तो उन्होंने अपना अंगूठा मेरे अंगूठे से लगा दिया । अंगूठा लगते ही मुझे एक तेज़ झटका सा लगा । सारा शरीर हल्का-हल्का लगने लगा । मुझे लगा की मुझे उलटी हो जायेगी, पर हुई नहीं ।

रविवार को ध्यान में वैसे तो कोई प्रसाद ले जाना कोई ज़रूरी नहीं था पर मैं एक पाव जलेबी अक्सर ले जाता था । गोपी मिशठन भंडार से एक पाव जलेबी लेकर पीछे मुड़ा तो एक बूढी औरत खाने को मांग रही थी । उसने हाथ बढ़ाया तो मैंने उसे जलेबी दे दी और एक पाव जलेबी और खरीद

ली । सेठी कॉलनी पहुँच कर सब के साथ ध्यान के लिए बैठ गया । ध्यान के बाद मैंने वह थैली आगे बढाई तो बाउजी बोले वहीं रख दो । प्रसाद तो वहीं दुकान पर ही लग गया था जब बुढ़िया को जलेबी दी थी । मैं अचमभिंत रह गया और कुछ बोल नहीं पाया । बाउजी बोले प्रसाद तो भावना से लगता है पैसे से नहीं । फिर बोले घर ले जाओ ।

बाउजी के व्यवहार में धीरे-धीरे मेरे प्रति थोडा बदलाव आरहा था । गुस्सा मेरे प्रति कुछ कम हो गया था । कुछ हिम्मत कर एक दिन मैंने कहा मैं भी समर्पण करना चाहता हूँ पर समझ में नहीं आता है कैसे करूं? हम तो ध्यान करते है, पर ये बच्चे तो कुछ नहीं करते हैं । सीमा सुन रही थी, बोली देखना अंकलजी अभी बाउजी के सिर के चारों तरफ लाइट निकलेगी । मुझे ये वात ठीक नहीं लगी, पर धीरे से बोला मज़ाक मत करो बेटा, बाउजी तो बहुत बड़े हैं । बाउजी ने मेरी ओर देखा, बोले उसको कहने दो तुम से जो कहा जाये उतना ही करो । बच्चों की बात को बुरा नहीं मानो उनकी बात अलग है । मैं घर आ गया सीमा की बात याद नहीं रही । उस रात बिलकुल स्पस्ट स्वप्न आया कि मैं जंगल, तालाब, नदी पार कर रहा हूँ, कहीं गीली दीवार पर चढ़ रहा हुँ, मेरे नाख़ून में क़ाई भर गई है फिसल कर नीच गिर रहा हूँ । फिर पत्थरों पर चलते जूते फट गए, कपड़े भीग गए । फिर जैसे तैसे बहुत मुश्किलों से पहाड़ी पर चढ़ ऊपर पहुचा तो देखा शैलेश, सीमा, नीना, पंकज, दिनेश भाईसाहब, बाउजी, भाईसाहब और परिवार के लोग सभी उपर पिकनिक कर रहे थे । पवन भाईसाहब भी थे । बाउजी भी वहीं थे । मैं अपनी दशा पर व्यथित था और सब परिवार के लोग मज़े कर रहे थे । मैंने सुबह बाउजी को बताया तो उन्होंने कहा ये कल की बात का जवाब है । इन बच्चों से तुम्हारी कोई बराबरी नहीं है, ये जो कहें कहने दो । तुम अपने काम से काम रखो । मैंने हिम्मत कर के पूछा फिर मैं कौन हूँ, यहाँ क्या कर रहा हूँ तो बाउजी बोले शक तुम्हारे अंदर से नहीं जा सकता । काले निशान अब तक साफ नहीं हुए है । यह कह कर घर में अम्मा की समाधी के पास बैठा दिया और बोले मैं खड़ा हूँ पीछे, डरना नहीं । मुझे लगा की मैं जहां बैठा हूँ वहाँ मैं नहीं हूँ बल्कि उस स्थान को मैं कहीं और से देख रहा हूँ । जहां मैं बैठा हूँ वह स्थान तो खाली है । मैं हवा का ही हिस्सा बन गया हूँ । मेरा शरीर तो है नहीं बल्कि मैं प्रकाश का एक सफेद गोला हूँ । मेरे साथ एक छोटा सुनहरी रंग का प्रकाश का ठोस गोला है जिससे मैं जुड़ा हूँ । ऐसा कितनी देर रहा मालूम नहीं पर अचानक मुझे लगा की मैं बहुत भारी हो गया हूँ और आसमान से ज़मीन पर गिर रहा हूँ । आँख खुल गयी । देखा तो मैं वही बैठा था । उठना चाहा पर उठ नहीं सका । कुछ देर वहीं बैठा रहा, फिर उठा । बाउजी अंदर कमरे में थे, मुझे मिठाई खाने के लिए दी और बोले ये तुम्हारा ज़वाब है ।

मैं बहुत आनंद की स्थिति में था । सीधा जाकर शर्माजी को बताया । उन्होंने ये बात ध्यान से सुनी और बोले बड़े भाग वाला है रे तू । कुछ दिनों में तुझे वो मिल गया जो तपस्वियों को सैंकड़ों साल में नहीं मिल पाता । उनके आसूं निकल पड़े, मुझे गले लगा लिया । बोले ले जन्मदिन का लड्डू खा । मैं भी चलूँगा एक दिन । अगले दिन ऑफिस में ही कहा आज चलेंगे । मेरा और शर्माजी का बंगला पास-पास ही था । शाम को हम दोनों सेठी कॉलोनी गए । बाउजी को शर्माजी का परिचय दिया । बोले ये कहता है आप ध्यान कराते हैं । बाउजी ने कहा गुरु भगवान की कृपा है इन पर । शर्माजी को दो मिनिट में ही ध्यान लग गया । पांच मिनिट बाद आँख खुली तो शर्माजी का बुरा हाल था, हाथ पैर काँप रहे थे । बोले मैं तो मरा जा रहा हूँ, बाबा, ये अपनी माया समेटो, मेरे बर्दाश्त के बाहर है । बाउजी ने उनके कंधे पर धीरे से हाथ रखा तब वे कुछ शांत हुए । बाउजी ने प्रसाद के लिए कहा तो शर्माजी ने वो भी नहीं लिया और चले गए । फिर वे कभी नहीं आये ।

एक दिन मैं बाउजी से मिल कर घर आया । गर्मी बहुत थी, कूलर चला कर बैठ गया । अचानक बैठे-बैठे ही नींद आ गयी । बिल्कुल सजीव स्वप्न आया कि मैं परमहंस बाबा को कंधे पर बैठा कर पहाड में जा रहा हूँ । सर्दी बहुत थी, पगडंडी पर चल रहा हूँ, पीछे से शर्माजी खुली जीप में अकेले आ रहे हैं । बाबा से बोले आ जाओ बाबा तो बाबा बोले तू जा ये ले जायेगा मुझे । शर्माजी रुक गये । मैं चलता गया । एक छोटी नदी पार की जिसमे घुटनो तक बिल्कुल साफ पानी था, आर पार दिख रहा था । पार करके एक कच्चे मकान मे पहुँचे । अंदर दीपक जल रहा था । बाबा को उतार दिया । मैंने कहा बाबा आपका मकान तो कच्चा है तो बोले हाँ लाला अभी पक्का होने मे टाइम है । तेरे पास कितने पैसे हैं? मैंने कहा अभी तो नहीं हैं । बोले बाद मे करा देना । स्वप्न से आंख खुल गयी, पर लग रहा था जैसे स्वप्न नहीं है । देरी से खाना खाया फिर सो गया । फिर स्वप्न में बाबा कह रहे थे पक्का करा लाला । सुबह ये बात बाउजी को बताई, उन्होने कुछ नहीं कहा । शाम को बोले अब जब मैं कहूं तुम बाबा के पास जाना । बिना बताये मत जाना । मकान पक्का होने की बात तो लगभग 7 साल के बाद पता चली (बडे भाई साहब के साथ) । 14 अगस्त को सुबह मैं सेठी कॉलोनी गया तो बाउजी बोले आज जाना बाबा के पास ओर कहना मैं पास तो आप पास, मैं फेल तो आप फेल । ये बात समझ में तो नहीं आयी पर सोचा कहा है तो जाउंगा । उसी समय चल पड़ा । बाबा के मंदिर मे कोई नहीं था, कोई आवज़ नहीं आरही थी । ज़ाली से देखा तो बाबा अकेले बैठे थे । मैं अंदर गया । बोले क्यों आया है? मैंने कहा संदेश लाया हूँ । बोले पता है अंदर रबडी रखी है खा ले ओर जा । मैंने कहा मेरे गुरु भगवान ने कहा है कि मैं पास तो आप पास, मैं फेल तो आप फेल । बाबा ने मेरी ओर देखा, बोले, अच्छा, अभी मेरे बहुत काम बाकी हैं । अब तू जा फिर आना ।

शाम को वापस बाउजी से मिला, पूरी बात बताई । वे सामने बैठे थे पर कुछ सोच रहे थे । बोले ठीक किया अब कोई रोक नहीं है । कभी-कभी छोटे भी बड़ों का काम करते हें । मैंने कहा पर मैंने तो ऐसा कोई काम नहीं किया तो बोले प्रश्न मत किया करो, जो कहा है वो करो । सिंघल साहब आ गए तो उनसे सिर्फ झुक कर नमस्ते किया अन्यथा पैर छुने को थे । मुझे कहा अब जाओ, घर जाकर खाना खाओ ..... (पत्नी) आ जाएगी, पीछे पीछे मत जाना ।

15 अगस्त 1991 के दिन लगभग 10 बजे दिन मे ऑफिस से झंडा पहराने के बाद सीधा सेठी कॉलोनी गया । बच्चों के साथ में शैलेशजी और उसके मित्र पिकनिक का प्रोग्राम बना रहे थे । मैं नहीं गया । दिन भर बाउजी उठते रहे और बैठते रहे फिर लेट जाते । मैं बाहर छोटे कमरे में बैठा रहा और ऐसा लग रहा था की बहुत तेज नींद आरही हो, गर्दन भी बार बार झटके से आगे पीछे हो जाती थी मेरा कोई नियंत्रण नहीं रह गया था । दोपहर तक ऐसे ही बैठा रहा । दोनों आँखों के बीच ऐसा लग रहा था की घड़ी का पेन्डुलम हिल रहा है लेकिन वहाँ हाथ लगाने पर कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था । लगभग 3 बजे देखा कि बाउजी तख़्त पर बेठे हुए हैं । मैंने कुछ नहीं कहा और धीरे से उठ कर घर आकर सो गया । रात्रि करीब 9 बजे आँख खुली । सेठी कॉलोनी फोन करने की इच्छा हुई । मैंने फोन किया कि मै आज नहीं आऊंगा । पंकजजी ने फोन उठाया और बताया की बाउजी की तबीयत ठीक नहीं है । इसके बाद मैं अस्पताल पहुँचा, देखा की बाउजी लेटे हुए थे । पवन भाई साहब ने बताया कि बाउजी कोमा में हैं । 17 अगस्त को बाउजी ने शरीर त्याग दिया । मुझे लगा जैसे मैं हर तरह से लुट गया हूँ ।

.....

सितम्बर, 1972 की घटना है । तब तक गुरु भगवान (ठाकुर रामसिंहजी साहब) समाधि ले चुके थे । मेरे दूसरे पुत्र का जन्म हुआ था और मैं हॉस्पिटल से घर वापस आ गयी थी । उसी दिन शाम को दोनों वक़्त मिलने के समय मुझे बहुत अजीब अहसास हुआ । मेरा कमरा पीछे की तरफ था और उसी के दरवाज़े के सामने मकान मालिक के कमरे का दरवाज़ा था, जो बाहर बरामदे से होकर आता था । मुझे लगा की उनके कमरे से निकलकर, एक वृद्ध व्यक्ति, जिसकी लम्बी सफ़ेद दाढ़ी थी और एक दम सफ़ेद कपडे पहने हुआ था और बहुत गोरा था, वो मेरे कमरे में मेरी चारपाई के पास आकर खड़ा हो गया और बोला कि या तो अपने बच्चे को दो या पति को । मैं सब कुछ देखती-सुनती पर मेरी अवस्था जड़ हो जाती और मैं कुछ नहीं कर पाती थी । उसके जाने के बाद मैं फिर सामान्य अवस्था में आ जाती । यह सिलसिला कई रोज चला, मैं कुछ नहीं कर पाती, कोई जवाब ना दे पाती और सोचती यह एक ही सपना, एक ही समय में मैं रोजाना क्यों देखती हूँ, मेरी हालत ऐसी क्यों हो जाती है? मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था । मैं बहुत परेशान रहने लगी । तभी एक शाम मैंने देखा कि जब वह बूढा व्यक्ति मेरे पास आया और उसने अपना सवाल दोहराया तो उसी वक़्त मेरे और उसके बीच गुरु भगवान स्वयं साक्षात् खड़े थे । उन्होंने उससे कहा-'जा यहाँ से, तुझे कुछ नहीं मिलेगा ।' यह सुनते ही वो वहाँ से चला गया । उसके बाद वो मुझे कभी नहीं दिखा । बस उसी क्षण से गुरु भगवान मेरे जीवन में आ गए, उनके प्रति अटूट आस्था दिल में पैदा हो गई । उस बूढ़े व्यक्ति का जिक्र मैंने अपनी मकान मालकिन से किया तो वो तुरंत बोली, मैंने तो इसे मन्त्रों से बंधवाया था, शायद उसका असर समाप्त हो गया है । इसी ने इस घर में आते ही मेरे बेटे की बलि ले ली थी, ना जाने तुम कैसे बच गयी । अब मैं फिर मंत्रोपचार करवाउंगी और उन्होंने करवाया । तब मैंने उन्हें गुरु भगवान के बारे में बताया ।

.....

1984 में पिताजी ने मुझे कैंसर के एक मरीज को देखने उसके घर पर भेजा यह कहकर कि तुम कुछ बोलना नहीं बस इतना मालूम कर लेना कि डॉक्टर ने कितना समय बताया है उनके जीवित रहने का, उनको होश नहीं है, ना ही उनके पास ज्यादा वक़्त है । उनकी लास्ट स्टेज है और उन्होंने वसीयत भी नहीं की है, जो उनके परिवार को उनकी संपत्ति मिल जाये, देखो गुरु भगवान क्या चाहते हैं? मैं उन्हें देखने चला गया । वे कोमा में थे । बचना नामुमकिन था और 6-7 दिन से ज्यादा जिन्दा रहने की उम्मीद नहीं थी । डॉक्टर वहाँ बैठे थे । मैंने उनसे कहा कि अगर इज़ाज़त हो तो मैं इनकी हस्त-रेखा देख लूं, पिताजी ने भेजा है । डॉक्टर ने कहा देख लें, अब क्या बचा है? उनकी पत्नी ने कहा अगर इन्हें होश आ जाये तो हम वसीयत पर साइन करवा लें, नहीं तो हमें कुछ नहीं मिलेगा, रिश्तेदार सब लूट लेंगे । मैं कुछ नहीं बोला और वापस आने लगा । मैं जहाँ हाथ देखने जाता हूँ, उनसे कुछ नहीं लेता । उनकी पत्नी ने गोविन्ददेवजी के प्रसाद के चार लड्डू दिए । प्रसाद होने के कारण मैंने मना नहीं किया । मैंने प्रसाद ले लिया और उनसे बोला, माँ तूने चार लड्डू दिए हैं, इनकी उम्र गोविंददेवजी ने 28 दिन बढा दी है, तुम जो चाहे करवा लो, इनको होश आ जायेगा । वसीयत के कागज़ तैयार रखना । 8 दिन बाद उन्हें होश आ गया और वे कुछ ठीक भी हो गए । पेपर साइन किये और वसीयत भी की । ठीक 28 दिन बाद उनका देहांत हो गया । जब घर आया तो पिताजी बोले 'चार लड्डू में 28 दिन की जिन्दगी दे आया ।' मैंने कहा आपको कैसे मालूम तो वे बोले तू क्या सोच रहा है वहाँ देखने वाला तू था? मैं समझ गया यह किसकी लीला थी ।

.....

- 15 अगस्त को मेरी सास (मनभरदेवी) घर पर फोन सुनने आयीं थी । उनको आते देखकर, बाउजी (डॉक्टर चन्द्र गुप्ता) जो खाट पर लेटे थे, करवट बदल कर लेट गए । मेरी सास ने बहुत आवाज दी, पर बाउजी वैसे ही लेटे रहे । फोन सुनकर वापस जाते समय मेरी सास ने बाउजी से कहा की चलो बाउजी आपको हरिद्वार घुमा लाऊं । बाउजी ने यह सुनकर कहा-'तू जा । मैं तुझे हरिद्वार में ही मिलूंगा ।' मेरी सास उसी दिन हरिद्वार चली गयीं । इधर बाउजी ने 17 अगस्त को अपना शरीर छोड़ दिया । 18 अगस्त को मेरी सास का पांव फिसल गया और वो गंगाजी में गिर गयीं तो बाउजी ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें गंगाजी से बाहर निकाला । वापस आने पर मेरी सास को जब पता चला कि बाउजी नहीं रहे और उन्होंने 17 अगस्त को अपना शरीर छोड़ दिया तो उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ । वो आश्चर्यचकित थीं की 18 को तो बाउजी मुझसे हरिद्वार में मिले थे, फिर 17 को शरीर कैसे छोड़ सकतें हैं
- एक बार हम सब घरवाले गढ़-गणेश घुमने गए थे । वापस लौटते समय पीछे से मंदिर के पुजारी आवाज़ लगाते हुए आये कि डॉक्टर साहब जरा रुकिए । उनके दोनों हाथों में बहुत सारी बर्फी थीं जो काफी बड़े साइज़ की थीं । पास आकर बोला की मुझे गणेशजी ने हुक्म दिया है कि यह प्रसाद मैं आपको भेंट करूं ।
- एक बार मैं और पिताजी (डॉक्टर चन्द्र गुप्ता) घूम कर वापस आ रहे थे । तब तक सेठी कॉलोनी के सामने पेट्रोल पंप की जगह कच्चा रास्ता था । वहाँ काफी लोग जमा थे । एक औरत बाल बीखेरे जमीन पर बैठी थी और एक और बुज़ुर्ग औरत उसके पास खड़ी थी । पास ही एक आदमी काले कपडे पहने खड़ा था, जो उस बैठी हुई औरत में से भूत निकाल रहा था । पिताजी ने उस आदमी से पूछा की वो क्या कर रहा है, तो वो चिल्ला कर बोला-'मैं इस औरत में से भूत निकाल रहा हूँ । अगर तुम बोले तो ये भूत तुम पर छोड़ दूंगा ।' इतना सुनते ही वो औरत अचानक से उठ खड़ी हुई और उस तांत्रिक से जोर से बोली-'तेरी क्या औकात है? तुझको तो मैं कबका चीर-फाड़कर खा जाती । ये तो मैं इनकी ही वजह से चुप हो गई थी ।' ये सुनते ही वो तांत्रिक वहाँ से भाग गया । पिताजी ने उस औरत के सिर पर हाथ रखा, हाथ रखते ही वो बिलकुल शांत और ठीक हो गई । उसके बाद उस औरत ने अपनी सास से पूछा की ये कौन हैं, तो उसने बतलाया की इन्होने ही तुझे ठीक किया है । तब वो औरत पिताजी को प्रणाम करके चली गई ।
- 19 अप्रैल 1979 को मेरा अजमेर में आर. पी. एस. सी. का इंटरव्यू था । मैं उसके पहले कभी अजमेर नहीं गया था । इसलिए मैं 18 अप्रैल को ही अजमेर जाना चाह रहा था । पिताजी और अम्मा घर पर नहीं थे । बड़े भाईसाहब (श्री कृष्ण कुमार) घर पर थे । उन्होंने कहा कि अभी नहीं, कल सुबह जाना । मैं मान गया क्योंकि मुझे लगता था की मैं बिलकुल अनुभवहीन हूँ, और देने को मेरे पास पैसा भी नहीं था, तो वैसे ही मेरा सिलेक्शन नहीं होना । अगले दिन भाईसाहब मुझे बस स्टैंड छोड़ने गए । टिकट विंडो पर लम्बी लाइन लगी थी और साथ ही बस में सीट भी घेरनी पड़ती थी । मुझसे आगे एक बुज़ुर्ग खड़े थे । उन्हें भी अजमेर जाना था । वो बोले तुम सीट घेर लो, मैं टिकट लेता हूँ । मैंने बस में सीट घेर ली, वे टिकट ले आये । रास्ते में कुछ बांतें होने लगी । मैंने बतलाया कि मैं आर. पी. एस. सी. इंटरव्यू देने जा रहा हूँ । उन्होंने बताया की मैं डॉक्टर एस. एन. गौड़, सी. एम. एच. ओ., बांसवाडा हूँ और मैं भी आर. पी. एस. सी., अजमेर किसी काम से जा रहा हूँ । रास्ते मैं उन्होंने मुझसे कुछ सवाल पूछे । मैंने जवाब दिए और उन्होंने कुछ सुधार करवाए ।

हम सुबह 8 बजे अजमेर पहुँच गए । वो मुझे अपने साथ अपने एक रिश्तेदार के घर ले गए । वहाँ हमने नाश्ता किया । डॉक्टर गौड़ बोले मुझे भी आर. पी. एस. सी. में काम है, सो हम साथ चलेंगे । आर. पी. एस. सी. बिल्डिंग के गेट पर पहुँचकर बोले, 'देखो आज मैं भी एक एक्सपर्ट की तरह आया हूँ । अगर तुम्हारा नंबर मेरे बैच में आ गया तो कोई दिक्कत नहीं, वर्ना मैं तुम्हारी सिफारिश कर दूंगा ।' मेरा नंबर उन्हीं के बैच में था और उन्होंने वो बस में पूछे हुए सवाल ही पूछ लिए और मुझे सेलेक्ट कर लिया । यह सब पिताजी और भाईसाहब के आशीर्वाद से ही हुआ था । रिजल्ट आने पर भाईसाहब ने कहा की तूने मेरे पांव गुरु महाराज समझकर छूए थे । इसलिए तेरा सिलेक्शन होना ही था, जबकि डॉक्टर गौड़ ने जिन्दगी में किसी की मदद नहीं की थी ।

- मेरा विवाह 1977 में हो गया था । हमें एक पुत्री हुई, जिसे कुछ जेनेटिक ऐब्नोर्मलिटी थी, और वो 4 दिन बाद ही गुजर गई । उसके बाद मेरी पत्नी को एक एबॉर्शन हुआ और फिर एक पुत्र हुआ । उसे भी जेनेटिक ऐब्नोर्मलिटी थी, वो भी 5 दिन बाद गुजर गया । हमने 1981 में किसी बच्चे को गोद लेना चाहा पर रिश्तेदारों के कहने पर यह विचार त्याग दिया । 1981 में ही एक दिन मैं बाउजी से जिद पर अड़ गया कि वे कहें की मुझे बच्चे होंगे । उन्होंने कहा कि मेरे हाथ में कुछ नहीं है, जो कुछ भी है सब गुरु भगवान के हाथों में है । पर मैं नहीं माना । मैंने कहा कि मेरे तो गुरु भी आप ही हैं और पिता भी आप ही हैं । वे बोले, देखो जो कर्म किये हैं वो तो भुगतने ही पड़ेंगे, चाहे एक जन्म में भुगतो चाहे दस जन्म में । मैंने कहा यह सब आप जानो, तो उन्होंने आखिर में फ़रमाया-"अच्छा, जा तेरे बच्चे होंगे ।" इसके ठीक नौ महीने बाद मेरे बड़े बेटे का जन्म हुआ ।
- पवन भाईसाहब के एक दोस्त श्री जे. पी. सिंह घर आया करते थे । उन्हें अपना मकान बनवाना था, पर उन्हें पैसों की कुछ तंगी थी । उन्होंने पिताजी से रिक्वेस्ट की तो पिताजी ने उन्हें एक 5 रुपये का नोट दिया और कहा की इसे अपने मनी-बॉक्स में रखना । कभी पैसा कम नहीं रहेगा । उन्होंने ऐसा ही किया और उनका मकान करीब-करीब पूरा ही बन गया । तभी एक दिन बच्चों ने वो 5 रुपये का नोट निकालकर खर्च कर दिया । उसी दिन से उनके मकान का काम रुक गया ।
- 1983 में मेरी पोस्टिंग वरदा, सिरोही में थी । अम्मा और बाउजी वहाँ आये हुए थे । उस साल वहाँ बारिश बिलकुल नहीं हो रही थी । मैंने बाउजी से कहा कि यहाँ बारिश बिलकुल नहीं होती, तो उन्होंने कहा की इस साल यहाँ बहुत बारिश होगी और उस साल वहाँ बहुत बारिश हुई ।
- 1984-85 में मेरी पोस्टिंग पी. एच. सी., कालंदरी, सिरोही में थी । जिला प्रमुख का परिवार खाने-पीने वाला था अत: मेरा उनसे मेल-जोल नहीं था और वो मुझसे इस बात पर नाराज़ भी रहता था । एक दिन ट्रेक्टर से एक्सीडेंट होकर एक व्यक्ति की मृत्यु हो गयी । जिला प्रमुख और पुलिस के ऐ. एस. आई. के प्रलोभन देने और डराने धमकाने पर भी मैंने उनकी बात नहीं मानी की उसकी मृत्यु का कारण ट्यूबरक्लोसिस बता दूं ।

2-3 दिन बाद जिला प्रमुख का बेटा मेरे पास आया और बोला की कुछ लोग बीमार हैं, आप देखने चलो । मैंने मना कर दिया । उसने बहुत कहा, लेकिन मैं नहीं गया । वो गलियां देने लगा और बोला की आज आप बच गए, अगर चलते तो हम आपको मार देते । अगले दिन मैंने जिला प्रमुख को यह बताया तो उसने कहा की उसके बेटे ने सही किया । मैंने उनकी शिकायत पुलिस में और कलेक्टर से भी की पर कोई कार्यवाही नहीं हुई । उलटे जिला प्रमुख ने मेरे विरुद्ध डायरेक्टर, मेडिकल हेल्थ से शिकायत कर दी और वहाँ से पत्र आया की क्यों ना मेरे खिलाफ एक्शन लिया जाये । मैंने यह सब बाउजी को बताया । वे बोले-'तेरी जो इच्छा हो जवाब लिखकर भेज दे । आगे कुछ नहीं होगा और

आज उस लड़के (जिला प्रमुख के बेटे) को सजा मिल जाएगी ।' मैंने कुछ जवाब लिखकर भेज दिया । अगले दिन समाचार पत्र में खबर आई की जिला प्रमुख का बेटा शराब पीकर सो रहा था, रात को जलती हुई चिमनी उस की रजाई पर गिरी और वो जलकर मर गया ।

- हम सभी केदारनाथ गए थे । हमारे साथ डॉक्टर एस. एम. गुप्ता और उनका परिवार भी था । केदारनाथ पहुँचने के बाद डॉक्टर एस. एम. गुप्ता किसी पंडित को लाये कि यह 500/ रूपये में रात 11 बजे मंदिर में दर्शन करवा देगा । वैसे वहाँ बहुत लम्बी लाइन लगती है । रात करीब 10.30 बजे उन पंडितजी ने आकर बताया कि अभी तो दर्शन नहीं हो पाएंगे । कल सुबह आप चार बजे उठ कर तैयार हो जाना तो सुबह 6 बजे के दर्शन हो जायेंगे । यह सुनकर हमने मना कर दिया ।

रात को सोते समय मुझे ख्याल आया की बाउजी कहा करते हैं की शिवजी आदिगुरू हैं सो मैं यही सोचकर दर्शन कर लूँगा कि यहाँ बाउजी और अम्मा हीं हैं । यह सोचकर हम सो गए । सुबह-सुबह किसी आदमी ने आकर हमारा दरवाज़ा खटखटाया और कहा कि जाओ, जाकर मंदिर में दर्शन कर लो । हमने सोचा की शायद कोई दुकानदार होगा, सो उसी से हम प्रसाद ले लेंगे । पर वो आदमी हमें पूरे केदारनाथ में कहीं नहीं दिखा और हमने बहुत देर तक मंदिर में पूजा की ।

- नवम्बर 2000 में सुनीता का 'hysterectomy' करवाना था क्योंकि उसे बहुत ब्लीडिंग होती थी । सुनीता को एक पंडित ने, जिसने उसकी जन्मपत्री भी बनाई थी कहा कि आपके दो ऑपरेशन होंगे और दूसरे ऑपरेशन में आप नहीं बचोगी । इस वजह से सुनीता को ऑपरेशन करवाने में बहुत उलझन लग रही थी । ऑपरेशन करवाना बहुत जरुरी हो गया था । मैंने बड़े भाईसाहब (श्री कृष्ण कुमार) को कहा कि अगर आप जिम्मेदारी लो तो मैं उसका ऑपरेशन करवाऊंगा । भाईसाहब ने हाँ कह दी । ऑपरेट करते हुए डॉक्टर को बहुत दिक्कत हुई । सुनीता के टिश्यू इतने हार्ड थे कि उन्हें हेक्सा ब्लेड से काटना पड़ा था । इसी दौरान उसे करीब 10 मिनट तक कार्डियक अरेस्ट हो गया, जबकि 2 मिनट के कार्डियक अरेस्ट के बाद ही मृत्यु हो जाती है । सुनीता बिलकुल सही-सलामत रही । भाईसाहब ने बताया कि सुनीता की आत्मा तो शरीर छोड़कर बाहर आ गयी थी पर मैंने उसको वापस शरीर में भेजा । सुनीता को भी 10 मिनट के कार्डियक अरेस्ट के टाइम के अलावा पूरी सर्जेरी का हाल मालूम था कि उसके साथ क्या-क्या हुआ ।

.....

मैं अपनी फैक्ट्री के लिए कच्चा माल लेने रुद्रपुर गया था । यह करीब 1987-88 के आस-पास की बात है । मैं सुबह पहुँच गया और शाम को काम ख़त्म कर जब मैं बस स्टैंड पहुँचा तो पता चला की बसों की स्ट्राइक हो गयी है और कोई भी बस नहीं आ-जा रही है । उन दिनों वहाँ से आने-जाने का और कोई साधन नहीं था और छोटी जगह होने के कारण रात को वहाँ रुकने में भी मुश्किल थी । कुछ देर प्रतिक्षा करता रहा, रात घिरने लगी तो मैंने मन ही मन में बाउजी से प्रार्थना की । मुझे लगा की जैसे उन्होंने हाथ दिखाकर मुझे सांत्वना दी । मैं बस स्टैंड से बाहर आ गया की तभी एक बस दिल्ली-दिल्ली की आवाज़ लगाते वहाँ आकर रुकी और उसमे बैठकर मैं दिल्ली आगया ।

.....

- मेरी लड़की शशि के नीचे से माता निकली, वह काली हो गयी । फिर पेट पर निकली और वह भी काली पड़ गई । इसके बाद उसे चेहरे पर माता निकली और वह भी काली पड़ गई, लड़की बेहोश पड़ी रही । दूसरे दिन बाउजी आये, उन्होंने पूछा लड़की कैसी है? मैंने उसकी हालत बताई तो

बोले कोई बात नहीं है, मेरे भी सात दिन में दो-दो मरे हैं । फिर जेब से दवा की पुड़िया निकाली और बोले ये दे देना । अगर 8 बजकर 10 मिनट तक होश आ जाये तो ठीक है, वर्ना मरने दे । ठीक 8 बजकर 10 मिनट पर लड़की बड़े जोर से चीखकर होश में आगई और धीरे-धीरे ठीक हो गई ।

- मेरे देवर के बेटे का जो ढाई साल का था, लीवर ख़राब होगया । उसे जयपुर लेकर आये, डॉक्टर ने जवाब दे दिया, कहा यह बच्चा बचेगा नहीं, दो दिन का मेहमान है । मैंने कहा की मैं बच्चे को बाउजी को दिखाना चाहतीं हूँ । मेरे देवर बोले क्या फायदा, डॉक्टर ने जवाब दे दिया है, पर फिर भी आपकी इच्छा है तो दिखा लो । मैं और मेरी बहन सुबह बच्चे को लेकर बाउजी के पास आये । बाउजी बोले यह तो मरेगा, मैं क्यों बुरा बनूं । मैं जिद पर अड़ गई । बोली जब तक दवा नहीं दोगे, मैं खाना-पीना कुछ नहीं लूंगी । इस तरह वहीँ 2-3 बज गए । तब बाउजी बोले, अच्छा ऐसा है तो गुरु महाराज के सामने लेटा दे । वहीं गुरु महाराज की तस्वीर के आगे बच्चे को सोफे पर लेटा दिया । बाउजी ने कुछ दवा दी और बोले परसों फिर लेकर आना और इसका डब्लू. बी. सी. चेक कराकर लाना । काफी फायदा था । रास्ते में दवा की शीशी गिरकर टूट गई । बाउजी के पास ले जाकर बताया तो बोले अच्छा हुआ शीशी टूट गई । अब इसे मत लाना, किसी के हाथ दवा मंगा लेना । फिर बोले इसे पेशाब बहुत आएगा, डरना मत, उसी के जरिये बीमारी निकल जाएगी । आज वह बच्चा दो बच्चों का पिता है ।
- बड़ी बच्ची की शादी की बहुत फ़िक्र थी । मैंने बाउजी से कहा तो बोले देखेंगे । कुछ दिनों बाद दुबारा जिक्र करने पर बोले, 'बेटा, इसके विधवा होने का योग है ।' मैंने कहा अगर ऐसा है तो फिर इसकी शादी ही ना करें । बाउजी बोले इसके एक बच्ची का भी योग है । मेरी बच्ची को बदनाम कराएगी क्या? थोड़े दिनों बाद अचानक से भोपाल से एक रिश्ता आया और शादी पक्की हो गयी । बाउजी ने लड़के के तिलक किया । सगाई होने के बाद अचानक ही लड़के की तबियत ख़राब हो गई । 2-3 दिन हॉस्पिटल में रहना पड़ा । 4 महीने बाद शादी हो गई । बारात लौटते वक़्त लड़के की गाड़ी का पहियाँ टूट गया । जैसे-तैसे भोपाल पहुँचे । ढाई साल बाद एक बिटियाँ ने जन्म लिया, बिलकुल अपने पिता की शक्ल पाई । बच्ची जब साढ़े चार साल की थी, पिता की मृत्यु हो गई । बेटी ने इस तरह सात वर्ष का सौभाग्य देखा ।
- जैसी बाउजी की कृपा और विश्वास उन्होंने दिलाया था, जो कभी नहीं भूलने वाला प्रेम मेरे माता-पिता ने दिया, शायद बिरले ही गुरु दे पातें होंगे । मैं जाती थी, 4 बजते ही कहते-'बेटा घर जाओ, बच्चें इंतज़ार कर रहें हैं ।' कभी-कभी घर पर भी आ जाते थे । उनकी साइकिल से एक अजीब और दिलकश आवाज़ आती थी, यही उनके आने की पहचान थी । एक बार मेरे श्वसुरजी आये हुए थे और तीन-चार दिन से कह रहे थे कि मुझे भी अपने बाउजी के पास ले चल । एक दिन मैं उन्हें बाउजी के पास ले गई । पहुंचते ही बाउजी बोले कैसे आई और किसे साथ लेके आई है? मैंने कहा बाउजी मेरे श्वसुर हैं । बाउजी बोले अच्छा शुक्लाजी के पिताजी हैं । माँ ने बीच में ही टोका-'मेरी छोरी के श्वसुर हैं । कुछ कहना मत ।' दोनो में दुआ-सलाम हुई और बाउजी उन्हें अन्दर छोटे कमरे में ले जाने लगे । मैं भी पीछे-पीछे आने लगी तो बाउजी बोले, तू तो बाहर ही रह और वे दोनों भीतर चले गए । पता नहीं अन्दर क्या हुआ । बाहर आये तो मेरे श्वसुरजी साहब को पसीना आ रहा था । थोड़ी देर बाद चाय आई, चाय पी और हम दोनों घर लौट आये । रास्ते में मेरे श्वसुरजी बोले-'बाई, बड़ा तेज है डॉक्टर साहब में, मेरे पसीना ला दिया और अपनी परशादी चाय मुझे दे दी ।' यह कहकर मेरे श्वसुर साहब चुप हो गए । एक-दो दिन बाद मुझसे बोले-'बाई, डॉक्टर साहब बहुत पहुँचे हुए हैं ।'

.....

- एक दिन रविवार को प्रात: ध्यान के बाद पवन भाईसाहब एक उर्दू की पुस्तक उठाकर लाये, बाउजी को दी और कहा कि ये आप केशव बहनजी से अनुवाद कराने के लिए कह रहे थे । बाउजी बोले-'हाँ, बेटा, इसका हिंदी में अनुवाद करना है ।' मैंने प्रतिवाद किया कि मुझे उर्दू नहीं आती तो बाउजी ने विश्वासपूर्वक कहा कि तुम्हें उर्दू आती है । वह किताब उर्दू में लिखी हुई थी, उसका नाम 'सुदर्शन का मेला' था । बाउजी के यह कहने पर की तुम्हें उर्दू आती है, मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि हाँ, मुझे उर्दू आती है । उनके आदेश को सहर्ष स्वीकार किया । इस कार्य को पूरा करने में मुझे लगभग एक वर्ष लगा । मैंने अपनी पुरानी पुस्तकों में उर्दू का कायदा ढूंढा, जो मुझे मिल गया और उसे पढ़ना-सीखना शुरू किया । एक सप्ताह में मुझे उर्दू पढ़नी आ गयी । इसके बाद नियम बनाकर प्रतिदिन सुबह एक घंटा यह अनुवाद का कार्य करने लगी । उसमें कुछ फारसी के शब्द बी थे, जिनका अर्थ समझ नहीं आता था । मुझे विचार आया की उर्दू अकादमी से हिंदी-उर्दू शब्दकोष लाया जाये । शब्दकोष रफरेन्स बुक होती है जो सामान्यत: लोगो को घर ले जाने के लिये नहीं दी जाती लेकिन गुरु कृपा से उन्होंने मुझे सहर्ष जारी कर दी । शब्दकोष देखकर मैंने पुन: पाण्डुलिपि को संशोधित किया । इस कार्य में 3-4 महीने लग गए । तभी उर्दू अकादमी से शब्दकोष लौटाने का फोन आगया । मेरा कार्य पूरा हो चुका था, मैंने शब्दकोष लौटा दिया । यह गुरुकृपा का एक दृष्टांत है ।

मुझे आदि शंकराचार्य की जीवनी का एक प्रसंग याद हो आया की उन्होंने एक मूक बालक के मुख से वेद की ऋचाएं सुनवा दी थीं । मुझे भी उर्दू कहाँ आती थी पर उन्होंने 300 से भी अधिक पृष्ठों वाली उस उर्दू पुस्तक का मेरे माध्यम से अनुवाद करवा दिया । यह भी ऐसा ही एक दृष्टांत है ।

- 15 जनवरी 1991 को भंडारे के दिन हमारे दोनों बच्चे ज्वरग्रस्त थे । बुखार बहुत तेज था पर भंडारे में जाने की बहुत तीव्र इच्छा थी । हम दोनों बच्चों को छोड़कर भंडारे में पहुँचे तो बाउजी हमे देखकर बहुत प्रसन्न हुए । मेरे चेहरे पर चिंता की लकीरें थीं परन्तु जैसे वे बेखबर हो रहे थे । हमने उनसे कहा भी की बच्चों को बहुत तेज बुखार में छोड़कर आ रहें हैं । ध्यान के बाद बाउजी ने हमे रोका और कहा प्रसाद लेकर जाना । वे बहुत प्रसन्न दिख रहे थे । हमने जल्दी-जल्दी प्रसाद लिया और उनकी आज्ञा लेकर घर पंहुचे । दोनों बच्चे चैन की नींद सो रहे थे । हमारे पहुँचने पर मल्लिका ने बताया कि हमारे सिरहाने बाउजी खड़े थे और हमारे सिर पर हाथ फेर रहे थे तो हमे ऐसा लगा जैसे हमारा बुखार ही उतर गया हो । हमने बुखार नापा तो बहुत कम था । हमने वहीँ से बाउजी को कोटिश-कोटिश नमन किया ।

पूर्ण गुरु ऐसे शक्ति संपन्न होतें हैं कि संकल्प मात्र से कहीं भी आ-जा सकतें हैं ।

- जब मल्लिका जोधपुर, जय नारायण यूनिवर्सिटी से एम. बी. ऐ. कर रही थी तो वहाँ हॉस्टल में रहती थी । एक बार उसने बताया कि उसके कमरे की खिड़की के सामने एक बड़ा सा पेड़ है । उसकी ओर देखकर अजीब सा लगता है । कभी-कभी तो ऐसी स्थिति हो जाती है की अपने आप नाचने लग जाती है, हंसने लग जाती है । मुझे बहुत चिंता हुई । मैंने भाईसाहब को बताया तो उन्होंने ध्यान कराया और बताया कि उसके कमरे की खिड़की के बाहर बड़े पेड़ पर एक ब्रह्मराक्षस है, जो उसे परेशान कर रहा है । मैंने उसकी मुक्ति के लिए प्रार्थना कर दी है । वह अपनी मुक्ति के लिए ही परेशान कर रहा था, अब नहीं करेगा । भाईसाहब ने यह भी बताया कि ये ब्रह्मराक्षस किसी मजबूत व्यक्ति को अपनी मुक्ति के लिए माध्यम बनाते हैं । इसके बाद मल्लिका की समस्या दूर हो गई ।

- आरम्भ में जब हम ध्यान में बैठते तो मुझे प्राय: मंदिरों के दर्शन होते । सफ़ेद मार्बल का ऊँचा मंदिर प्राय: दिखायी देता । ध्यान के बाद भाईसाहब कहते कि बहनजी आप मंदिरों में अटक जाती हो । एक दिन ध्यान के बाद भाईसाहब ने कहा कि हमने पूर्व जन्मों में शिव की बहुत आराधना की है । बाद में मुझे मंदिरों के दर्शन बंद हो गए । एक दिन ध्यान में मुझे एक आश्रम दिखाई दिया, जिसके एक कक्ष में दो आदमकद साधकों के चित्र (शीशे में जड़ी हुई तस्वीरें) थे । दोनों के गले में लम्बी-लम्बी फूलों की मालाएं थी । फूल भी ताजा प्रतीत होते थे । मुझे ऐसा लगा की बड़े चित्र में भाईसाहब हैं और छोटे में मैं हूँ । ध्यान के बाद मैंने भाईसाहब को बताया । भाईसाहब ने सहमती प्रकट की और बोले, हाँ, आज भी उस आश्रम में वह चित्र लगें हैं । आप पूर्व जन्म में या तो मेरी बहन थीं या शिष्य ।
- गोयल साहब को कैंसर हो गया था । एक बार तो ठीक हो गए, परन्तु पुन: एडवांस्ड स्टेज में कैंसर पहुँच गया । भाईसाहब भाभीजी के साथ हॉस्पिटल देखने आये और बताया प्रार्थना अस्वीकार हो गई है । गोयल साहब ने 12 दिसम्बर 2003 को प्रात: 4 बजे प्राण छोड़े और आत्मरूप से सीधे सेठी कॉलोनी भाईसाहब के पास पहुँचे । भाईसाहब ने बताया कि उन्होंने उनके शरीर से काला सा आदमी अलग किया और उनकी आत्मा को गुरु भगवान के सुपुर्द किया ।

सब सम्बन्धियों को लगता था कि मैं यह आघात सहन नहीं कर पाउंगी । यही बात भाईसाहब ने बाद में मुझे बताई कि आप शरीर छोड़ जाती, इसलिए हमें आपके दिल को कठोर करना पड़ा । वस्तुत: मेरी स्थिति बिलकुल शांत और स्थिर सी हो गई थी । भाईसाहब ने मुझे गीता पाठ करने को कहा था । मेरी माताजी शोकमग्न होतीं तो मैं उन्हें भी सांत्वना देती ।

एक दिन ध्यान में मैंने गोयल साहब को बहुत आतुर होकर पुकारा और कहा की आप कहाँ हो, कृपया मुझे बताइये । मुझे स्वप्न में दिखाई दिया कि कोई पर्वतीय क्षेत्र जैसा स्थान है जहाँ बहुत से संत ध्यान में लीन हैं, वहीँ गोयल साहब भी ध्यान लगाये बैठे दिखलाई दिए । मुझे भाईसाहब की बात स्मरण हो आई कि उन्होंने गोयल साहब को गुरु भगवान को सुपुर्द कर दिया है । मेरे मन को बहुत शांति प्राप्त हुई ।

.....

दादागुरु (डॉक्टर चन्द्र गुप्ता) द्वारा होम्योपैथिक की दवा का ज्ञान हुआ तो मैं अपनी बीमारी (एपिलेप्सी) की दवाई ले लेता । लेकिन मेरे मन में विचार आया और जब भी उनकी समाधि पर ढोक लगाने जाता तो फूल की पत्ती या भभूत दादागुरु की दवा समझ कर ले लेता । मुझे विश्वास था कि वे मुझे ठीक कर देंगे । दादागुरु ने मुझे एक होशियार होम्योपैथिक डॉक्टर के पास पहुँचा दिया, गुरु परिवार के ही एक सदस्य द्वारा । वर्तमान में मेरी बीमारी 95-96 प्रतिशत ठीक हो गई है, और कभी अटैक होता भी है तो पहले ही अहसास हो जाता है और मैं सम्हल जाता हूँ ।

एक बार हम स्कूटर से सत्संग के लिए आ रहे थे की रास्ते में मुझे दौरा पड़ गया लेकिन गुरु कृपा से स्कूटर सही दिशा में जाकर दीवार के सहारे खड़ा हो गया और हम सुरक्षित बच गए । जब गुरूजी (भाईसाहब) के पास पंहुचें तो उन्होंने हमें डांटकर कहा कि मैं कब तक बचाता रहूँगा? स्कूटर चलाना बंद करो, और यहाँ स्कूटर पर कभी नहीं आना । थोड़े दिनों बाद मैंने स्कूटर बेच दिया ।

.....

- मैं बाउजी के पास सन 1990 में पहली बार गया । मैंने उनसे पूछा कि क्या आप मेरा पिछला जन्म बता सकते हो? बाउजी ने ऊँगली से ऊपर इशारा करते हुए कहा कि वो चाहे तो तुम्हारे इस पृथ्वी पर जितने जन्म हुए हैं सब बता सकता है, पर इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी । फिर मैं रूस चला गया । फिर 1991 में जब मैं दुबारा जयपुर आया, मुझे जौंडिस हो गया था, और मैं अपने कमरे में आराम कर रहा था । यह बात 16 अगस्त की है, जब मुझे आभास हुआ कि अचानक बंद दरवाजे से बाउजी मेरे पास आये और मुझे देखते रहे और फिर चले गए ।

19 अगस्त को जब अनंत मुझसे मिलने आया तो उससे मालूम चला कि 17 अगस्त को बाउजी ने शरीर छोड़ दिया है । जब मैं वापस रूस चला गया तो वहाँ भी बाउजी ने मेरी बहुत मदद की । एक बार मैं एक ऐसे एरिया से निकल रहा था जहाँ बहुत ज्यादा गुंडागर्दी थी । रात का समय था, मुझे बहुत डर लग रहा था । तभी मुझे अचानक से बाउजी की याद हो आई और उसी समय मैंने देखा कि सामने से ट्राम आ रही थी । मैं जल्दी से उसमें बैठकर अपने हॉस्टल आ गया ।

- मेरठ में मेरे बैंक मेनेजर के साथ एक ग्राहक ने मार-पीट कर दी । मुझे गवाह बनाया गया । नाराज ग्राहक ने मुझे परेशान करने के लिए पुलिस में झूठी शिकायत कर दी । पूछताछ के लिए मुझे बार-बार थाने बुलाया जाने लगा । परेशान होकर थाने में ही मैंने मन ही मन भाईसाहब से प्रार्थना कर कहा कि ऐसे कब तक चलेगा? उस दिन के बाद उस मामले में मुझसे फिर कोई पूछताछ नहीं हुई ।

.....

- मेरी बहन की शादी 9 मई 1993 को मोतीडून्गरी रोड पर थी । बारात आने के कुछ देर बाद ही आंधी-तूफ़ान आना शुरू हो गया । भाईसाहब शादी में पधारे और बोले आप तो अपना काम करते रहो और मैं तो चलता हूँ । इतना भारी तूफ़ान व बारिश आई की आसपास दो-चार किलोमीटर में जो शादियाँ हो रहीं थीं कहीं पर टेंट उखड़ गए, कहीं पर लाइट चली गई, कहीं खाना ख़राब हो गया । लेकिन मेरे यहाँ गुरु कृपा से बिना किसी परेशानी के शादी का कार्यक्रम पूरा हो गया जब कि विवाह स्थल के बाहर एक बड़ा भारी नीम का पेड़ जड़ सहित उखड़ गया ।

- 16 सितम्बर 1997 की रात ढाई बजे की बात है । मैं चिकनी मिटटी व ईंटों से बने अपने पुराने कमरे में सो रहा था । मुझे कमरे की टीन शेड पर बिल्लियों के लड़ने की सी आवाज़ आई । मेरी नींद खुल गई और मैंने सोचा की उठकर बिल्लियों को भगा दूं । मैंने दरवाजे की कुण्डी पूरी खोली भी नहीं थी की कमरे के उपर दादावाडी जैन मंदिर की पत्थरों से बनी 40 फिट लम्बी और 25 फिट ऊंची दीवार गिर पड़ी । मैं कमरे के भीतर ही था और ऊपर आसमान दिखाई दे रहा था । मेरी पत्नी और छोटा बेटा जो कमरे में ही दूसरे पलंग पर सो रहे थे, उस दीवार के मलबे के नीचे दब गए । मलबा इतना ज्यादा और भारी था की 10-20 आदमी जो इकठ्ठे हुए मिलकर हटा नहीं सके । बहुत आवाज़ लगाई पर कोई जवाब नहीं मिला और ना ही कोई रोने-चिल्लाने की आवाज़ आ रही थी । सब ने सोचा की वे दोनों दब कर मर गए होंगे । मैंने लोगों से कहा कि इस साइड से मलबा हटाकर उन्हें निकालने की कोशिश करो । उस तरफ से उनको निकाला तो वे दोनों ऐसे निकले मानो कुछ हुआ ही नहीं हो । उनकी हड्डी टूटना तो दूर, खरोंच भी नहीं आई । दूसरे दिन भाईसहाब को आकर बताया तो वे बोले आपका मृत्यु योग था लेकिन गुरु भगवान की कृपा है की आप बच गए ।

- हमारे पुरखों की आपसी लड़ाई व लापरवाही के कारण हम हमारी जमीन का मुक़दमा बिना पैरवी, सुप्रीम कोर्ट से एक-तरफ़ा हार गए । सन 1998 में कोर्ट के आदेश से पुलिस और जीती हुई

पार्टी के साथ मजिस्ट्रेट अचानक से खाली जमीन का कब्ज़ा लेने आ पंहुचा । हमारे पास मकान खाली करने के अलावा कोई उपाय नहीं था । सभी परिवारवालों की आँखों में आंसू थे और डर के मारे सब के हाथ पांव कांप रहे थे । हमें लग रहा था हमारा सामान बाहर फेंक दिया जायेगा और हमसे जबरन घर खाली करवा लिया जायेगा । पूरे समाज में बदनामी होगी और हम सामान लेकर कहाँ जायेंगे? मैंने बाउजी व भाईसाहब से मन ही मन प्रार्थना की कि अब क्या होगा? मजिस्ट्रेट व पुलिस वाले घर में घुसकर खड़े हो गए । 10-15 मिनट तक वे खड़े रहे फिर अचानक ऐसा चमत्कार हुआ कि मजिस्ट्रेट पुलिस फोर्स को लेकर बिना कार्यवाही किये वापस लौट गया । हम बिना परेशानी अभी भी वहीँ रह रहें हैं ।

- मेरे छोटे भाई की बेटी की शादी सन 2007 में हुई थी । शादी का लावणा बांटते समय उसकी सास मोटर साइकिल से उछलकर गिर गई, जिससे सिर में चोट लगने से वो कोमा में चली गई । बांगड़ हॉस्पिटल में इलाज करवाया परन्तु उन्होंने 10-15 दिन बाद छुट्टी दे दी की ना जाने इन्हें कब होश आएगा, घर ले जाकर सेवा करो । लड़की के ससुराल वालों ने लड़की को मनहूस मानना शुरू कर दिया और उसे ताने देने लगे । मैंने समाधि (बाउजी, अम्मा व भाईसाहब की समाधि जो सेठी कॉलोनी में है) पर आकर प्रार्थना की व भाभीजी को सब बांतें बताई । एक रात मुझे स्वप्न दिखा कि बच्ची की सास जहाँ गिरी थी वहाँ कभी कब्रिस्तान था । यदि तीन गुरुवार बच्ची अपने ही घर की छत पर एक कोने में रेवड़ी का प्रसाद रखे तो शायद ठीक हो जाये । पहले गुरुवार को प्रसाद रखते ही दूसरे दिन उसकी सास कोमा से बाहर आ गई और अगले गुरूवार प्रसाद रखने के बाद वो चलने-फिरने लगी । अब वो पूरी तरह ठीक हैं ।
- एक रिश्तेदार मेरे घर आये व मेरे पास आकर बैठ गए । आलमारी में रखी भाईसाहब की फोटो देखकर बोले कि इस फोटो में से प्रकाश आ रहा है । मैंने कहा आपको मजाक उड़ाने के लिए मैं ही मिला था? मैंने या घरवालों ने किसी ने भी कभी प्रकाश निकलते नहीं देखा । वे बोले मजाक नहीं उड़ा रहा, बल्कि यह हकीक़त है । यह प्रकाश पहले आपकी तरफ जा रहा है व आपके पास से मेरे पास आ रहा है । भाईसाहब की फोटो से निकलते प्रकाश से वे बहुत प्रभावित हुए । एक दिन वे अपनी बेटी को लेकर आये जो ना तो पूरा सुन पाती थी ना बोल पाती थी । घर वाले परेशान थे की यह कैसे पढेगी और कैसे इसकी शादी होगी? मैंने उन्हें उसे किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाने के लिए कहा और बोला कि इसमें भाईसाहब क्या करेंगे? इस पर वो बोले की आप प्रार्थना तो कर दो । मैंने कहा प्रार्थना से क्या होगा, मानना ना मानना भाईसाहब की मर्जी पर है, मैं क्या कर सकता हूँ । लेकिन मेरी प्रार्थना स्वीकार हो गई । आज वो बच्ची खूब बोलती व सुनती है । बाद में उन्होंने बताया वो बच्ची के इलाज पर लाखों रूपये खर्च कर चुके थे ।

.....

- भाईसाहब पिछले दो दिनों से मेरी पुत्रवधू के बारे में पूछ रहे थे, जो मायके गई हुई थी । इसके पीछे जरुर कोई कारण होगा, यह सोच मैं छुट्टी लेकर पुत्रवधू के मायके रींगस पहुँच गया । वहाँ अजब माजरा था । उसके पिताजी उसका इलाज झाड-फूंक वालों से करवा रहे थे । उसे लेकर पहले मैं अपने गाँव गया और डॉक्टर से दवा दिलवाई पर कोई फायदा ना होते देख, मैं उसे गाँव ही छोड़कर भाईसाहब के पास आ गया । उन्होंने फिर पूछा तो मैंने पुत्रवधू की हालत के बारे में बता दिया और यह भी की मैंने सब गंडे-तावीज आग में फेंक दिए । भाईसाहब ने कहा कि पुत्रवधू को इधर ले आना

। मैं गाँव जाकर अगले दिन भाईसाहब के ऑफिस जाने से पहले ही पुत्रवधू को लेकर उनके पास पहुँच गया ।

भाईसाहब ने दो मिनट सामने बैठाया, सिर पर हाथ रखा और कुछ प्रसाद खिलाया और बोले बहु को वापस छोड़ आओ । मैं उसे वापस छोड़ आया, वह अब बिलकुल ठीक थी । अगले दिन मैंने भाईसाहब से हिम्मत कर पूछा तो उन्होंने बताया कि उसके शरीर में दो-दो प्रेतात्माएं घुसी हुई थीं । एक आत्मा जो उनके घर के सामने कुआ है उससे और दूसरी तुम्हारे घर के पास से । बाद में मैंने पुत्रवधू के बुजुर्गों से पता किया तो उन्होंने बताया कि कुए में एक औरत गिरकर मर गई थी ।

- बड़े लड़के की शादी में 700 लोगों के खाने का इंतजाम किया था लेकिन 1300 से ज्यादा आदमी आ गए । पत्तल-दौने भी और मंगाने पड़े । हलवाई घबरा गए की खाना कम पड़ जायेगा । मैंने खाना शुरू होने से पहले गुरु भगवान की थाली निकाली, दीपक जलाकर गुरु भगवान को भोग लगाया, भोग लगाते समय अश्रुधारा बह निकली, कि आप जानो, आपका काम जाने । सब लोग जीम गए और 300 लोगों का खाना बच रहा । बाद में भाईसाहब ने कहा जब तुमने गुरु भगवान पर डाल ही दिया तो गुरु भगवान कैसे पीछे हटते । रिद्धि-सिद्धि अपने आप काम करने लगतीं हैं । यह सब विश्वास पर निर्भर है ।

- भाईसाहब मेरे घर गाँव में दो बार गए । अपनी वैन में बैठाकर मुझे ले गए । गाड़ी कीचड़ में फंसकर गन्दी हो गई । वापस आते वक़्त छोटे भाई की दूकान पर जो रास्ते में ही चोमू में थी रुके । उसने गाड़ी सर्विस के लिए सामने ही गैराज में दे दी । इतनी देर भाईसाहब दूकान पर बैठे । दूकान बिलकुल नहीं चलती थी, खर्चा भी नहीं निकलता था । लौटते हुए भाईसाहब ने उसे एक रुपया दिया और बोले-'भगवान सहायजी एक रुपया दिया है, बरक़त तो करेगा ही ।' दूकान ऐसी चली की कुछ ही वर्षों में वे करोड़पति हो गया और आज उसके पास दो-दो फक्ट्रियां हैं । एक दिन भाईसाहब ने पूछा कि तुम्हारा वो भाई आता नहीं है । मैंने कहा वो कुछ दिन आया था अब उसके बाद याद भी नहीं करता है । भाईसाहब बोले वह अभी माया में फंस गया है । खैर जो तुम्हारे पास है वो उसके पास नहीं ।

- एक बार भाईसाहब से मैंने अपनी वर्षों पुरानी जिज्ञासा को शांत करने के लिए पूछा कि मैं 1969 में आर्मी में हैदराबाद ट्रेनिंग सेण्टर में ट्रेनिंग ले रहा था तब ग्राउंड में मेरे ऊपर एक दस फिट लम्बी-ऊंची दीवार, जिससे मैं चिपक कर बैठा था गिर गई थी । मुझे इतना पता था कि मैं दब गया हूँ लेकिन उसी क्षण किसी शक्ति ने मुझे बाहर फेंक दिया और मुझे खरोंच तक नहीं आई । जहाँ मैं पड़ा था वो दीवार का आखरी छोर था । मुझे किसने बचाया? भाईसाहब ने कहा की तुम्हें हनुमानजी ने बचाया था और फिर मुझसे पूछा की तब तुम क्या करते थे । मैंने बताया कि तब मैं हनुमानजी की ही पूजा करता था, उनका व्रत और सुबह शाम पूजा आदि करता था । भाईसाहब ने बताया कि देवता भी मनुष्यों की अप्रत्यक्ष रूप से मदद करते हैं, हमें मालूम भी नहीं चलने देते और गुरु भगवान हमारी साये की तरह मदद करते रहतें हैं ।

.....

- एक बार जनवरी भंडारे के बाद हम लोग हॉल में सो रहे थे । श्री यादव साहब भी आये हुए थे । सुबह उठकर बहुत भाव-विभोर हो वे बाउजी से बोले बाउजी हमसे तो कुछ नहीं होता । बाउजी ने

उन्हें गले से लगा लिया और बोले-'बेटा, यह सब मैं तुम्हारे लिए ही तो कर रहा हूँ । तुम्हें कुछ करने की जरुरत नहीं है ।

- एक बार बाउजी दिल्ली आये हुए थे । मैं बाउजी के पास बाहर हॉल में सोया था । थोड़ी देर बाद मेरी आखं खुल गयी और मैंने तुरंत बाउजी को पीने के लिए पानी पेश किया । वे भी तभी जगे थे और उन्हें प्यास लगी थी । बहुत खुश हुए और बोले-'बेटा, यह दिल मिलने की निशानी है' और उन्होंने इस मामूली फ़र्ज अदायगी को बहुत बड़ी सेवा मानकर स्वीकार किया ।
- इस सिलसिला-ऐ-आलिया के बुजुर्गों की शान निराली है । बाउजी कभी-कभी हजरत अबुल हसन खिरकानी साहब के किस्से सुनाया करते थे और उन्होंने बताया था की हजरत अबुल हसन खिरकानी साहब के सात किस्से हैं और अगर कोई उनके ये सातों किस्से सुने तो उसका अदने से अदना यह दर्जा होगा की मृत्यु के बाद वो हजरत अबुल हसन खिरकानी साहब के सामने उनकी चादर पर बैठेगा और धर्मराज उसका पाप-पुण्य का हिसाब नहीं कर सकेगा । उन्होंने यह भी बताया था की यदि सच्चे दिल से उनके नाम की आन देकर कहा जाय तो पत्थर में भी नाद की आवाज़ (जिक्र) पैदा हो जायेगी ।

14-15 जनवरी 1990 को जयपुर भंडारे में हाज़िर होकर, 16 को दिल्ली में श्री अशोक अग्रवाल के घर शाम को ध्यान में बैठे । वहाँ उनका एक कजिन विनोद भी आया हुआ था । मन में स्वत: ही कुतब-ऐ-आलम हजरत अबुल हसन खिरकानी साहब का ख्याल आ गया । वहाँ सभी लोग, अनीता, बच्चे व अशोक की पत्नी ममता वैगरह थे । ख्याल आया कि उनकी आन है कि इस घर में सभी व्यक्ति जो मौजूद हैं वे 'चलने लगें' (उनके हृदय में नाद की आवाज़ पैदा हो जाये) । हमने दो मिनट ही ध्यान किया होगा की विनोद के कहने पर पूजा समाप्त कर दी । करीब एक साल बाद बाउजी दिल्ली आये हुए थे और मैं उन्हें श्री अशोक के घर लेकर गया । बाउजी ने अभी उस कमरे में कदम भी नहीं रखा था, बाहर से ही वे बोले, बेटा क्या बात है कि इस कमरे के पत्थरों में से भी आवाज़ (नाद) आ रही है? तुरंत मुझे पिछले साल की उस घटना का स्मरण हो आया और मैंने उन्हें बताया कि मैंने हजरत अबुल हसन खिरकानी साहब का नाम लेकर सब 'चलने लगें' प्रार्थना की थी । बाउजी ने फ़रमाया, हां, यही कारण है । यह हजरत अबुल हसन खिरकानी साहब के नाम का कमाल है ।

.....

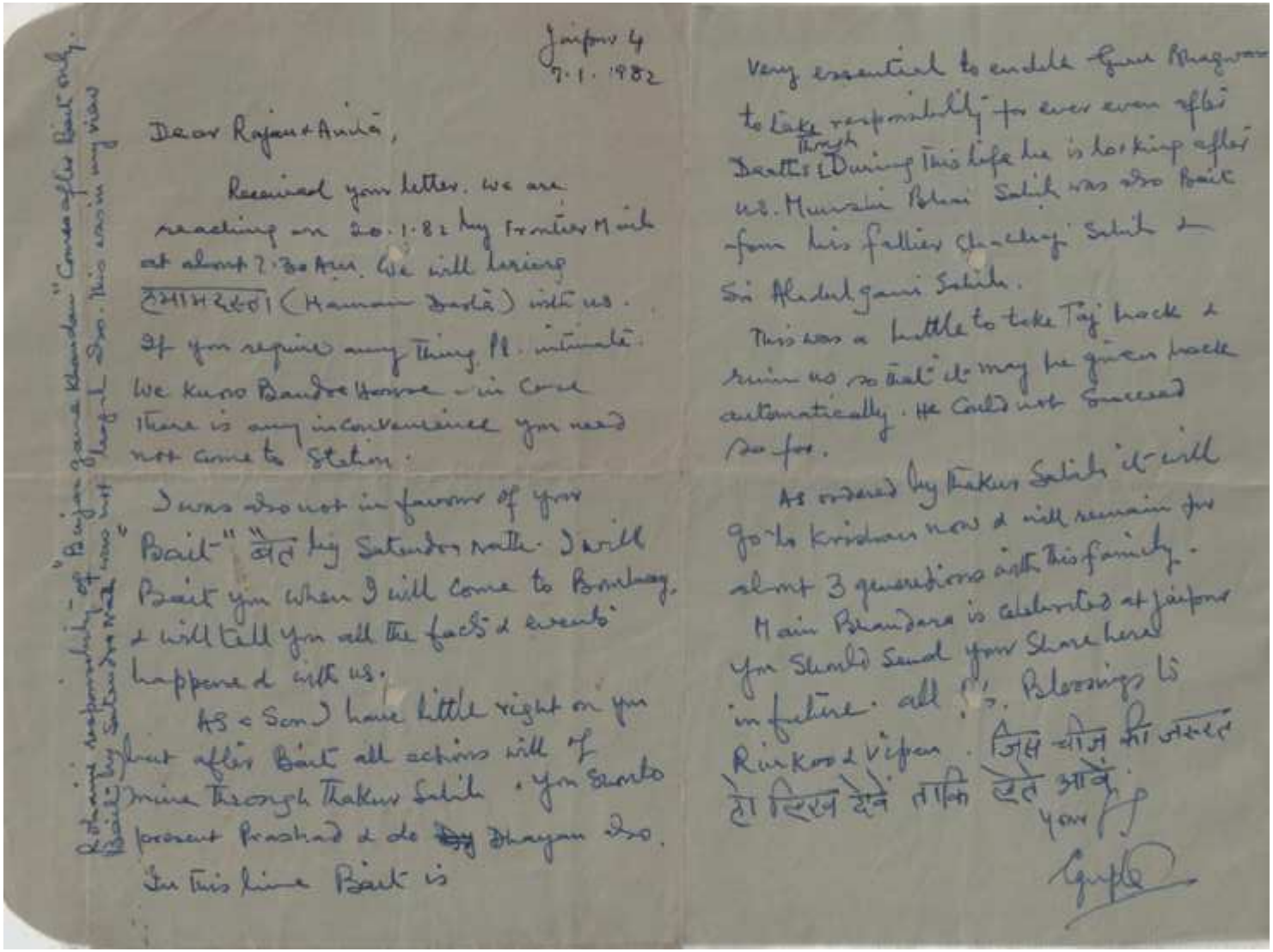

Jaipur 4
7.1.1982

Dear Rajan & Anita,

Received your letter. We are reaching on 20.1.82 by Frontier Mail at about 7.30 AM. We will bring हनुमानदास (Hanuman Dada) with us. If you require any thing Pl. intimate. We know Bandra House - in case there is any inconvenience you need not come to Station.

I was also not in favour of your "Bait" "बैत" by Satender Nath. I will Bait you when I will come to Bombay, & will tell you all the facts & events happened with us.

As a Son I have little right on you but after Bait all actions will of mine through Thakur Sahib. You should present Prashad & do Bhajan also. In this line Bait is

very essential to enable Guru Bhagwan to take responsibility for ever even after Death & through During this life he is looking after us. Munshi Bihari Sahib was also Bait from his father Chachaji Sahib & Sri Abdul Gani Sahib.

This was a battle to take Taj back & given us so that it may be given back automatically. He could not succeed so far.

As ordered by Thakur Sahib it will go to Krishan now & will remain for almost 3 generations with this family.

Main Bhandara is celebrated at Jaipur. You should send your share here in future. All [illegible]. Blessings to Rinkoo & Vipan. जिस चीज की जरूरत हो लिख देवें ताकि लेते आवें।

Yours

Gupta

"Beijon Jame Khandan" comes after Bait only. [illegible] This was my view [illegible]

Jaipur 4
27.9.88

Dear Son Blessings,

I heard Gita in Poem written by you word by word. I am over joyed & my heartiest blessings & Pray to Guru Bhagwan to bestow you "Param Pad" [illegible] during this life. you may work for Guru Bhagwan's mission now. Guru Bhagwan has got me crossed the ocean of [illegible] & showed me that "Baitarni River" Lacs of People have crossed. my book is now complete due to his 'Love'. my book & you may get Printed the Gita & my book if you so desire. I have written two experiences more. If considered necessary Gita Press may be contacted for Gita Publication in their Kalyan chapter by chapter for Public. There is no another God for me except my Guru Bhagwan. He may bestow all happiness & his Love to you & your wife. all OK Blessings to Rinku & Vipin.

your father
Gupta

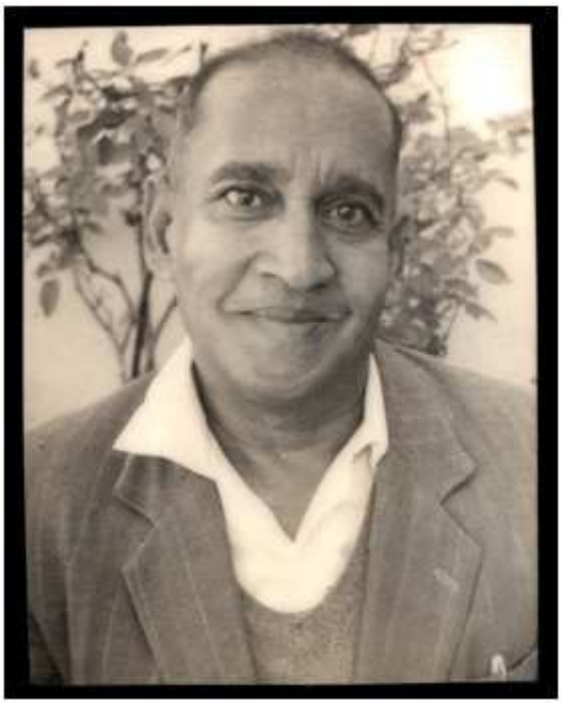

महात्मा डॉक्टर चन्द्र गुप्ता

महात्मा डॉक्टर चन्द्र गुप्ता अपने वक़्त के पूर्ण सतगुरु महात्मा श्री राधा मोहन लालजी साहब जिन्हें वे बादशाह फ़क़ीर कहा करते थे, के एक ऐसे दीक्षित शिष्य हुए हैं, जिन पर अनेक संत-महात्माओं ने अपनी कृपावृष्टि की। परम संत ठाकुर रामसिंहजी एवं हजरत मौलवी अब्दुल रहीम साहब ने उनकी रूहानी परवरिश की और उन्हें ही नहीं बल्कि उनके पूरे परिवार और उनके द्वारा लाये सत्संगी भाई-बहनों को भी अपनी कृपा से मालामाल कर दिया। महात्मा डॉक्टर चन्द्र गुप्ता में इस सिलसिला-ऐ-आलिया नक्श्बंदिया के महान संतों, हजरत शाह मौलाना फ़ज्ल अहमद खान साहब एवं हजरत मौलवी अब्दुल गनी खान साहब दोनों की ही निस्बत का एक अनोखा समन्वय देखने को मिलता है। महात्मा डॉक्टर चन्द्र गुप्ता के लिए उनके गुरु भगवान का आदेश सर्वोपरि था । दुनिया की चिंता अपने गुरु भगवान पर छोड़ वे बेफिक्र हो अपने गुरु भगवान के प्रेम में मस्त हो कर जीने वाले जिन्दादिल इन्सान थे । उनके लिए यह कहना उचित ही होगा:

"जो मुर्शिद पे लुट जाए, दोनों जहाँ की दौलत पाए,
उलटी है राह दीवानों की, जितना झुके सिर, उठता जाए"